

महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

# श्री स्रनंध



श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक

श्री ५ नवतनपुरीधाम

जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

## श्री सनन्ध

[कुरान और हदीस ग्रन्थोंमें साक्षात्कारकी रात्रि (शब ए मेराज) का वर्णन किया है और उसकी महिमा भी बताई है. इसी रात्रिमें पूर्णब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार होगा एवं ब्रह्मज्ञान प्रकट होगा, ऐसा कहकर भविष्यवाणी भी की गई है. इसलिए सभी लोग इसी रात्रिकी प्रतीक्षा कर रहे थे. श्री प्राणनाथजीने कुरान और हदीस ग्रन्थोंका प्रमाण देकर इस रात्रिके आनेकी बात की है. एक हजार महीनेसे भी बड़ी इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) में ब्रह्मधामसे ब्रह्मात्माएँ ब्रह्मज्ञान लेकर इस जगतमें अवतरित होंगी. उनके प्रतापसे लोग इस रात्रिका महत्त्व समझेंगे और परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार करेंगे. इसी सन्दर्भको व्यक्त करते हुए श्री प्राणनाथजी कहते हैं-]

**ढूँढे सब म्याराजको, सब म्याराज में सब ॥**

**सो सब म्याराज जाहेर करी, सो सब म्याराज देखसी अब ॥**

सभी लोग ब्रह्मसाक्षात्कारकी रात्रिको ढूँढते हैं क्योंकि इसी रात्रिमें पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान होनी है. अब यह रात्रि प्रकट हो गई है. इसलिए अब सभी लोग इसी रात्रिमें पूर्णब्रह्म परमात्माका साक्षात् दर्शन करेंगे.

श्री किताब कुरान माफक सनंधें असराफीलें आखरमें कुरानको गाया है, सो अपनी सरत पर जाहेर हुई है तिनकी ए सनंधें दुलहिन किताब आसमानी हम नाजी फिरकेमें, आखरको महंमद मेहेदी ले उतरे हैं, सो सुरु हुई वास्ते रूहों के.

अक्षरब्रह्मकी जागृत बुद्धि (इस्त्राफील फरिश्ता) ने श्री प्राणनाथजी (आखरी मुहम्मद-इमाम महदी) के हृदयमें विराजकर (रसूल मुहम्मद साहेबके कथनानुसार अपने वचनके अनुरूप खुदाके आदेशसे इस्त्राफीलने प्रकट होकर) ब्रह्मात्माओंके लिए इस सनंध ग्रन्थ (आसमानी दुलहिन किताब) के माध्यमसे कुरानका स्पष्टीकरण किया है जो इस प्रकार आरम्भ होता है.

सनंध पेहेली अल्ला रसूलकी

अल्ला मुहबा मासूक, सो खासी खसम दिल ।

तो नाम धराया रसूलें, आसिक अपना असल ॥ १

श्यामाजी (खासी रूह) के दिलके स्वामी (खसम) प्यारे परमात्मा (अल्लाह) माशूक हैं. (परब्रह्म परमात्माको श्यामाजी हृदयसे प्रेम करती हैं) इसलिए जब श्यामाजीकी सुरता रसूल मुहम्मदके रूपमें दुनियाँमें आई तब उन्होंने स्वयंको असल आशिक (परब्रह्मके प्रेमके वास्तविक चाहक) के रूपमें अपना परिचय दिया.

आसिक कहा अल्लाहको, मासूक कहा महंमद ।

न जाए खोले माएने, बिना इमाम एक सबद ॥ २

फिर कुरानमें ही अन्य स्थानों पर अल्लाहको आशिक कहा है और मुहम्मदको माशूक कहा है. इन रहस्योंके एक शब्दका भी स्पष्टीकरण सद्गुरु (इमाम) के बिना कोई नहीं कर सकता.

[वस्तुतः परमात्मा माशूक (प्रेम पात्र) कहलाते हैं और आत्माएँ आशिक (प्रेम करने वाली) कहलाती हैं किन्तु जब आत्माएँ सुरतारूपमें खेलमें आई तब उनको जागृत करनेके लिए स्वयं परमात्मा आवेशरूपमें आए. इसलिए

इस खेलमें परमात्मा आशिक कहलाए और श्यामाजी तथा आत्माएँ माशूक कहलाई. इस रहस्यको सद्गुरुके ज्ञान (तारतमज्ञान) के बिना स्पष्ट नहीं किया जा सकता. इसलिए कुरानको कुँवारी कहा गया था, श्री प्राणनाथजीने इन दुरूह रहस्योंको स्पष्ट कर उसे आसमानी दुलहिन बना दिया.]

**आए रसूलें यों कहा, काजी आवेगा खुद सोए ।**

**पर फुरमान यों केहेवहीं, जिन कोई केहेवे दोए ॥ ३**

रसूल मुहम्मदने इस संसारमें आकर यह भी कहा था कि अन्तिम घड़ी (आखिरी-कयामतके समय) में स्वयं परमात्मा न्यायाधीश (काजी) बनकर आएँगे. कुरानमें यह भी कहा है कि इन दोनोंको अलग मत समझना अर्थात् स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा उनका सन्देश लेकर संसारको न्याय दिलानेके लिए आई हुई उनकी आवेश शक्ति दोनों एक ही हैं, इन्हें अलग नहीं समझना चाहिए.

**एक कहा न जावहीं, दो भी कहिए क्यों कर ।**

**भेलें जुदे जुदे भेलें, माएने मुसाफ इन पर ॥ ४**

ये दोनों एक ही हैं ऐसा भी कह नहीं सकते और अलग-अलग हैं ऐसा भी कैसे कहा जाए ? (पूर्णब्रह्मकी ही शक्ति उनकी परिचायिका बनकर अलग-अलग समयमें आई है. इसलिए मूलतः परमधाममें एक होते हुए भी खेलमें अलग-अलग जैसी लगती है.) वस्तुतः परमधाममें एक ही हैं, इस खेलमें आने पर उनसे भिन्न जैसे लगते हैं, खेल समाप्त होने पर पुनः परमधाममें एक ही रहेंगे. इस प्रकार कुरानका रहस्य आनेवाले न्यायाधीश पर निर्भर करता है.

**ऐसे माएने गुझ कै, तिन गुझोंमें भी गुझ ।**

**ए माएने अपने आप बिना, और न काहूं सुझ ॥ ५**

कुरानमें ऐसे कई गूढ़ रहस्य हैं. उन रहस्योंके रहस्योंका भी गूढ़ अर्थ स्वयं परमात्मा (तथा उनके आवेश स्वरूप) के बिना किसीको भी नहीं सूझता है.

फुरमान ल्याये रसूल, तिनमें अल्ला कलाम ।

सो भेज्या मोमिनों पर, अंदर गुझ अलाम ॥ ६

रसूल मुहम्मद कुरान लेकर आए हैं जिसमें परमात्माके वचन (अल्लाह कलाम) हैं। वे वचन परमात्माने ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के लिए भेजे हैं। उनके अन्दर कई उत्तम रहस्य छिपे हैं।

ए जिन भेज्या सो जानहीं, या जाने आया जिन पर ।

ए गुझ खसम मोमिनकी, बिना रसूल न कोई कादर ॥ ७

इन वचनोंका रहस्य इनको भेजने वाले स्वयं परमात्मा जानते हैं या जिनके लिए ये वचन आए हैं, वे ब्रह्मात्माएँ जानती हैं। उपरोक्त गूढ़ रहस्यकी बातें पूर्णब्रह्म और ब्रह्मात्माओंसे सम्बन्धित हैं। उनको स्पष्ट करनेका सामर्थ्य रसूलके बिना दूसरे किसीको भी नहीं था।

खसमें लिखी हकीकत, जोलों न पाइए सोए ।

तोलों असलू मोमिनको, चैन जो कैसे होए ॥ ८

परमात्माके भेजे हुए वचनोंका रहस्य जब तक समझ नहीं पाती, तब तक असली ब्रह्मात्माओंको कैसे शान्ति (चैन) का अनुभव होगा ?

माणे इन कुरानके, जोलों ना समझाए ।

तोलों सो रूह आपको, मोमिन क्यों केहेलाए ॥ ९

कुरानके ये रहस्य जब तक समझमें नहीं आते, तब तक आत्माएँ स्वयंको ब्रह्मात्माएँ कैसे कह पाएंगी ?

तो लिख्या आगूहीं थें, रसूलें अल्ला कलाम ।

करसी जाहेर मोमिनों, आखर आए इमाम ॥ १०

रसूल मुहम्मदने कुरानमें पहलेसे ही लिखा था कि अन्तिम (कयामतके) समयमें इमाम (सद्गुरु) ब्रह्मसृष्टिके बीच प्रकट होकर इन रहस्योंको स्पष्ट करेंगे।

हकीकत फुरमान की, कहूं सुनो सब मिल ।

नूर अकल आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल ॥ ११

अब आप सब मिलकर सुनें, मैं कुरानका यथार्थ (हकीकत) प्रकट कर रहा

हूँ, अक्षरब्रह्मकी जागृत बुद्धि (नूर अक्ल) के द्वारा आप सबके हृदयको निर्मल कर देता हूँ.

अब सो आखर आइया, उठ खड़े रहो मुसलिम ।

पाक करूँ नूर अक्लें, खबर देऊँ खसम ॥ १२

हे मुसलमान बन्धुओ ! उठो, खड़े हो जाओ. अब वही अन्तिम समय (क्यामतकी घड़ी) आ गया है. अक्षरकी जागृत बुद्धि (नूर अक्ल) द्वारा निर्मल बनाकर तुम्हें परब्रह्म परमात्मा (खसम) की पहचान करवाता हूँ.

सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख ।

अब कहूँ भाषा मैं किनकी, यामें भाषा तो कै लाख ॥ १३

सबको अपने अपने कुल (देश) में प्रचलित भाषा अच्छी लगती है. अब मैं कौन-सी भाषामें बात करूँ ? संसारमें तो लाखों भाषाएँ हैं.

बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन ।

सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन ॥ १४

संसारमें सबकी भाषाएँ अलग-अलग हैं और उनकी रीति, चालचलन भी अलग-अलग हैं. इस प्रकार सब अलग-अलग नामोंमें उलझे हुए हैं किन्तु मुझे तो सबके लिए कहना है.

बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान ।

सबको सुगम जानके, कहूंगी हिन्दुस्तान ॥ १५

समस्त संसारमें असंख्य भाषाएँ हैं किन्तु इन सभी भाषाओंमेंसे सबके लिए सुगम समझ कर मुझे हिन्दी भाषा (हिन्दुस्तानी) में अपनी बात कहनी है.

बड़ी भाषा एही भली, जो सबमें जाहेर ।

करने पाक सबन को, अंतर माहिँ बाहेर ॥ १६

यही भाषा सुन्दर और बड़ी है. सभी स्थानोंमें इसका प्रचलन है. इसलिए इसके द्वारा सभीको बाहर और भीतरसे पवित्र करना है.

प्रकरण १ चौपाई १६

कलाम आरबी हक रसूल ना, फआल कसीदे कलम ।  
 बोली अरबी सच है रसूल की, कर के साखियों के कहता हों ।  
 लाकिन माए आरफो, मिन्हुम हिंद मुस्लिम ॥ १  
 लेकिन नहीं समझेंगे, इनमें हिंदके मुसलमान ॥  
 इसम्यो हिंद मुस्लिम, अना कलम सिदक ।  
 सुनो हिंदके मुसलमानों, मैं कहूंगी सच ।  
 मा कलम अना किजब, मा कुंम इंद कलमा हक ॥ २  
 ना कहूंगी मैं झूठ, जो तुम्हारे पास वचन सांच ॥  
 अल्लजी मुस्लिम असलू, अना हबा मरा कुंम ।  
 जो कोई मुस्लिम असल हैं, मेरा बहुत प्यार तुमसों है ।  
 अना हाकी हकाइयां असलू, लिना इमाम इलम ॥ ३  
 मैं कहूं बातें असलकी, साथ मेरे इमामका ग्यान है ॥  
 लागिल हिंद मुस्लिम, अना कलिमो हिंद कलाम ।  
 खातर हिंदके मुसलमानोंके, मैं कहूं हिंदकी बोली ।  
 अना कुल्ल सवा सवा, अना हुम इमाम ॥ ४  
 मुझको सब बराबर बराबर हैं, मैं हों औरत इमामकी ॥  
 हिंद कलाम जिद हबा ना, लागिल हिंद मुस्लिम ।  
 हिंदकी बोली अधिक प्यारी है मुझे, खातर हिंदके मुसलमानोंके ।  
 अल्लजी सिदक यकीन, हुब हक रसूल कदम ॥ ५  
 जो कोई सच्चे यकीन वाले हैं, प्यारे हैं सच्चा रसूल के कदमों पर ॥  
 बेन कुरान मकतूब, अल्लजी रसूल कबल ।  
 दरम्यान कुरानके लिख्या है, जो कि रसूलने आगे ही थें ।  
 जा आ मेहेदी कलम, लिसान लुगद बदल ॥ ६  
 आएके मेहेदी कहेगा, जुबांन बोल औरै ॥

वाहिद लिसान वाहिद लुगद, अल्लजी सै स्मा उलगवर ।  
 एक जुबांन एक बोल, जो कुछ चीज आसमान जिमीन में हैं ।  
 बेन हिम इमाम लुकनत, लिसान लुगाद ला कादर ॥ ७  
 दरम्यान इनोके इमाम मेहेदी तोतला, जुबांन और वचनमें असमर्थ है ॥  
 कुल्ल आदम ओकुल्ल गिरोह, मा कुल्लो सुरआ वाहिद ।  
 सारे आदमी और सब उमत, जो कोई है सबकी राह एक है ।  
 लुगा तरीक मा मिसलहू, कमा फास काल महंमद ॥ ८  
 बोलना राह नहीं है उन जैसा, ऐसा जाहेर कहा रसूलने ॥  
 अल्लजी मकतूब हाकिमा, बेन कुरान कलाम ।  
 जो कि लिख्या है ऐसा, दरम्यान कुरान के वचन ।  
 हाला अना कएफ कलमो, लुगाद बदल इमाम ॥ ९  
 अब मैं क्योंकर कहूं, वचन बिना इमाम ॥  
 हरफ कमा मकतूब, अल्लजी हक रसूल ।  
 सबद जैसा कोई लिख्या है, जो सांचे रसूलने ।  
 व ला इतरो मिन्हुंम लुगा, फआल इमाम कुल्ल कबूल ॥ १०  
 कदी न जावे इनमेंसे एक बोल, किए इमामने सब कबूल ॥  
 अल्लजी इमाम अगबू, हुब हस्त्रा हिंद मकान ।  
 जो इमाम मेहेदी ने पसंद किया, वही भली है हिंद मुकाम ।  
 कुल्लु लाए जा आ कलाम गैर, मिसल हिंद इला नेक फियान ॥ ११  
 कही न आवे बोली दूसरी, मानिंद हिंदके नहीं तो काफी है ॥  
 लागिल मुस्लिम कुरब ना, अना फआली कुंम इस्हल ।  
 खातर मुस्लिम कबीले अपनेके, मैं कर देऊं तुमको सुगम ।  
 अना कलम कलाम कुंम, यालिक यकून कुंम दीन सुगल ॥ १२  
 मैं कहूं बोली तुम्हारी, ज्यों होए तुमको धर्ममें आनंद ॥

प्रकरण २ चौपाई २८



## हिन्दुस्तानी भाषामें चौपाई सुरु

भेष भाषा जिन रचो, रचियो माएने असल ।

भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल ॥ १

केवल वेश और भाषामें मत उलझो अपितु गूढ़ अर्थ पर ध्यान दो. तारतम ज्ञानके द्वारा रसूलकी ज्योति (रसूल द्वारा प्रतिपादित कुरान) प्रकाशित हो गई है, अब उसके सभी गूढ़ अर्थ स्पष्ट हो गए हैं.

लिए माएने ऊपर के, एते दिन इन जहान ।

मूल माएने पाए बिना, सुध ना पडी ब्रध हान ॥ २

आज तक संसारके लोगोंने कुरानका बाह्य अर्थ ही ग्रहण किया है. मूल अर्थको समझे बिना लाभ-हानिका ज्ञान किसीको भी नहीं हुआ.

करना सारा एक रस, हिन्दू मुसलमान ।

धोखा सबका भान के, सब का कहूंगी ग्यान ॥ ३

हिन्दू तथा मुसलमान सबको एक रस (एक ही परब्रह्म परमात्माके प्रति समर्पित) करना है और सबके संशयोंको दूर कर सबको परब्रह्मका ज्ञान कहना (समझाना) है.

पैंडे सब देखाइए, ज्यों समझे सब कोए ।

मत सबन की देखाइए, ज्यों एक रस सब होए ॥ ४

सभी धर्म-सम्प्रदायोंका मार्ग दिखाना है ताकि सब लोग समझ सकें. सबके मत-मतान्तरको भी स्पष्ट कर देना है जिससे सब एक रस हो जाएँ.

मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंडे दरसन ।

देखी इसक बंदगी सबकी, जैसा यकीन सबन ॥ ५

मैंने इस मायावी खेलमें विभिन्न सम्प्रदायों तथा मत-मतान्तरोंको देखा है. जैसा उन सबका विश्वास है तथा जिस प्रकार वे अपने इष्टके प्रति प्रेम एवं निष्ठा रखते हैं उनको भी परखा है.

एती जिमी सब छोडके, जित आए मेहेदी महंमद ।

सो भली जिमी भाषा भली, इत हद मेट होसी बेहद ॥ ६

इस विशाल धरतीमें अन्य स्थानोंको छोड़कर जिस भारत भूमिमें निजानन्द सद्गुरु (महदी मुहम्मद) आए हैं, वह भूमि सर्वश्रेष्ठ है तथा इसकी भाषा (हिन्दी-हिन्दुस्तानी) भी बड़ी सुन्दर है। यहींसे संसारके जीवोंको कर्मकाण्डकी सीमाओंसे ऊपर उठाकर अखण्ड धाममें मुक्ति दी जाएगी।

एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए ।

सोए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए ॥ ७

अभी तक संसारमें परमात्माके आदेश (हुक्म) की प्रेरणासे विभिन्न सन्देशवाहकोंने विभिन्न मत-मतान्तर चलाए। अब सद्गुरु (इमाम) के आदेशसे मैं सबको एक सूत्रमें पिरोनेका प्रयत्न कर रहा हूँ।

प्रकरण ३ चौपाई ३५

सनंथ इमामके स्वाल जवाब की

सुनियो बानी मोमिनो, हुती जो अगम अकथ ।

सो वीतक कहूं तुमको, उड जासी गफलत ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! अपने प्रियतम धनीके उन दिव्य वचनोंको सुनो जो आज तक अगम और अकथ कहलाते थे। मैं वह वृत्तान्त कह रहा हूँ जिससे अज्ञानकी झूठी नींद उड़ जाएगी।

हुकम हुआ इमाम का, उदया मूल अंकूर ।

कलस होत सबन का, नूर पर नूर सिर नूर ॥ २

जब सद्गुरु (इमाम) का आदेश प्राप्त हुआ तभीसे परमधामका मूल अंकुर (सम्बन्ध) उदय (स्पष्ट) हुआ है। इसलिए यह वाणी नूर-अखण्ड ब्रज राससे परे नूर-अक्षर धाम और उससे भी परे नूर-अक्षरातीत-परमधामकी जानकारी देनेमें कलशके समान श्रेष्ठ सिद्ध हुई।

कथियल तो कही सुनी, पर अकथ ना एते दिन ।

सो तो अब जाहेर हुई, जो मेहेदी महंमद थे उतपन ॥ ३

शास्त्रोंकी गाथाएँ सुनने-सुनानेकी परम्परा चली आ रही है किन्तु

अक्षरातीतकी पहचानका यह अकथित ज्ञान आज तक कहा नहीं गया था. अब निजानन्द सद्गुरु (मुहम्मद महदी) द्वारा प्रदत्त यह अकथित वाणी प्रकट हो रही है.

मुझे मेहेर मेहेबूबें करी, अंदर परदा खोल ।

सो सुख निसबतियनसों, कहूं सो दो एक बोल ॥ ४

सद्गुरुने मुझ पर अति कृपा की और अज्ञानका आवरण दूर कर दिया अर्थात् वे स्वयं मेरे हृदयमें बैठ गए. इससे मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ है उसमें-से थोड़ा-सा मैं अपने मूल सम्बन्धी ब्रह्मात्माओंके लिए कहता हूँ.

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ ।

कहे तूं दे पड उतर, जो मैं पूछत हूं तुझ ॥ ५

सद्गुरुने मेरे हृदयमें बैठकर अपने दिलके गुह्य रहस्य खोलकर बता दिए. उस समय श्रीकृष्णजीने उनसे कहा था कि मैं जो पूछता हूँ तुम उसका उत्तर दो.

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन ।

नार तूं कौन खसम की, द्रढ कर कहो वचन ॥ ६

तुम कौन हो ? इस जगतमें तुम्हारा कैसे आना हुआ ? तुम्हारा मूल घर कहाँ है ? तुम्हारे स्वामी कौन हैं अर्थात् तुम किसकी अर्धाङ्गिनी हो ? दृढ़ता पूर्वक इन प्रश्नोंका उत्तर दो.

तूं जागत है के नीद में, करके देख विचार ।

विध सारी याकी कहो, इन जिमी के परकार ॥ ७

तुम स्वयं जाग रहे हो या (अज्ञानकी नीदमें) सोए हुए हो ? विचारपूर्वक देखो और इस जगतकी वास्तविकताके सन्दर्भमें विस्तारपूर्वक समझाओ.

तब मैं पियासों यों कहा, जो तुम पूछी बात ।

मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत ॥ ८

तब सद्गुरुने प्रियतम धनीसे इस प्रकार कहा, आपने मुझे जो कुछ पूछा है मैं उसका वर्णन अपनी सीमित बुद्धिके अनुसार उसीरूपमें कर रहा हूँ.

सुनो पिया अब मैं कहूँ, तुम पूछी सुध मंडल ।

ए कहूँ मैं क्यों कर, छल बल बल अकल ॥ ९

हे धामधनी ! आप सुनें, अब मैं कहता हूँ. आपने इस जगतकी बात पूछी है. उसका वर्णन मैं कैसे करूँ ? यह तो छल, बल और कुटिलतासे बुद्धिका हरण करने वाला है.

मैं ना पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर ।

पीउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर ॥ १०

मैं स्वयं अपनेको नहीं पहचानता हूँ. मुझे अपने घरकी सुधि भी नहीं है. मुझे अपने प्रियतम धनीकी पहचान भी अज्ञानरूपी नींदमें ही है, इस प्रकार मैं जागृत हूँ.

जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड ।

चौदे तबक चारों तरफों, परपंच खडा परचंड ॥ ११

पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँच तत्त्वोंसे इस ब्रह्माण्डकी रचना हुई है. चौदह लोकोंके सब (चारों) ओर इन्हीं पाँच तत्त्वोंके महाप्रपञ्चका ही विस्तार दिखाई देता है.

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंतीख ।

कर कर फिकर कै थके, पर पाई न काहूँ रीत ॥ १२

सृष्टिका यह महल, एक विशाल मण्डपकी भाँति रचा गया है और यह अन्तरिक्षमें अटका हुआ है. अनेक ऋषि-महर्षि इस विषय पर अन्वेषण करते-करते थक गए किन्तु किसीने भी इस रचनाकी रीतिको नहीं समझा.

यामें खेल कै होवहीं, सो केते कहूँ विचित्र ।

तिमर तेज रूत रंग फिरे, ससी सूर फिरे नखत्र ॥ १३

इस जगतमें अनेक प्रकारके खेल हो रहे हैं. उनकी विचित्रताका वर्णन कहाँ तक करूँ ? यहाँ पर सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्रगण (तारे आदि) भी अपनी-अपनी परिधिमें घूम रहे हैं. जिससे रात (तिमिर), दिन (तेज) तथा ऋतुएँ रङ्ग बदलती हैं.

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।

साढे तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास ॥ १४

ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमेंसे पृथ्वीका व्यास पचास करोड़ योजनका है। उनमेंसे मात्र साढे तीन करोड़ योजनमें ही (सूर्योदय तथा सूर्यास्तके कारण) दिन और रात (अन्धेरा और उजाला) हुआ करते हैं।

उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर ।

तिनथें कछू ना सूझहीं, जिमी आप ना घर ॥ १५

यहाँ पर सूर्यका जो प्रकाश कहलाता है वस्तुतः वह तो अज्ञानरूपी अन्धकार ही है क्योंकि उससे यह झूठी जिमी (माया), स्वयं आत्मा और आत्माका घर परमधाम किसीकी भी पहचान नहीं होती है।

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर ।

जीव पसू पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर ॥ १६

जब सूर्योदय होता है तब तो अज्ञानताका अन्धकार और भी प्रगाढ़ हो जाता है, क्योंकि सूर्योदय होने पर सारे जीव, पशु-पक्षी, मनुष्य आदि सभी इस अज्ञान (माया) के चक्रमें घूमते हुए व्यस्त दिखाई देते हैं।

काल ना देखे इन फेरे, एही तिमर के फंद ।

ए सूरज आंखों देखिए, परे इन फंद के बंध ॥ १७

मायाके इस चक्रमें पड़ने पर व्यतीत हो रहे समय (काल)की सुधि नहीं रहती, इसलिए इसे अज्ञानका फन्दा कहा गया है। सूर्यके प्रकाशको आंखोंसे तो देखते हैं किन्तु मायाके इन बन्धनों (फन्दे) में सभी बँध जाते हैं।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल ना समाए ।

ए पाँचों आप देखाए के, फेर ना पैदा हो जाए ॥ १८

वायुके प्रवाह, बादलकी गर्जना एवं बिजलीकी चमकके साथ घनघोर वर्षा होती है, जिसका जल पृथ्वी पर समा नहीं पाता। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँचों तत्त्व अपनी-अपनी शक्ति दिखाकर इस प्रकार अदृश्य होते हैं मानों फिर कभी पैदा ही नहीं होंगे।

या विध अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसों दिस ।

ए मोहजल लेहेरां लेवहीं, सागर सबे एक रस ॥ १९

इस प्रकार ब्रह्माण्डकी दसों दिशाओंमें ऐसे अनेक प्रकारके परिवर्तन दिखाई देते हैं. इस मोह सागरमें भाँति-भाँतिकी लहरें उठती रहती हैं और सभी एक रस होकर इसी सागरमें समा जाती हैं.

ए कोहेडा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल ।

कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार ना पाइए सूल ॥ २०

यह मायावी जगत काली रात्रिके कुहरेके समान-उलझनोंसे भरा हुआ है. मूल परमधामकी बातें किसीको भी ज्ञात नहीं हैं. जब पारका द्वार ही नहीं मिल रहा है तो ताले और चाबीकी जानकारीकी तो बात ही क्या रही ?

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहूं घेर ।

ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए न काहूं सेर ॥ २१

स्वर्ग, मृत्यु और पाताल ये तीनों लोक अज्ञानसे उत्पन्न हुए हैं और इनमें अज्ञानका अन्धकार ही छाया हुआ है. इनमें मैंने भली प्रकारसे विचार करके देखा है किन्तु इस (क्षर जगत) से निकलनेके लिए कहीं कोई मार्ग ही दिखाई नहीं दिया.

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध न सूझे सल ।

ए सुध काहूं ना परी, कै गए कर कर बल ॥ २२

यह अन्धकार इस प्रकार फैला हुआ है कि कहीं भी इसका किनारा तथा इससे बाहर निकलनेका मार्ग ही नहीं सूझता है. कई लोग प्रयत्न करते हुए चले गए किन्तु किसीको भी इसका रहस्य ज्ञात नहीं हुआ.

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम ।

इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम ॥ २३

यहाँ पर सभी लोग दीपकका-सा (सांसारिक कर्मकाण्डोंसे भरा हुआ) ज्ञान लेकर परब्रह्म परमात्माको खोजनेके लिए निकलते हैं. जब इन चौदह लोकोंमें

ही अज्ञानरूपी अन्धकार छाया हुआ है तो टिमटिमाते दीपककी-सी उनकी ज्ञानज्योति क्या करेगी ? अर्थात् परब्रह्मको कैसे पहचान पाएगी।

**ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्याध को रचियो रोग ।**

**छुटकायो छूटे नहीं, नहीं देखन जोग ॥ २४**

इस मायाको देखते ही (जन्म लेते ही) लोग दुःखमें पड़ जाते हैं। इसकी रचना ही ऐसी है कि मानों यह रोग और व्याधियोंका ही घर हो। फिर यह माया (दुःख) छुड़ानेसे भी नहीं छूटती। इसलिए यह सर्वथा देखने योग्य नहीं है।

**टेढी संकडी गलियां, तामें फिरे फेर फेर ।**

**गुन पख अंग इन्द्रियों, कियो अंधेरीमें अंधेर ॥ २५**

यहाँ पर कर्म, उपासना एवं ज्ञानकी गलियाँ (मार्ग) टेढ़ी तथा संकरी हैं। उनमें प्रवृत्त जीव वारंवार जन्म-मृत्युके चक्रमें घूमता रहता है। गुण, पक्ष, अङ्ग, इन्द्रियाँ सबकी सब एक दूसरेको अन्धकार पूर्ण विषयोंकी ओर प्रेरित करती हैं।

**तत्त्व पांचों जो देखिए, तो यामें ना कोई थिर ।**

**प्रले होसी पलमें, वैराट सचराचर ॥ २६**

वस्तुतः विचार पूर्वक देखा जाए तो इन पाँचों तत्त्वमें-से, किसीमें भी स्थिरता नहीं है। इस विराट ब्रह्माण्डके चल-अचल सभी पदार्थ पल भरमें ही प्रलय होकर मिट जाते हैं।

**ए उपजे पांचों मोह थें, और मोह को तो नहीं पार ।**

**नेत नेत कहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार ॥ २७**

ये सब पाँचों तत्त्व मोहसे ही उत्पन्न हुए हैं और मोहतत्त्वका तो कोई पारावार ही नहीं होता। वैदिक ज्ञान भी इसे खोजकर नेति-नेति (इसका आदि अन्त नहीं है) कहकर पीछे लौट आया है। मोहतत्त्वसे आगे निराकारसे भी परेकी सुधि किसीको नहीं हुई है।

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार ।

निकसन कोई न पावहीं, वार ना काहूं पार ॥ २८

मूलके बिना बना हुआ यह जगत मण्डल निश्चय ही स्थिर (अविनाशी) नहीं है, फिर भी इसके जञ्जालसे कोई भी बाहर निकल नहीं सकता, इसका कोई पारावार भी नहीं है।

इत पंथ पैडे कै चलहीं, कै भेष दरसन ।

ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे न कोई निकसन ॥ २९

इस जगतमें अनेक धर्म-सम्प्रदाय और मत-मतान्तर, पन्थ-पैड़े अपने-अपने वेश और सिद्धान्त (दर्शन) को लेकर चलते हैं। परन्तु सबके अन्दर मोहयुक्त ज्ञान (अज्ञान) का आवरण (अन्धकार) छाया हुआ होनेसे कोई भी इस जगतसे निकलकर मुक्त नहीं हो सका।

ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद ।

ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद ॥ ३०

बाह्य ज्ञानके साथ बुद्धिकी चतुरता आ जानेसे परमात्माके वियोगकी पीड़ाका अनुभव कैसे हो पाएगा ? किसीको स्वयंकी पहचान न हो और न ही परमात्माके विरहकी पीड़ाका अनुभव हो, तो ऐसा ज्ञान धूलके समान उड़ जाता है।

दरदी दरदा जानहीं, ग्यानी जाने ग्यान ।

ए राह दोऊ जुदी परी, मिले न काहूं तान ॥ ३१

प्रेमी व्यक्ति प्रेमको महत्त्व देता है (परमात्माके विरहकी वेदनासे पीड़ित व्यक्ति इसी विरह वेदनाको ही महत्त्व देता है) और ज्ञानी व्यक्ति ज्ञानको महत्त्व देता है। ये दोनों मार्ग अलग-अलग हैं, दोनोंकी सुर और तान कभी नहीं मिलती।

दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान ।

दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पिंड पेहेचान ॥ ३२

प्रेममें पागल (दीवाना) बना हुआ व्यक्ति मूर्ख जैसा दिख सकता है और



बुद्धिसे चतुर व्यक्ति शैतान (दुष्ट) जैसा दिख सकता है. इस प्रकार विरही एवं ज्ञानी दोनों भिन्न-भिन्न हैं. मात्र देहसे इनकी पहचान नहीं होती (अपितु कर्मसे पहचान होती) है.

कबू मूढ दरदें मिले, पर दरद ना कबू सैतान ।

बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान ॥ ३३

कभी-कभी मूर्ख व्यक्ति भी विरह वेदनासे पीड़ित हो सकता है किन्तु शैतानके मनमें कभी भी विरह वेदना उत्पन्न नहीं हो सकती. इन दोनोंके बीज और अंकुर अलग-अलग हैं. सदासे ही इनमें शत्रुता रही है.

ग्याने प्यारी स्यानप, दरदें सेती वैर ।

दरदें प्यारी दिवानगी, स्यानप लगे जेहेर ॥ ३४

ज्ञानीको चतुराई अच्छी लगती है. वह विरहके साथ शत्रुता रखता है. विरहीको पागलपन अच्छा लगता है, चतुराई उसे विषतुल्य लगती है.

इत जुध किए कै सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे पाखर ।

वचन बड़े रन बोलके, उलट पड़े आखर ॥ ३५

अनेक ऋषिमुनियों तथा साधकोंने शूरता दिखाते हुए त्याग, शील, सन्तोष, क्षमा आदि सद्गुणोंका कवच पहनकर जगतकी इन झूठी मान्यताओंके विरुद्ध युद्ध (सामना) किया. 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं स्वयं ब्रह्म स्वरूप हूँ) जैसे बड़े बड़े वचन भी कहे किन्तु माया पर विजय प्राप्त किए बिना ही उन्हें लौट जाना पड़ा.

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए ।

कै उदम जो करहीं, तो भी तिमर ना छोडे ताए ॥ ३६

इस संसारमें मायाके बन्धनसे छूटनेके लिए जैसे जैसे खोज (साधनाएँ) करते हैं वैसे वैसे और बन्धनमें पड़ते चले जाते हैं. अनेक प्रयत्न करने पर भी माया (अज्ञान) का अन्धकार उनसे नहीं छूटता है.

ए सुध अजूं किन ना परी, बढत जात विवाद ।

खेल तो है एक खिन का, पर ए जाने सदा अनाद ॥ ३७

इस संसारमें अभी तक किसीको भी परमात्माकी सुधि नहीं हुई. इस विषयमें परस्पर वाद-विवाद ही बढ़ता गया. वस्तुतः यह खेल तो क्षण मात्रका ही है किन्तु सबको यही प्रतीत होता है कि यह तो अनादि (सदा रहनेवाला) है.

खेल खावंद जो त्रैगुन, जानो याथें जासी फेर ।

ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर ॥ ३८

सामान्य लोगोंकी मान्यता है कि इस संसारके स्वामी त्रिगुणाधिपति ब्रह्मा, विष्णु, महेशकी उपासनासे जन्म-मृत्युका चक्र छूट जाएगा, परन्तु मैंने यह भली-भाँति परख लिया कि ये तीनों भी अभी तक अज्ञानरूपी अन्धकारमें ही हैं.

ए द्वार कोई खोलके, कबहूँ न निकस्या कोए ।

ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए ॥ ३९

अखण्डका द्वार खोलकर कभी भी कोई आगे नहीं निकला है. इस मायावी विश्वमें बड़े कहलाने वालों (त्रिदेवों) को भी मायामें ही बेसुध होकर बैठे हुए पाया.

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध ।

या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध ॥ ४०

जिसने मायाके ये बन्धन बाँधे हैं वह अक्षरब्रह्म ही इस फन्देको खोल सकता है, तब तक इन बन्धनोंसे कोई भी नहीं छूट सकता. जब इस विश्वके कर्णधार (त्रिदेव) की भी ऐसी दशा है, तो अन्य सामान्य साधकोंकी बात ही क्या रही ?

निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह ।

आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए ॥ ४१

परब्रह्म परमात्माकी आज्ञासे जब तक अक्षरब्रह्मकी जागृत बुद्धि (तारतम

ज्ञान) इस जगतमें आकर ज्ञानका प्रकाश नहीं फैलाएगी, तब तक मोहके बन्धनसे कोई छूट नहीं पाएगा. यह आत्मा (जीव) तो अज्ञानरूपी अन्धकारमें भटक रही है. बुद्धजीकी जागृत बुद्धिके बिना किसीकी भी आत्म-दृष्टि नहीं खुल सकती.

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रस्न ।

कहूं और अजुं बोहोत हैं, वे भी सुनो वचन ॥ ४२

हे धनी ! आपने जो पूछा है उनमेंसे मैंने संसारकी वास्तविकता कही है. ऐसी ही कई और भी बातें कहनी हैं, आप वे भी कृपा पूर्वक सुनें.

प्रकरण ४ चौपाई ७७

सनंध खोज की

पिया मैं विध विध तोको ढूंढिया, छोड़ धंधा सब और ।

पूछत फिरों सोहागिनी, कोई बतावे पिआ ठौर ॥ १

हे प्रियतम धनी ! मैंने सबकार्य व्यवहार छोड़कर आपको अनेक प्रकारसे ढूँढ़ा. मैंने कई सुहागिनी आत्माओंसे भी पूछा कि कोई तो मेरे प्रियतम धनीका स्थान बता दे.

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल ।

कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल ॥ २

इस झूठे खेलमें आपको प्राप्त करनेके लिए मैंने जिस प्रकार खोज की उसके बारेमें थोड़ा-सा बताऊँ. यहाँ पर जिन लोगोंने भी भली-भाँति परमात्माकी खोज की, उनमें-से किसीने भी यह नहीं बताया कि हमें परमात्माका साक्षात्कार हुआ है.

सास्त्र साधु जो साखियां, मैं देखी सबनकी मत ।

जोलों साहेब न पाइए, तोलों कीजे कासों हेत ॥ ३

शास्त्रोंके वचन, सन्तोंकी वाणी आदिकी साक्षियोंको मैंने भलीभाँति देखा-सुना परन्तु जब तक अपने धनीका मिलन न हो तब तक किनके साथ स्नेह रखा जाए ?

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार ।

संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार ॥ ४

सामान्य जनसे लेकर बड़े-बड़े ऋषि महर्षियोंने भी खोज की किन्तु किसीने भी सृष्टिके नियन्ता परमात्माको नहीं पाया. सब लोग इस विषयमें सन्देह करते हुए गए परन्तु किसीके भी विकार दूर नहीं हुए.

ए झूठा छल कठन, काहूँ न किसी की गम ।

कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम ॥ ५

यह छल स्वरूप झूठा संसार बड़ा कठिन है. कोई भी इसके रहस्यको समझ नहीं पाया कि मेरा घर कहाँ है, मेरे स्वामी कहाँ हैं और कौन हैं, यह जगत क्या है एवं हम स्वयं कौन हैं ?

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत ।

इनमें सीधा दौड के, कोई ना निकस्या जीत ॥ ६

मैंने जगतके ये छल कपट पूर्ण खेल देखे. छलकी तो रीत ही उलटी होती है. छलरूपी इस दुनियाँमें सीधा चलकर कोई भी कभी विजयी नहीं हुआ है.

मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अरथ लगाए ।

इस मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए ॥ ७

मैंने विचार पूर्वक देखा. शास्त्रोंके गहन अर्थोंको भी ग्रहण किया. इस दुनियाँमें अपनी आत्माको जागृतकर कोई भी पार नहीं पहुँच पाया है.

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहेनिस खोज विचार ।

तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक सिर मार ॥ ८

पूर्णब्रह्म परमात्माको प्राप्त करनेके लिए अनेक साधकोंने कठिन साधनाएँ कीं, रात-दिन विचार पूर्वक खोजा, किन्तु उन लोगोंसे भी मायाका यह छल नहीं छूटा. अन्तमें वे भी हाथ पटकते एवं सिर पीटते हुए चले गए.

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी स्रष्ट ।

तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूँ न देख्या द्रष्ट ॥ ९

मोह आदि तत्त्वकी उत्पत्तिसे लेकर आज तक इस ब्रह्माण्डमें जितनी सृष्टि

हुई है, उन सब लोगोंने भी ऐसा ही कहा कि इस सृष्टिके नियन्ता परमात्माको किसीने भी नहीं देखा.

वरना वरनों खोजिया, जेती बुनी आदम ।

एता द्रढ किने ना किया, कहाँ खसम कौन हम ॥ १०

संसारमें जितने भी वर्णावर्ण (गृहस्थ-साधु) तथा प्रथम मनुष्य (मनु) की संतान हैं, उन सबने परमतत्त्व (परमात्मा) को खोजा, परन्तु किसीने भी निश्चय पूर्वक यह नहीं बताया कि परब्रह्म परमात्मा कहाँ रहते हैं और हम कौन हैं ?

आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध ।

केवल विदेही होए गए, तिन भी न कही ए सुध ॥ ११

सृष्टि रचनाके आरम्भसे लेकर आज तक ज्ञानी-ध्यानी सब लोग यही कहते गए. कितने विदेही भी हो गए, किन्तु किसीने भी परम तत्त्वकी स्पष्ट सुधि नहीं दी.

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक ।

बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक ॥ १२

वेदोंने भी बहुत-कुछ कहते हुए यह तथ्य बताया कि चौदह लोकोंमें विस्तृत यह जगत मिथ्या है. इसी बातको दोहराते हुए उन्होंने पुनः पुनः यही कहा कि एक परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त अन्य सब कुछ असत्य (अस्तित्वहीन) है.

बुध तुरिया द्रष्ट श्रवना, जहां लों पोहोंचे मन ।

ए होसी उत्पन सब फना, जो आवे मिने वचन ॥ १३

बुद्धि, समाहित चित्त, दृष्टि, श्रवणशक्ति और मनकी पहुँच जहाँ तक है वे सब उत्पन्न होकर नाश होने वाले हैं, तथा जिनका वर्णन शब्दों द्वारा हो सकता है वे सब नाशवान हैं.

वेदांती भी केहे थके, द्वैत खोजी पर पर ।

अद्वैत सबद जो बोलिए, तो सिर पडे उतर ॥ १४

वेदान्ती भी इस द्वैत जगतमें परम तत्त्वको अनेक प्रकारसे खोजते हुए थक

गए. अन्तमें उन्होंने कहा कि अद्वैतके विषयमें यदि एक शब्दका भी उच्चारण होगा तो सिर धड़से अलग हो जाएगा.

[राजा जनककी सभामें ब्रह्मवादिनी गार्गीके बार-बार पूछे जाने पर याज्ञवल्क्य ऋषिने कहा कि अद्वैत ब्रह्मके विषयमें और अधिक पूछोगी तो तुम्हारा सिर उड़ जाएगा. इसका तात्पर्य यह है कि समर्पण भाव (अहङ्कार रहित) होने पर ही अद्वैत ब्रह्मकी अनुभूति होती है.]

**मन चित बुध श्रवना, पोहोंचे द्रष्ट न सबदा कोए ।**

**षट प्रमान तें रहित है, सो द्रढ कैसे होए ॥ १५**

मन, चित्त, बुद्धि, श्रवण, दृष्टि और शब्द ये सब परमात्मा तक नहीं पहुँचते हैं. परब्रह्म परमात्मा इन छः प्रमाणोंसे परे हैं, तो फिर उनका स्वरूप कैसे दृढ़ (निश्चित) हो सकता है ?

**द्वैत आडे अद्वैत के, सब द्वैतै को विस्तार ।**

**छोड द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार ॥ १६**

यह संसार द्वैत मायाका ही विस्तार है. अद्वैत परमात्माकी प्राप्तिके लिए यह माया (द्वैत) व्यवधानरूप बन गई है. इस द्वैत (माया) को लाँघकर आगे अद्वैत परमात्माकी बात किसीने निर्धारित नहीं की.

**ए अलख किने ना लखी, आदै थें अकल ।**

**ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल ॥ १७**

सृष्टि रचनासे लेकर आज तक अपनी बुद्धिसे किसीने भी इस अगोचर (शून्य-निराकार) को स्पर्शरूपसे नहीं पहचाना. यह माया ही इस प्रकार निराकार और निरंजन (अदृश्य) रूपसे जगतमें व्याप्त है.

**चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर फेर आवे जाए ।**

**जड को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए ॥ १८**

शरीरमें व्याप्त चेतन (जीव) इसी मायाके प्रभावके कारण वारंवार जन्म और मृत्युके चक्रमें पड़ जाता है. यह जीव जड़ शरीरमें प्रवेश कर उसे चेतनवत् बना देता है और उससे निकलकर उसे निश्चेतन कर देता है.

ऊपर तलें मांहें बाहेर, दसों दिसा सब एह ।

छोड याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह ॥ १९

पातालसे लेकर शून्य-निराकार तक दसों दिशाओंमें परमात्माकी माया ही व्यापकरूपसे फैली हुई है। उसे लाँघकर, परमात्माका अद्वैत परमधाम किसीने भी नहीं बताया।

जो कछू कहिए वचने, सो सब मिने गफलत ।

ना सरूप ना काहूं वतन, तो क्यों कर जाइए तित ॥ २०

शब्दों (वचनों) के द्वारा कही जाने वाली संसारकी समस्त वस्तुएँ अनित्य हैं। परब्रह्म परमात्माका चिन्मय स्वरूप और उनके अद्वैत दिव्य धामके विषयमें निश्चितरूपसे किसीने भी नहीं बताया है, फिर वहाँ पर कैसे जाया जाएगा ?

पेड काली किन ना देखी, सब छाया ही में रहे उझाए ।

गम छायाकी भी ना पडी, तो पेड पार क्यों लखाए ॥ २१

इस अन्धकार पूर्ण मायाका मूल काल निरंजन शक्तिको किसीने नहीं देखा। सब उसकी छाया (मोहतत्त्व, शून्य एवं निराकार) में ही उलझकर रह गए। जब उस छाया (निराकार) की ही गम (पहचान) न हो सकी, तो फिर इसके मूलसे परेकी पहचान कैसे होगी ?

जाए ना उलंघी देखीती, ना कछू होए पेहेचान ।

तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक ना सुन्यो निसान ॥ २२

वस्तुतः यह दृश्यमान माया ही लाँघी नहीं जा सकी और इसकी पहचान भी नहीं हो सकी, तो दुल्हा (परब्रह्म परमात्मा) को कैसे पाया जा सकता है ? जिनकी पहचानके लिए जरा-सी निशानी भी सुननेमें नहीं आई है।

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत ।

किने ना कह्यो ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत ॥ २३

परब्रह्म परमात्मा तो इस द्वैत मायासे सर्वथा भिन्न (अद्वैतमें प्रतिष्ठित) हैं। अद्वैत भूमिकाके अतिरिक्त सब स्थान द्वैत ही हैं। किसीने भी अद्वैत भूमिकाके सन्दर्भमें निश्चयपूर्वक नहीं कहा है तो फिर उसे किस प्रकार पाया जाए ?

या विध ग्यान जो चरचहीं, सो मैं देख्या चित ल्याए ।

ज्यों मनुआ सुपने मिने, बेसुध गोते खाए ॥ २४

इस प्रकार द्वैत और अद्वैत विषयक ज्ञान चर्चाएँ संसारमें होती रहती हैं। उनको भी मैंने ध्यान पूर्वक सुना। जैसे मन स्वप्नमें गोता खाता रहता है, उसी प्रकार मायावी ज्ञान लेकर चर्चा करने वाले लोग भी बेसुध होकर मायामें ही गोते खाते रहते हैं।

छिनमें कहे सब ब्रह्म है, छिनमें बंझा पूत ।

मदमाते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप ॥ २५

(वेदके महावाक्यों-अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, सर्वं खल्विदं ब्रह्म, अयमात्माब्रह्म आदिको यथार्थ न जानने वाले तथाकथित विद्वान्) एक क्षणमें तो यह कहते हैं कि यह सब कुछ ब्रह्मरूप है, दूसरे क्षण कहते हैं कि यह मायासे उत्पन्न जगत बाँझके पुत्र जैसा अभाव मात्र है, इसका अस्तित्व ही नहीं है। अविद्यामें रत ये लोग ऐसी विपरीत बातें कहते हुए मदोन्मत्त बन्दरकी भाँति अनेकरूप धारण करते हैं।

छिनमें कहें सत असत, माया कछुए कही न जाए ।

यों संग संसा द्रढ हुआ, सब धोखे रहे फिराए ॥ २६

वे एक क्षणमें तो संसारको सत्य बताते हैं और दूसरे ही क्षण उसे असत्य कहते हैं फिर ऐसा भी कहते हैं कि इस मायाके विषयमें स्पष्टरूपसे कुछ कहा नहीं जा सकता। इस प्रकार लोगोंके मनमें सन्देह दृढ़ होता गया जिसके कारण सभी लोग धोखेमें चक्कर काट रहे हैं।

छिनमें कहे है आप में, छिन मैं कहे बाहेर ।

छिनमें माहें न बाहेर, यों सबद न कोई निरधार ॥ २७

वे कभी तो परब्रह्म परमात्माको अपने अन्तरमें विराजमान बताते हैं और दूसरे क्षण कहते हैं कि ब्रह्म इस पिण्डसे बाहर है। फिर क्षणके अन्दर ही कहते हैं कि ब्रह्म न तो पिण्डमें है और न ही ब्रह्माण्डमें, वह तो बाहर भीतर



कहीं भी नहीं है। इस प्रकार इनके कोई भी मत निश्चित नहीं हैं।

छिनमें कछू और कहे, छिनमें और की और ।

सो बात द्रढ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रहेवे ठौर ॥ २८

ऐसे लोग एक क्षणके अन्दर एक बात करते हैं तो दूसरे क्षण और ही बात करते हैं। उनकी बातोंमें दृढ़ता कैसे होगी, जिनके वचन ही स्थिर नहीं हैं।

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए ।

ऐसे साधू सास्त्रमें, द्रढ न सबदा कोए ॥ २९

जैसे छोटे बच्चे तथा दीवाने (पागल) लोग क्षणमें खेलते हैं, क्षणमें हँसते हैं और क्षणमें रोते भी हैं, उनमें कोई स्थिरता नहीं होती, वैसे ही अपरिपक्व बुद्धि वाले साधु शास्त्र वचनोंमें उलझे हैं, इनके किसी भी शब्दमें दृढ़ता नहीं है।

ए सबे सींग ससक, बंझा पूत वैराट ।

फूल गगन नाम धराए के, उडाए देवे सब ठाट ॥ ३०

वेदान्तमतके अनुसार यह संसार खरगोशके सींग, बाँझ स्त्रीके पुत्र और आकाशके फूलकी भाँति अस्तित्व रहित है, ऐसा कहकर वे समस्त जगतके वैभवको क्षणभरमें नकार (उड़ा) देते हैं।

आप होत फूल गगन, बढत जात गुमान ।

देखीतां छल छेतेरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान ॥ ३१

इस प्रकार वे स्वयं आकाशके पुष्पकी भाँति अपना ही अस्तित्व मिटाते हैं, फिर भी उनमें अल्प ज्ञानका अभिमान बढ़ता जाता है। देखते ही देखते यह छलवती माया सभीको ठग रही है। हाय ! यह माया कितनी चतुर और सुजान है।

कोई ना परखे छल को, जिन छलमें हैं आप ।

तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात ॥ ३२

जिस छलरूपिणी मायामें वे स्वयं हैं, उस मायाको भी कोई नहीं पहचान पाया, तो मायासे न्यारे परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार कैसे हो पाएगा ?

अटक रहे सब इतहीं, आगे सबद न पावे सेर ।

ए खोजे सब द्वैत में, ओ तो अद्वैत लों अंधेर ॥ ३३

सब लोग इसी मायामें अटके हुए हैं. इससे परेका ज्ञानमार्ग उन्हें नहीं मिला. ये सब लोग इसी द्वैत संसारमें ही परमात्माको खोजते हैं. वस्तुतः अद्वैत पर्यन्त मायाका ही अन्धेरा छाया हुआ है.

ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान ।

सो साधू लेकर दौडहीं, आगे मोह न देवे जान ॥ ३४

वेद-वेदान्तका भी यही मत है. सब शास्त्रोंका ज्ञान भी यही कहता है. इसी सीमित ज्ञानको लेकर साधुजन आगे बढ़नेका प्रयत्न करते हैं, किन्तु मोह तत्त्व उन्हें आगे जाने नहीं देता.

ए खेल सारा कुदरती, फिराया फिरस्तों फेर ।

ए इंड गोलक बीच में, गृद गफलत की अंधेर ॥ ३५

यह सारा खेल प्रकृति द्वारा रचित है. इसी प्रकृतिने सब देवी-देवताओं (फिरस्तों) को भी भ्रमित किया है. इस गोलाकार ब्रह्माण्डके चारों ओर मोह अज्ञानरूपी अन्धकार फैला हुआ है.

कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर ।

या विध चौदे तबकों, कहा फिरस्ते का मन फेर ॥ ३६

ए खेल सारा सुन का, फिरे मने मन फेर ।

ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर ॥ ३७

प्रकृति (कुदरत) को माया कहा गया है और मोहका अन्धकार अज्ञान (गफलत) कहलाता है. इस प्रकार चौदह लोकोंका विस्तार हुआ है, जिसमें भगवान विष्णु (फरिश्ता) का मन चारों ओर व्याप्त है. शून्य मण्डलके इस खेलमें इसी मनमें पूरी दुनियाँका मन रमण करता है. यह गोलाकार ब्रह्माण्ड बीचमें है और इसके चारों ओर मोह तत्त्वका विस्तार है.

सबद जो सारे मोह लों, एक लवा ना निकस्या पार ।

खोज खोज ताही सबद को, फेर फेर पडे अंधार ॥ ३८

सांसारिक ज्ञान (अपरा विद्या) के शब्दोंकी पहुँच मोहतत्त्व पर्यन्त ही सीमित

है. शब्दका एक लव मात्र भी उससे आगे निकल नहीं पाया तथापि ज्ञानीजन उसी अपरा विद्याके शब्दोंके द्वारा परब्रह्मको खोजकर वारंवार अन्धकारमें पड़ जाते हैं.

केतेक बुजरक कहावहीं, सो याही सुन को चाहे ।

सो गले सब इतहीं, आगे न निकसे पाए ॥ ३९

ज्ञानी कहलाने वाले कितने साधक शून्यकी चाहना रखते हैं. ऐसे लोग शून्यमें ही विलीन हो जाते हैं, इससे आगे नहीं निकल पाते.

फिरे जहां से नारायन, नाम धराया निगम ।

सुन पार ना ले सके, हट के कहा अगम ॥ ४०

भगवान नारायणके श्वास (वेद) भी इसी शून्य निराकार तक पहुँचकर लौट आए और उन्होंने अपना नाम भी निगम रखा. शून्यके पार न पहुँचनेके कारण वेदोंने परमात्माको अगम (जहाँ पहुँचा नहीं जा सकता) कह दिया.

सुन की विध केती कहूं, ए इंड जाके आधार ।

नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार ॥ ४१

इस शून्य मण्डलका विस्तार कितना बताया जाए ? समस्त ब्रह्माण्डका आधार ही वही है. वेदने भी उसे नेति-नेति 'इसका अन्त नहीं है', ऐसा कहकर उसे अगम एवं अपार बताया.

अब नेक तो भी कहूं, सुन मंडल की सुध ।

जाको कोई ना उलंघे, अगम अगाध या विध ॥ ४२

फिर भी अगम्य एवं अपार कहे जाने वाले शून्य मण्डलका थोड़ा-सा परिचय तो करवा दूँ. वह इसलिए अगम्य या अगाध (गहन) है कि आज तक कोई भी उसे लाँघकर उस पार नहीं जा सका है.

इत नहीं तत्व गुन निरगुन, पख नहीं परमान ।

अंग ना इन्द्री जान ना आवन, लख नहीं निरमान ॥ ४३

इस शून्य मण्डलमें न कोई तत्त्व है, न गुण है, न ही यह निर्गुण है. इसका कोई पक्ष-आकार विशेष भी नहीं है. न इसके अङ्ग, इन्द्रियाँ हैं, न ही इनमें

आना-जाना होता है. इसलिए इसकी पहचान निश्चित नहीं होती है.

इत आद अंत ना थिर चर, नर ना कोई नार ।

अंधेर ना कछू उजाला, ना निराकार आकार ॥ ४४

इस शून्य मण्डलका आदि-अन्त भी नहीं है. इसे स्थिर या चलायमान भी नहीं कहा जा सकता. इसे नर या नारी - पुरुष या प्रकृति कुछ भी नहीं कह सकते. न यह अन्धेरा है न ही उजाला है. इस प्रकार यह साकार या निराकार दोनों ही नहीं है.

जिमी जल ना वाए अगनी, ना सबद सोहं आसमान ।

ना कछू जोति रूप रंग, नहीं नाम ठाम कोई बान ॥ ४५

इस शून्य मण्डलमें पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश तथा सोऽहं ध्वनि कुछ भी नहीं है. उसकी ज्योति, रूप, रङ्ग, नाम, स्थान या शब्द कुछ भी नहीं है.

ना जीव करम ना काल कोई, गंध नहीं बल ग्यान ।

तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावें सदा प्रवान ॥ ४६

न वहाँ जीवन है, न कर्म है, न ही कोई काल है. वहाँ सुगन्धि भी नहीं है, शक्ति भी नहीं है और ज्ञान भी नहीं है. सर्वदा प्रमाणभूत (अमर) कहे जाने वाले तीर्थंकर भी वहाँ विलय हो जाते हैं.

बीज बृख ना कमल फल, भंग ना कछू अभंग ।

मोहादिक एही सुन, बीच सरूप या संग ॥ ४७

वहाँ पर बीज भी नहीं, वृक्ष भी नहीं एवं फल भी नहीं है. वहाँ न कोई वस्तु मिटती हुई दिखाई देती है और न ही सदा अखण्ड रहती है. मोह तत्त्व तक इसी शून्य मण्डलका विस्तार है. इसीके साथ भगवान नारायण प्रकट हुए हैं.

तबक चौदे ख्वाब के, याको पेंडै नींद निदान ।

नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों कर करे पेहेचान ॥ ४८

ये चौदह लोक स्वप्नके हैं, इनका मूल निश्चय ही नींद है. परब्रह्म परमात्मा

इस स्वप्नसे परे हैं, इसलिए स्वप्नका जीव उन्हें कैसे पहचान पाएगा ?

ए ख्वाबी दम सब नींद लों, दम नींद के आधार ।

जो कदी आगे बल करे, तो गले नींद में निराकार ॥ ४९

इन सांसारिक जीवोंका मूल आधार निद्रा ही है और इनकी पहुँच भी वहीं तककी है। यदि कोई जीव उससे आगे बढ़नेके लिए किसी भी प्रकारसे प्रयास कर भी ले, तो भी वह उसी निद्रारूप निराकारमें ही विलीन हो जाता है।

जिनहूँ जैसा खोजिया, सब बोले बुध माफक ।

मैं देखे सबद सबन के, सो गए जाहेर मुख बक ॥ ५०

जिन लोगोंने जैसी खोज की उन्होंने अपनी बुद्धिके अनुसार उतना ही कह दिया। जिन्होंने अपनी वाणीमें जैसा कहा, उन सबके शब्दोंको मैंने उसीरूपमें परखा।

ए पुकार खोजी सुनके, हट रहे पीछे पाए ।

पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उझाए ॥ ५१

साधकोंने उनकी पुकार सुनकर उससे आगे जानेकी अपेक्षा अपने पैर पीछे खींच लिए। इसलिए निराकारके परेकी सुधि किसीको न हुई। वे सब इसी मोहमें ही उलझ रहे हैं।

यामें जो बुजरक हुए, सो सीतल भए इन भांत ।

ना सुध छल ना पार की, यों गले सुंन ले स्वांत ॥ ५२

इनमें जो विशेष ज्ञानी कहलाए हैं, वे भी शून्य-निराकारके कथनसे ही शान्त हो गए हैं। उन्हें न इस छल-कपटवाली मायाकी ही पहचान हुई और न ही छलके पार अक्षर तथा अक्षरातीतकी पहचान हुई। इसलिए वे शान्त होकर शून्यमें ही विलीन हो गए।

या विध तो भई नास्त, सो नास्त जानो जिन ।

सार सबद मैं देख के, लिए सो द्रढ कर मन ॥ ५३

इस प्रकार परमात्माके विषयमें 'नहीं हैं, नहीं हैं' ऐसा कहा जाने लगा किन्तु

ऐसा नहीं समझना कि परमात्मा नहीं हैं। वस्तुतः इन्हीं धर्मग्रन्थोंके सारतत्त्वको ग्रहण कर मैंने मनसे निश्चय किया कि परमात्मा हैं।

जिन जानो पाया नहीं, हैं पावन हार प्रवान ।

सो छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान ॥ ५४

ऐसा भी नहीं समझना कि परम तत्त्वको किसीने प्राप्त ही नहीं किया। उस तत्त्वको यथार्थ रूपसे पानेवाले भी इसी संसारमें हैं, किन्तु वे सब इस छल-छद्मरूप मायासे छिपकर रहते हैं। उनकी सुर-तान किसीसे नहीं मिलती।

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुछ ।

खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ ॥ ५५

परमात्माके ऐसे प्रेमी भक्त छल-प्रपञ्चपूर्ण विश्वकी दृष्टिसे छिपे रहते हैं। उनके लिए सांसारिक सभी वस्तुएँ सर्वथा तुच्छ हैं। वे तो अपने पियाके प्रेममें निमग्न रहकर अपना सर्वस्व भूल जाते हैं।

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास ।

प्रेमैं में मगन भए, ताए होए गयो सब नास ॥ ५६

ऐसे प्रेमी भक्तकी सुरता संसारमें न रहकर अपने प्रियतमके प्रकाशसे प्रकाशित रहती है। वह तो अपने प्रियतमके प्रेममें ही विभोर रहता है। भौतिक वैभव उसके लिए कोई महत्त्व नहीं रखते।

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए ।

सबद कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए ॥ ५७

वस्तुतः जो परमात्माके प्रेमी हैं, वे तो कहीं एकान्तमें छिपकर ही रहते हैं। उनके मुखसे किसी भी शब्दका उच्चारण नहीं होता। यदि उनके मुखसे कभी कोई शब्द निकल भी जाए तो ज्ञानी लोग उन शब्दोंका मर्म कैसे जान सकते हैं ?

सबद जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल ।

या विध कोई ना समझे, बात पडी है वल ॥ ५८

प्रेमके शब्द बहुत सीधे-सादे होते हैं किन्तु शास्त्रकारों और ज्ञानीजनोंके

शब्दोंमें चतुराई होती है. इस प्रकार शास्त्रोंका गूढ़ रहस्य कोई समझ नहीं पाया. जिससे ब्रह्म ज्ञानके सन्दर्भमें उलझनें बनी रहीं.

ए जो साधू सास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार ।

पर गुझ किन्हूं न पाइया, सोई सबद है पार ॥ ५९

ऐसे सन्त-महात्मा जिस प्रकार शास्त्रोंका अर्थ करते हैं, उसीको सारा संसार सुनता है किन्तु उनका गूढ़ रहस्य किसीने प्राप्त नहीं किया, अन्यथा उन शास्त्र वचनोंमें छिपे हुए रहस्य ही परमतत्त्वका अनुभव करवा सकते हैं.

देखे सारे सास्त्र, सो तो गोरख धंध ।

मूल कडी पाए बिना, देखीते ही अंध ॥ ६०

सारी दुनियाँके लोग शास्त्रको पढ़ते (देखते) हैं, किन्तु शास्त्र वचन ही उन्हें उलझा देते हैं. जब तक इनकी मूल कड़ी (सृष्टि रचनाके रहस्य) को पाया (समझा) न जाए, तब तक शास्त्र पढ़ने पर भी दृष्टि नहीं खुलती है.

ऐसा तो कोई ना मिल्या, जो दोनों पार प्रकास ।

मगन पियाके प्रेम में, भी स्यानप ग्यान उजास ॥ ६१

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जो स्वयं दोनों ओरसे प्रकाशित रहा हो, परब्रह्म परमात्माके प्रेममें भी मस्त रहे और शास्त्रोंकी चतुराई पूर्ण वचनोंको भी स्पष्ट कर सके.

जो कोई ऐसा मिले, सो देवें सब सुध ।

माणे गुझ बताए के, कहे वतन की विध ॥ ६२

यदि कोई ऐसा समर्थ व्यक्ति मिले जो सब प्रकारकी सुधि दे सके, तो वह शास्त्रोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करते हुए परमधामका भी बोध कराएगा.

सबद सारे वैराट के, बोलत अगम अगम ।

कोई ना कहे रसूल बिना, जो खुद पैं आए हम ॥ ६३

संसारके सभी धर्मग्रन्थोंके वचन परमात्माको अगम (अगम्य) कहते हैं. रसूलके बिना किसीने भी ऐसा नहीं कहा कि मैं परमात्मा (खुदा) के पाससे आया हूँ.

ए नबिए जाहेर कहा, मैं पार से आया रसूल ।

खुद की सुध सब ल्याइया, निद्रा न मेरा मूल ॥ ६४

पैगम्बर (नबी) ने स्पष्ट किया कि मैं सन्देशवाहक (रसूल) बनकर इस जगतके पारसे आया हूँ। मैं स्वयं परमात्माकी सुधि लेकर आया हूँ और यह नींद (शून्य) मेरा घर (मूल) नहीं है।

मैं कारज खसम के, ले आया फुरमान ।

आखर इमाम आवसी, तब मैं भी संग सुभान ॥ ६५

मैं तो परमात्माके कार्यके लिए उनका ही आदेश लेकर आया हूँ। अन्त समय (क्यामतकी वेला) में वे स्वयं सद्गुरु (इमाम) बनकर आएँगे, तब मैं भी उनके साथ रहूँगा।

मैं आया हुकम हाकिम का, पर आवेगा हाकिम ।

करसी कजा सबन की, तब संग आखर हम ॥ ६६

मैं परमात्मा (हाकिम) का आदेश (हुकम) स्वरूप बनकर आया हूँ, स्वयं परमात्मा (हाकिम) भी यहाँ आएँगे और समस्त संसारको न्याय (कजा) देंगे। उस समय मैं उनके साथ रहूँगा।

ए फुरमान तब बांचसी, इमाम आवसी जब ।

लिखियां जो इसारतें, सब जाहेर होसी तब ॥ ६७

जब सद्गुरु (इमाम) इस संसारमें आएँगे तब वे इस आदेश पत्र (कुरान) को पढ़ेंगे। इसमें जो भी सङ्केत लिखे गए हैं, वे उस समय प्रकट होंगे।

काजी कजा कर के, देसी परदा उडाए ।

परदा उडे सब उडसी, लेसी क्यामत उठाए ॥ ६८

उस समय न्यायाधीश (के रूपमें आए परमात्मा) सबका न्याय कर अज्ञान (अस्पष्ट ज्ञान) के आवरण (परदे) को दूर करेंगे। अज्ञानका आवरण हटते ही सब लोग इस संसारको नाशवान् समझेंगे, तब परमात्मा सबको अखण्ड मुक्तिप्रदान करेंगे।

खसम सुध सब देवहीं, गुझ बतावे कुरान ।

बातें कहे वतन की, पैगंमर परवान ॥ ६९

उस समय परब्रह्म परमात्मा सभीको सुधि देंगे और कुरानके गूढ़ रहस्य भी



स्पष्ट कर देंगे. वे परमधामकी सभी बातें (रहस्य) प्रकट कर पैगम्बरके कथनकी पुष्टि करेंगे.

ए सबद तो जाहेर कहे, पर आया न किनों यकीन ।

तो लगे सब छल को, हिंदू या मुसलमीन ॥ ७०

सभी धर्मग्रन्थोंमें बात तो स्पष्ट बताई गई है किन्तु किसीको भी इन वचनों पर विश्वास नहीं हुआ. इसलिए हिन्दू या मुसलमान सभी छल-कपटपूर्ण इस माया (अपरा विद्या)में ही लगे रहे.

ए सबद मैं द्रढ किए, पिया ना करे निरास ।

रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहेसों विलास ॥ ७१

इन सब वचनोंको मैंने दृढ़ता पूर्वक ग्रहण किया है कि प्रियतम धनी हमें निराश नहीं करेंगे. मेरी आत्मा कहती है कि इसी संसारमें प्रियतम परमात्माके साथ अवश्य विलास होगा.

नबी सबद मोहे मद चढ्यो, बाढ्यो बल महामत ।

अब एक छिन ना रहे सकूं, उड गई कहुंए स्वांत ॥ ७२

महामति कहते हैं, पैगम्बरके उन वचनोंके कारण मुझे प्रेमकी मस्ती चढ़ गई जिससे मेरा मनोबल और बढ़ गया. अब मैं अपने धनीसे मिले बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता. मेरा धैर्य कबका खो चुका है अर्थात् धनी मिलनकी आतुरता तीव्र हो रही है.

प्रकरण ५ चौपाई १४९

सनंध विरह तामस की

मैं चाहत न स्वांत इन भांत अजू आउध अंग चलें ,

इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर ।

दरद देहां जरद गरद रद करे ,

मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर ॥ १

मैं अपनी इन्द्रियरूपी शस्त्रको साथ लिए अपने प्रियतम धनीसे मिलनेके लिए आतुर हो रहा हूँ. अब मैं शान्ति नहीं चाहता. उनके विरहमें रोते-रोते

आँखोंसे अब आँसू बहने भी बन्द हो गए. प्रियतमकी विरह वेदनासे शरीर पीला होकर धूलके समान हो गया. अब मैं इस अस्थिर शरीरके द्वारा धनीजीसे मिलनेके लिए कैसे धैर्य धारण करूँ ?

कठिन निपट विकट घाटी प्रेमकी ,  
 त्रबंक बंकों सूरों किनों न अगमाए ।  
 धार तरवार पर सचर सिनगार कर ,  
 सामी अंग सांगा रोम रोम भराए ॥ २

प्रेमका मार्ग निश्चय ही बड़ा विकट तथा कठिन है. इस मार्गमें कर्म, उपासना और ज्ञानके तीन मोड़ हैं. इस लिए बड़े-बड़े शूरवीरों (तपस्वी, ज्ञानी) द्वारा भी इस मार्ग पर चला नहीं जाता. तलवारकी धारके समान तीक्ष्ण इस मार्ग पर शील, सन्तोष, धैर्य, क्षमा, दयारूपी शृङ्गार (कवच) धारण कर प्रवेश करो. सामनेसे शरीरके रोम रोमको बींधने वाले (निन्दा, उपालम्भके वचनरूपी) तीक्ष्ण नोंकवाले भाले भी चुभते हैं.

सागर नीर खारे लेहेरें मार मारे फिरें ,  
 बेटों बीच बेसुध पछाड खावें ।  
 खेलें मछ मिलें गलें ले उछालें ,  
 संधों संध बंधे अंधों यों जो भावे ॥ ३

यह जीव मोहसागरकी काम, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष आदि खारी लहरोंकी थपेड़ें खाता हुआ जन्म-मृत्युरूपी चक्रमें पड़कर थक जानेके बाद विभिन्न सम्प्रदायरूपी द्वीपोंमें आश्रय लेता हुआ बेसुध होकर भटकता है. जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछलीको निगल जाती है, उसी प्रकार ये सम्प्रदायवादी लोग भी स्वर्ग वैकुण्ठ आदिका प्रलोभन देकर सामान्य जनको अपनी ओर खींचते हैं. इस प्रकार झूठे प्रलोभनमें बँधे हुए अल्पज्ञ लोग उसी सम्प्रदायको श्रेष्ठ मानते हैं.

दाहो दसे दसों दिस सबे धखें ,  
 लाल झाला चलें इंड न झलाए ।  
 फोड आकास फिरे सिर सिखरों ,  
 ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए ॥ ४

दसों दिशाओं (दसों इन्द्रियों) में काम, क्रोध, लोभ, मोहादि अग्निकी ज्वाला

धधक रही है। उसकी लाल ज्वाला इस ब्रह्माण्डमें समा नहीं पा रही है। यह ज्वाला आकाशको चीरकर वैकुण्ठ तक पहुँची है एवं इस संसारसे छलाङ्ग लगाकर वैकुण्ठको भी लाँघकर शून्य निराकारसे पार परमात्मासे मिला देती है।

घाट      अवघाट      सिलपाट      अति      सलबली ,  
 तहां      हाथ      ना      टिके      पपील      पाए ।  
 वाओ      वाए      बढे      आग      फैलाए      चढे ,  
 जलें      पर      अनल      ना      चले      उडाए ॥ ५

प्रेमरूपी मार्ग (घाट) अत्यन्त विषम (अवघाट) है। उस पर हाथ (सुरता) भी नहीं टिकता और चींटीके पैर (मन) भी नहीं ठहर सकते। इच्छा तथा तृष्णासे भरे हुए पवनके चलने पर काम, क्रोधादिकी अग्नि और धधकती है। उससे आत्मारूपी पक्षीके प्रेम (इश्क) तथा विश्वास (ईमान) रूपी पंख जल जाते हैं। जिससे वह न तो चल सकता है और न ही उड़ सकता है।

पेहेन      पाखर      गज      घंट      बजाए      चल ,  
 पैठ      संकोड      सुई      नाके      समाए ।  
 डार      आकार      संभार      जिन      ओसरे ,  
 दौड      चढ      पहाड      सिर      झांप      खाए ॥ ६

शील, सन्तोषरूपी कवच पहनकर वेद कतेबके ज्ञानरूपी घण्टे बजाते हुए निर्भय होकर हाथीकी चालसे चलो। नम्रता, गरीबीके द्वारा शरीरको समेटकर सुईके छेदके समान सूक्ष्म प्रेमकी संकड़ी गलीमें प्रवेश करो। धनीके चरणोंमें स्वयंको समर्पित करनेमें पीछे मत हटो। पहाड़के समान ऊँचे वैकुण्ठ, शून्य, निराकारको पार कर परमधाममें छलाङ्ग लगाओ।

बोहोत      बंध      फंद      धंध      अजू      कै      बीच      में ,  
 सो      देखे      अलेखे      मुख      भाख      न      आवे ।  
 निराकार      सुंन      पार      के      पार      पीउ      वतन ,  
 इत      हुकम      हाकिम      बिना      कौन      आवे ॥ ७

इस संसारमें इन्द्रियोंके बन्धन, कर्मकाण्डके फन्दे तथा अज्ञानकी अनेक

उलझनें दिखाई देतीं हैं किन्तु मुखसे उनका वर्णन नहीं हो सकता. अपने पियाका धाम निराकार, शून्यके पार अक्षर तथा उससे भी परे है. उन परब्रह्म परमात्मा (हाकिम) की आज्ञाके बिना यहाँ पर कौन आ सकता है ?

मन तन वचन लगे तिन उतपन ,  
 आस पिया पास बांध्यो विस्वास ।  
 कहे महामति इन भांत तो रंग रति ,  
 दै पियाएं आग्या जाग करूं विलास ॥ ८

‘पिया निश्चय ही आएँगे’ इस आशाके साथ मेरे मन, तन, वचन और विश्वास बँधे हुए हैं. महामति कहते हैं, मैं इस प्रकार धनीके प्रेममें मग्न हूँ कि सद्गुरुकी आज्ञासे जागृत होकर प्रियतम धनीके साथ आनन्द विलास करूँ.

प्रकरण ६ चौपाई १५७

सनंध विरह इसक वृध की

तलफे तारुनी रे, दुलही को दिल दे ।  
 सनमंध मूल जानके, सेज सुरंगी पर ले ॥ १

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ (तरुणी) इस खेलमें आकर तड़प रही हैं. वे अपने धनीसे प्रार्थना करती हैं, हे धनी ! आप अपनी अङ्गनाओंको अपना प्रेम प्रदान करें और परमधामका मूल सम्बन्ध जान कर प्रेमरङ्ग भरी (सुरङ्गी) शय्या पर स्थान दें.

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस ।  
 न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस ॥ २

हमारा सम्पूर्ण शरीर ही विरहने निगल लिया है, जिससे रक्त, मांस सब गल गए हैं. श्वास-प्रश्वास भी इस प्रकार सूख गए हैं कि वे न अन्दर जाते हैं और न ही बाहर आते हैं.

हाड हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन ।  
 मांस मीज लोहू रगा, या विध होत हवन ॥ ३

प्रियतम धनीके विरहकी वेदीमें हड्डियाँ समिधा (लकड़ी) बन गई हैं. सिर

नारियल बना है, और मांस-मज्जा-रक्त तथा नसें हवन सामग्रीके समान हो गए हैं. इस प्रकार विरहाग्निमें शरीरके अङ्गोंका हवन हो रहा है.

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार ।

पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार ॥ ४

हमारे लिए शरीरके रोम रोमको सूली पर चढ़ाना और तलवारकी तीक्ष्ण धारसे शरीरको काट कर टुकड़े-टुकड़े कर देना सहज बन गया है. हे प्रियतम धनी ! इस प्रकार असह्य विरहमें पड़ी हुई अपनी आत्माओंके दुःखके बारेमें पूछ तो लीजिए.

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजें घाए ।

ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाए ॥ ५

विरहका दर्द तो वही जान सकता है जिसके हृदयमें प्रियतमके वियोगका घाव लगा हो. इस घावको मिटानेकी कोई औषधि भी नहीं है. इसका दर्द तो प्रतिपल बढ़ता (फैलता) ही जाता है.

ए दरद तेरा कठिन, भूषण लगे ज्यों दाग ।

हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग ॥ ६

हे धनी ! आपके वियोगकी पीड़ा अति कठिन है. मानों हीरा जड़ित सुवर्णके आभूषण तथा रेशमी वस्त्रोंकी शय्या, ये सब शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें दाह उत्पन्न कर रहे हैं.

विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए ।

अंग अपने बैरी हुए, सब तन लियो है खाए ॥ ७

परब्रह्म परमात्माकी विरहिनी आत्माको अपने पियाके मिलनके बिना शान्तिका दूसरा कोई उपाय नहीं है. उनको लगता है कि अपने ही गुण, अङ्ग और इन्द्रियां शत्रु बनकर अपने ही शरीरको खा रहीं हैं.

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह अंगना न सोहाए ।

रतन जडित जो मंदर, सो उठ उठ खाने धाए ॥ ८

हे प्रियतम धनी ! आपके विरहसे पीड़ित आत्माओंके ये लक्षण हैं कि उनके

लिए घरका आँगन भी नहीं सुहाता है और रत्न जड़ित मन्दिर (घर आदि सांसारिक वैभव) भी क्यों न हों, वे सबके सब उठ-उठकर मानों खानेके लिए दौड़ते हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए ।

राज पृथ्वी पांव दांब के, निकसी या विध होए ॥ ९

ऐसी विरहिणी न तो शान्तिसे बैठ सकती है और न ही सो सकती है। सम्पूर्ण पृथ्वीका राज भी उसे मिल जाए तो भी वह उसको अपने पैरोंके तले कुचलकर आगे निकल जाएगी।

विरहा न देवे बैठने, उठने भी ना दे ।

लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले ॥ १०

इस प्रकार विरहकी तीव्रता विरहिणीको न तो चैनसे बैठने देती है और न ही खड़ी होने देती है। इतना ही नहीं वह विरह-व्याकुल होकर जमीन पर करवटें भी नहीं बदल सकती, मात्र हाय-हाय करती हुई गहरी श्वासें ही भरती है।

आठों जाम विरहनी, जब स्वांस लियो हूक हूक ।

पथर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक ॥ ११

वियोगिनी आत्माने जब आठों प्रहर गहरी श्वासें लेकर अन्तरकी ज्वालाको प्रकट किया, तो उसके सामने श्याम शिलाके समान कठोर हृदय भी गल पिघलकर टुकड़े-टुकड़े हो गए।

ए विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान ।

परदा बीच टालने, तार्थें विरहा परवान ॥ १२

हे मेरे प्रियतम धनी ! इस प्रकार आपने मुझे अपनी प्यारी अङ्गना जानकर अपना विरह प्रदान किया। निश्चय ही हमारे बीच पड़े हुए मायाके परदेको हटानेके लिए ही आपने अपना विरह दिया है।

प्रकरण ७ चौपाई १६९

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिलके विछुरी होए ।  
ज्यों मीन विछुरी जलथें, या गत जाने सोए मेरे दुलहा ।  
तारुनी तलफे विलखे विरहनी ,  
विरहनी विलखे कलपे कामनी ॥ (टेक) ॥ १

विरहकी गति तो वही जान सकती है जो आत्मा अपने प्रियतम परमात्मासे मिलकर विछुड़ गई हो. हे मेरे प्रियतम धनी ! जिस प्रकार जलसे विछुड़कर मछली तड़पती रहती है, वही गति विरहिणी आत्माकी होती है. विरहिणी आत्माएँ इस झूठे संसारमें आकर तड़पती हुई विलख रही हैं.

विछुरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सोहागिन ।  
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, होए गई सब अगिन ॥ २  
हे धनी ! सुहागिनी आत्माएँ आपका वियोग कैसे सहन कर सकती हैं ? आपके बिना पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों ही आगके समान लग रहे हैं.

विरहा जाने विरहनी, वाको आग न अंदर समाए ।  
सो झालें बाहेर पडी, तिन दियो बैराट लगाए ॥ ३  
विरहिणी आत्मा ही विरहकी पीड़ा समझ सकती है क्योंकि उसके हृदयमें विरहाग्नि समा नहीं पाती. उसकी (दाहक) ज्वालाएँ हृदयसे बाहर निकल कर पूरे ब्रह्माण्डको जला रहीं हैं.

विरहा न छूटे वल्लभा, जो पडे विघन अनेक ।  
पिंड ना देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक ॥ ४  
अनेक विघ्न-बाधाएँ आने पर भी धामधनीका विरह उनसे छूट नहीं पाता. ऐसी आत्माको न तो अपने शरीरकी सुधि होती है और न ही ब्रह्माण्डकी, वह तो केवल अपने प्रियतम धनीको ही प्राप्त करना चाहती है.

विरहिन विरहा बीच में, कियो सो अपनो घर ।  
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर ॥ ५  
विरहिणी आत्माने तो विरहके बीच ही अपना घर बना लिया है. वह कहती

है कि यदि मुझे चौदह लोकोंका साम्राज्य भी मिले, तो भी हे प्रियतम !  
मैं आपके विरहके ऊपर उसे न्योछावर कर दूँ.

आँधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उडाए ।

विरहिन गिरी सो ना उठ सकी, रही मूल अंकुर भराए ॥ ६

प्रियतम धनीके विरहकी आँधी आई है, उसने समस्त संसारको तूलके समान उड़ा दिया. उसकी चपेटमें विरहिणी इस प्रकार गिर गई कि वह उठ न सकी क्योंकि उसके मनमें प्रियतमके सम्बन्धका मूल अंकुर भरा हुआ है.

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार ।

दौडत हों निसवासर, कहूं बेट न पाइए पार ॥ ७

प्रियतमका विरह सागरके समान हो गया है, जिसमें विरहिणी आत्मा मछली बनकर तैर रही है. ऐसे समयमें मैं इधर-उधर दौड़ लगाती हुई फिर रही हूँ, फिर भी मुझे न कोई आश्रय स्थान मिलता है और न ही किनारा मिलता है.

प्रकरण ८ चौपाई १७६

राग मलार

इसक बडा रे सबन में, ना कोई इसक समान ।

एक तेरे इसक बिना, उड गई सब जहान ॥ १

संसारमें प्रेम सबसे बड़ी वस्तु है. परमात्माके प्रेमसे अधिक मूल्यवान कोई भी वस्तु नहीं है. हे धनी ! एक आपके प्रेमके बिना यह संसार उड़ गया है अर्थात् सारहीन हो गया है.

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुन ।

न्यारा इसक हिसाब थें, जिन देख्या पीउ वतन ॥ २

चौदह लोकोंका मूल्याङ्कन होता है. शून्य, निराकार, निरञ्जन तककी भी गणना हो सकती है. किन्तु जिस प्रेमके द्वारा आत्माने पियाका घर-परमधाम देख लिया है, वह प्रेम सर्वदा मूल्याङ्कनसे परे है.



लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हृद बेहद ।

न्यारा इसक जो पीउका, जिन किया आद लों रद ॥ ३

लोक (चौदह लोक), अलोक (शून्य, निराकार, निरञ्जनादि) का तथा हृदसे लेकर बेहद भूमि तकका भी निरूपण हो सकता है किन्तु परब्रह्म परमात्माका प्रेम इन सबसे न्यारा है, जिसने इस संसारको आरम्भसे ही अस्तित्वहीन (रद) बना दिया है।

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन ।

न्यारा इसक हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन ॥ ४

इस ब्रह्माण्डमें एक अर्थात् भगवान आदिनारायण (क्षरब्रह्म) एवं अनेक-संसार तथा निराकार निरगुण आदि सबका निरूपण हो सकता है। हे प्रियतम धनी ! प्रेम तो इन सबसे अलग है। ऐसा प्रेम प्राप्त कर विरहिणी अपने प्रियतमके अतिरिक्त किसी अन्यको देख ही नहीं पाती।

और इसक कोई जिन कथो, इसके ना पोहोंच्या कोए ।

इसक तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन सबद ना होए ॥ ५

प्रेमका वर्णन नहीं हो सकता क्योंकि कोई भी शब्द उस तक नहीं पहुँच पाता। प्रेम तो वहाँ तक पहुँच जाता है, जहाँ शून्य और शब्द दोनों ही नहीं हैं।

नाहीं कथनी इसक की, और कोई कथियो जिन ।

इसक आगे चल गया, सबद समाना सुन ॥ ६

प्रेमका विवेचन नहीं हो पाता और कोई इसका विवेचन भी न करे, क्योंकि ये सारे शब्द तो निराकारमें ही विलीन हो जाते हैं, जब कि प्रेम तो उससे भी आगे बढ़कर परमधाम तक चला जाता है।

सबद जो सूक्या अंगमें, हले नहीं हाथ पाए ।

इसक बेसुध ना करे, रही अंदर विलखाए ॥ ७

विरहिणीके शब्द तो उसके अङ्ग (कण्ठ) पर ही सूख जाते हैं। उसके हाथ एवं पैरका हिलना भी बन्द हो जाता है। यह प्रेम विरहिणीको बेसुध भी नहीं होने देता। विरहिणी तो दिन-रात अन्दर ही अन्दर विलख-विलख कर रोती रहती है।

पापन पल ना लेवहीं, दसों दिस नैन फिराए ।

देह बिना दौड़े अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाए ॥ ८

प्रेमीकी आँखोंकी पलकें भी नहीं झपकती हैं. वह धनीको निहारनेके लिए दसों दिशाओंमें आँखें दौड़ाती है. प्रेमकी मस्तीमें वह बिना शरीरके भी अन्दर ही अन्दर दौड़ लगाती है कि प्रियतम धनी कहाँ मिलेंगे और मैं कहाँ जाऊँ ?

इसक को एह लछन, जो नैनों पलक ना ले ।

दौड़े फिरे ना मिल सके, अंदर नजर पियामें दे ॥ ९

प्रेमके ये ही लक्षण हैं कि प्रियतमके दर्शनके लिए आँखें पलक तक नहीं झपकतीं. विरहिणी अपने प्रियतमकी छविको अपने हृदयमें स्थापितकर उनसे प्रत्यक्ष मिलनके लिए बाहर दौड़ लगाती है किन्तु प्रियतम उसे मिल नहीं रहे हैं.

नजरों निमख ना छूटहीं, तो नहीं लागत पल ।

अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल ॥ १०

प्रियतमाके लिए परमात्मा उसकी दृष्टिसे एक क्षणके लिए भी ओझल नहीं होते. इसलिए उसकी पलकें बन्द नहीं होतीं. वस्तुतः आत्मासे तो परमात्मा अलग (दूर) नहीं हैं, किन्तु इसी शरीरसे प्रत्यक्षरूपसे मिले बिना अन्तरकी दाह नहीं मिटती.

जो दुख तुमहीं विछुरे मोहे लाग्यो तासों प्यार ।

एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार ॥ ११

हे प्रियतम धनी ! आपके वियोगमें जो दुःख प्राप्त हुआ, उसीसे मुझे प्रेम हो गया है. आपके वियोगमें भी इतना सुख है तो आपके साथ विहार करने पर कितना आनन्द होगा ?

प्रकरण ९ चौपाई १८७

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए ।

अब छल बल मोहे क्या करे, मोह आद थें दियो है उडाए ॥ १

अपना मूल परमधामका सम्बन्ध होनेके कारण अपने प्राण वल्लभ परमात्माको क्षण भरके लिए भी मेरेसे छोड़ा नहीं जा सकता. अब यह छलवती माया मेरा क्या बिगाड़ सकती है ? जबकि सद्गुरु धनीने मेरे मनसे सांसारिक मोह-ममताको मूलसे ही उड़ा दिया है.

दरद जो तेरे दुलहा, कर डार्यो सब नास ।

पर आस ना छोडे जीवको, करने तुम विलास ॥ २

हे मेरे प्यारे धनी ! आपके विरहकी पीड़ाने मेरा सब कुछ नष्ट कर दिया है, फिर भी आपके साथ प्रत्यक्ष मिलकर अलौकिक आनन्द प्राप्त करनेकी आशामें जीवने नश्वर शरीरको धारण कर रखा है.

मैं कहावत हों सोहागनी, जो विरहा न देऊं जीउ ।

तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पीउ ॥ ३

मैं तो प्रियतम धनीकी सुहागिन कहलाती हूँ. यदि मैं अपने जीवको धनीके विरह पर समर्पित न करूँ, तो परमधाममें जाकर श्रीराजजीको कैसे अपना मुख दिखा पाऊँगी ?

विरहा ना छोडे जीव को, जीव आस भी पीउ मिलन ।

पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सोहागिन ॥ ४

हे मेरे प्रियतम धनी ! आपका विरह मेरे जीवको नहीं छोड़ता है और जीव भी प्रियतम मिलनकी आशामें शरीरसे जुड़ा हुआ है. इसी देहसे प्रिय मिलनका सुख पानेका गौरव प्राप्त कर सकूँ, तभी तो मैं सुहागिनी आत्मा कहलाऊँगी.

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस ।

ए भी विरहा पीउ का, आस भी पिया विलास ॥ ५

प्रियतमका विरह और जीवकी प्रिय मिलनकी आशा इन दोनोंमें परस्पर लड़ाई-सी ठनी हुई है. (इधर प्रिय विरहमें प्राण निकलना चाहते हैं और

उधर सशरीर पिया मिलनकी आशा लगी हुई है). वैसे तो विरह भी प्रियतमका ही दिया हुआ है और आशा भी प्रियमिलनकी ही है.

**जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम ।**

**विरहा आगे कहा जीव, ए केहेत लगत मोहे सरम ॥ ६**

धनीके विरहमें यदि अपने जीवको समर्पित करनेमें मुझे संकोच हुआ तो मेरा अनन्य भाव (पतिव्रता धर्म) कैसे रहेगा ? वस्तुतः विरहके समक्ष जीवका क्या अस्तित्व है ? फिर भी जीवको समर्पित करनेकी बात कहते हुए मुझे लज्जा होती है.

**माया काया जीवसों, भांन भूँन टूक कर ।**

**विरहा तेरा जिन दिस, मैं वारूँ तिन दिस पर ॥ ७**

इस जीवके साथ मायावी शरीर जुड़ा हुआ है. उसको टुकड़े-टुकड़े कर आपके विरहकी दिशामें समर्पित कर दूँ.

**जब आहे सूकी अंगमें, स्वांस भी छोड्यो संग ।**

**तब तुम परदा टाल के, दियो मोहे अपनो अंग ॥ ८**

हे प्रियतम धनी ! आपके विरहमें जब मेरी आह मेरे होंठोंमें सूख गई, श्वास लेना तक कठिन हो गया, तब आपने मायाका परदा दूर कर मुझे अपना आवेश प्रदान किया.

**मैं तो अपना दे रही, पर तुमहीं राख्यो जीउ ।**

**बल दे आप खडी करी, कछू कारज अपने पीउ ॥ ९**

मैंने तो स्वयंको आपके ऊपर समर्पित कर दिया था, किन्तु हे प्रियतम धनी ! आपने अपने जागनी कार्यके लिए ही मुझे आत्म-बल प्रदान कर खड़ा रखा है.

**जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन ।**

**आस भी पूरी सोहागनी, वृध भी राख्या विरहिन ॥ १०**

आपने अपने कार्यके लिए मेरे प्राणोंको बचाए रखा. मुझ सुहागिनीकी प्रत्यक्ष धनी मिलनकी आशा भी पूरी कर दी और मेरा आग्रह (विरहिणीके हठको) भी पूर्ण किया.

तुम आए सब आइयां, दुख गया सब दूर ।

कहे महामति ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर ॥ ११

मेरे हृदय मन्दिरमें आपके पधारने पर मुझे सब कुछ प्राप्त हो गया। अब तो वियोगका दुःख भी जाता रहा। महामति कहते हैं, मैं इस आनन्दका वर्णन कैसे करूँ जिसके कारण मेरे हृदयमें मूल अङ्कुर (परमधामका मूल सम्बन्ध) उदय हुआ है।

प्रकरण १० चौपाई १९८

सनंथ विरहके प्रकासकी

एह बात मैं तो कहूं, जो केहने की होए ।

एह इमामें रीझ के, दया करी अति मोहे ॥ १

परब्रह्म परमात्माके मिलनकी बात यदि इन सीमित शब्दों द्वारा कहने योग्य होती, तो मैं अवश्य कहता, परन्तु मेरे सद्गुरु प्रसन्न होकर मुझसे यह सब दयापूर्वक कहलवा रहे हैं।

सुनियो बानी मोमिनों, दीदार दिया हकें जब ।

परदा सारा उड गया, हुआ उजाला सब ॥ २

हे ब्रह्मात्माओ ! मेरी बातोंको ध्यान देकर सुनो। जब मुझे मेरे प्राणवल्लभ धनीने दर्शन दिए तबसे मेरे हृदयसे अज्ञानका परदा हट गया और हृदयमें ज्ञानका प्रकाश छा गया।

कह्या जो नबिएं इमाम, ए तिन खुद खोले द्वार ।

दरवाजे सब खोल के, मोहे देखाया पार ॥ ३

कुरानमें रसूल साहेबने जिन इमामकी बात की है, उन्होंने ही स्वयं आकर परमधामके द्वार खोल कर मुझे मायासे परे परमधामके दर्शन करवाए हैं।

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग ।

ता दिन थें मेहेर पसरी, पल पल चढते रंग ॥ ४

मेरे सद्गुरु धनीने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने पास बैठाया और अपना

आवेश प्रदान किया। उस दिनसे दिनोंदिन उनकी अनुकम्पा वृद्धि होने लगी और प्रेमका रङ्ग पल-पल चढ़ता ही गया।

मिलाप हुआ जब मेहेदी से, तब कहा महामति नाम ।

अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम ॥ ५

जब सद्गुरु धनीसे मेरा मिलन हुआ, तब उन्होंने मुझे महामतिकी संज्ञा प्रदान की। अब मैं धनीकी अङ्गनाके रूपमें प्रकट हो गई हूँ और मुझे अखण्ड परमधामका साक्षात्कार भी हो गया।

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान ।

नजरोँ सब जाहेर हुआ, उड गया उनमान ॥ ६

मेरे सद्गुरुने मुझे परमधामकी सारी बातें कहीं। मैंने वहाँके एक-एक चिह्न (निशान) को देखा। मेरी दृष्टिमें परमधामके सभी चिह्न स्पष्ट होनेसे ब्रह्म विषयक सभी कल्पनाएँ उड़ गईं।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत ।

ए मेहेर जुबां क्यों कर कहूं, गई मूल से गफलत ॥ ७

तभी मैंने स्वयंको पहचाना और परब्रह्म परमात्माके साथका अपना सम्बन्ध भी सत्य सिद्ध हुआ। इस जिह्वासे सद्गुरुकी कृपाका वर्णन कैसे करूँ ? उनकी कृपासे अज्ञानताकी नींद मूलसे ही चली गई।

ए झूठी अबलों न जानती, क्या है क्यों उतपत ।

सो अब सब विध समझी, यों होसी फना कुदरत ॥ ८

वस्तुतः आज तक मैंने इस झूठी मायाको पहचाना नहीं था कि यह क्या है और इसकी उत्पत्ति क्यों हुई है ? अब यह सब मेरी समझमें आ गई कि यह प्राकृतिक रचना स्वभावतः नाश होने वाली है।

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप ।

कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप ॥ ९

मेरे धनीने अपना आवेश देकर मुझे युक्तिपूर्वक जाग्रत किया एवं अखण्ड सुख दिया। इस प्रकार स्नेह पूर्वक मेरे हृदयमें आकर मुझमें एकरूप हो गए।

खासी जान खेडी जिमी, जल सींचिया खसम ।

बोया बीज वतन का, सो उया वाही रसम ॥ १०

मेरे हृदयरूपी धरतीको उर्वरा जानकर उन्होंने उस पर ज्ञानरूपी हल चलाया और प्रेमका जल सींचकर उसमें परमधामका तारतम ज्ञानरूपी बीज बो दिया, जो अपनी गरिमाके अनुरूप उगने लगा.

बीज रूह संग निज बुध के, सो ले उठिया अंकूर ।

या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर ॥ ११

तारतम ज्ञानरूपी वह बीज मेरा आत्म बल और अक्षरब्रह्मकी बुद्धिका संग पाकर परमधामके मूल सम्बन्धके रूपमें अङ्कुरित हुआ. अब मैं अपनी इस नश्वर जिह्वासे उस अङ्कुर (सम्बन्ध) एवं दिव्य प्रकाशका वर्णन कैसे करूँ ?

ना तो एह बात जो गुझ की, सो क्यों होवे जाहेर ।

पर मोमिन प्यारे मुझको, सो कर ना सकूं अंतर ॥ १२

अन्यथा ये सब रहस्यमयी (गुह्य) बातें कैसे प्रकट की जा सकती हैं ? किन्तु परब्रह्म परमात्माकी सुहागिन आत्माएँ मुझे प्रिय हैं, मैं उनसे किसी भी प्रकारका अन्तर नहीं रख सकता.

तो भी कहूं नेक नूर की, कछुक इसारत अब ।

पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी मिलसी सब ॥ १३

इसलिए अब मैं सङ्केत मात्रसे ही तारतम ज्ञानके प्रकाशका वर्णन करता हूँ. जब इसका प्रकाश सर्वत्र फैल जाएगा, तो उसे देखकर संसारके सब लोग एकत्र हो जाएंगे.

ए जो बिरहा वीतक कही, इमाम मिले जिन सूल ।

अब फेर कहूं निज नूर की, जासों पाइए माएने मूल ॥ १४

अब तक मैंने इस प्रकार विरह पूर्वक खोजकी बातें तथा मुझे सद्गुरुका मिलन किस प्रकार हुआ वह वृत्तान्त सुनाया. अब मैं पुनः तारतमके प्रकाशमें वही सब कह रहा हूँ, जिससे मूल अर्थ स्पष्ट हो जाएंगे.

सुनियो रूहें मोमिनों, जो इन मासूक की विरहिन ।

जो चाहे मेहेदी महंमद को, मैं ताए कहूं वचन ॥ १५

हे प्रियतम धनीकी विरहिणी ब्रह्मात्माओ ! सुनो. जो सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (महदी मुहम्मद) को चाहने वाली हैं, मैं उनके लिए ही यह वचन कह रह रहा हूँ.

ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाही विरहा ताए ।

या विध विरहा उदम की, जो कोई किया चाहे ॥ १६

मैंने इस प्रकार विरहके लक्षण कहे हैं. उन्हें विरहिणीके सम्पूर्ण लक्षण मत समझ लेना. प्रिय मिलनकी चाहसे जो विरहमें निमग्न होना चाहते हैं, उनके लिए करने योग्य प्रयत्नोंका ही यहाँ पर दिग्दर्शन हुआ है.

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारो धरम ।

विरहिन कबू ना करे, यों विरहा अनुकरम ॥ १७

जिस प्रकार यह विरह उत्पन्न हुआ है, उसे प्रकट करना हमारा धर्म नहीं है. विरहिणी आत्माएँ कभी भी इस प्रकार विरहकी (क्रमबद्ध) साधना नहीं कर सकतीं.

विरहा सुनते मासूक का, आहे ना उड गई जिन ।

ताए वतन रूहें यों कहे, नाहीन ए विरहिन ॥ १८

अपने प्रियतम धनीका वियोग सुनते ही जिस विरहिणीके प्राण न निकल जाएँ, उसके लिए परमधामकी आत्माएँ यही कहेंगी कि यह तो सच्ची विरहिणी नहीं है.

जो होए आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध ।

सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहाँ से बुध ॥ १९

जो स्वयं विरहिणी (विरहसे व्याकुल) होती है, उसमें विरहका वर्णन करनेकी सुधि ही कहाँ रहती है ? अपने प्रियतमके विरहकी बात सुनते ही उसके प्राण निकल जाते हैं, तो फिर उसमें कुछ कहनेकी बुद्धि ही कहाँ रहेगी ?



पतंग कहे पतंग को, कहां रह्यां तूं सोए ।

मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे ॥ २०

यदि कोई पतङ्गा दूसरे पतङ्गासे जाकर यह कहे कि अरे दीवाने ! तू कहाँ सोया था ? मैं तो दीपक देखकर आया हूँ, चल, तुझे भी उसके दर्शन कराऊँ.

या तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें ।

पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए ॥ २१

तब दूसरा पतङ्गा कहता है, तुमने जो देखा है या तो वह दीपक नहीं था या फिर तू पतङ्गा नहीं है. पतङ्गा तो उसे कहा जाता है जो दीपकको देखते ही तत्क्षण झपट पड़े और जल मरे.

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे ।

तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए ॥ २२

जो पतङ्गा दीपकको देखकर दूसरे पतङ्गेको उसकी सुधि देने लगे, तो उस पर अवश्य हँसी होगी. उसको देखकर सभी यह कहेंगे कि यह तो पतङ्गा ही नहीं है.

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राख के अंग ।

आए देवे सुध औरको, ताए क्यों कहिए पतंग ॥ २३

जो दीपककी ज्योतिको देखकर भी अपनी देहको यथावत् रखता हुआ लौट आए एवं दूसरोंसे उस दीपककी चर्चा करने लगे, उसे पतङ्गा कैसे कहा जा सकता है ?

मैं तो वीतक तब कही, जब लई मासूकें उठाए ।

जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए ॥ २४

किन्तु ये वचन मैंने तब कहे, जब मेरे सद्गुरु धनीने अपना आवेश देकर मुझे विरहसे उबार लिया. जब तक मैं विरहमें था तब तक मेरे मुखसे कोई भी शब्द कैसे कहे जाते ?

ए तो विरहा उपज्या ख्वाब में, चढते चढते पाए ।

जब विरहा तामस बढ्या, तब नींद दर्ई उडाए ॥ २५

यह विरह तो स्वप्नमें उत्पन्न हुआ है फिर भी इतना आगे बढ़ता गया कि विरह और तामस दोनों एक साथ हो गए जिससे मेरी नींद ही उड़ गई अर्थात् आत्मा जागृत हो गई.

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार ।

सोहागिन अंग इमाम को, वतन पार के पार ॥ २६

वास्तवमें सुहागिनी आत्माके अतिरिक्त इस संसारमें अन्य किसीको भी विरह नहीं हो सकता क्योंकि सुहागिनी सद्गुरुकी अङ्गना है. उसका घर क्षर, अक्षरसे भी आगे अक्षरातीत परमधाम है.

अब कहूं मोमिन की, जाए कहिए सोहागिन ।

ए विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन ॥ २७

अब मैं ब्रह्मात्माओंकी बात करूँ, जो परब्रह्म परमात्माकी सुहागिनी कहलाती हैं. ये विरहिणी आत्माएँ इस ब्रह्माण्डमें आज तक नहीं आई थीं.

सो सोहागिन जेतियां, इमाम की विरहिन ।

सो अंतर हकें पकडी, ना तो रहे ना तन ॥ २८

परब्रह्म परमात्माकी जितनी भी सुहागिनी आत्माएँ हैं, वे ही सद्गुरुकी विरहिणी हैं. उनके हृदयमें विराजकर प्रियतम परमात्माने उन्हें पूर्ण सहारा दिया है, अन्यथा उनका शरीर ही नहीं रह पाता.

ए सुध दर्ई इमामें, मोहे गुझ कियो प्रकास ।

तो ए जाहेर होत है, गयो तिमर सब नास ॥ २९

सद्गुरु धनीने मुझे यह सुधि दी और इस गूढ़ रहस्यको मेरे हृदयमें प्रकाशित कर दिया. इसलिए ये सब रहस्य अब प्रकट हो रहे हैं और सारा अज्ञानरूपी अन्धकार नाश हो गया है.

मेहेदी महंमद प्यारे मोमिन, सो जुबां कह्यो ना जाए ।

पर हुआ है मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए ॥ ३०

सुहागिनी आत्माएँ सद्गुरु धनी (मुहम्मद महदी) को कितनी प्यारी हैं, उसका

वर्णन इस जिह्वासे नहीं हो सकता, किन्तु मेरे सद्गुरु धनीने मुझे जो आदेश दिया है, उसे अब कैसे ढँका जा सकता है ?

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत ।

ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए देत ॥ ३१

इस जगतमें बहुत-से साधक अनेक प्रकारकी उपासनाएँ करते हैं और बहुत-से लोग विरह भी करते हैं परन्तु ब्रह्मानन्दका यह अलौकिक सुख उन्हें स्वप्नमें भी अप्राप्य है हमारे सद्गुरु हम ब्रह्मसृष्टियोंको जागृत कर इसे दे रहे हैं.

छल तें मोहे छुड़ाए के, कछू दियो विरहा संग ।

सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनो अंग ॥ ३२

इस छलरूपी संसारके मोहसे छुड़ाकर मेरे सद्गुरु धनीने मुझे वियोगका थोड़ा-सा अनुभव करवाया. फिर विरहके पश्चात् अपना आवेश देकर तथा मेरे हृदय मन्दिरमें विराजमान होकर मुझे इस विरहानुभूतिसे भी मुक्त कर दिया.

अंग नूर बुध देए के, कहे तूं प्यारी मुझ ।

देने सुख सबन को, हुकम करत हूं तुझ ॥ ३३

उन्होंने अपना आवेश (अङ्ग) जोश एवं जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान) देकर मुझे यह कहा कि तुम मेरी प्यारी अङ्गना हो. सचराचर प्राणी मात्रको अखण्ड सुख देनेके लिए मैं तुझे आदेश देता हूँ.

तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सब सुख तुम हस्तक ।

दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक ॥ ३४

तुम दुःख पाओगे तो उससे मुझे और कष्ट होगा, इसलिए अब सारे सुख तुम्हारे हाथमें सौंप दिए हैं. इस दुनियाँमें चौदह लोकोंके प्राणी तुम्हारा दिया हुआ ही सुख प्राप्त करेंगे.

दुख पावत हैं मोमिन, सो हम सह्यो न जाए ।

हम भी होसी जाहेर, पर पेहेलें सोहागनियां जगाए ॥ ३५

सुहागिनी आत्माएँ दुःख पा रही हैं, यह मुझसे सहा नहीं जाता. इसलिए

पहले सुहागिनीयोंको जागृत कर मैं स्वयं भी तुम्हारे अन्तरमें प्रकट हो जाऊंगा.

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन ।

प्रकास होसी तुझ से, द्रढ कर देख मन ॥ ३६

उन्होंने यह भी कहा था कि इस दायित्वको शिरोधार्य कर ब्रह्मसृष्टियोंको जाग्रत करनेके लिए उठकर खड़ी हो जाओ. इस बातको अपने मनमें भी दृढ़ता पूर्वक धारण कर लो कि तुमसे ही ज्ञानका यह प्रकाश ब्रह्माण्डमें फैलेगा.

तोसों ना कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार ।

ए माएने गुझ बताए के, खोल दे पार द्वार ॥ ३७

मैंने तुमसे कोई अन्तर नहीं रखा है. तुम तो पियाकी सुहागिनी अङ्गना हो. इसलिए धर्मग्रन्थोंके सत्य वचनोंका गूढ़ार्थ खोलकर सबको अखण्ड परमधामकी पहचान करवा दो.

जो कबूं जाहेर न हुई, सो ए करी तुझे सुध ।

अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध ॥ ३८

जो रहस्यमय ज्ञान आज तक प्रकट नहीं हुआ है उसकी तुम्हें इस प्रकार सुधि करवा दी है. आजसे अक्षरब्रह्मकी बुद्धि और तारतम ज्ञानके प्रतापसे आदि-अनादि (क्षरब्रह्माण्डसे लेकर अक्षर अक्षरातीत तक) का ज्ञान इस संसारमें प्रकट होगा.

तोहे तो सब सुध परी, कहूं अटके नहीं निरधार ।

आगे होए सोहागनी, कराओ सबों दीदार ॥ ३९

तारतम ज्ञानके द्वारा तुम्हें सभी बातोंकी सुधि हो गई है, निश्चय ही अब तुम्हें कहीं अटकना (रुकना) नहीं पड़ेगा. तुम ही अग्रणी बनकर सब आत्माओंको भी साक्षात्कार करवा दो.

चौदे तबक कायम होएसी, सब हुकम के प्रताप ।

ए सोभा तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप ॥ ४०

परब्रह्म परमात्माके आदेशके प्रतापसे चौदह लोकोंके सभी प्राणी अखण्ड

हो जाएँगे अर्थात् एकरूप हो जाएँगे. हे सुहागिनी (इन्द्रावती) ! यह सम्पूर्ण शोभा तुझे मिलेगी. तुम स्वयंको मुझसे भिन्न मत समझना.

**जो कोई सबद संसारमें, ना खुले माएने कब ।**

**सो सब खातर मोमिनों, तूं खोलसी माएने अब ॥ ४१**

संसारमें जितने धर्मग्रन्थ हैं उनके गूढ़ार्थ आज तक स्पष्ट नहीं हुए हैं. ब्रह्मात्माओंके लिए तुम उन सब गूढ़ार्थोंको स्पष्ट (प्रकट) करोगे.

**तूं देख दिल विचार के, उड जासी असत ।**

**सारों के सुख कारने, तूं जाहेर भई महामत ॥ ४२**

तुम अपने हृदयमें विचार कर देखो, तुम्हारे द्वारा जगतका समस्त अज्ञान (असत् भाव) नष्ट हो जाएगा. सबको अलौकिक सुख देनेके लिए ही तुम महामतिके रूपमें प्रकट हुए हो.

**खेल किया तुम खातर, सो तूं कहो आगे मोमन ।**

**पेहेले खेल देखाए के, पीछे मूल वतन ॥ ४३**

सभी ब्रह्मात्माओंको कहना कि यह खेल तुम्हारे लिए ही बनाया गया है, इसलिए पहले इसे भलीभाँति दिखाकर फिर तुम्हें परमधाममें जागृत करेंगे.

**अंतर रूहोंसों जिन करो, जो मोमिन हैं अरस घर ।**

**पीछे चौदे तबक में, जाहेर होसी आखर ॥ ४४**

जो परमधामकी ब्रह्माङ्गनाएँ हैं उनके साथ किसी भी प्रकारका अन्तर मत करना. फिर तो अन्तिम वेलामें ज्ञानका यह सुख चौदह लोकोंमें सर्वत्र फैल जाएगा.

**बडा सुख आगे मोमिन, पीछे सुख संसार ।**

**एक दीन सब होएसी, घर घर सुख अपार ॥ ४५**

सबसे पहले ब्रह्मात्माओंको विशेष सुख देना है फिर सारे संसारमें यह वितरित होगा. जब (इस तारतम ज्ञानके माध्यमसे) समस्त संसारमें पूर्णब्रह्म परमात्माकी उपासना करने वाला एक ही धर्म स्थापित होगा, तब घर घरमें अपार सुख होगा.

तैं वचन कहे जो मुखथैं, होसी तिनसे बडो प्रकास ।

असत उडसी तूल ज्यों, होसी कुफर सब नास ॥ ४६

तुम्हारे मुखसे निःसृत तारतम ज्ञानके वचनोंके द्वारा संसारमें ज्ञानकी अगाध ज्योति फैल जाएगी. जिससे असत्य वस्तु (अज्ञान) रूईके रेशेकी भाँति उड़कर नष्ट हो जाएगी और अज्ञानरूपी अन्धकार भी मिट जाएगा.

तू लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल ।

जो साख देवे रूह अपनी, तो लीजे सिर कोल ॥ ४७

तुम स्वयं भी अपने मुखसे निःसृत वचनोंके गूढ़ आशयको भली भाँति आत्मसात् करना. जब तुम्हारी आत्मा इन वचनोंकी साक्षी दे, तभी इन वचनोंको शिरोधार्य कर परस्पर जगानेकी प्रतिज्ञाका अनुपालन करना.

देत हों बल सबन को, जो हैं असलू मोमन ।

तू पूछ देख दिल अपना, कर कारज द्रढ मन ॥ ४८

जो वास्तवमें ब्रह्मात्माएँ हैं उन सबको मैं अपना आवेश बल प्रदान करूँगा. इसलिए तू अपनी अन्तरात्मासे पूछकर देख और अपने मनको दृढ़कर जागनीका कार्य कर.

मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग ।

बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग ॥ ४९

इन्द्रावती कहती है, मैं सद्गुरु (इमाम) की अङ्गना हूँ और ब्रह्मात्माएँ मेरी ही अङ्ग स्वरूपा हैं. सद्गुरु इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए इस संसारमें आए हैं. अब सभीको जाग्रत कर एक साथ मिला दूँ.

प्रकरण ११ चौपाई २४७

सन्ध मोमिन के दूँढवे की

अब दूँढो रूहें अरस की, जो हैं मूल अंकूर ।

सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर ॥ १

अब मैं परमधामकी आत्माओंको दूँढ रहा हूँ जिनका सम्बन्ध ही मूल परमधामसे है. ये मूल घरकी आत्माएँ पूर्णब्रह्मकी अङ्ग स्वरूपा हैं तथा उनकी ही किरणें हैं.

नूर पार पीउ एक खुद हैं, और ना दूजा कोए ।

और नार सब माया, यामें भी रूह दोए ॥ २

अक्षर ब्रह्मसे भी परे स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा हैं। वस्तुतः पूर्णब्रह्मके अतिरिक्त कोई है ही नहीं, शेष सब माया है। इस मायामें भी दो प्रकारके जीव हैं।

इत असलू रूह विस्नु की, दूजी रूह कुफरान ।

इन दोऊ से न्यारे मोमिन, सो आगे कहूंगी पेहेचान ॥ ३

इस संसारमें उच्च कोटिके जीव भगवान विष्णु माने जाते हैं। इनसे उत्पन्न दूसरे स्वप्नके जीव झूठे कहलाते हैं। ब्रह्मात्माएँ इन दोनोंसे भिन्न हैं। उन सबकी पहचान आगे बताएँगे।

मोमिन सुख असल वतनी, विस्नु का सुख और ।

दुनी विस्नु कायम होएसी, कजा कहूंगी तिन ठौर ॥ ४

ब्रह्मात्माओंको परमधामका अखण्ड सुख प्राप्त है। भगवान विष्णुका सुख उससे भिन्न है। अब स्वप्नके जीव एवं भगवान विष्णु दोनों ही अखण्ड होंगे। उस अविनाशी स्थानका हम निर्णय (कजा) करेंगे।

अब लछन देखो मोमिन के, जो अरवा हैं अरस घर ।

ए वतनी वचन सुनके, आवत हैं ततपर ॥ ५

अब ब्रह्मात्माओंके लक्षण देखो। जिनका घर परमधाममें है, वे तो परमधामकी बात सुनते ही तत्काल दौड़कर आ जाती हैं।

अटक रह्या साथ आधा, जिन खेल देखन का प्यार ।

ए किया मूल इन खातर, जो हैं तामसियां नार ॥ ६

व्रज और रासकी लीलाएँ देखनेके बाद भी तामसी (आधी) सखियोंके मनमें सांसारिक खेल देखनेकी इच्छा बनी रही। इसलिए उनकी सुरता संसारमें अटकी रही। वस्तुतः जागनी ब्रह्माण्डकी संरचना मूलरूपमें इनके लिए ही हुई है।

भूल गईयां खेल में, जो मोमिन हैं समरथ ।

नूर इमाम को मुझ पैं, केहे समझाऊं अरथ ॥ ७

परमधामकी समर्थ आत्माएँ इस खेलमें आकर स्वयंको भूल गई हैं। मुझमें

सद्गुरु प्रदत्त ज्ञानका प्रकाश है। अब मैं उन सभीको समझाकर परमधामका ज्ञान प्रदान करूँगा।

सबों को भेली करूँ, द्रढ कर देऊँ मन ।

खेल देखाऊँ खोल के, जिन विध ए उतपन ॥ ८

मैं सब ब्रह्मसृष्टियोंको एकत्र कर उनके मनको दृढ़ बना दूँ और जिस प्रकार यह खेल बना (अस्तित्वमें आया) है, उसका रहस्य स्पष्ट कर दूँ।

ए खेल है जोरावर, बडो ते रचियो छल ।

ए तब जाहेर होएसी, जब काढ देखाऊँ बल ॥ ९

यह छलरूपी मायावी खेल बड़ा ही शक्तिशाली है। मैं जब इसके रहस्यको खोलकर बताऊँगा, तब इसका रूप स्पष्ट हो जाएगा।

तुम नाहीं इन छल के, और छल को जोर अमल ।

सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल ॥ १०

हे ब्रह्मप्रियाओ ! तुम इस छलरूपी मायाकी सृष्टि नहीं हो। इस छलका नशा बड़ा ही प्रबल है। इस छलका बल ही ऐसा है कि सत्य आत्मा पर नश्वर मायाका प्रभाव पड़ गया है।

तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहें छल ।

छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल ॥ ११

तुम तो छल प्रपञ्चयुक्त इस जगतको मात्र देखनेके लिए आई थी किन्तु इसी छलमें घुलमिल गई हो। इस खेलके जीवोंको तो यह माया छलरूप नहीं लगती, क्योंकि वे तो इसी मोहजलकी ही लहरें हैं।

ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग ।

ए झूठी अब उड जाएसी, दे जासी झूठा दाग ॥ १२

यह झूठी माया तुम सत्य आत्माओंको प्रभावित कर रही है और तुम भी इसीमें निमग्न हो गई हो। अब तारतम ज्ञानके प्रभावसे यह झूठा खेल तो उड़ जाएगा किन्तु परमधामकी आत्माओंको विस्मृतिका झूठा कलङ्क लगा रहेगा।



हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस ।

कमी केहे मैं ना करूं, पर तुम छल हुआ सिर पोस ॥ १३

तब श्रीराजजीके समक्ष तुम्हारी बड़ी हँसी होगी. उस समय तुम मुझे दोष मत देना. यह सब समझानेमें मैं यहाँ कमी नहीं कर रहा हूँ, परन्तु यह माया तुम्हारे सिरसे लेकर पाँव तकका झूठा आवरण (बुर्का) बन गई है.

मांग लिया खसम पैं, ए छल तुम देखन ।

जो कदी भूली छल में, तो फेर न आवे ए दिन ॥ १४

श्रीराजजीसे तुमने यह दुःख (छल) रूपी खेल देखनेके लिए माँगा था. यदि तुम इस छलमें आकर धामधनीको ही भूल जाओगी, तो फिर उन्हें पहचाननेका ऐसा महत्त्वपूर्ण दिन कभी नहीं आएगा.

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सब मोमिन ।

ए हांसी सत वतन की, कोई मोमिन कराओ जिन ॥ १५

यदि तुम उन सारी बातोंको भूल जाओगी, तो श्रीराजजी और अन्य ब्रह्मप्रियाओंके समक्ष तुम्हारा सिर नीचा रहेगा. हे आत्माओ ! परमधाममें जगकर इस प्रकार अपनी हँसी मत कराना.

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर ।

तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो खसमसों बैठी मुख फेर ॥ १६

यदि इस जगतसे जाते समय विस्मृतिका दुःख साथ ले जाओगी, तो उससे मुक्त होनेके लिए पुनः यहाँ आया नहीं जाएगा. जो आत्माएँ यहाँ पर अपने प्रियतमसे विमुख रहीं हैं, उनका सिर परमधाममें कैसे ऊँचा होगा ?

तुमें सुध छल ना अपनी, ना सुध हक वतन ।

बताए देऊं या विध, ज्यों द्रढ होवे आप मन ॥ १७

हे आत्माओ ! तुम्हें इस मायाकी सुधि नहीं है और अपनी पहचान भी नहीं है, न ही अपने घर परमधामकी सुधि है. इसलिए अब मैं तुम्हें इस प्रकार समझाऊँगा, जिससे तुम्हारा मन स्वतः दृढ़ हो जाएगा.

ए छल पेड थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल ।

उडाए देऊं जड पेडसे, ज्यों उतर जाए अमल ॥ १८

इस मायाके मूलको दिखाए बिना इसका प्रभाव कम होनेवाला नहीं है. अब मैं इसे जड़ मूलसे ही उड़ा दूँ, जिससे इसका नशा सर्वथा उतर जाए.

अब देखो इन छल को, जो देखन आइयां तुम ।

नूर जोस देऊं अंग में, जो कोई मोमिन मुसलिम ॥ १९

तुम इस मायावी जगतको देखने आई हो, इसे भलीभाँति देख लो. जो अपने परमात्माके प्रति विश्वास रखनेवाली आत्माएँ हैं, उनके अङ्गोंमें मैं ज्ञानका प्रकाश (नूर) और जोश भर दूँ.

मोमिन माग्या मौले पैं, सो भूल गैयां बातें मूल ।

सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल ॥ २०

ब्रह्मात्माओंने अपने प्रियतम धनीसे मायाके इस खेलको मात्र देखनेके लिए माँगा था, किन्तु इसमें आते ही वे परमधामकी मूल बातें सब भूल गईं. अब यह खेल दिखाकर उन्हें वे सब बातें याद दिला दूँ, जिनका वर्णन रसूल साहेबने कुरानमें भी किया है.

या छल में अनेक छल हैं, सो करुं सब जाहेर ।

खोलूं कमाड कल कुलफ, अंतर माहें बाहेर ॥ २१

इस मायावी जगतमें अनेक मायावी खेल (छल-तमाशे) हैं. मैं उन सबका स्पष्टीकरण कर दूँ. तुम्हारे भीतर और बाहरके आवरणोंको दूर करते हुए तुम्हारी बुद्धिके द्वार पर लगे तालेको भी खोल दूँ.

प्रकरण १२ चौपाई २६८

सनंध खेलके मोहोरोंकी

अब निरखो नीके कर, जो देखन आइयां तुम ।

माग्या खेल हिरस का, सो देखावें खसम ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! इस मायाजन्य (दुःखपूर्ण) विश्वको देखनेके लिए तुम यहाँ आई हो, उसे भलीभाँति देख लो. तुमने चाहना पूर्वक खेल देखनेकी माँग

की थी उसे प्रियतम धनी परमधाममें ही बैठाकर दिखा रहे हैं।

**भोम भली भरथखंड की, जहां आई निध नेहेचल ।**

**और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल ॥ २**

समस्त जगतमें भारत भूमि श्रेष्ठ है, जहाँ परमधामकी अविनाशी निधि प्रकट हुई है। शेष सारा जगत खारा (प्रेम विहीन-शुष्क) है। यह भवसागर (मोहजल) ही खारा कहलाता है।

**इत बोए बृख होत है, ताको फल पावे सब कोए ।**

**बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए ॥ ३**

यहाँ पर जैसा कर्मका बीज बोया जाता है, सब कोई उसीका फल प्राप्त करते हैं। यहाँकी विशेषता यह है कि जो जैसा बीज बोता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

**इनमें जो ठौर अछी, जाको नाम नौतन ।**

**जहां आए उदे हुई, नेहेचल बात वतन ॥ ४**

इस भारत भूमिमें भी जो सर्वोत्तम स्थान है उसे नवतनपुरी कहा गया है, जिस स्थान पर अखण्ड परमधामकी निधि (अविनाशी ज्ञान) तारतमके रूपमें प्रकट हुई है।

**तिन अछी थें भी ठौर अछी, जाए कहिए हिन्दुस्तान ।**

**जहां महंमद मेहेदी आए के, जाहेर किया फुरमान ॥ ५**

संसारमें जितने अच्छे स्थान कहे गए हैं उनमें भी अच्छा स्थान (ठौर) तो भारत भूमि ही है, जिसे हिन्दुस्थान भी कहते हैं, जहाँ इमाम महदीने प्रकट होकर कुरानके गुह्य अर्थको स्पष्ट किया।

**जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुखसें ना निकसे दम ।**

**अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुसलिम ॥ ६**

जब तक कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं हुए थे, तब तक इसके माध्यमसे अखण्ड धामकी चर्चा नहीं होती थी। अब हम सद्गुरु (इमाम) प्रदत्त तारतम ज्ञानके प्रकाशसे श्रद्धालु आत्माओं (मोमिनों) को खेल दिखाएँगे।

ए खेल तुम मांगिया, सो किया तुम कारन ।

ए विध सब देखाए के, देखाऊं खसम वतन ॥ ७

हे ब्रह्मप्रियाओ ! तुमने स्वयं ही यह खेल माँगा था. इसलिए तुम्हारे लिए ही धामधनीने इसकी रचना की है. इस प्रकार ये सब बातें तुमको पहले समझाकर फिर परमधामके दर्शन करवाएँगे.

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान ।

खेलें मन के भावते, सब आप अपनी तान ॥ ८

इस जगतमें अलग-अलग पन्थ पैड़े हैं और लोग भिन्न-भिन्न सिद्धान्त और पद्धतिकी बात करते हैं. सब अपने-अपने मनके अनुकूल चालें चल रहे हैं एवं अपनी-अपनी तानमें मस्त हैं.

स्वांग काछे जुदे जुदे, और जुदे जुदे रूप रंग ।

चले आप चित चाहते, और रहे भेलें संग ॥ ९

इस संसारमें कई लोग अनेक वेश बनाकर पृथक्-पृथक् रङ्गोंमें रङ्गे हुए घूम रहे हैं. इस प्रकार एक साथ एक समूहमें रहनेवाले भी अपनी-अपनी इच्छानुसार चलते हैं.

कै दुकान बाजार सेहेर, चौक चौवटे अनेक ।

अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ बसेक ॥ १०

जिस प्रकार इस जगतमें अनेक नगर हैं, बाजार हैं, दुकानें हैं, चौराहोंमें अनेक चौक बने हुए हैं, अनेक कारीगर कारीगरी करते हैं; शहरोंमें दैनिक एवं साप्ताहिक तथा वार्षिक लगने वाले हाट और पीठ भी विशेष दिखाई देते हैं. ठीक उसी प्रकार यहाँ पर अनेक मत-मतान्तरके लोगोंने धर्मको व्यवसाय बना रखा है.

भेष सारे बनाए के, करें हो हो कार ।

कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार ॥ ११

इस प्रकार नाना प्रकारके वेश बनाकर लोग अपने-अपने ढङ्गसे शोर मचा

रहे हैं. कोई आहारका सेवन करते हैं तो कोई अहङ्कारी होकर अहङ्कारका ही आहार कर रहे हैं.

**विध विध के भेष काछे, सारे जान परवीन ।**

**वरन चारों खेलें चित दे, नाहीं कोई मत हीन ॥ १२**

विभिन्न प्रकारके वेश-भूषा धारण किए हुए ये लोग स्वयंको प्रवीण समझते हैं. इस खेलमें चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) के लोग मदमस्त होकर खेल रहे हैं. इनमें-से कोई भी स्वयंको बुद्धिहीन नहीं समझता.

**पढे चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार ।**

**आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार ॥ १३**

चारों वर्णोंके लोग चौदह विद्याओंको पढ़कर अपने-अपने वर्ण विस्तारमें लगे हुए हैं. इस प्रकार सारे नर-नारी स्वयंको श्रेष्ठ मानकर अपनी-अपनी दुनियांमें खेल रहे हैं.

**वरन सारे पसरे, लगे लोभें करे उपाए ।**

**बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए ॥ १४**

इस प्रकार चारों वर्णोंका विस्तार हो गया. लोभके वशीभूत होकर सब लोग अपनी जीविकाके लिए अनेक प्रयत्न करते हैं. ये सब लोग बिना अग्निके ही (इच्छा, तृष्णा द्वारा) जल रहे हैं. उनके शरीरमें काम, क्रोध, लोभ जैसे दुर्गुण नहीं समाते हैं.

**नहीं जासों पेहेचान कबहूँ, तासों करे सनमंध ।**

**सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध ॥ १५**

जिनके साथ कभी कोई पहचान तक नहीं होती, उनके साथ सम्बन्ध बना लेते हैं. सभी सगे सम्बन्धी और भाई-बन्धु मिलकर इन्हें विवाहके सांसारिक बन्धनमें बाँध देते हैं.

**सनमंध करते आप में, खुसाल हाल मगन ।**

**केसर कसूँबे पेहेर के, देखलावें लोकन ॥ १६**

आपसमें विवाहका सम्बन्ध जोड़ते हुए इनके अङ्गोंमें आनन्द नहीं समाता.

ये लोग विवाहके उमङ्गमें केसरी, लाल एवं अन्य बढ़िया रङ्गीन वस्त्र आदि पहनकर लोगोंको दिखाते हैं।

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र ।

कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र ॥ १७

कोई दुल्हा साज शृङ्गार कर घोड़े पर सवार होता है और कोई उसे छत्रकी छाया करता है। कुछ लोग उसके आगे बाजे-गाजे बजाते हैं और नाचते हुए चलते हैं।

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार ।

विरह बेदना अंग न माए, पीटे माँहें बाजार ॥ १८

(एक ओर विवाहका आनन्द है तो दूसरी ओर) कोई मृतककी अरथी लिए रोते-कलपते सामनेसे आ रहे होते हैं। गतात्माके विरहका दुःख सहन न होनेसे वे बाजारोंमें छाती पीट-पीटकर रुदन करते हैं।

गाडे जालें हाथ अपने, रुदन करें जल धार ।

सनमंधी सब मिलके, टलबले नर नार ॥ १९

कोई लोग पार्थिव देहको अपने हाथोंसे जलाते हैं, तो कोई उसे जमीनमें गाढ़ देते हैं, फिर जलधाराके समान आँसू बहाते हैं। इस प्रकार सारे सगे-सम्बन्धी नर-नारी मिलकर दुःखी होते हैं।

जनम होवे काहूँ के, काहूँ के होए मरन ।

हांसी हिरदे काहूँ के, काहूँ के सोक रुदन ॥ २०

इस प्रकार किसीके यहाँ बच्चेका जन्म होता है, तो किसी दूसरेके यहाँ किसीकी मृत्यु हो जाती है। जन्म होनेवाले घरमें लोग हँसते गाते खुशियाँ मनाते हैं, तो उधर मृत्युवाले घरमें शोक करते हुए रोते बिलखते हैं।

जर खरचें खाए गफलतें, करें बडे दिमाक ।

कीरत अपनी कराए के, पीछे होवें हलाक ॥ २१

अज्ञानमें पड़े हुए श्रीमन्तजन झूठी (तुच्छ) वस्तुओंके पीछे धनका अपव्यय

कर स्वयंको बुद्धिमान कहलानेकी चेष्टा करते हैं। इस प्रकार चारों ओर अपनी कीर्ति (महिमा) फैला कर अन्तमें स्वयं भी नष्ट हो जाते हैं।

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए ।

किसी के अवगुन बोलें, किसी के गुन गाए ॥ २२

इस संसारमें कोई कृपण (लोभी) हैं तो कोई दानी हैं तथा कोई भिखारी कहलाते हैं। भिखारीजन भीख न देनेवालेके अवगुण कहते हैं और दाताका गुणगान करते हैं।

कोई मिने बेहेवारिए, कोई राने राज ।

कै मिने रांक रलझलें, कै रोते फिरे अकाज ॥ २३

ऐसेमें कितने ही लोग व्यापारी बने हैं और कोई राज्यके स्वामी बने हुए हैं। कई बेचारे गरीब मारे-मारे फिर रहे होते हैं। कितने ही लोग व्यर्थ ठोकें खाते फिरते हैं।

कै सोवें सोनेके पलंग, कै ऊपर ढोलें वाए ।

रहे खडे आगे जी जी करें, ए खेल यों सोभाए ॥ २४

राजा महाराजा तथा धनी वर्ग सोनेकी पलङ्गोंपर सोते हैं और उनके दास उनकी सेवामें पङ्खा डुला रहे हैं। कितने लोग उनके सम्मुख खड़े रहकर 'जी हाँ', करते रहते हैं। यह सारा खेल इस प्रकार शोभायमान है।

कै बैठें सुखपाल में, कै दौडे उचाए ।

जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए ॥ २५

कोई सुखपाल (पालकी) पर विराजते हैं तो कोई कहार बनकर उस पालकीको ढोते हुए दौड़ते हैं। उनके आगे जुलूस चलता है। ऐसे ही यह खेल कई प्रकारसे खेला जा रहा है।

कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल ।

अति बडे बाजंत्र बाजें, जाने राज नेहेचल ॥ २६

कई राजा-महाराजा बड़े-बड़े रथों पर सवार होते हैं। उनके आगे उनकी सेना,

हाथी, घोड़े पर सवार होकर तथा पैदल चलती है। उनके सामने विराट नगाड़े बजाए जाते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि उनका यह राज्य सदैव अखण्ड रहेगा।

**सामसामी करें फौजें, लडावें लोह अंग ।**

**जिमी खावंद नाम धरावने, कै लड मरें अभंग ॥ २७**

युद्धके समय वे आमने-सामने अपनी-अपनी सेना खड़ी करते हैं और शत्रुसे भिड़कर अङ्ग-प्रत्यङ्गको रक्तस्त्रित (लहलुहान) बनाते हैं। दूसरोंकी भूमिके स्वामी (राजा) बननेके लिए इस प्रकार युद्ध क्षेत्रमें कई लोग लड़कर मर जाते हैं।

**कोई मिने होए कायर, छोड सरम भाग जाए ।**

**कोई मारे कोई पकरे, कोई जावे आप बचाए ॥ २८**

युद्धमें कोई कायर बनकर लोक-लाजको छोड़कर भाग जाता है। कोई किसीको मार देते हैं तो किसीको पकड़कर कैद कर लेते हैं, कितने ही लोग अपनी जान बचाते हुए भाग जाते हैं।

**कोई जीते कोई हारे, काहूं हरष काहूं सोक ।**

**जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहे पृथीपत लोक ॥ २९**

कोई विजयी बनकर हर्षित होता है तो कोई हारकर शोक मनाता है। जो युद्धमें सर्वत्र विजय प्राप्त कर लेता है, उसको लोग चक्रवर्ती सम्राट (पृथ्वीपति) कहते हैं।

**कै करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध ।**

**मारते अरवाह काढें, ए खेल या सनंध ॥ ३०**

युद्धमें कितने ही योद्धाओंको कैद कर उन्हें बाँधकर उलटा लटका दिया जाता है। कितनोंको तो मार-मारकर उनके प्राण ही निकाल लेते हैं। यह मायावी खेल इसी प्रकार चलता रहता है।

**जीते हरषे पौरसे, उमंग अंग न माए ।**

**हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए ॥ ३१**

युद्धमें विजयी बना हुआ व्यक्ति अपनी वीरता (पौरुष) का गर्व करता है।



उसका उमङ्ग अङ्गोंमें नहीं समाता, वहीं पर हारने वाला शोकमें डूबे 'त्राहि-त्राहि' पुकारता है।

कै फिरत हैं रोगिणं, कै लूले टूटे अपंग ।

कै मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग ॥ ३२

कितने लोग रोगसे पीड़ित हैं तो कितने लूले लंगड़े अपङ्ग हैं। कितने अन्धतासे दुःखी हैं। इस प्रकार इस खेलके विभिन्न रङ्ग रूप दिखाई देते हैं।

कै उदर कारने, फिरत होत फजीत ।

पवाडे कै बिना हिसाबें, खेल होत या रीत ॥ ३३

इनमें कई भिखारी अपनी उदर पूर्तिके लिए द्वार-द्वार भटक कर अपमानित होते हैं। विभिन्न आडम्बरोंसे भरे हुए इस जगतका नाटक इसी रीतिसे खेला जा रहा है।

प्रकरण १३ चौपाई ३०१

सनंघ खेलमें खेलकी

अब गुझ बताऊं खेल का, झूठें खेलें कर सांच ।

ए नीके देखो मोमिनो, ए जो रहे मजहबों रांच ॥ १

अब इस खेलका रहस्य बताते हैं। यहाँ पर नश्वर जीव इसे सत्य समझकर खेल रहे हैं। हे ब्रह्मात्माओ ! तुम इसे भलीभाँति देखो। इस जगतके सभी लोग विभिन्न मत-मतान्तरमें मग्न हुए हैं।

मैं बताऊं या विध, जासों जाहेर सब होए ।

नहीं पटंतर दीन पैडे, सो जुदे कर देऊं दोए ॥ २

हम इस प्रकार बताते हैं कि जिससे सब कुछ स्पष्ट हो जाए। सत्य धर्म और सामान्य मत-मतान्तरोंमें कोई स्पष्ट अन्तर दिखाई नहीं दे रहा है, उसे स्पष्ट कर अलग-अलग बता देते हैं।

इन खेल में जो खेल है, सो केहेत न आवे पार ।

इन भेषों में भेष सोभहीं, सो कहूं नेक विचार ॥ ३

संसारके इस मिथ्या नाटकमें इतने प्रकारके खेल हैं कि उनका वर्णन नहीं

हो सकता. यहाँ पर वेशधारियोंमें भी अनेक वेश-भूषाएँ दिखाई देती हैं. उनके सन्दर्भमें थोड़ा-सा विवरण देते हैं.

कै बिना हिसाबें देहुरे, जुदे जुदे अपने मजहब ।

कै भांतों कै जिनसों, करत बंदगी सब ॥ ४

इस संसारमें असंख्य देवालय हैं. सबके अलग-अलग सम्प्रदाय हैं. सब लोग भिन्न-भिन्न रीतियों एवं साधनों द्वारा अपने-अपने इष्टकी पूजा करते हैं.

खोजें कोई न पावहीं, वार ना पाइए पार ।

ले बुत बैठवें देहुरे, कहें हमारा करतार ॥ ५

यहाँ पर कई लोग परमात्माकी खोज करते हैं किन्तु उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते. वे इस भवसागरका ही ओर-छोर नहीं पा सके, इसलिए देवालियोंमें मूर्तिको पधराकर कहने लगे कि यही हमारे परमात्मा (करतार) हैं.

कै सराए अपासरे, कै ताल कुंड बिरबाव ।

कै विध बांधे बैरखें, कै साल पौसाल टिकाव ॥ ६

अनेक लोग धर्मशालाएँ, उपाश्रय, तालाब, कुण्ड, बावड़ियाँ (सीढ़ीवाले कुएँ) बनाते हैं. ऐसे कई लोग विभिन्न स्थानोंमें ध्वजा-पताकाएँ फहराते हैं एवं कीर्ति प्राप्त करनेके लिए अन्नक्षेत्र तथा ठहरनेके स्थान बनाते हैं.

कै अंन नीर सबीलें, कै करें दया दान ।

कै तरपन तीरथ, कै करे नित अस्नान ॥ ७

कई दानी लोग दयापूर्वक सदाव्रतमें अन्न दान देते हैं. कोई प्याऊ बनवाकर लोगोंको ठण्डा जल पिलाते हैं. कोई तीर्थोंमें जाकर तर्पण (पितरोंको तृप्त) करते हैं तो कोई नित्य स्नानको महत्त्व देते हैं.

कै भेष जो साध कहावहीं, कै पंडित पुरान ।

कै भेष जो जालिम, कै मूर्ख अजान ॥ ८

कुछ लोग विभिन्न प्रकारके वेश धारण करके साधु बन जाते हैं और कई शास्त्र पढ़कर पण्डित कहलाते हैं. कई लोग अपने वेशोंसे ही जालिम-अत्याचारी दिखाई देते हैं तो कई लोग मूर्ख तथा अज्ञानी दिखते हैं.

कै कहावे दरसनी, धरे जुदे जुदे भेष ।

सुध आप ना पार की, हिरदे अंधेरी विसेष ॥ ९

कई लोग भिन्न-भिन्न दर्शन शास्त्रोंको पढ़कर दर्शनाचार्य (दर्शनी) कहलाते हैं तथा अपनी विद्वत्ता दिखानेके लिए भिन्न-भिन्न वेश धारण करते हैं. इससे उन्हें आत्मा और परब्रह्मकी पहचान तो नहीं हो पाती उलटे उनका हृदय अज्ञानरूपी अन्धकारसे भरा रहता है.

कै लोंचें कै मूडें, कै बढावें केस ।

कै काले कै उजले, कै धरें भगुए भेष ॥ १०

कितने ही लोग अपने बालोंको नुचवा लेते हैं. कई मुण्डन करते हैं तो कई लोग अपने केश बढ़ा लेते हैं. ये लोग भिन्न-भिन्न प्रकारके काले, श्वेत या भगवें वस्त्र धारण करते हैं.

कै नेक छेदें कै न छेदें, कै बोहोत फारे कान ।

कै माला तिलक धोती, कै धरे बैठे ध्यान ॥ ११

कितने साधु कानोंको जरा-सा छिदवा लेते हैं तो कितने नहीं छिदवाते. कितने (कनफट्टे साधु) अपने कान बहुत फड़वा लेते हैं. कोई गलेमें बड़ी-बड़ी मालाएँ धारण कर तिलक और धोती पहनते हैं, कई एक ही आसन पर बैठकर चिन्तन किया करते हैं.

कै लंगरी बोदले, कै सेख दुरवेस ।

कै इल्म कै आलम, कै पढे हुए पेस ॥ १२

इनमें कितने ही लङ्गरी (एकही पात्र पर खाने वाले) तथा बोदले साधु हैं, तो कितने विभिन्न प्रकारके वेश धारण किए हुए फकीर (शेख) भी हैं. कई इल्म (ज्ञान) पढ़कर आलिम (ज्ञानी) कहलाते हैं, तो कई पढ़कर चतुराई भी करते हैं.

कै जिंदे गोस कुतब, कै मलंग मीर पीर ।

कै ओलिए कै अंबिए, कै मिने फकीर ॥ १३

इनमें कई मुस्लिम फकीर जिन्दा (निस्पृह रहकर अन्तर्शुद्धिमें विश्वास रखने

वाले), गोस (न्यायकारी महात्मा) तथा कातिब (ग्रन्थ लिखनेवाले) हैं, तो कई मलङ्ग (निश्चिन्त साधु) हैं, तथा कोई मीर (धर्माचार्य) एवं पीर (गुरु) होते हैं। फकीरोंमें भी कई महात्मा (औलिए) हैं, तो कई अवतारी (अंबिए) कहलाते हैं।

**कै पैगंमर आदम, कै फिरे फिरस्ते फेर ।**

**तबक चौदे देखिए, पर किन ठौर न छोडी अंधेर ॥ १४**

इसी प्रकार कई अवतारी पुरुष कहलाते हैं, तो कई सामान्य व्यक्ति भी होते हैं। कई देवी देवताओं (फिरस्तों) के चक्रमें पड़े हुए होते हैं, किन्तु चौदह लोकोंमें चारों ओर देखो ! कहीं भी किसीसे अन्धकार (अज्ञान) छूटा हुआ नहीं है।

**कै सीलवंती सती कहावहीं, कै आरजा अरधांग ।**

**जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावें स्वांग ॥ १५**

हिन्दू नारियोंमें कई स्त्रियाँ शीलवती, सती, साध्वी कहलाती हैं तो कई भक्तिमति अर्धाङ्गिनी कहलाती हैं। पुरुषोंमें कई यति (योगी) तो कई व्रती (व्रतका पालन करने वाले), कई अनेक प्रकारके पोशाक धारण करने वाले पोशांगरी कहलाते हैं। इस प्रकार इस खेलमें विभिन्न स्वांग (ढोंग) की ही शोभा हो रही है।

**कै जुगते जोगी जंगम, कै जुगते संन्यास ।**

**कै जुगते देह दमें, पर छूटे नहीं जम फांस ॥ १६**

इनमें-से कोई योगी योग साधना करते हैं, कोई जंगम संन्यासी बनकर फिरते रहते हैं। कोई युक्तिपूर्वक देह दमन करते हैं, किन्तु यह सब करने पर भी यमराजके फन्देसे बच नहीं सकते।

**कै सिवी कै वैस्त्रवी, कै साखी समरथ ।**

**लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ ॥ १७**

इस संसारमें कई लोग शैवी हैं, तो कई वैष्णव कहलाते हैं। कई कविताएँ (साखी) बनानेमें समर्थ हैं। इस प्रकार सब लोग निरर्थक अभिमान लेकर संसारमें अनर्थपूर्ण खेल खेलते हैं।

कै श्रीपात ब्रह्मचारी, कै वेदिए वेदांत ।

कै गए पुस्तक पढते, परमहंस सिधांत ॥ १८

इनमेंसे कितने ही शक्ति उपासक श्रीपाद ब्रह्मचारी कहलाते हैं. कई वेदज्ञ विद्वान् वेदान्ती कहलाते हैं. कई लोग धर्मशास्त्रको कण्ठस्थ करने वाले सिद्धान्त ज्ञानी (सैद्धान्तिक) हैं, तो कई परमहंस कहलाते हैं.

अनेक अवतार तीर्थंकर, कै देव दानव बडे बल ।

बुजरक नाम धराइया, पर छोडे न काहूं छल ॥ १९

यहाँ पर कई अवतार और तीर्थंकर हो गए हैं, तो कितने ही शक्तिशाली देवता एवं क्रूर दानव भी हुए हैं. कई लोग महान ज्ञानी भी कहलाए, किन्तु कोई भी इस छलवती मायासे मुक्त न हो सका.

कै होदी बोदी पाधरी, कै चंडिका चामंड ।

बिना हिसाबे खेलहीं, जाहेर छल पाखंड ॥ २०

इनमेंसे कई यहूदी (अथवा हाथीके हौदेमें घूमने वाले होदी साधु) हैं, तो कई अपनेको बौद्ध (बोधि) साधु कहते हैं. कई उपाध्याय पण्डित (पाधरी) हैं, तो कई चण्डिका और चामुण्डा देवियोंके भक्त हैं. इस प्रकार अनेक आडम्बर रचकर किए जा रहे पाखण्ड पूर्ण खेल यहाँ दिखाई दे रहे हैं.

कै डिंभ करामात, कै जंत्र मंत्र मसान ।

कै जडी मूली औषधि, कै गुटका धात रसान ॥ २१

कई डिम्बक साधु चमत्कारोंमें लीन हैं, कई श्मशानभूमिमें रहकर तन्त्रकी साधना करते हैं, कई जड़ी बूटियोंका प्रयोग कर औषधियाँ बनाते हैं, तो कोई गुटिका (इच्छानुसार पहुँचनेका साधन), धातु और रसायनका प्रयोग करते हैं

कै जुगतें सिध साधक, कै व्रत धारी मुन ।

कै मठ वाले पिंड पाले, कै फिरे होए नगन ॥ २२

कई युक्तिपूर्वक सिद्धियोंको प्राप्त करनेके इच्छुक साधक हैं, तो कई व्रत धारण करनेवाले मौनी साधु भी हैं. कई बड़े-बड़े मठ बनाकर अपनी

आजीविका चलाते हैं, तो कई वस्त्रहीन (नङ्गे) साधु घूमते फिरते हैं।

कै षट् चक्र नाडी पवन, कै अजपा अनहद ।

कै त्रवेनी त्रकुटी, जोती सोहं राते सबद ॥ २३

कई योगाभ्यासी शरीरके छः चक्र (षट्चक्र) और बहत्तर नाड़ियोंको साधकर कुण्डलिनी जगानेका प्रयास करते हैं, कई प्राणायाम करते हैं, तो कई अजपा जप करते हैं और अनहद नाद सुननेका प्रयत्न करते हैं। कई ईडा, पिंगला, सुषुम्ना आदि नाड़ियोंकी साधना कर ज्योति स्वरूपके दर्शन करनेका पुरुषार्थ करते हैं और सोऽहं शब्दका जप कर उसीमें मग्न रहते हैं।

कै संत जो महंत, कै देखीते डिगंमर ।

पर छल ना छोडे काहूं को, कै कापडी कलंदर ॥ २४

कई सन्त हैं और कई महन्त हैं तथा कई दिगम्बर (वस्त्र विहीन) दिखाई देते हैं। कई कापडी (काँवर पर गंगाजल लेकर विभिन्न तीर्थोंमें चढ़ानेके लिए चलने वाले धार्मिक यात्री) हैं तो कई कलन्दर (बन्दर भालु नचाने वाले मुस्लिम साधु) हैं। किन्तु माया किसीको भी नहीं छोड़ती।

कै आचारी अप्रसी, कै करें कीरंतन ।

यों खेलें जुदे जुदे, बस परे सब मन ॥ २५

कई लोग आचार-विचारका पालन करते हुए अस्पृश्यताको अधिक महत्त्व देते हैं, तो कई भक्तजन कीर्तनमें लीन रहते हैं। इस प्रकार सब लोग मनके वशीभूत होकर अलग-अलग खेल खेल रहे हैं।

कै किरंतन करें बैठे, कै जाग जगन ।

कै कथें ब्रह्मग्यान, कै तपें पंच अगिन ॥ २६

कई भक्तजन कीर्तन करते हैं। कई याग-यज्ञ करते हैं। कई ज्ञानी बनकर ब्रह्मज्ञानकी बड़ी बड़ी डींगें मारते हैं और कई लोग पञ्चाग्नि तप (चारों ओरसे जलती चार अग्नियाँ और पाँचवाँ सूर्यका ताप) करते हैं।

कै इन्द्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह ।

कै ऊरध ठाडेसरी, कै बैठे खुद होए ॥ २७

कई हठयोगी कष्ट पूर्वक इन्द्रियोंका निग्रह कर मनको वशमें करनेका प्रयास करते हैं। कई तपस्वी हाथ ऊपर उठाकर वर्षोंतक सीधे खड़े रहते हैं। ऐसे साधक कई बार स्वयं ही ब्रह्म होनेका दावा भी करते हैं।

कै फिरें देस देसांतर, कै करें काओस ।

कै कपाली अघोरी, कै लेवें ठंड पाओस ॥ २८

कई लोग देश-विदेशमें धूमते रहते हैं, कई एक कानसे सल्ली डालकर दूसरेसे निकालनेकी कठिन साधना (काओस) करते हैं। कई कापालिक (खोपड़ी लेकर चलनेवाले) तथा कई अघोरी (श्मशानमें नरमुण्डोंको लेकर साधना करने वाले) होते हैं। इसी प्रकार कई साधु शीत कालमें गले तक पानीमें डूबकर हठयोगकी साधना करते हैं।

कै पवन दूध आहारी, कै ले बैठत हैं नेम ।

कै कैद ना करें कछुए, ए सब छल के चेन ॥ २९

कितने साधु केवल वायुका सेवन कर रहते हैं, कितने केवल दूध ही पीते हैं। कितने नियम (व्रत) धारी कई प्रकारके संकल्प लेते हैं, कितने धर्मकर्मका बन्धन नहीं मानते अर्थात् बेकैद-स्वतन्त्र होकर घूमते रहते हैं। इस प्रकार ये सब मायाके लक्षण हैं।

कै फल फूल पत्र भखी, कै आहार अल्प ।

कै करे काल की साधना, जिया चाहें कल्प ॥ ३०

कई लोग मात्र फल, फूल और पत्ते ही खाते हैं, तो कितने अल्प आहार करते हैं। कई ऐसे भी हैं जो कालकी साधना करके कई कल्पों तक जीवित रहना चाहते हैं।

कै धारा गुफा झांपा, कै जो गालें तन ।

कै सूकें बिना खाए, कै करें पिंड पतन ॥ ३१

कई लोग झरनेके नीचे तथा गुफा या कन्दरामें बैठकर तप करते हैं। कोई

भैरव झाँप भी खाते हैं। कई शरीरको बर्फमें गला डालते हैं, तो कोई उपवास करके शरीरको सुखाकर देहपात (प्राण त्याग) करते हैं।

यों वैराग जो साधना, कै जुदे जुदे उपचार ।

यों चलें सब पंथ पैडे, खेलें सब संसार ॥ ३२

इस प्रकार वैराग्यकी साधनाके लिए कई लोगोंने भिन्न-भिन्न उपाय किए हैं। इस प्रकार सारे सम्प्रदाय वाले भाँति-भाँतिके खेल कर रहे हैं।

खेलें सब देखादेखी, ज्यों चले चींटी हार ।

यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार ॥ ३३

सब एक दूसरेकी देखादेखी करते खेल रहे हैं। जिस प्रकार चींटियाँ एक दूसरेके पीछे कतारमें चलती हैं, उसी प्रकार अज्ञानी लोग भी बिना देखे अन्धानुकरण करते हुए एक दूसरेके पीछे कतार बनाए चले जा रहे हैं।

कोई ना चीन्हें आप को, ना सुध अपनो घर ।

जिमी न पैडा सूझे काहूँ, जात चले या पर ॥ ३४

किसीको भी न स्वयंकी पहचान है और न ही अपने घर परमधामकी सुधि है। यह संसार तथा इससे पार होनेका मार्ग भी किसीको नहीं सूझता, तथापि सभी अपने-अपने ढङ्गसे चले जा रहे हैं।

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर ।

तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर ॥ ३५

ऐसे संसारको बनाने वाले बाजीगर अक्षरब्रह्म इन सबसे न्यारे हैं और संसारके प्राणी बाजीगरके कबूतरकी भाँति खेल रहे हैं। इसलिए खेलके कबूतरके समान सांसारिक प्राणी जगत नियन्ता अक्षरब्रह्मको कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

आपे नाम जुदे जुदे, खुद के धरें अनेक ।

अनेक रंगें संगें ढंगें, बादे करें विवेक ॥ ३६

इस प्रकार अपनी समझ और आस्थाके अनुसार कई लोगोंने परमात्माके नाम



अलग अलग रख दिए हैं और उनकी उपासनामें भी अनेक प्रकारके रङ्ग-ढङ्ग अपनाकर परस्पर विवाद खड़े कर दिए हैं।

सुध इनको तो परे, जो ए आप सांचे होए ।

तो कुरान के माएने, इत खोल ना सके कोए ॥ ३७

यदि इनमेंसे कोई स्वयं सत्य होते, तो ही उन्हें धर्मग्रन्थोंकी सुधि प्राप्त होती। इसलिए संसारमें आजतक कुरानके गूढ़ रहस्य भी किसीने नहीं खोले।

ए देखो तुम मोमिनों, खेल बिना हिसाब ।

ए खेल तुम खातर, खसमें रचिया ख्वाब ॥ ३८

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम यह सब देखो, इस जगतमें ऐसे असंख्य खेल हैं। वस्तुतः पूर्णब्रह्म परमात्माने स्वप्नके इन खेलोंकी रचना तुम्हारे लिए ही की है।

मोमिनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब ।

ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब ॥ ३९

ब्रह्मात्माओंके समूहमें स्वप्न जगतके जीव नहीं आ सकते। इसलिए हे ब्रह्मात्माओ ! इस स्वप्नवत् जगतको भली-भाँति पहचान लो, जिससे धर्ममें लाभ (यश) प्राप्त हो।

प्रकरण १४ चौपाई ३४०

सनंध जुदे जुदे फिरकोंके जिद की

अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खेंचाखेच करत ।

ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! विभिन्न सम्प्रदायोंकी पारस्परिक खींचातानी और भी दिखाते हैं। ये सब झूठे लोग झूठी वस्तुओंमें ही व्यस्त हैं। किसीको भी पारकी सुधि नहीं है।

खेल खेलें और रबदें, मिनोंमिने करें क्रोध ।

जैसे मछ गलागल, छोडे ना कोई ब्रोध ॥ २

कितने लोग झूठे खेलमें मस्त होकर परस्पर विवाद करते हैं और झगड़ते

हैं. जैसे मगरमच्छ बड़े छोटेको निगल जाते हैं, इसी भाँति इनकी भी शत्रुता नहीं छूटती है.

कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान ।

कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान ॥ ३

इस खेलमें बहुत-से लोग दानको बड़ा मानते हैं तो बहुत-से ज्ञानको. कितने ही विज्ञान (अध्यात्म ज्ञान) को बड़ा मानते हैं. इस प्रकार अनुमानित धारणाओंसे ही परस्पर झगड़ते हैं.

कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवे काल ।

कोई कहे साधन बड़ा, यों लरे सब पंपाल ॥ ४

षट्शास्त्रके ज्ञाताओंमें कोई (मीमांसा मत वाले) कर्मको महान समझते हैं, तो कोई (वैशेषिक मत वाले) कालको बड़ा बताते हैं. कोई अष्टाङ्गयोग आदि साधनाको प्रधानता देते हैं. इस प्रकार झूठी मान्यताओंमें पड़कर आपसमें लड़-झगड़ रहे हैं.

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप ।

कोई कहे शील बड़ा, कोई केहेवे सत ॥ ५

किसीके विचारमें तीर्थ बड़ा है, तो किसीके लिए तप महान है. कोई शील, स्वभावको तो कोई सत्यको उत्तम मानते हैं.

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत ।

कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कै जुगत ॥ ६

कोई शुद्ध विचारको अधिक श्रेष्ठ मानते हैं, तो किसीके लिए व्रतकी बड़ी गरिमा है. किसीके मतसे बुद्धि बड़ी है. इस प्रकार यहाँ कई युक्तियाँ (रीतियाँ) चल रहीं हैं.

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत ।

कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत ॥ ७

कोई आचरण (करनी) को बड़ा कहते हैं, तो कोई मुक्तिको अन्तिम लक्ष्य

मानते हैं. कोई भावको श्रेष्ठ मानते हैं, तो कोई भक्तिको सर्वश्रेष्ठ मानते हैं.

कोई कहे किरंतन बड़ा, कोई कहे श्रवन ।

कोई कहे बड़ी बंदनी, कोई कहे अरचन ॥ ८

कोई नाम संकीर्तनको, तो कोई शास्त्र श्रवणको श्रेष्ठ मानते हैं. किसीके मतसे वन्दना (प्रार्थना) सर्वश्रेष्ठ है तो किसीके लिए पूजा (अर्चना) श्रेष्ठ है.

कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन ।

कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन ॥ ९

किसीके मतमें अपने इष्टका ध्यान करना श्रेष्ठ है. कोई धारणा (अपनी वृत्तियोंको परमात्माकी ओर लगाना) को अधिक मान्यता देते हैं. कोई जनता-जनार्दनकी सेवाको उत्तम मानते हैं, तो कोई परमात्माके ऊपर सर्वस्व समर्पणको श्रेयस्कर मानते हैं.

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास ।

कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विस्वास ॥ १०

कोई सत्संगको बड़ा मानते हैं, तो किसीको दासभक्ति अधिक प्रिय है. कोई विवेकको श्रेष्ठ कहते हैं, तो कोई विश्वासको उत्तम मानते हैं.

कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस ।

कोई कहे पन बड़ा, यों खेलें परे परवस ॥ ११

कई लोग शान्तिको सबसे बड़ी कहते हैं. कोई तामस-अहङ्कारको महान मानते हैं तो कोई प्रण (सङ्कल्प) को ही श्रेष्ठ मानते हैं. इस प्रकार सभी अपने-अपने मनके अधीन चले जा रहे हैं.

कोई कहे सदासिव बड़ा, कोई कहे आद नारायण ।

कोई कहे आदें आद माता, यों करत तानों तान ॥ १२

कोई सदाशिवको बड़ा मानता है, तो कोई आदि नारायण भगवानको ही सर्वोच्च मानता है. कोई आदि शक्ति (महामाया-सुमङ्गला शक्ति) को सबसे उत्तम कहता है. इस प्रकार अपने अपने इष्ट देवको बड़ा सिद्ध करनेके लिए परस्पर खींचातानी करते हुए झगड़ते हैं.

कोई कहे आत्म बडी, कोई कहे पर आत्म ।

कोई कहे अहंकार बडा, जो आद का उत्पन्न ॥ १३

कोई आत्माको तो कोई पर आत्माको बड़ा मानता है. किसीके मतसे अहङ्कार ही सबसे बड़ा है, क्योंकि वह सृष्टि रचनासे पूर्व आदिकालमें उत्पन्न हुआ था.

कोई कहे सकल व्यापी, देखीतां सब ब्रह्म ।

कोई कहे ए ना लह्या, यों करे लडाई भूले भ्रम ॥ १४

कोई ब्रह्मको सर्वव्यापक मानते हैं और कहते हैं कि जो कुछ भी दिखाई देता है, वह सब ब्रह्म ही है. कोई कहते हैं कि ब्रह्म तो कहीं मिला ही नहीं. इस प्रकार भ्रममें पड़े हुए लोग मूल वस्तुको ही भूल कर परस्पर संघर्ष करते हैं.

कोई कहे सुन्न बडी, कोई कहे निरंजन ।

कोई कहे निरगुन बडा, यों लरें वेद वचन ॥ १५

कई साधक शून्यको ही महान् सत्ता मानते हैं. कई लोग ब्रह्मको निर्गुण या निरञ्जन कह देते हैं. इस प्रकार वेद-शास्त्रोंके विविध वचनोंको लेकर साधक लोग परस्पर उलझ रहे हैं.

कोई कहे आकार बडा, कोई कहे निराकार ।

कोई कहे तेज बडा, यों लरें लिए विकार ॥ १६

कोई ब्रह्मको साकार मानता है, तो कोई निराकार मान लेता है. कोई तेज (ज्योतिस्वरूप) को ब्रह्म मानकर चलता है. इस प्रकार मनो-विकारोंमें पड़े हुए लोग परस्पर लड़ते रहते हैं.

कोई कहे पारब्रह्म बडा, कोई कहे पुरुषोत्तम ।

वेद के बाद अंधकारे, करे लडाई धरम ॥ १७

कई विवेकी जन परब्रह्मको बड़ा कहते हैं, तो कोई पुरुषोत्तम नामसे उसीको सबसे उत्तम मानते हैं. वेद-शास्त्रके नाना अर्थमय शब्दोंके भ्रम (अज्ञानान्धकार) में पड़े हुए लोग धर्मके नाम पर परस्पर लड़ रहे हैं.

जाहेर झूठा खेलहीं, हिरदें अति अंधेर ।

कहे हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर ॥ १८

ये लोग प्रत्यक्षरूपसे इस झूठे खेलमें खेल रहे हैं, उनके हृदयमें अज्ञानरूपी अन्धकार भरा हुआ है। इसलिए वे स्वयंको सत्य एवं दूसरेको असत्य सिद्ध करनेके प्रयासमें ऐसे ही उलटे चक्रमें भटक रहे हैं।

पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट ।

ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट ॥ १९

इन सभी पन्थों, सम्प्रदायोंकी अन्तिम भूमिका ये ही विविधता पूर्ण विराटके चौदह लोक हैं। ये ही मायावी जगतकी विचित्र गतिविधियाँ हैं इस प्रकार यह सम्पूर्ण नाटक ही छल कपट पूर्ण मायाका वैभव है।

कोई हेम गले अगनी जले, भैरव करवत ले ।

खसम को पावें नहीं, जो तिल तिल काटे देह ॥ २०

साधना पथ पर चलने वालोंमें भी कोई बर्फमें गल रहा है, तो कोई पञ्चअग्निमें तप रहा है। कोई भैरव झाँप खाता है तो कोई करवत (आरे) पर कटकर जान दे देता है। इस प्रकार शरीरके टुकड़े-टुकड़े कर देने पर भी परब्रह्म परमात्माको कोई प्राप्त नहीं कर सकता।

भेष जुदे जुदे खेलहीं, जाने खेल अखंड ।

ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड ॥ २१

सबके सब अलग-अलग वेष धारण किए हुए इस झूठे खेलको अखण्ड मानकर खेल रहे हैं। यह ब्रह्माण्ड मूल आधार रहित (स्वप्नवत्) होनेसे इसमें जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह सब नाश हो जाने वाला है।

खसम एक सबन का, नाही दूसरा कोए ।

ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए ॥ २२

परमात्मा सबके एक ही है। उनके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। इस रहस्य पर वही विचार कर सकता है, जो स्वयं सत्य आत्माका अनुभव करता हो।

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढे विसाल ।

उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल ॥ २३

इस प्रकार ये सब लोग बेसुध होकर इस खेलमें खेल रहे हैं। तथाकथित ज्ञानी जन भी शास्त्र पढ़कर बड़े-बड़े वचन बोलकर मात्र विद्वत्ता ही दिखाते हैं। यह सारी सृष्टि ही मोहतत्त्वसे उत्पन्न हुई (असत्) है। इसलिए एक दिन इसका अवश्य नाश हो जाएगा।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन ।

तो ए क्यों पावें खुद को, जाको मूल मोह सुन ॥ २४

यहाँ पर दीवार (भित्ति) के बिना ही अनेक चित्र बनाए जा रहे हैं। जिनकी उत्पत्ति ही शून्य, निराकार या मोहतत्त्वसे हुई है, वे परब्रह्मको कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर ।

ए छल मोहोरे छल के, खेलत हैं सत कर ॥ २५

इस सचराचर विराट ब्रह्माण्डमें अनेक कवि उत्पन्न हुए हैं, जिन्होंने अनेक महाकाव्यों (ग्रन्थों) की रचना की है, किन्तु वे सभी छलमय, जगतके नाटकके पात्र होनेसे इस जगतको ही सच्चा मानकर खेल रहे हैं।

प्रकरण १५ चौपाई ३६५

सन्ध बैराटकी जाली की

ए खेल रच्यो हम खातर, सो देखन आइयां हम ।

ए जो प्यारे मेहेदी महंमद, जेती रूह मुसलिम ॥ १

यह मायाका खेल हमारे लिए ही बनाया गया है और इसे देखनेके लिए ही परमधामसे हम ब्रह्मात्माएँ यहाँ पर आई हैं। धर्म पर समर्पित जितनी भी निष्ठावान् आत्माएँ होंगी, उन्हें निजानन्द सद्गुरु (मेहदी मुहम्मद) प्रिय लगेंगे।

ए खेल को कौन देखावहीं, कौन कहे याकी सुध ।  
 इमाम आप आए बिना, क्यों आवे वतनी बुध ॥ २  
 यह नश्वर खेल कौन दिखा रहा है और इसकी सुधि कौन बता रहा है ?  
 वस्तुतः स्वयं सद्गुरु (इमाम) के आए बिना परमधामकी जाग्रत बुद्धि कैसे  
 आ सकती है ?

आई बुध वतन की, तब खुले माएने कुरान ।  
 भी नेक बताऊं खेल या विध, ज्यों होवे सब पेहेचान ॥ ३  
 जब परमधामकी मूल बुद्धि (तारतम ज्ञान) प्रकट हुई, तभी कुरानके गूढ़  
 रहस्य स्पष्ट हो गए. उसी तारतम ज्ञानके द्वारा इस जगतके खेलके विषयमें  
 थोड़ा-सा बताते हैं, जिससे सब कुछ स्पष्ट (पहचान) हो जाएगा.

वैराट का फेर उलटा, याको मूल है आकास ।  
 डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास ॥ ४  
 वेदोंमें इस प्रकार स्पष्ट किया गया है कि इस विराट ब्रह्माण्डका चक्र ही  
 उलटा है क्योंकि इस संसाररूप वृक्षका मूल (उत्पत्ति) आकाशमें है और  
 इसकी शाखाएँ नीचे पातालकी ओर फैली हुई हैं.

फल डार अगोचर, आडी अंतराए पाताल ।  
 वैराट वेद दोऊ कोहेडा, गूंथी सो छल की जाल ॥ ५  
 इस संसाररूपी वृक्षके फल और शाखाएँ अगोचर हैं. वे दिखाई नहीं देती.  
 आकाशसे लेकर पाताल तक इसका अन्तराल है. वैराट और वेद दोनों एक  
 ऐसी उलझन (पहेली) के समान हैं, जिसे स्वयं मायाने निर्मित किया है.

विध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख ।  
 गूंथी जालें दोऊ जुगतेँ, मान लिए दुख सुख ॥ ६  
 वेद और वैराट दोनोंकी उत्पत्ति इस प्रकार है कि शेषशायी नारायणके  
 नाभिकमलसे ब्रह्माजीने प्रकट होकर इस वैराटमें सृष्टि की और उन्होंने ही  
 अपने चतुर्मुखसे चारों वेदोंका गायन किया. इस प्रकार दोनोंने संसारके  
 जीवोंको अपनी जालमें युक्तिपूर्वक गूँथ लिया है. इसीमें निमग्न होकर  
 विश्वके समस्त प्राणी दुःख-सुखको अपना भाग्य मान रहे हैं.

कोहेडे दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद ।

जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न याको भेद ॥ ७

इन दोनों (वेद और वैराट) से उत्पन्न समस्याएँ (पहेलीके समान उलझनें) भी दो प्रकारकी हैं. एक ओर विस्तृत वैराटका पारिवारिक सम्बन्ध है तो दूसरी ओर वेदका अथाह कर्मकाण्ड. जीव इनके नियमोंकी जालीमें कुछ इस प्रकार फँसा (बाँधा) रहता है कि उनसे निकल नहीं पाता. इस प्रकार आज तक इस छल (माया) का रहस्य कोई नहीं जान पाया.

देखलावने मोमिन को, कोहेडे किए एह ।

बताए देऊं आंकडी, छल बल की है जेह ॥ ८

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम्हें दिखानेके लिए ही पहेली (उलझन) की भाँति इस संसारकी रचना की गई है. अब छल-बल युक्त इस मायाके रहस्य (आंकडी) को मैं स्पष्ट करता हूँ.

आंकडी एक इन भांत की, बांधी जोरसों ले ।

रूह झूठी देखहीं, सांची देखे देह ॥ ९

मायावी रचनाका रहस्य (आंकडी) ही इस प्रकारका है कि इसने सब जीवोंको फँसानेके लिए कर्मकाण्डके बन्धन जोरसे बाँध दिए हैं, इसलिए यहाँके प्राणी आत्माको झूठी और शरीरको सत्य मान बैठे हैं.

करे सगाई देहसों, नहीं रूहसों पेहेचान ।

सनमंध पाले इनसों, एह लई सबों मान ॥ १०

इसलिए संसारके लोग शरीरसे सम्बन्ध बाँधते हैं. उन्हें आत्माकी पहचान नहीं होती. इसलिए ऐसे लोग क्षणभंगुर शरीरके झूठे सम्बन्धोंके निर्वहनमें ही अपना सर्वस्व मान लेते हैं.

नहवाए चरचे अरगजे, प्रीतें जिमावें पाक ।

सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक ॥ ११

इस क्षणभंगुर शरीरको ही नहलाकर इस पर चन्दनका सुगन्धित लेप करते हैं फिर बड़े प्यारसे इसे अच्छा भोजन करवाते हैं. बड़े यत्नसे इसकी सेवा



करते हैं. वस्तुतः इन सबकी दृष्टि तो नश्वर माटीकी काया (खाक) से ही बँधी है.

**रूह गई जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें ।**

**सेवा जो करते सनेहसों, सो सनमंध ऐसा पालें ॥ १२**

जब शरीरसे जीव निकल जाता है, तब अपने ही हाथोंसे उस पार्थिव शरीरको आगमें जला देते हैं. जिस शरीरकी सेवा-सुश्रूषा इतने प्यारसे करते थे, उसीके साथ ऐसा सम्बन्ध (व्यवहार) निभाते हैं.

**हाथ पाँउ मुख नेत्र नासिका, सोई अंग के अंग ।**

**तिन छूत लगाई घरको, प्यार था जिन संग ॥ १३**

शरीरसे प्राण निकलने के बाद भी हाथ, पाँव, मुख, आँख, नाक, कान ये सारे अङ्ग तो यथावत् ही रहते हैं किन्तु जिसके साथ इतना प्यार था, उसी शरीरने प्राण निकलते ही उस घरको अपवित्र बना दिया.

**अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए ।**

**चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए ॥ १४**

जिस शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्ग इतने प्यारे लगते थे कि उसका क्षणभरका वियोग भी सहन नहीं होता था, किन्तु चेतन आत्माके चले जाने पर वह (मृत) शरीर मानों उठकर खाने लगता हो, ऐसा हो जाता है.

**सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए ।**

**सो तबहीं जलाएके, लियो सो घर बटाए ॥ १५**

जब शरीरका सम्बन्धी (जीव) निकल गया, तब उसी शरीरसे शत्रुता उत्पन्न हो गई और लोग उसी क्षण उस शरीरको जलाकर धन सम्पत्ति, घर आदिका बँटवारा कर लेते हैं.

**छोड सगाई रूह की, करे सगाई आकार ।**

**वैराट कोहेडा या विध, उलटा सो कै प्रकार ॥ १६**

लोग आत्माके सच्चे सम्बन्धको छोड़ कर मात्र शरीरसे ही सम्बन्ध जोड़ते हैं. इस प्रकार यह विश्व अनेक प्रकारकी विपरीत उलझानोंसे भरा हुआ है.

कै विध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध ।

चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध ॥ १७

संसारकी यह गति ही उलटी है। समस्त ब्रह्माण्डके लोग आँख होते हुए भी अन्धोंके समान व्यवहार करते हैं। चेतनाके बिना जिस शरीरको लोग अशुद्ध समझकर त्याग देते हैं फिर वैसे ही नश्वर शरीरोंके साथ सम्बन्ध जोड़ लेते हैं।

एक वेष जो विप्र का, दूजा भेष चंडाल ।

जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल ॥ १८

इस प्रकारके नश्वर शरीरोंमें भी एक शरीर ब्राह्मणका है, तो दूसरा चण्डालका है। जिस चण्डालको छूने मात्रसे कोई अपवित्र हो जाए, तो उसके साथ रहने पर फिर क्या गति होगी ?

चंडाल हिरदे निरमल, संग खेलें भगवान ।

देखावे नहीं काहूँ को, गोप राखे नाम ॥ १९

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचो रंग ।

रात दिन नजर रूह की, नहीं वजूदसों संग ॥ २०

यदि वह चण्डाल निर्मल हृदयका हो और रात-दिन प्रभुके प्रेममें मस्त रहता हो एवं किसीको दिखाए बिना ही भजन (भक्ति) करता हुआ अपने हृदयमें प्रभुका नाम गुप्त रूपसे लेता हो, क्षण भरके लिए भी वह अपने इष्टसे दूर नहीं होता हो अपितु सदैव उसकी आत्म-दृष्टि बनी रहती हो और वह शरीरके मिथ्या सम्बन्धोंको भी महत्त्व नहीं देता हो।

विप्र भेष बाहेर दृष्टि, षट करम पाले वेद ।

स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद ॥ २१

उदर कुटम कारने, उतमाई देखावे अंग ।

व्याकरन बाद विवाद के, अरथ करे कै रंग ॥ २२

इधर ब्राह्मण वेशधारी व्यक्ति बाह्य दृष्टि रखकर वेदानुसार शास्त्रोंका अध्ययन- अध्यापन, यजन-याजन (यज्ञ करना-कराना), ग्रहण-प्रतिग्रहण (दान लेना-देना) आदि षट्कर्मोंमें ही मग्न रहता है और परब्रह्म परमात्मा

श्यामसुन्दरकी याद तो उसे स्वप्नमें भी नहीं आती और न ही वह ब्रह्मके वास्तविक रहस्यको जानता है. वह कुटुम्ब परिवारका पोषण और अपनी उदर पूर्तिके लिए ही कर्मकाण्ड और शारीरिक स्वच्छताका ढोंग रचता है. व्याकरणके वाद-विवादमें पड़कर एक-एक शब्दके अनेक अर्थ निकालता है.

अब कहो काके छूए, अंग लागे छोट ।

अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उदोत ॥ २३

अब कहो कि किसके स्पर्शसे छूत लगती है ? वस्तुतः ब्राह्मणका शरीर स्वच्छ होते हुए भी उसकी प्रकृति नीच है, उसके हृदयमें अज्ञानरूप अन्धकार भरा हुआ है, इसलिए वह अधम है, जबकि चण्डालका हृदय निर्मल तथा परमात्माके प्रेमसे प्रकाशित होनेसे वह श्रेष्ठ है.

पेहेचान सबों वजूद की, नहीं रूह की दृष्टि ।

वैराट का फेर उलटा, या विध सारी सृष्ट ॥ २४

किन्तु सबको नश्वर देहकी पहचान है. आत्म-दृष्टि किसीमें नहीं है. इस प्रकार वैराट (संसार) का सम्पूर्ण चक्र ही उलटा है तथा सारी सृष्टिकी ऐसी ही उलटी रीति है.

एक देखो अचरज, चाल चले संसार ।

जाहेर है ए उलटा, जो देखिए दिल विचार ॥ २५

देखो, सारी दुनियाँ कैसी आश्चर्यजनक चाल चल रही है ? यदि अन्तरमें विचार कर देखा जाए, तो पता चलेगा कि वस्तुतः यहाँकी रीति प्रत्यक्ष ही उलटी है.

सांचे को झूठा कहें, झूठे को कहें सांच ।

ए भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच ॥ २६

यहाँ पर सत्य (आत्मा एवं परमात्मा) को असत्य और झूठे (स्वप्नवत् पिण्ड-ब्रह्माण्ड) को सत्य मानते हैं. यह भी मैं प्रत्यक्ष दिखाता हूँ कि लोग कैसे असत्यमें मग्न (एक रस) हो रहे हैं.

आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार ।

आप फिरे सब देखें फिरते, ए असत यों निरधार ॥ २७

यथार्थ आकार (चिन्मय स्वरूप ब्रह्म) निराकार कहते हैं और नश्वर पिण्ड-ब्रह्माण्डको साकार समझते हैं . इस प्रकार स्वयं चक्र खाते हुए व्यक्तिको सारा संसार ही चक्रकी भांति घूमता हुआ दिखाई देता है. निश्चय ही यह सब सृष्टि असत्य है.

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहें सब संसार ।

तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार ॥ २८

संसारके सब लोग ऐसा कहते हैं कि मूल आधारके बिना ही यह ब्रह्माण्ड खड़ा है. फिर स्वप्नके समान अस्तित्वहीन संसारको कैसे साकार कहा जाए ?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास ।

काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास ॥ २९

कालके प्रवाहमें जिसकी मृत्यु हो जाती है, उसे आकारवान् नहीं कहा जा सकता, क्योंकि काल (नश्वर) स्वयं निराकार होता है तथा आकार सदा अविनाशी होता है.

जिन राचो मृगजल द्रष्टें, जाको नाम परपंच ।

ए छल गफलत को कियो, ऐसो रच्यो उलटो संच ॥ ३०

इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! मृगजलके समान इस संसारमें मत फँसो जिसका नाम ही प्रपञ्च (इन्द्रजाल) है. इस छलरूप मायाने ही ऐसे उलटे सीधे खेल (ढाँचे) बनाए हैं.

प्रकरण १६ चौपाई ३९५

सनंध वेदके कोहेड़ेकी

ए खेल देख्या ख्वाबका, ए जो लरे लोक विवाद ।

पर लराए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद ॥ १

नश्वर जगतके ये खेल हम देख रहे हैं, इसमें सब लोग वाद-विवाद करते हुए दिखाई देते हैं परन्तु जो इनको परस्पर लड़ाते हैं, उनकी उत्पत्तिके

विषयमें भी जरा-सा बताता हूँ.

जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटे फेर ।

सो नेक बताए पीछे, उड़ा देऊँ अंधेर ॥ २

जिसके बन्धनमें आकर संसारके लोग अन्धोंकी भाँति उलटे चक्रमें घुम रहें हैं, उस विषयमें भी थोड़ा-सा कहकर अज्ञानको निर्मूल कर देता हूँ.

अब कहूँ कोहेडा वेद का, जाकी मीहीं गूँथी जाल ।

याकी भी नेक केहे के, देऊँ सो आंकड़ी टाल ॥ ३

वेदोंमें पहेलीके समान उलझाने वाली बहुत-सी बातें हैं, जिनमें कर्म, उपासना एवं ज्ञानरूपी सूक्ष्म जाली गूँथी गई है. इस विषयमें भी संक्षिप्त वर्णन कर, उनका रहस्य खोल देता हूँ.

वैराट आकार खाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध ।

मन नारद फिरे दसों दिस, वेदें बांध किए बेसुध ॥ ४

इस वैराटका आकार ही स्वप्नवत् है, इसमें ब्रह्माजी बुद्धिरूपमें विराजमान है. (उनके द्वारा प्रसारित वेदोंके ज्ञानके द्वारा विश्वका सञ्चालन होता है). नारदरूपी मन चंचल होकर दशों दिशाओंमें भ्रमण करता रहता है. इस प्रकार वैदिक कर्मकाण्डरूपी बन्धनमें पड़कर सब लोग परमात्माके प्रति बेसुध बने हुए हैं.

लगाए सब रबदें, व्याकरन वाद अंधकार ।

या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार ॥ ५

व्याकरणवाद (तर्क-वितर्क) ने सबको परस्पर वाद विवादमें फँसाकर अज्ञान (अन्धकार) में डाल दिया है (जबकि परमात्माकी भक्तिमें तर्कका कोई स्थान नहीं है). इस तर्क-वितर्ककी बुद्धिने सबको बेसुध बना दिया है, जिससे लोग विवेक और विचारसे शून्य हो गए हैं.

बंध जो बांधे या विध, हर वस्त के बारे नाम ।

सो बानी ले बडी कीनी, ए सब छल के काम ॥ ६

इस प्रकारके नियम बनाए गए हैं कि सामान्यजन अर्थज्ञानके अभावमें

बन्धनमें फँस जाते हैं. व्याकरणके शब्द ज्ञानमें तो एक अक्षरकी बारह मात्राओंमें खींचातानी होती है. इसीलिए पण्डितोंने इसे श्रेष्ठ माना है. वस्तुतः सामान्य लोगोंको छलनेके लिए मायाका ही यह कार्य है.

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के परकार ।

उरझाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार ॥ ७

अलग-लग मात्राओंका अलग-अलग अर्थ कर एक ही शब्दके बारह प्रकारके अर्थ किए जाते हैं. इस प्रकार शास्त्रोंके मूल अर्थको उलटाकर अनेक अनुमानोंमें ही सबको फँसा दिया है.

अरथ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने ।

मूढ़ों को समझावने, रहेस बीच में आने ॥ ८

पण्डित लोग सत्य अर्थको विपरीत सिद्ध करनेके लिए एक-एक शब्दको अनेक अर्थ के लिए खींचते हैं. अज्ञानी लोगोंको समझानेके लिए कहते हैं कि उनके अर्थमें रहस्य छिपे हुए हैं.

ऐसी अनेक आंकड़ियों मिने, बोले बारे तरफ ।

रहेस रंचक धरे बीच में, समझाए ना किने हरफ ॥ ९

शास्त्रोंमें ऐसे अनेक रहस्य जिनके अर्थ बारहों तरफ खींचे जा सकते हैं. उनको समझाते हुए पण्डित जन बीच-बीचमें मनगढ़ंत प्रसङ्गको जोड़कर इस प्रकार व्याख्या करते हैं कि किसीको एक शब्द भी समझमें नहीं आता.

बारे तरफों बोलते, एक अक्षर एक मात्र ।

ऐसे बांध बतीस श्लोक में, बड़ा छल किया यों सास्त्र ॥ १०

एक-एक अक्षरमें एक-एक मात्रा लागाकर एक शब्दके बारह प्रकारके अर्थ करने लगते हैं. अनुष्टुप छन्दके एक श्लोकमें ऐसे बतीस अक्षरोंका समावेश हुआ है. इस प्रकार शास्त्रोंके श्लोककोंकी भिन्न-भिन्न व्याख्या कर अल्पज्ञोंने बड़ा छल किया है.

बारे मात्र एक अक्षर, अक्षर श्लोक बतीस ।

छल एते आडे अरथ के, और खोज करे जगदीस ॥ ११

एक अक्षरमें बारह मात्राएँ होती हैं और अनुष्टुप छन्दवाले एक श्लोकमें बतीस अक्षर होते हैं. इस प्रकार अर्थ समझानेके लिए छल-कपटरूपी कई अवरोध हैं. ऐसे छल-कपटके माध्यम द्वारा पण्डित जन प्रभुकी खोज करते हैं.

अरथ आडे कै छल किए, तिन अरथों में कै छल ।

अक्षरा अरथ ना होवहीं, कियो भावा अरथ अटकल ॥ १२

एक शब्दके वास्तविक अर्थकी आड़में कई छलपूर्ण अर्थ कर देते हैं. उन अर्थोंमें भी ज्ञानकी चतुराईपूर्ण अनेक छल-कपट भरे होते हैं. इस प्रकार जब शब्दार्थ ही यथार्थ बन नहीं पाता, तो भावार्थको अनुमानके द्वारा ही दर्शाया जाता है.

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत।

सो हरफ द्रढ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत ॥ १३

जिसे देवभाषा संस्कृत कहा गया है वह अनेक मात्राओं एवं अर्थोंके रहते संशय और भ्रम उत्पन्न करनेवाली भाषा हो गई. जब एक शब्दका अर्थ ही इतना अधिक बदलने लगे तब विचारोंमें दृढ़ता कैसे आ सकती ?

सो पढे पंडित जुध करे, एक कांने को टुकडे होए ।

आपुस में जो लड मरे, एक मात्र ना छोडे कोए ॥ १४

ऐसे शब्दज्ञान धारी पण्डित धर्मयुद्ध अर्थात् शास्त्रार्थ करते समय शब्द और मात्राओंका विश्लेषण करते हुए परस्पर झगड़ने लगते हैं किन्तु एक मात्राको भी छोड़ नहीं सकते.

ए बाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान ।

स्वांत त्रास न आवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान ॥ १५

ऐसे वाद-विवादके वचनोंको सिर पर लेकर पण्डित लोग अपनी सुधि-बुधि और शान्ति खो बैठते हैं. ऐसे लोगोंको स्वप्नमें भी शान्ति नहीं मिलती. व्याकरणका बाह्यज्ञान (शब्दज्ञान) इस प्रकारका होता है.

ए बानी ले बडी कीनी, दियो सो छल को मान ।

सो खेंचाखेंच ना छूटहीं, लिए क्रोध गुमान ॥ १६

ऐसे शास्त्र वचनोंका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया, जिसके कारण वाद-विवादको पोषण मिला. यही कारण है कि पण्डितोंकी परस्पर खींचातानी नहीं छूटती, क्योंकि वे अहङ्कार तथा क्रोधसे ग्रस्त हैं.

ए छल पंडित पढहीं, ताए मान देवें मूढ ।

बडे होए करे माएने, एह चली छल रूढ ॥ १७

इस प्रकारका छलयुक्त ज्ञान सीखे हुए पण्डितोंको मूर्ख लोग अधिक सम्मान देते हैं. ऐसे पण्डितजन स्वयंको ज्ञानवान् मानकर शास्त्रोंका अर्थ समझाने लगते हैं. इस प्रकार छल-कपटपूर्ण रूढ़ीवादी परम्पराएँ चलने लगीं.

सीधी इन भाषा मिने, माएने पाइए जित ।

जो सबद सब समझहीं, सो पकडे नहीं पंडित ॥ १८

सीधी-सादी इस हिन्दी (हिन्दुस्तानी) भाषासे भी अर्थ स्पष्ट हो सकते हैं, किन्तु इस भाषाके शब्द सब कोई समझते हैं, इसलिए पण्डित जन इसे नहीं अपनाते हैं.

एक अरथ न कहे सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान ।

अरथ को डालने उलटा, जाए पढे छल बान ॥ १९

यह हिन्दी (हिन्दुस्तानी) भाषा सबके लिए सुगम होने पर भी पण्डित जन इसके द्वारा सीधा अर्थ प्रकट नहीं करते. शास्त्रोंके अर्थोंको अपने अनुकूल बनाने (उलटाने) के लिए छलपूर्ण हृदयसे वे देवभाषा पढ़ते हैं.

ए छल देखो मोमिनो, और है सब छल ।

रूढ छल न छूटे छल थें, जो देखो करते बल ॥ २०

हे ब्रह्मात्माओ ! इस छल-कपटपूर्ण संसारको देखो, यहाँके सभी खेल छलयुक्त हैं. मायासे उत्पन्न हुए यहाँके जीव परमात्माकी प्राप्तिके लिए कितना ही प्रयत्न करें, किन्तु इन छलपूर्ण बन्धनोंसे वे मुक्त हो सकते.



एक उड़न वैराट की, दूजी वेद की उड़न ।

ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन ॥ २१

यहाँपर एक ओर वैराटकी उलझनें हैं, तो दूसरी ओर वेदके कर्मकाण्डकी उलझनें हैं। इनके विषयमें मैंने तुम्हें थोड़ा ही कहा है, किन्तु मायाने ऐसे अनेक छल बनाए हैं।

मुख उदर के कोहेडे, रचे मिने सुपन ।

और सुध इनों क्यों होए, ए खेलें गफलती जन ॥ २२

शेषशायी नारायणके नाभिकमलसे उत्पन्न होकर ब्रह्माजीने चौदह लोकोंमें स्वप्नवत् सृष्टिकी रचना की और अपने श्रीमुखसे वैदिक ज्ञानको व्यक्त किया। किन्तु इस स्वप्नवत् झूठे खेलमें मग्न होकर खेलने वाले झूठे लोगोंको इससे पार होनेकी सुधी कैसे हो सकती है ?

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह ।

देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह ॥ २३

वेदोंने वैराट (संसारी) के जीवोंको देखकर कर्मकाण्डका ज्ञान देनेकी यहा महात्त्वपूर्ण सेवा की है, क्योंकि जैसे देवता क्षर ब्रह्माण्डके हैं वैसे ही उनके पूजक जीव क्षर ब्रह्माण्डके हैं। इस प्रकार संसारमें पूजा-पद्धति चल रही है।

जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत ।

ए मोहोरे उपजे अंधेर से, ताको ए सब सत ॥ २४

इन शास्त्रोंको विद्वानोंने अपनी बुद्धिकी क्षमताके अनुसार ग्रहण कर ब्रह्मका निरूपण किया है। ये सब मत-मतान्तर अन्धकार समान मोहतत्त्वसे उत्पन्न होनेके कारण उनको मोहकी बात ही सत्य प्रतीत होती है।

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन ।

उनमान आगे केहेके, फेर पडे मांहें सुन ॥ २५

वेदों (वैदिक ऋषियों) ने चौदह लोकोंमें ब्रह्मको ढूँढ़ते हुए निराकार पर्यन्तकी बात की। तथापि ब्रह्मका पूर्ण अनुभव न होनेके कारण उन्होंने अनुमानसे कहा कि ब्रह्म तो इससे भी आगे है। इस प्रकार उनकी बद्धि पुनः

शून्य-निराकारमें समाहित हो गई.

ए देखो तुम मोमिनों, पांचों उपजे तत्व ।

ए गफलत में रूह खेलहीं, सब रूहों की उतपत ॥ २६

हे ब्रह्मप्रियाओ ! तुम ध्यानपूर्वक देखो ये पांचों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) तत्त्व मोहसे उत्पन्न हुए हैं और मायासे उत्पन्न जीव इसी माया-मोहमें ही खेल रहे हैं.

रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम ।

पेड़ याको जुलमत, मलकूत में खसम ॥ २७

यह स्वप्नकी चेतना ही स्थावर (पेड़ पौधे) और जङ्गम (पशु-पंक्षी) आदि समस्त सृष्टिमें व्याप्त हैं. इनका मूल ही अज्ञानरूपी अन्धकार है तथा इनके स्वामी भगवान् विष्णु भी वैकुण्ठ (मलकूत) में विराजमान हैं.

दसों दिसा भवसागर, देखत एह सुपन ।

गृदवाए आवरन गफलत, निराकार कहावे सुन ॥ २८

भावसागरकी दसों दिशाओंमें सर्वत्र स्वप्न ही दिखाई दे रहा है. मोहतत्त्वके आवरणने चौदह लोकोंको चारों ओरसे घेर लिया है, जिसे शून्य-निराकार भी कहते हैं.

तबक चौदे कोहेडा, ए सबे कुदरत ।

सुर असुर कै अनेक विध, खेलें ख्वाबी दम गफलत ॥ २९

ये चौदह लोक ही उलझनपूर्ण हैं तथा ये सब प्रकृतिकी रचना है. देव, दानव और मानवआदि सबके सब स्वप्नके जीव झूठ और स्वप्नमें ही खेल रहे हैं.

वनसपती पसू पंखी, आदमी जीव जंत ।

मछ कछ सब सागर, रच्यो एह परपंच ॥ ३०

इस संसारके वनस्पति, पशु-पंक्षी एवं मनुष्य तथा अनेक प्रकारके जीवजन्तु मगरमच्छ, कच्छप आदि अर्थात् यह समस्त भवसागर ही मायवी प्रपञ्चकी ही रचना हैं.

रूह मिने जुदी जिनसों, कहिएत चारों खान ।

जड चलें पेट पांउ परे, लाख चौरासी निरमान ॥ ३१

यहाँपर जीवोंकी भी अनेक जातियाँ हैं। जो चार प्रकारसे उत्पन्न (जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज) मानी गई हैं। इनमेंसे कई जड़ (पहाड़ वृक्ष आदि) हैं तो कोई पेटके बल रेंगनेवाले जीव, पाँवसे चलने वाले मानव, पशु, आदि तथा पंखोंसे उड़नेवाले पक्षीगण हैं। इस प्रकार चौरासी लाख योनियाँ बनी हुई हैं।

(२० लाख स्थावर, ९ लाख जलचर, ११ लाख कीट, १० लाख पक्षीगण, ३० लाख चतुष्पाद, ४ लाख मनुष्य, इस प्रकार ८४ लाख योनियाँ गिनाई गई है।)

कोई वैकुण्ठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल ।

खेलें सब ख्वाबी पुतले, रूह आडी गफलत पाल ॥ ३२

शुभकर्म करने वाले कई जीव वैकुण्ठ जाते हैं और अशुभ कर्म करने वाले यमपुरी जाते हैं। कोई स्वर्गगामी है। तो कोई पातालगामी है। सर्वत्र पाँच तत्वोंसे बने हुए शरीर (पुतले), पाँच तत्व निर्मित संसारमें रमण कर रहे हैं। इन सब जीवोंके मुक्ति मार्गमें यह मायाका अन्धकार अवरोधक बना हुआ है।

जो बनजारे खेल के, तिन सिर जमको दंड ।

कोई दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड ॥ ३३

इस खेलको सम्पादन करनेवाले जीवोंके सिर पर यमराजके दण्डका भय बना रहता है। यद्यपि थोड़े समयके लिए शुभ कर्मोंका सुख भोगनेके लिए उन्हें स्वर्गमें रहनेका अवसर मिलता है, परन्तु अनन्तः उन्हें नरक कुण्डका दुःख भोगना ही पड़ता है।

लाठी तेरह लोक पर, संजम पुरी सिरदार ।

जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार ॥ ३४

सतलोकको छोड़कर शेष तेरह लोकोंमें यमपुरीके सिरदार यमराज (धर्मराज) का शासन है। जो वैकुण्ठाधिपति जगदीशको नहीं जानता है, उसे यमराजका भयानक दण्ड भगना पड़ता है।

ए छल बनज छोड के, करे वैकुंठ को बेपार ।

ए सत लोक याही को, कोई गले निराकार ॥ ३५

जो लोग इस खेलमें अशुभ कर्मका व्यापार छोड़कर (नवधाभक्ति द्वारा) वैकुण्ठका व्यापार करते हैं, ऐसे जीवोंका मोक्षस्थान सतलोक ही है तथा कुछ जीव वैकुण्ठके पर निराकार तक पहुँच जाते हैं।

चौदे तबक इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।

पहाड कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ बास ॥ ३६

इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमेंसे पृथ्वीका व्यास पचास करोड़ योजनका है। इस पृथ्वीको मर्यादित रखनेके लिए आठों दिशाओंमें आठ बड़े-बड़े पर्वत हैं और चौसठ लाख योजनमें ही वस्ती बसी है।

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत ।

ए निरमान बांध के, ले ख्वाब किया सत ॥ ३७

यह शरीर पाँच तत्वका बना हुआ है तथा इसमें छठी विशुद्ध आत्मा है। सभी शास्त्रोंका यही मत है। इस प्रकार संसारकी रचनामें बँधकर आत्मा इस स्वप्नवत् संसारको ही सत्य मान लेती है।

देखे सातों सागर, देखे सातों लोक ।

पाताल सातों देखिया, ए गफलत उडे सब फोक ॥ ३८

मैंने सातों सागर, ऊपरके सातों लोक तथा नीचेके सातों पाताल देख लिए हैं। अज्ञानका झूठा आवरण दूर होकर आत्म-जागृति हो जानके बाद यह सब झूठा प्रतीत होता है।

ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप ।

ए नख सिख लों देखिया, बडा दजाल का रूप ॥ ३९

मैंने इस छलवती मायाका बल देख लिया है। यह तो मानों धधकती हुई अग्निका ही कुआँ है। इस मायाको नखसे सिख तक भली भाँति देख लिया, यह तो नास्तिकता (दज्जाल) का ही बड़ा स्वरूप है।

ताए नारायन कर सेवहीं, ऐसी ए कुफरान ।

पीर जैसे मुरीद तैसे, एक रस ए निरवान ॥ ४०

स्वप्नके जीव अक्षरब्रह्मके स्वप्नके स्वरूप नारायण (अक्षरब्रह्म) को ही पूर्णब्रह्म मानकर उनकी पूजा करते हैं। जैसे यहाँ पर गुरु (पीर) क्षर ब्रह्मके उपासक हैं तो शिष्य (मुरीद) भी वैसा ही करते हैं। निश्चय ही गुरु-शिष्य दोनोंही एकरस हो गए हैं।

ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध ।

ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की विध ॥ ४१

स्वप्नके जीव वस्तुतः झूठे खेलमें ही खेल रहे हैं, उन्हें सत्य वस्तु (परब्रह्म) की सुधि ही नहीं है। इस संसारमें गुरु और शिष्य कहलाने वालोंकी स्थिति ही ऐसी है। इस प्रकार दोनोंकी रीति बता दी है।

प्रकरण १७ चौपाई ४३६

सनंध हांसी की

मोमिन यामें न राचहीं, जाको साचसों सनेह ।

निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक विध एह ॥ १

जिनका सच्चे प्रियतमसे स्नेह है, ऐसी आत्माएँ (मोमिन) झूठे संसारमें मग्न नहीं होतीं। इस जगतका अस्तित्व तो कुछ भी नहीं है, तथापि इसकी रीतिको जरा-सा देख लो।

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दजाल ।

अरस रूहों को देखाए के, उडाए देसी ए ताल ॥ २

यहाँ पर धर्मका उपदेश देनेवाले गुरु (पीर) तथा उपदेश लेने वाले शिष्य (मुरीद) दोनों ही अज्ञानके अन्धकारमें पड़े हुए हैं। धमधनी ब्रह्मात्माओंको इस प्रकारका मायावी जगत् दिखा कर एक तालीमें इसे समाप्त कर देंगे।

ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन ।

जिन तुम बांधो आप को, अरस के मोमन ॥ ३

इस छल प्रपञ्चपूर्ण विश्वकी रचना ही इस प्रकार हुई है। तुमने इसीको

देखनेकी माँग की थी. हे परमधामकी ब्रह्मात्माओ ! तुम स्वयंको मायावी प्रपञ्चमें मत बाँधो (इसमें मत फँसो).

जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी का है ठौर ।

खसम वतन आप भूल के, कहा देखत हो और ॥ ४

परमधामसे सम्बन्ध रखनेवाली सभी ब्रह्मात्माएँ अब सचेत हो जाएँ. यह संसार उपहास (हँसी) का ही स्थान है. तुम स्वयंको, धामधनीको तथा अपने घर अखण्ड परमधामको भूलकर अन्य किस वस्तुको देख रही हो ?

मोमिनोँ तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल ।

जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल ॥ ५

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम्हें मायावी खेल देखनेकी इच्छा उत्पन्न हुई, किन्तु जिसका कोई जड़मूल ही नहीं है, ऐसी मायाने तुम्हें बाँध लिया है. वस्तुतः यह हास्यास्पद स्थिति है.

माग्या खेल खुसाली का, तिन फेरे तुमारे मन ।

सो सब तुमको बिसरे, जो कहे मूल वचन ॥ ६

तुम सबने श्रीराजजीसे आनन्द-विनोदका खेल माँगा था किन्तु इस खेलने तुम्हारे मनको उलटा कर दिया है. इसलिए परमधाममें श्रीराजजीसे हुए प्रेमपूर्ण वार्तालाप (मूलवचन) को तुम भूल गई हो.

गूँथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग ।

अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग ॥ ७

रस्सी बिना ही इस अस्तित्वहीन मायाका जाल बुन कर तुम उसी जालसे अपने अङ्गोको बाँध रही हो और (तुम्हारा मूलअङ्ग तो परमधाममें है तथापि यहाँ पर) बिना अङ्गके ही तुम तड़प रही हो. वस्तुतः दुनियाँके खेलका रङ्ग (प्रभाव) ही कुछ इस प्रकारका है.

आप बंधाने आप से, इन कोहेडे अंधेर ।

चढ्या अमल जानों जेहेर का, फिरत वाही के फेर ॥ ८

अज्ञानरूपी अन्धकारके कारण तुम स्वयं अपने ही गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके

बन्धनमें बँध रही हो. तुम पर काम, क्रोध, लोभ, मोह आदिका विषतुल्य नशा छाया हुआ है. इसलिए तुम इस झूठे चक्रमें वारंवार घूम रही हो.

**अमल चढ्या क्यों जानिए, कोई फिसलत कोई गिरत ।**

**कोई सावचेत होए के, हाथ पकर सीढ़ी चढत ॥ ९**

यहापर मायाका नशा चढ़ा हुआ है यह इस प्रकार जाना जाता है कि कोई डगमगा रहा है और कोई गिर रहा है. कोई मायामें ही सावचेत होकर अज्ञानी जीवोंके हाथ पकड़कर ज्ञानकी सीढ़ी पर चढ़नेका प्रयत्न करता है.

**ना सीढ़ी ना पांवडी, ए चढत पडत क्यों कर ।**

**ए देखन जैसी हांसी है, देखो मोमिनोँ दिल धर ॥ १०**

यहाँ नतो कोई (ज्ञानकी) सीढ़ी है और न ही कोई पग टिकानेका साधन है, फिर भी ज्ञानके सोपान पर चढ़ कर लोग कैसे गिर रहे हैं ? हे ब्रह्मात्माओ ! यह ध्यानपूर्वक देखो. यह हँसीका खेल तो वस्तुतः देखने जैसा है.

**एक पडत बिना पांवडी, वाको दूजी पकडे कर ।**

**सो खाए दोनोँ गडथले, ए हांसी है इन पर ॥ ११**

कोई ज्ञानकी पौरी (पाँवड़ी) के बिना ही गिर रहा है तो दूसरा ज्ञानी बनकर उसका हाथ पकड़ता है, परन्तु दोनों ही लड़खड़ाकर अन्तमें गिर जाते हैं. इस प्रकार यहाँ सब पर हँसी हो रही है.

**एक पडी जिमी जानके, वाको दूजी उठावन जाए ।**

**उलट पडी सो उलटी, ए हांसी योँ हंसाए ॥ १२**

कोई तो इस झूठी भूमिको सत्य समझकर गिर रहा है, दूसरा उसे सम्भालने (पकड़ने) के लिए ज्ञानी बनकर जाता है. वे दोनों मायाके उलटे बन्धनमें फँस कर विपथगामी हो रहे हैं. इस प्रकार यह खेल चल रहा है.

**ओठा लेवें जिमी बिना, पांव बिना दौडी जाए ।**

**जल बिना भव सागर, तिनमें गोते योँ खाए ॥ १३**

इस स्वप्नवत् संसारमें सत्यभूमिके बिना ही जीव इसका आश्रय लेना चाहते

हैं और बिना पाँव (मनके द्वारा) ही भागने लगते हैं. यह भवसागरजल विहीन है फिर भी गोते खा रहे हैं.

**अमलक देखो खडियां, हाथ बिना हथियार ।**

**नींद बडी है जागते, पिंड बिना आकार ॥ १४**

यह संसार अन्तरिक्षमें अटका हुआ प्रतीत होता है. इसके हाथ नहीं हैं, फिर भी यह काम-क्रोधरूपी शस्त्र धारण किए हुए है. इसमें जागृत होने पर भी लोग अज्ञानकी निद्रामें डूबे हुए ही रहते हैं तथा शरीर नाशवान है फिर भी स्वयंको साकार मानकर बैठे हैं.

**एक नई कोई आवत, सो कहावत आप अबूझ ।**

**दूजी ताए समझावने, ले बैठत सब सूझ ॥ १५**

यदि कोई नया उपदेशक मिल जाए तो वह उपदेशकके समक्ष स्वयंको अज्ञानी मानता है. वह उपदेशक भी ज्ञानी बन कर उन्हें समझाने लगता है.

**वचन करडे कोई कहे, किनसों सहे न जाए ।**

**पीछे कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए ॥ १६**

यदि उपदेश देते हुए कोई कठोर शब्दोंका प्रयोग करता है, तो वह किसीसे भी सहा नहीं जाता. बादमें श्रोता और वक्ता पछताकर दुःखी होते हैं. इस प्रकार उन सबको मायाका नशा खींच कर ले जाता है.

**लर खीज रोए रोलावहीं, दुख देखे दोऊ जन ।**

**जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन ॥ १७**

लड़-झगड़कर तथा स्वयं रोते हुए और दूसरोंको रुलाते हुए उपदेशक तथा श्रोता दोनों ही दुःखी होते हैं. परन्तु जब जागृत होकर देखते हैं. तो ज्ञात होता है कि श्रोता तथा वक्ता दोनोंमेंसे किसीमें भी कोई कमी नहीं है.

**हांसी होसी मोमिनों, इन खेल के रस रंग ।**

**पूर बिना बहे जात हैं, कोई खेंच निकाले अभंग ॥ १८**

हे ब्रह्मात्माओ ! ऐसे मायावी खेलके रङ्गमें रङ्गे हुए तुम्हारी अवश्य हँसी



होगी. सब लोग मोह सागरके जलहीन प्रवाहमें बहते जा रहे जीवोंको खींचकर बाहर निकाल सकता है.

**न जल ना कछू पूर है, कौन बहे कौन आडी होए ।**

**ए अमल इन जिमी का, तुमें देखावत विध दोए ॥ १९**

इस भवसागरमें न तो जल है न उसका प्रवाह ही है. इसमें कौन बह रहा है और कौन किसको सम्हाल रहा है (कुछ पता नहीं चलता). इस भूमिका नशा ही कुछ ऐसा है, जो तुम्हें दोनों प्रकारसे (स्वप्न और जागृत अवस्थामें) दिखाया जा रहा है.

**होसी खुसाली मोमिनों, करसी मिल कलोल ।**

**ए हांसी या विध की, कोई नहीं खेल इन तोल ॥ २०**

हे ब्रह्मात्माओ ! जागृत होने पर तुम्हारे अन्दर प्रसन्नता छा जाएगी. तब तुम सब मिलकर आनन्द-विनोद करोगी. यह हँसी ही इस प्रकारकी है कि इसके समान अन्य कोई खेल ही नहीं है.

**ए खेल देखो हांसी का, आसमान लों पाताल ।**

**फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा मूल न डाल ॥ २१**

पातालसे वैकुण्ठ पर्यन्त फैले हुए इस हँसीके खेलको देखो. इस संसाररूपी पृथ्वीमें फल, फूल, पत्ते, तना, छाल, मूल तथा डालियाँ कुछ भी तो नहीं है.

**ए बृख तो या विध का, ताको फल चाहे सब कोए ।**

**फेर फेर लेने दौडहीं, ए हांसी या विध होए ॥ २२**

यहाँ संसाररूपी वृक्ष ही इस प्रकारका है फिर भी सब लोग उसका सुखरूपी फल प्राप्त करना चाहते हैं. इसलिए बार-बार सुख प्राप्त करनेके लिए दौड़ते हैं (किन्तु मिलता नहीं है). इस प्रकार हँसी होती है.

**बंध ना खुले बिना बांधे, जो खोले फेर फेर ।**

**ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर ॥ २३**

ये कोई बाँधे हुए बन्धन नहीं हैं. इसलिए बार-बार खोलनेका प्रयत्न करने

पर भी ये खुलते नहीं हैं. इन प्राकृतिक रचनाओंको देखकर ब्रह्मात्माएँ स्वयंको तथा धामधनीको भी भूल गई है.

**अब याद करो खसम को, छोड़ो नींद विकार ।**

**पेहेचान कराए इमामसों, सुफल करुं अवतार ॥ २४**

हे ब्रह्मात्माओ ! अब तुम अपने प्रियतम धनीका स्मरण करो. तुम इस मायावी निद्राके विकारोंका परित्याग करो. सद्गुरुकी पहचान करवाकर मैं तुम्हारा जीवन सफल बना देता हूँ.

**वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान ।**

**इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊं उनमान ॥ २५**

मैं तुम्हें धामधनीका मूल घर परमधाम दिखाकर अपने मूल स्वरूपकी पहचान करवा देता हूँ और सद्गुरुके ज्ञानका प्रकाश फैला कर तुम्हारे मनके सन्देहको मिटा देता हूँ.

**हकें कहाँ अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत ।**

**तुम अरस भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत ॥ २६**

हे ब्रह्मात्माओ ! इस संसारमें आनेसे पूर्व जब हम सब परमधाममें बैठी थी तब धामधनीने कहा था कि संसारमें जाकर तुम परमधामको, स्वयंको तथा मुझे भी भूल जाओगी और नश्वर जगतके अतिरिक्त कुछ भी नहीं देखोगी अर्थात् उसीको सत्य मानोगी.

**हम अरस रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर ।**

**क्या चले खेल फरेब का, तुम आगूं देत हो खबर ॥ २७**

तब तुमने कहा था कि हम परमधामकी आत्माएँ आपकी चाह (आशिक) हैं. आप हमारे प्रियतम हैं. अतः हम आपको कैसे भूल सकती हैं ? तब मायवी खेलका प्रभाव हम पर कैसे पड़ेगा जब आप स्वयं हमें पहलेसे ही सावधान कर रहे हैं.

ए जीमी हांसी देख के, मोमिन हूजो सावचेत ।  
 इमाम को सुख महामति, तुमको जगाए के देत ॥ २८

हे ब्रह्मात्माओ ! इस हँसीकी भूमि (संसार) को देखकर तुम स्वयं सचेत हो जाओ. महामति तुम्हें जागृत करके सद्गुरु (इमाम) प्रदत्त अखण्ड सुख प्रदान कर रहे हैं.

प्रकरण १८ चौपाई ४६४

सनंध कलमें की

ए जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब ।  
 ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! इस संसारको तुमने देख लिया और इसके अस्तित्वहीन सम्प्रदायोंको भी देखा. यह सब तो तुमने (पूर्व वर्णनके आधारपर) भली-भाँति समझ लिया. अब मैं एक रहस्यमयी बात प्रकट करता हूँ.

ऐसा था फरेब अंधेर का, कहूं हाथ न सूझे हाथ ।  
 बंध पडे नजर देखते, तामें आई रूहें जमात ॥ २

इस संसारमें अज्ञानका अन्धाकार इस प्रकार व्याप्त था कि एक हाथसे दूसरे हाथ तककी दूरी भी नहीं सूझती थी. इस पर दृष्टि मात्र डालनेसे भी (जन्म लेते ही) मनुष्य बन्धनमें फँस जाता था. ऐसे अन्धकारमय संसारमें परमधामसे ब्रह्मात्माओंका समूह अवतरित हुआ.

खेल देखन कारने, करी उमेद एह ।  
 ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखों नहीं संदेह ॥ ३

हे ब्रह्मात्माओ ! ऐसा खेल देखनेके लिए तुमने इच्छा व्यक्त की. तुम्हारे लिए ही मैंने इस खेलका निरूपण किया है. इसलिए अब तुम्हारे मनमें कोई भी सन्देह रहने नहीं दूंगा.

ए खेल किया रूहों वास्ते, ए जो मोमिन आइयां जेह ।  
 खेल देख जाए वतन, बातें करसी एह ॥ ४

यह मायवी खेल ब्रह्मात्माओंके लिये ही बनाया है और वे ही (आत्माएँ)

इसे देखनेके लिए यहाँ आई है। यह खेल देखकर वे परमधाममें जागृत होंगी और खेलकी बातें करेंगी।

मोमिन बातें वतन की, देऊंगी आगे बताए ।

पर अब कहूँ नेक दीन की, जो रसूलें राह चलाए ॥ ५

हे ब्रह्मात्माओ ! परमधामकी चर्चा आगामी प्रकरणोंमें करूँगा परन्तु रसूलने जो मार्ग चलाया है, अब मैं उस धर्मके विषयमें थोड़ी-सी चर्चा करता हूँ।

जो अलहा किनहूँ न लह्या, मैं तिनका कासद ।

अरस रूहों वास्ते आइया, मेरे हाथ कागद ॥ ६

रसूल साहेबने कहा है कि जिस परमात्माको किसीने भी नहीं पाया है, मैं उन्हींका पत्रवाहक (कासिद) बनकर आया हूँ। परमधामकी आत्माओंके लिए मेरे हाथ यह पत्र (कुरान) आया है।

कह्या रसूलें जाहेर, खबर खुद की मुझ ।

कोई और होवे तो पोहोंचहीं, अब जाहेर करहों गुझ ॥ ७

रसूल साहेबने स्पष्ट किया कि मुझे परमात्माकी पहचान है। अन्य कोई भी वहाँसे आया होता तो वहाँ पहुँचता, अब मैं उन गूढ़ रहस्योंको प्रकट करता हूँ।

जो चौदे तबकोंमें नहीं, वार न काहूँ पार ।

सो अलहा हम आवसी, खातर सोहागिन नार ॥ ८

जो चौदह लोकोंसे परे हैं और जिनका परावार (ओर-छोर) किसीने भी नहीं पाया है, ऐसे दुर्लभ परमात्मा हम सब सुहागिनी ब्रह्मात्माओंके लिए आएँगे।

ले फुरमान जो हाथमें, केहेलाया मैं रसूल ।

ए देखो अरवाहें अरस की, जिन कोई जावें भूल ॥ ९

रसूलने यह भी कहा कि परमात्माका आदेश हाथमें लेनेके कारण मैं रसूल पैगम्बर कहलाया। हे परमधामकी आत्माओ ! उस सन्देशको भली-भाँति देखो, इस जगतमें कोई भी मत भूलना।

काफर मुसलिम मोमिन की, सोई करसी पेहेचान ।

हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान ॥ १०

वे परमात्मा ही जीवसृष्टि (काफर), ईश्वरी सृष्टि (मुस्लिम) और ब्रह्मसृष्टि (मोमिन) की पहचान करेंगे और कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करते हुए वास्तविक ज्ञान (हकीकत) तथा पूर्ण पहचान-आध्यात्म विज्ञान (मारफत) के द्वारा खोलेंगे.

अबलों बेवरा ना हुआ, कै चली गई जहान ।

एक दीन जब होवहीं, तब होसी सबों पेहेचान ॥ ११

संसारमें कितने लोग आए और चले गए किन्तु अभी तक धर्मग्रन्थोंका वास्तविक निरूपण नहीं हो सका. सब मत-मतान्तर मिट कर जब एक ही धर्म स्थापित हो जाएगा, तब सबको इस रहस्यकी पहचान हो जाएगी.

जो माएने न पाए बातून, तो हुए जुदे जुदे मांहें दीन ।

फिरके हुए तिहतर, एक नाजी में कहाा यकीन ॥ १२

कुरानके गूढ़ रहस्यको न जान पानेके कारण इस्लाम धर्ममें अलग-अलग समुदाय हो गए. इस प्रकार तिहतर फिरके (भाग) हो गए. उनमेंसे एक नीजी फिरकेमें ही कुरानके प्रति विश्वास रहा.

और बहतर नारी कहे, करी एक को हकें हिदायत ।

कुरान माजजा नबी नबुवत, सो नाजी करसी साबित ॥ १३

शेष बहतर फिरकोंको नारी फिरका (दोजख-नर्कमें जाने वाले) कहा हैं. केवल एक समुदायको ही परमात्माने मार्ग दर्शन दिया. वही नाजी फिरका वाले लोग कुरानके रहस्य खोलेंगे और पैगम्बरी सिद्ध करेंगे.

सो साबित तब होवहीं, जब सब होवे दीन एक ।

पेहेलें कहाा रसूल ने, एही उमत नाजी नेक ॥ १४

ये सब बातें तभी सत्य सिद्ध होंगी, जब संसारमें एक विश्व धर्मकी स्थापना हो जाएगी. रसूलने पहले ही कहा था कि यही नाजी समुदाय परमात्माके प्रति विश्वास रखेगा.

सब कोई बुजरक कहावते, आप अपने मजहब ।

तिन सबों समझावहीं, एक दीन होसी तब ॥ १५

विभिन्न समुदायके लोग अपने-अपने समुदायमें रहते हुए स्वयं समझदार कहलाते हैं। उन सबको यह समुदाय एक परमात्माकी बात समझाएगा, तब एक ही विश्वधर्मकी स्थापना होगी।

झूठ सबे उड जाएसी, ना चले तिन बखत ।

हक हादी के प्रताप थें, क्यों रेहेवे गफलत ॥ १६

तब धर्मके नामपर चल रहे झूठे मत उड़ जाएँगे और ऐसे प्रचारकोंका कुछ वश नहीं चलेगा। सद्गुरु धनीकी कृपा होने पर यह अज्ञान किस प्रकार रह सकता है ?

तब लों रसमें लरत हैं, जब लों है उरझन ।

रूहअल्ला कुंजी ल्याइया, तब जोरा न चलसी किन ॥ १७

जब तक उलझनें बनी रहेंगी, तब तक ही अलग-अलग रीति-रिवाजोंके झगड़े चलते रहेंगे। अब तो श्रीश्यामाजीके अवतार स्वरूप सद्गुरु (रूहअल्ला) तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी ले आए हैं। अब ऐसी कोई भी झूठी बातोंका जोर नहीं चलेगा।

जब सांच उठ खडा हुआ, तब कुफर रेहेवे क्यों कर ।

जोलों कायम दिन ऊग्या नहीं, है तोलों रात कुफर ॥ १८

जब सच्ची बातें प्रत्यक्ष हो गईं, तब भ्रान्ति (कुफर) कैसे रह पाएगी ? जब तक तारतम ज्ञानरूपी अखण्ड दिनका उदय नहीं हुआ था, तब तक ही अज्ञानकी रात्रि (भ्रान्ति) बनी हुई थी।

ए खेल हुआ जिन खातर, सो गए खेल में मिल ।

जब जाहेर साहेब हुआ, तब सबों नजर आवे दिल ॥ १९

जिन ब्रह्मात्माओंके लिए इस खेलकी रचना हुई है, वे ही स्वयंको भूलकर इस खेलमें मिल गईं हैं। जब धामधनी उनके समक्ष प्रकट हो गए, तब उनकी दृष्टिमें सब कुछ आने लगा।

महंमद पेहेले आए के, वरसाया हक का नूर ।

कै विध करी मेहेरबानगी, पर किने ना किया सहूर ॥ २०

रसूल मुहम्मदने पहलेसे ही आकर कुरानके माध्यमसे परमात्माके ज्ञानकी वर्षा की। उन्होंने तो अनेक प्रकारसे लोगों पर कृपा की, किन्तु उस समय किसीने भी इस पर विवेकपूर्ण विचार नहीं किया।

ए सहूर तो करे, जो होए अरस अरवाए ।

जिन उमत के खातर, आवसी इत खुदाए ॥ २१

जिन ब्रह्मात्माओंके लिए परमात्माके आनेकी बात रसूलने की थी, यदि उस समय परमधामकी वे आत्माएँ होती तो वे रसूलके वचनों पर अवश्य विचार करतीं।

जो अरस रूहें आई होती, तो काहे को कौल करत ।

सो कहा पीछे आवसी, ए सोई लेसी हकीकत ॥ २२

यदि उस समय परमधामकी आत्माएँ आई हुई होती, तो वे पुनः आनेकी बात क्यों कहते (वायदा क्यों करते) ? रसूलने स्पष्ट कहा कि ब्रह्मात्माएँ भविष्यमें आएँगी और वे ही इस ज्ञान (हकीकत) को ग्रहण करेंगी।

अरस रूहें होए सो मानियो, अंदर आन यकीन ।

ए कलमा जो समझहीं, सोई महंमद दीन ॥ २३

जो कोई ब्रह्मात्माएँ हैं वे मनमें विश्वास रखकर इस बातको मानें। कलमाके इन गूढ़ रहस्योंको समझने वाला ही मुहम्मदके धर्मका अनुयायी माना जाएगा।

ए कलमा मुख लाखों कहे, पर माएने न समझे कोए ।

इन कलमें मगज सो समझहीं, जो अरस अजीम की होए ॥ २४

लाखों लोग अपने मुखसे कलमा पढ़ते हैं परन्तु उसका अर्थ कोई नहीं समझ सकता। इस कलमाका अर्थ वे ही समझेंगे, जो परमधामकी आत्माएँ हों।

जोलों रेहेमान न जाहेर, रहो बंदे बाब पकर ।

मैं हुकम छोड चलसी, फेर आवसी भेले आखर ॥ २५

रसूल सहेब कहते थे, हे बन्दो ! जब तक परमकृपालु परमात्मा (आखिरी

इमामके रूपमें) प्रकट नहीं होंगे, तब तक तुम मेरा आदेश मानते रहना. मैं अभी यह शरीर (कर्मकाण्ड) का आदेश छोड़कर जा रहा हूँ. फिर अन्तिम-क्यामतके समय मैं भी उनके साथ आऊँगा.

**एक ए भी रसूलें कहा, करी आगे की सरत ।**

**साथ आवसी इमाम के, रूहें मोमिन बडी मत ॥ २६**

रसूलने भविष्यमें आनेकी बात करते हुए एक और बात कही थी कि जब इमाम आएँगे, उस समय महान बुद्धिशाली ब्रह्मात्माएँ भी आएँगी.

**नूर मत जाहेर होएसी, तब जानो हुई आखर ।**

**तब मौला हम आवसी, इन मोमिनों की खातर ॥ २७**

जब तारतम ज्ञान (नूरमत) प्रकट होगा, तब समझना कि अन्तिम समय आ गया है. तब ब्रह्मात्माओंकी अनुशंसा (सिफारिश) करनेके लिए परमात्माके साथ मैं भी आऊँगा.

**इत कजा जो करने बैठसी, तब हम काजी संग ।**

**वरन बदलसी दुनियां, पर ए दीन कायम रंग ॥ २८**

जब परमात्मा आकर न्याय (माया और ब्रह्मका निर्णय) देनेके लिए बैठेंगे, तब मैं भी उनके साथ रहूँगा. तब सब दुनियाँ अपनी-अपनी मान्यताओंको बदलकर एक ही धर्ममें आएगी और वह विश्व धर्मका स्वरूप अखण्ड रहेगा.

**इमाम इत आवसी, सो भी मोमिनों के कारन ।**

**देसी सुख मोमिन को, कजा होसी सबन ॥ २९**

ब्रह्मात्माओंके लिए ही सद्गुरु (इमाम) इस संसारमें आएँगे. वे ब्रह्मात्माओंको अखण्ड सुख देंगे और सभी जीवोंको सही न्याय देंगे.

**एता भी रसूलें कहा, मोमिनोंमें यकीन ।**

**बिना यकीन सब उडसी, एक रेहेसी हमारा दीन ॥ ३०**

रसूलने यह भी कहा था कि ब्रह्मात्माओंमें ही परमात्माके प्रति पूर्ण आस्था होगी. उस समय सब अविश्वास उड़ जाएगा, एक अपना धर्म ही रह जाएगा.



जिन सिर लई बात रसूल की, कदम पर धरे कदम ।

इन कलमें के हक से, न्यारा नहीं खसम ॥ ३१

जिन्होंने रसूलके वचनोंको स्वीकारा और उनके पदचिह्नोंका अनुसरण किया, उनको ज्ञात हुआ कि इन कलमाके सत्य वचनोंसे परमात्मा कभी भिन्न नहीं है।

जिन ए कलमा हक किया, मैं तिनका जामिन ।

सो आपे अपने दिलमें, साख जो देसी तिन ॥ ३२

रसूलने यह भी कहा था कि जो इन वचनोंको सत्य समझकर चरितार्थ करेगा, मैं उनका साक्षी बनूँगा। वे लोग स्वयं ही अपने दिलमें आखिरी इमामकी साक्षी देंगे।

इन कलमें के माएने, लेकर भरसी पाए ।

तिन मोमिन को खसम, सुख जो देसी ताए ॥ ३३

इस ज्ञानके रहस्यको समझकर जो अपने कदम बढ़ाएँगे (व्यवहारमें चरितार्थ करेंगे), उन ब्रह्मात्माओंको परमात्मा अखण्ड सुख प्रदान करेंगे।

कहा कहूं इन कलमें की, मोमिनोमें पेहेचान ।

जब ए कलमा पसरया, तब साफ हुई सब जहान ॥ ३४

इस ज्ञानकी बात क्या कहें ? ब्रह्मात्माओंमें ही उसकी पहचान होगी। जब यह ज्ञान चारों ओर फैल जाएगा, तब सारी सृष्टिकी मलिनता दूर हो जाएगी।

जिन ए मेरा कलमा, लिया न माहें बाहेर ।

सो दुनियां आखर दिनों, जलसी आग जाहेर ॥ ३५

रसूलने यह भी कहा था कि जो मेरे इस ज्ञानको बाहर और भीतर किसी भी प्रकारसे ग्रहण नहीं करेंगे, वे सब लोग अन्तिम समयमें नरकाग्निमें जलेंगे।

तब ए होसी आजिज, और मौला तो मेहेरबान ।

तब लेसी सबों को भिस्तमें, देकर अपनों ईमान ॥ ३६

तब ये लोग लाचार होकर गिड़गिड़ाएँगे। परमात्मा तो दयालु हैं ही, तब वे

सबको अपना विश्वास प्रदान कर उनको अखण्ड मुक्ति स्थलों (वहिशतों) में ले लेंगे.

कछुक करके यकीन, कलमा सुनसी कान ।

तिन भी सिर कजा समे, लगसी जाए आसमान ॥ ३७

जो कोई विश्वास पूर्वक यह ज्ञान थोड़ा-सा भी सुनेंगे, न्यायकी वेला (कजाके समय) में उनका भी सिर ऊँचा रहेगा.

एह बात तेहेकीक है, मोमिनो दिल साबित ।

सबद जो सारे मुझ पैं, एक जरा नहीं असत ॥ ३८

यह निश्चित है कि ब्रह्मात्माएँ इन वचनोंको दिलसे चरितार्थ करेंगी. ये सब अर्थ मुझे स्पष्ट हो गए हैं, उनमें कोई भी असत्य नहीं है.

देखन मोमिन खातर, रचिया खेल सुभान ।

अब मोमिन क्यों भूलहीं, पाई हकीकत फुरमान ॥ ३९

ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए ही परब्रह्मने यह खेल बनाया. परमात्माके आदेश (फुरमान) का ज्ञान (हकीकत) प्राप्त कर अब वे क्यों भूलेंगी ?

जो सबों को अगम, सो सब रसूल नजर ।

तो रसूल मुसलिम को, फिरे सो फुरमाए कर ॥ ४०

जिस परमात्माको सब लोग अगम कहा करते थे, रसूलने उनके दर्शन किए और वे मुसलमानोंको ब्रह्मका आदेश (खुदाई हुक्म) सुनाकर लौट गए.

प्रकरण १९ चौपाई ५०४

सन्ध फुरमान की

फुरमान ल्याया जो रसूल, पर समझ्या नाही कोए ।

जिन खातर ले आइया, ए समझेगी रूह सोए ॥ १

रसूल महम्मद परमात्माका आदेश लेकर आए हैं, परन्तु उसे कोई नहीं समझ पाया. जिनके लिए वे सन्देश ले आए हैं, वे ब्रह्मात्माएँ इसे अवश्य समझेगी.

कछुक नबिएं जाहेर किए, ए जो बंदगी सरीयान ।

केतेक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेहेदी बयान ॥ २

नब्बे हजार हरफ (शब्दों) के रूपमें लाए उस सन्देशमें-से रसूलने कर्मकाण्ड (सराअ) पर आधारित बन्दगीके तीस हजार रहफका ही स्पष्टीकरण किया. कुछ (तीस हजार) हरफका अर्थ गुप्त रखा और कहा कि इसका स्पष्टीकरण इमाम महदी करेंगे.

और भी केतेक सुने रसूलें, पर सो चढे नहीं फुरमान ।

सो मेहेदी अब खोलसी, इमाम एही पेहेचान ॥ ३

रसूलने और भी कुछ (तीस हजार मारफती) हरफ सुने थे किन्तु वे कुरानमें उनका उल्लेख नहीं कर सके. उन (मारफती) हरफोंका भी रहस्य मुहम्मद महदी स्पष्ट करेंगे. इमामके रूपमें उनकी यही पहचान होगी.

माणे इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और ।

कह्या रसूले इमाम थें, जाहेर होसी सब ठौर ॥ ४

कुरानके गूढ़ रहस्योंको अन्य कोई भी स्पष्ट नहीं कर सके हैं. रसूलने पहलेसे ही यह कहा था कि आखिरी इमामके द्वारा ही सब स्थानों पर ये (हरफ) स्पष्ट होंगे.

मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन ।

सो इत बोहोतों देखिया, पर सुध ना परी काहूं जन ॥ ५

कुरानके रहस्योंका स्पष्टिकरण इमामके बिना नहीं हो सकता. यद्यपि बहुत-से लोगोंने इसे पढ़ा, तथापि उनमें छिपे रहस्यकी सुधि किसीको नहीं हुई.

गुझ का गुझ कौन पावहीं, बिना मेहेदी इमाम ।

ए रूहअल्ला जानहीं, मेरे अल्लाके कलाम ॥ ६

कुरानके गुह्यसे गुह्य रहस्यको इमाम महदी (अन्तिम धर्म गुरु) के बिना कौन स्पष्ट कर सकता है ? मेरे धामधानीके इन वचनोंको श्यामावतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्ला) ही जानते हैं.

**ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों कयामत संग सुभान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ७**

यह संसार क्यों उत्पन्न हुआ है और इसकी वास्तविकता क्या है ? अन्तिम वेला (कयामतके समय) में परमात्मा आएँगे ऐसा क्यों कहा है ? इस प्रकारके कुरानके रहस्योंका स्पष्टीकरण सद्गुरु (इमाम) ही कर सकते हैं.

**क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरीयान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ८**

झूठी मायासे क्यों अलग रहाना है ? क्यों कर्मकाण्ड (शरीअत) के नियमोंका पालन करना है ? इन सब रहस्योंका स्पष्टीकरण सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**रूह कौन मोमिन कौन मुसलिम, कौन रूह कुफरान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ९**

कौन-सी आत्माएँ ब्रह्मसृष्टि (मोमिन) हैं, कौन-सी ईश्वरीय सृष्टि (मुस्लिम) हैं, तथा कौन-सी जीव सृष्टि (कुफरान) हैं ? कुरानके इन सब रहस्योंका स्पष्टीकरण सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**तीन रूहों की तफावत, कौन कौन ठौर निदान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १०**

तीनों प्रकारकी आत्माओंमें क्या अन्तर है तथा उनके मुल स्थान कौन-कौनसे हैं ? कुरानके इन सब रहस्योंका स्पष्टीकरण सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**क्यों इसक क्यों बंदगी, क्यों गफलत गलतान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ११**

परब्रह्मके साथ ब्रह्मात्माओंका सच्चा प्रेम कैसा होता है, ईश्वरी आत्मा कैसी पूजा-प्रार्थना करती है, स्वप्नके जीव मोह और अज्ञानमें कैसे लिप्त हैं ? मेरे हृदयमें बैठे हुए सद्गुरु (इमाम) ही कुरानके इन सब रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

**क्यों पाक नापाक क्यों, क्यों रहेनी फुरमान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १२**

पवित्रता (पाक) क्या है एवं अपवित्रता (नापाक) क्या है, और कुरानके अनुसार आचरण (रहेनी) किसे कहते हैं ? मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु (इमाम) ही कुरानके इन सब रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

**क्यों उजू निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १३**

नमाजसे पूर्व वजू क्यों करते हैं, नमाज क्यों पढ़ी जाती है एवं मस्जिदके मिनारे पर चढ़कर बाँग क्यों दी जाती है ? कुरानके इन सब रहस्योंका स्पष्टीकरण मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु ही करेंगे.

**क्यों कसोटी अंग की, क्यों रोजे रमजान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १४**

शरीरको कसौटी पर क्यों परखा जाता है एवं रमजान महीनेमें रोजा (व्रत) क्यों रखा जाता है ? इन सब बातोंका स्पष्टीकरण मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**क्यों सुनत क्यों इन्द्रियां, क्यों राखे कैद आन ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १५**

सुन्नत और इसकी आवश्यकता क्या है तथा इन्द्रियोंका निग्रह क्यों करना चाहिए ? इन सब बातोंका स्पष्टीकरण मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**क्यों तसबी क्यों फेरनी, क्यों कर नाम लेहेलान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १६**

माला क्या है और इसे क्यों फेरनी चाहिए तथा सहजरूपसे नाम जप कैसे होना चाहिए ? मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु (इमाम) ही इन सब बातोंका स्पष्टीकरण करेंगे.

**क्यों डर क्यों बेडर, क्यों खूनी मेहेरबान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १७**

किन कार्योंको करते हुए डरना चाहिए तथा कौन-से कार्य निर्भय होकर किए जाते हैं ? हिंसक व्यक्ति भी किस प्रकार (प्रायश्चित्त करने पर) परब्रह्म परमात्माकी कृपा प्राप्त कर सकता है ? इन सब बातोंका स्पष्टीकरण मेरे हृदयमें बैठे हुए सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**क्या खाना क्या पीवना, क्या जो सुनना कान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १८**

क्या खाना चाहिए, क्या पीना चाहिए तथा कानोंसे क्या सुनना चाहिए ? इन सब बातोंका स्पष्टीकरण भी मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**क्या लेना क्या छोडना, क्या इल्म क्या ग्यान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १९**

क्या ग्रहण करना चाहिए और किस वस्तुको त्यागना चाहिए ? इल्म क्या है एवं ज्ञान क्या है ? इन सब बातोंका स्पष्टीकरण मेरे हृदयमें बैठे हुए सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**क्यों भली बुरी क्यों, क्यों कर जान अजान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २०**

भला क्या है, बुरा क्या है (इनको कैसे परखा जाए) तथा ज्ञानी और अज्ञानी कौन कहलाते हैं ? इन सब रहस्योंका स्पष्टीकरण मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**कौन वैरी कौन सजन, क्यों कर सब समान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २१**

बैरी (शत्रु) कौन है और सज्जन (मित्र) कौन है ? (परमात्माके मार्गसे भ्रष्ट करनेवाला बैरी तथा भूली हुई आत्माको सही मार्ग दिखाने वाला सज्जन कहलाता है) सबके प्रति सम दृष्टि किस प्रकार रखनी चाहिए ? ये सब बातें

मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु (इमाम) ही स्पष्ट करेंगे.

**क्या हक क्या हराम, क्या नफा क्या नुकसान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २२**

हक (अपने अधिकारमें आई हुई न्यायसङ्गत वस्तु) क्या है ? हराम (दूसरोंके अधिकारमें आई हुई वस्तुको छीनना) क्या है ? लाभ क्या है ? और हानि क्या है कुरानके गूढ़ार्थ स्पष्ट करते हुए, सद्गुरु (इमाम) इन सब रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

**क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २३**

जीवोंका आना और जाना (जन्म और मरण) क्यों होता है एवं ब्रह्मात्माओंको (खेलमें आने पर) विरह तथा (परमधाममें जागने पर उनका) मिलन कैसे होगा ? इन रहस्योंका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) ही कुरानके गूढ़ार्थ प्रकट करेंगे.

**एक खेल दूजा देखहीं, थिर चर चारों खान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २४**

इस संसारके खेलमें खेलनेवाले जीवसृष्टि तथा इस खेलको देखने वाले ब्रह्मसृष्टि हैं एवं जीवोंमें भी चार प्रकारकी सृष्टि (जरायुज, अण्डज, स्वेदज एवं उद्भिज) है. इन सबका रहस्य खोलकर सद्गुरु (इमाम) ही कुरानके गूढ़ार्थ स्पष्ट करेंगे.

**ए किया जिन खातर, आदम और हैवान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २५**

संसारका यह खेल जिनके लिए रचा गया है, वे ब्रह्मात्माएँ कौन हैं, तथा संसारके जीवोंमें भी मनुष्य (आदम) और पशु (हैवान) की सृष्टि क्यों की गई है ? इन सब रहस्योंका स्पष्टीकरण कुरानके अर्थ खोलते हुए सद्गुरु (इमाम) ही करेंगे.

**कौन आप और कौन पर, कौन सकल जहान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २६**

आत्मा (वासना) कौन है, आत्मासे परे पर-आत्मा कौन है, तथा संसारकी यह सम्पूर्ण सृष्टि (जीव) कौन है ? इन सबका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके गूढ़ रहस्य प्रकट करेंगे.

**क्यों बाहेर क्यों अंदर, क्यों अंतर के निसान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २७**

इस ब्रह्माण्डसे बाहर (अष्ट आवरण ज्योति स्वरूप, मोहतत्त्व, शून्य-निराकार आदि) क्या है और इसके अन्दर (पातालसे वैकुण्ठ तक) क्या है तथा इससे भी परे परमधामके निशान (पच्चीस पक्ष) क्या हैं ? यह सब स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके गूढ़ार्थ खोलेंगे.

**कहां भिस्त कहां दोजक, क्यों जलसी कुफरान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २८**

उत्तम कार्य करनेवाले जीवोंके लिए मुक्तिधाम (बहिश्त) कहाँ पर है, अधम कार्य करनेवाले जीवोंके लिए नरक (दोजख) कहाँ है तथा परमात्माके प्रति विश्वास न रखनेवाले नरककी आगमें कैसे जलेंगे ? इन सब रहस्योंको स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ प्रकट करेंगे.

**क्यों आदम क्यों पैगंमर, क्यों फिरस्ते पेहेचान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २९**

आदि मानव (आदम-मनु) कौन है, (सवालाख) पैगम्बर कौन हैं तथा फरिस्ते (देवी-देवता तथा ईश्वरीसृष्टि) कौन हैं ? इन सबकी पहचान बताकर सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थोंका स्पष्टीकरण करेंगे.

**कलमें दीन रसूल की, सुध मुसलिम फुरमान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३०**

कलमाका गूढ़ अर्थ क्या है, सत्य धर्म (दीन) क्या है, रसूलमें कौन-सी शक्ति है तथा कुरानके प्रति आस्था रखनेवाले सच्चे मुसलमान कौन हैं ?



इन सबकी सुधि देकर सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ स्पष्ट करेंगे.

रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फुरमान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३१

इस संसारमें रसूल किनके लिए आए हैं तथा किनके लिए फुरमान (कुरानके ब्राह्मी आदेश) लाए हैं ? इन सब रहस्योंका स्पष्टीकरण कर सद्गुरु (इमाम) कुरानके गूढार्थ करेंगे.

क्यों हुकम क्यों कर हुआ, किन विध लीजे मान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३२

कुरानमें क्या आदेश दिया है और क्यों दिया है तथा उस आदेशका पालन कैसे किया जाएगा ? इन सब प्रश्नोंका स्पष्टीकरण कर सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे.

एकों क्यों कर मानिया, क्यों लिया न दूजे मान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३३

कुछ लोगोंने कुरानके आदेश क्यों स्वीकार किए एवं कुछ लोगोंने क्यों अस्वीकार किए ? इन सबका स्पष्टीकरण कुरानके अर्थ स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) करेंगे.

किन मान्या न मान्या किन, किन फेर्या फुरमान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३४

कुछ लोगोंने रसूलका सन्देश स्वीकार किया, कुछने अस्वीकार किया तथा कुछने उसके विपरीत कार्य किया. इन सबका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ करेंगे.

क्यों कैद बेकैद क्यों, क्यों दोऊ दरम्यान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३५

कुछ संयमी लोग कठिन साधनाओंसे इन्द्रिय निग्रह करते हैं. कुछ लोग इन्द्रियोंके विषयोंमें ही रचे पचे रहते हैं तथा कुछ लोग दोनोंके बीचका मार्ग

अपनाते हैं. ऐसे सभी प्रकारके लोगोंका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ स्पष्ट करेंगे.

**क्यों ए इंड खडा किया, क्यों करी सरत फना निदान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३६**

इस ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति क्यों हुई है एवं इसके नाश होनेकी बात क्यों की गई है ? इन रहस्योंका स्पष्टीकरण कर सद्गुरु (इमाम) कुरानके गूढ़ार्थ खोलेंगे.

**क्यों बडी अकल आगे आवसी, क्यों आखर के निसान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३७**

अक्षरकी बुद्धि (बुद्धावतारके रूपमें) भविष्यमें क्यों आएगी एवं अन्तिम समय (कयामत) के निशान क्या-क्या होंगे ? इन सबका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे.

**बंदगी वजूद नफसानी, नासूत बीच सरीयान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३८**

वजूदी (जिस्मानी) बन्दगी-शारीरिक क्रियाकर्म (नमाज पढ़ना आदि), नफ्सानी बन्दगी-इन्द्रियों द्वारा किए जाने वाले सकाम कर्म, ये दोनों ही कर्मकाण्ड (शरीअत) होनेसे इनसे किस प्रकार मृत्युलोकमें ही (पाप-पुण्यके आधार पर) आना-जाना रहता है ? इसका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानका गूढ़ार्थ स्पष्ट करेंगे.

**क्यों दिल की बंदगी तरीकत, मलकूत या ला मकान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ३९**

तरीकत (उपासना) - दिल लगाकर की जाने वाली बन्दगी क्या है, इनसे वैकुण्ठ (मलकूत) तथा शून्य निराकार (ला-मकान) तक ही क्यों पहुँचा जा सकता है ? इसका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ स्पष्ट करेंगे.

**क्यों नासूत मलकूत जबरूत, क्यों लाहूत चौथा आसमान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४०**

मृत्युलोक (नासूत), वैकुण्ठ (मलकूत), अक्षरधाम (जबरूत) तथा चौथा आसमान परमधाम (लाहूत) का रहस्य स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे.

**क्यों रूहें भेद छिपी हजूरी, बंदगी हादी संग आसान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४१**

आत्माएँ क्यों रूहानी बन्दगी (आत्मिक प्रेम) छिपी (सबसे छुपाकर-प्रेममें मस्त होकर) और हजूरी (ज्ञानसे स्वयंको परमात्माके चरण-शरणमें समझकर) करती हैं ? किस प्रकार वे अपने अङ्गी श्यामा (हादी) के साथ रहकर अनायास प्रेम करती हैं ? इसका भी रहस्य स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे.

**मलकूत ऊपर जो जुलमत, नाम बुरका ला मकान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४२**

वैकुण्ठ (मलकूत) के ऊपर अन्धकार (जुलमत) का आवरण (परदा) लगा हुआ है. उसे शून्य-निराकार ( ला-मकान) कहते हैं. इसका रहस्य स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके रहस्य खोलेंगे.

**सरीयत तरीकत हकीकत, मारफत हक पेहेचान ।**

**ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४३**

कर्मकाण्ड (शरीअत) के माध्यमसे पाप पुण्य द्वारा स्वर्ग-नरककी प्राप्ति तथा मृत्युलोकमें जन्म-मरण होता रहता है. उपासना (तरीकत) से वैकुण्ठ आदि लोकोंकी प्राप्ति होती है. यथार्थ ज्ञान (हकीकत) के द्वारा अक्षरधामकी प्राप्ति होती है और विज्ञान-पूर्ण पहचान (मारफत) के द्वारा परब्रह्मकी पहचान होती है. इन सब रहस्योंको स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे.

बेचून बेचगून बेसबी, कहे बेनिमून निदान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४४

(परमात्माके लिए प्रयोग किए शब्द) बेचून (शून्य), बेचगून (निर्गुण), बेसबी (निराकार), बेनिमून (नमूना रहित, अनुपम) आदिका निरूपण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ स्पष्ट करेंगे।

निराकार निरंजन सुन की, ब्रह्म व्यापक माहें जहान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४५

साथ ही परमात्माको निराकार, निरञ्जन, शून्य एवं सर्वव्यापक (सब प्राणियोंमें व्याप्त) कहा जाता है। इन सबके रहस्योंको स्पष्ट करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे।

पुरुष प्रकृति कालकी, ईश्वर महाविस्तु उनमान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४६

पुरुष प्रकृति, काल, ईश्वर, महाविष्णु आदिकी व्याख्या लोग अनुमानसे करते आए हैं। इनके रहस्योंका स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे।

सदरतुल मुंतहा अरस अजीम, नूर जमाल सूरत सुभान ।

ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४७

अक्षरधाम (सदरतुलमुंतहा), परमधाम (अर्श-ए-अजीम) तथा परब्रह्म परमात्मा (सुभान) का देदीप्यमान (नूरजमाल) स्वरूप (सूरत) का स्पष्टीकरण करते हुए सद्गुरु (इमाम) कुरानके अर्थ खोलेंगे।

नूर पार नूरतजल्ला, पोहोंचे रसूल रूहअल्ला हजूर ।

ए सब इमाम खोलसी, जो दोनों किया मजकूर ॥ ४८

अक्षर (नूर) से पर अक्षरातीत (नूरतजल्ला) के पास श्यामा (रूहअल्ला) के सूरत स्वरूप रसूल (पैगम्बर) पहुँचे हैं। उन दोनोंने जो वार्तालाप (मजकूर) किया, इन सब रहस्योंको सद्गुरु (इमाम) खोलेंगे।

क्यों नूर क्यों नूर तजल्ला, क्यों कर वतन खसम ।

खोलसी माएने इमाम, खातर मोमिन हम ॥ ४९

अक्षरब्रह्म (नूर), अक्षरातीत परब्रह्म (नूरतजल्ला) तथा परमधाम (खसम वतन) का क्या स्वरूप है ? इन सबका स्पष्टीकरण हम सब ब्रह्मात्माओंके लिए सद्गुरु (इमाम) करेंगे.

चौदे तबक की बात जो, सो तो केहेसी सकल जहान ।

पर लैलतकदर मेहेदी बिना, क्यों खुले माएने कुरान ॥ ५०

चौदह लोकों (तबक) की बात तो सारी दुनियाँ (सकल जहान) करेगी, किन्तु महिमावान् रात्रि (लैल-तुल-कदर - जिसमें ब्रह्मात्माएँ उतरी हैं) का रहस्य तथा कुरानके गूढ़ अर्थ सद्गुरु (महदी) के बिना कौन खोलेगा ?

ए जो पूछे माएने, खोल दिए कदी सोए ।

तो इनसे चौदे तबकमें, क्यों कर कजा होए ॥ ५१

कुरानमें इस प्रकार पूछे गए रहस्यात्मक प्रश्नोंका स्पष्टीकरण संभवतः उसी समय हो भी जाता किन्तु रसूलके द्वारा चौदह लोकोंमें सही निर्णय (कजा) कैसे हो सकता ? (यह अधिकार तो इमाम महदीको ही दिया है अन्यथा रसूलकी भविष्यवाणी कैसे सत्य हो पाती ?)

लुगे लुगे के माएने, जो कोए निकसे बोल ।

ए कजा तब होवहीं, जब दीजे माएने सब खोल ॥ ५२

कुरान तथा अन्य धर्मग्रन्थोंमें जो कुछ भी कहा गया है उनके एक-एक शब्दका अर्थ जब सद्गुरु (इमाम) के द्वारा स्पष्ट होगा, तभी सही रूपसे संसारको न्याय (कजा) प्राप्त होगा.

ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम ।

एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम ॥ ५३

अक्षर (नूर) के पार अक्षरातीतका रहस्य अभी तक सबके लिए दुर्गम था. इस सन्दर्भमें एक भी शब्द कहनेका सामर्थ्य सद्गुरु (इमाम) के बिना अन्य किसीको नहीं था.

जब माएने खुले मुसाफ के, बैठे इमाम जाहेर होए ।

तब ए दुनी जुदी जुदी, क्यों कर रहेसी कोए ॥ ५४

जब कुरानके गूढार्थ स्पष्ट हो गए एवं स्वयं सद्गुरु (इमाम) भी प्रकट हो गए, तब यह दुनियाँ अलग-अलग रूपमें कैसे बँटी रहेगी ?

सो इमाम जाहेर हुए, ले माएने कुरान ।

नूर सबोंमें पसरया, एक दीन हुई सब जहान ॥ ५५

कुरानके उन गूढ़ अर्थोंको लेकर सद्गुरु (इमाम) प्रकट हो गए हैं. अब तारतम ज्ञानका प्रकाश (नूर) सर्वत्र फैल गया. पूरी दुनियाँ एक ही विश्व धर्ममें सम्मिलित हो गई.

ए तो करी इसारत, पर बोहोत बड़ी है बात ।

नूर बडो इमाम को, सो या मुख कह्यो न जात ॥ ५६

यह तो मात्र सङ्केत किया है, वस्तुतः यह बात बहुत ही बड़ी है. सद्गुरु (इमाम) प्रदत्त तारतम ज्ञान (नूर) की महिमा बहुत बड़ी है. उसका वर्णन इस मुखसे नहीं हो सकता है.

ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सह्यो जाए ।

नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए ॥ ५७

यह तारतम ज्ञान (नूर) साक्षात् परमधामका (खुद वतनी) ज्ञान है, उसे हर कोई कैसे समझ सकता ? इसलिए अक्षरकी बुद्धि (नूरमत) को आगे किया (शास्त्र पुराण एवं कुरान आदि धर्मग्रन्थोंकी रचना द्वारा तारतम अवतरणकी भविष्यवाणी की गई) ताकि उसे समझनेके लिए किसीको भी गोते खाना (उलझना) न पड़े (अब यही तारतम ज्ञान शास्त्रोंके सभी रहस्योंको स्पष्ट करेगा).

इमाम आए तब जानिए, जब खुले माएने कुरान ।

तब जानो आखर हुई, सुख दिया सब जहान ॥ ५८

रसूलने कहा था कि जब कुरानके ये गूढ़ अर्थ स्पष्ट हो जाएँगे तब समझना कि सद्गुरु (इमाम) आ गए हैं. यह भी समझना कि तब अन्त समय

(कयामत) भी आ गया है और वे सारी सृष्टिको अखण्ड सुख देंगे.

आद करके अवलों, परदा न खोल्या किन ।

सो बरकत मेहेदी महंमद, खुल जासी सब जन ॥ ५९

आरम्भसे लेकर अभी तक किसीने भी अज्ञानका आवरण दूर नहीं किया— अर्थात् धर्म ग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको नहीं खोला. सद्गुरु (महदी मुहम्मद) के पास ही यह क्षमता है कि उनके द्वारा ये सब रहस्य सबके लिए स्पष्ट हो जाएंगे.

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत ।

पर दिल के अंधे ना समझहीं, ए फुरमान सबदातीत ॥ ६०

सामान्य लोग इस आदेशको (फुरमानको) भी अन्य नियमोंकी भाँति साधारण समझते हैं. परन्तु अन्तर्दृष्टि विहीन ये लोग नहीं समझते कि यह शब्दातीत परब्रह्मका आदेश है.

ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल ।

अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल ॥ ६१

यह ग्रन्थ मायावी अन्य ग्रन्थोंकी भाँति नहीं है. अब इमाम (सद्गुरु) रसूलके इस ग्रन्थकी क्षमताको तत्काल स्पष्ट करेंगे.

प्रकरण २० चौपाई ५६५

सनंध मुसलिम की रेहेनी की

(यहाँ पर मुस्लिमोंका तात्पर्य धर्माचरणमें पक्के रहनेवाली मुमुक्षु आत्माएँ अर्थात् ईश्वरी सृष्टिसे है.)

सुनियो अब मोमिनो, ए केहेती हों सब तुम ।

जब तोडी आइयां नहीं, इमाम के कदम ॥ १

हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, यह सब स्पष्टीकरण तुम्हारे लिए करते हैं. जब तक तुम सद्गुरु (इमाम) के शरणमें नहीं आई थीं, तब तक यह बात गुप्त रखी गई थी.

मैं चाहों मोमिन को, हम तुम एकै अंग ।

मैं तबहीं सुख पाऊंगी, मेहेदी महंमद मोमिन संग ॥ २

मुझे तुम ब्रह्मात्माओंसे बड़ा स्नेह है क्योंकि हम और तुम एक ही परब्रह्मके अंग हैं। मुझे तभी आनन्द होगा, जब निजानन्द सद्गुरु (महदी मुहम्मद) और ब्रह्मात्माएँ (मोमिन) मेरे साथ होंगी।

आए ईसा मेहेदी महंमद, मोमिन आवसी कदम ।

हनोज लों कबू ना हुई, सो होसी नई रसम ॥ ३

निजानन्द स्वामी (ईसा रूहअल्लाह तथा महदी मुहम्मद) ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए परमधामसे आए हैं। अब सभी ब्रह्मात्माएँ (मोमिन) उनके चरणोंमें आएँगी। जो आज तक कभी नहीं हुआ, वह नई रीति (नई लीला) अब प्रकट होगी।

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम ।

बखत भला साहेब दिया, भाग बडे हैं तुम ॥ ४

जब स्वयं परब्रह्म परमात्मा (सद्गुरुके रूपमें) प्रकट हुए हैं, तो यहाँ (तीनों सृष्टियोंका) बड़ा मेला (मिलन) होगा। तुम बड़े भाग्यशाली हो कि ऐसा शुभ अवसर धनीने प्रदान किया है।

नेक कहूं राह मुसलिम की, जो देखाई रसूलें मेहेर कर ।

भूले अवसर पछताइए, सो कहूं सुनो दिल धर ॥ ५

मैं अब सच्चे मुस्लिमोंके लिए रसूल मुहम्मद द्वारा कृपापूर्वक चलाए हुए मार्गका थोड़ा-सा परिचय करवाता हूँ। इस अवसरको भूल जाने वाले पछताएँगे, इसलिए इन बातोंको ध्यान देकर सुनो।

पेहेलें तो सब भूलियां, मैं तो कहूं तुमें हक ।

देखो हाथमें नूर खुदाए का, फरेबमें हुए गरक ॥ ६

मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ कि आज तक तुम भूलमें थे। देखो, मेरे हाथमें तारतम ज्ञान (खुदाका नूर) है। तुम अभी तक झूठी माया (धर्मग्रन्थके बाह्य अर्थ)में ही निमग्न हो रहे हो।



केहे फुरमान इनों हाथमें, मेहेर कर दिया रसूल ।

जाहेर तुमको बताइया, सो भी गैयां तुम भूल ॥ ७

रसूल मुहम्मदने कृपा कर तुम्हारे इन हाथोंमें परमात्माका सन्देश (फुरमान) दिया है और आत्म-जागृति (कयामत) के समय इमामके प्रकट होनेकी बात भी स्पष्ट रूपसे बताई है. वह भी तुम भूल गए.

जो जाहेर है तुम पैं, माएने इन कुरान ।

एते दिन ना समझो, अब नेक देऊं पेहेचान ॥ ८

यह स्पष्ट है कि रसूलने तुम्हारे हाथोंमें जो कुरान दिया है, उसके गूढ़ार्थको तुम अभी तक नहीं समझ सके. अब मैं उसकी थोड़ी-सी पहचान करवाता हूँ.

फैलाव ऊपर का ना करूं, नेक देऊं मगज बताए ।

ज्यों वतन की सुध परे, सब पकरें इमाम के पाए ॥ ९

बाह्य अर्थका विस्तार न कर थोड़े-से गूढ़ अर्थ समझाता हूँ, जिससे परमधाम (मूल वतन) की सुधि हो और तुम सब सद्गुरु (इमाम) के चरण पकड़ सको.

ए जो तुमको रसूलें, दिए जो माएने खोल ।

जाहेर किए ना ले सके, कहूं सो दो एक बोल ॥ १०

रसूलने तुम्हें कुरानका सन्देश देते हुए बाह्य कर्मकाण्ड (शराअ) का उपदेश दिया था. उन बाह्य अर्थ (कर्मकाण्डके सामान्य नियमों) को भी तुम नहीं समझ सके. मैं तुम्हें उसकी यथार्थता के दो शब्द समझाता हूँ.

कहो कलमा हक कर, ल्यो माएने कुरान ।

पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान ॥ ११

(उस समय) रसूल मुहम्मदने कहा था कि कलमाको सत्य मानना, कुरानके अर्थ समझना. इस प्रकार जिसका हृदय और आत्मा (रूह) पवित्र होगी, वही सच्चा धार्मिक (दीनदार) मुसलमान है.

पांच बखत सल्ली करे, दिल दरदा आन सुभान ।

सुने ना कान कुफार की, या दीन मुसलमान ॥ १२

जो अपने हृदयमें परमात्मा (हक सुभान) के विरहका दर्द लेकर पाँचबार

नमाज पढ़े (सल्ली करे) और नास्तिकताकी बातें कानोंसे न सुने, वही धार्मिक (दीनदार) मुसलमान है।

**कसनी लेवे आप सिर, साफ़ रोजे रमजान ।**

**रात दिन याही जोसमें, या दीन मुसलमान ॥ १३**

धर्मके नियमोंके पालनकी कसौटी पर जो खरा उतरे और अन्तःकरण पवित्रकर रमजानके महीनेमें रोजा रखे तथा रात दिन इसी जोशमें रहे, वही सच्चा धार्मिक (दीनदार) मुसलमान है।

**माणे ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान ।**

**वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान ॥ १४**

जो कुरानके अर्थ समझकर अपनी (आत्माकी) पहचान करे तथा रसूल साहेबको भी (खुदाई सन्देश वाहकके रूपमें) पहचाने, परमधाम (सत्य वतन) एवं परब्रह्मकी सुधि रखे, वही सच्चा धार्मिक मुसलमान है।

**रसूल आए किन ठौर से, किन वास्ते जिमी हैरान ।**

**ए सुध सारी लेवहीं, या दीन मुसलमान ॥ १५**

रसूल कौन-से स्थानसे आए और उन्होंने इस संसारमें किनके लिए दुःख उठाए ? जो ये सब सुधि ले, वही सच्चा धार्मिक मुसलमान है।

**किन भेज्या आया कौन, ल्याया हक का फुरमान ।**

**ए सहूर करके समझहीं, या दीन मुसलमान ॥ १६**

परमात्माका सन्देश (हक फुरमान) लेकर आने वाले कौन हैं और किसने उनको भेजा है ? इन बातोंको विचार पूर्वक समझनेवाले सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

**सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान ।**

**नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान ॥ १७**

रसूलके सभी वचनोंको सत्य समझकर उन्हें शिरोधार्य करते हुए उन (नबी) के ज्ञान (नूर) में मग्न रहने वाला सच्चा धार्मिक मुसलमान कहलाता है।

कलाम अल्ला कुरानमें, दिल दे करे परवान ।

अंदर यकीन उजले, या दीन मुसलमान ॥ १८

कुरानमें निर्दिष्ट ब्राह्मी वचन (अल्लाह कलाम) को हृदयङ्गम करते हुए उन्हें प्रमाणभूत मानने वाले तथा अन्तःकरणको पवित्र बनाकर उन वचनों पर विश्वास रखने वाले सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

ए जो कुदरत गफलती, चौंदे तबक की जहान ।

ए फरेब नीके समझहीं, या दीन मुसलमान ॥ १९

प्रकृति द्वारा रचित चौदह लोकोंकी दुनियाँको असत्य (फरेब) समझने वाला ही सच्चा धार्मिक मुसलमान कहलाता है।

ए सब खेल खसम का, बुनी आदम हैवान ।

एकै नजरों देखहीं, या दीन मुसलमान ॥ २०

यह सारा खेल परमात्माका है, ऐसा समझकर मनुष्य तथा अन्य पशु आदि प्राणियोंको एक ही दृष्टिसे देखनेवाला सच्चा धार्मिक मुसलमान कहलाता है।

न्यारा रहे सबन से, ए जो बीच जिमी आसमान ।

संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान ॥ २१

धरती तथा आकाश (मृत्युलोक तथा स्वर्ग आदि) के सुखोंसे अलग होकर परमात्मा (खुदा) के प्रति विरह करनेवालोंका संग करनेवाला व्यक्ति ही सच्चा धार्मिक मुसलमान कहलाता है।

भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान ।

सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान ॥ २२

परमात्माका भय रख कर किसीकी निन्दा स्तुति न करते हुए जो हिंसक (खूनी) व्यक्तिका सङ्ग भी न करे, वह सच्चा धार्मिक मुसलमान है।

यामें कोई ना बिराना अपना, ए देखे सब समान ।

यासैं न्यारे जाने मोमिन, या दीन मुसलमान ॥ २३

इस संसारमें किसीको भी अपना या पराया न समझते हुए सबको समान

देखनेवाले तथा इन सबसे मोमिन आत्माओंको अलग समझनेवाले व्यक्ति सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

**ए जुदे नीके जानहीं, मोमिन मुसलिम कुफरान ।**

**पेहेचान जुदी सब रूहों की, या दीन मुसलमान ॥ २४**

मोमिन-ब्रह्मात्माएँ, मुस्लिम-साधक ईश्वरीसृष्टि, कुफरान- झूठी दुनियाँ इन तीनोंको अलग- अलग समझकर सब आत्माओंको अलग-अलग पहचानने वाले सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

**मेहेर दिल मोमिन के, इसक अंग रहेमान ।**

**दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान ॥ २५**

ब्रह्मात्माओंका दिल दयासे पूर्ण होता है, उनके अङ्ग-अङ्गमें परमात्माका प्रेम बसा हुआ होता है। वे स्वयंमें किसी भी प्रकार विस्मृतिका (परमात्माको भूल जानेका) कलंक नहीं लगने देतीं। ऐसी ब्रह्मात्माओंको समझनेवाले सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

**जो रूह होवे मुसलिम, सो संग ना करे कुफरान ।**

**आसिक खुद खसम की, या दीन मुसलमान ॥ २६**

जो आत्माएँ धर्माचरणवाली (मुस्लिम) होती हैं, वे झूठे अधर्मियोंका सङ्ग नहीं करतीं तथा स्वयं परमात्माके प्रेमकी दिवानी होती हैं, वे सच्ची धार्मिक मुसलमान कहलाती हैं।

**जो रूह भूली आप को, मुसलिम कलमे पेहेचान ।**

**तिनको वतन बतावहीं, या दीन मुसलमान ॥ २७**

जो साधक (मुस्लिम) आत्माएँ स्वयंको भूल जाती हैं, उनको कलमोंसे पहचान करवाकर अपने घरकी याद दिलाने वाले सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

**साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छिट ना लगे गुमान ।**

**बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान ॥ २८**

जो अपने अङ्ग-प्रत्यङ्गों (अन्तःकरण) को पवित्र रखते हैं, जिन्हें अहङ्कारकी

छींटें भी न लगी हों और जो अपने दिलमें विनम्रता रखते हों, वे ही सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

**रेहेवें निरगुन होएके, और निरगुन खान पान ।**

**नजीक न जाए बदफैल के, या दीन मुसलमान ॥ २९**

जो निर्गुण (सीधा सादा) होकर रहते हैं और अपना खान-पान भी निर्गुण (सात्विक) रखते हैं तथा नीच कर्म (बदफैल) के निकट भी नहीं जाते हैं, वे सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं।

**प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान ।**

**रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान ॥ ३०**

जो परमात्माके नामको प्रिय मानकर उसमें ही मन लगाकर माला फेरती हैं एवं रात-दिन उपासनामें ही मग्न रहती हैं, वे ही सच्ची धार्मिक आत्माएँ हैं।

**दरदा ले द्वारें खड़ी, खसम की गलतान ।**

**रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान ॥ ३१**

विरह-वेदनामें द्रवित हुई आत्माएँ अपनी विरहकी पीड़ाको लेकर परमात्माके द्वार पर खड़ी रहती हैं अर्थात् प्रिय मिलनकी प्रतीक्षा करती हैं। इसी प्रकार सच्चे मुसलमानकी रूह भी रसूलके साथ जुड़ी हुई रहती है।

**हराम छोड हक लेवहीं, ए जो करी बयान ।**

**आपा रखे आप बस, या दीन मुसलमान ॥ ३२**

जैसा कि कुरानमें बताया है, जो आत्माएँ हराम (दूसरेके अधिकारकी वस्तुको छीनना) को छोड़कर हक (अपने अधिकारकी न्यायसङ्गत वस्तु) का ही सेवन करती हैं तथा अपने आपको (इन्द्रियों तथा मनको) अपने वशमें रखती हैं, वे ही सच्ची धार्मिक आत्माएँ हैं।

**साफ दिल ईमान सों, करे बावन मसले अरकान ।**

**ए बिने जाने इसलाम की, या दीन मुसलमान ॥ ३३**

जो हृदय पवित्र रखकर सत्यनिष्ठासे शराअकी बावन विधियोंका पालन करते

हैं तथा इस्लामके पाँच नियमों (नमाज, जकात, हज, रोजा और कलमा) के आधार पर जीवन व्यतीत करते हैं, वे सच्चे धार्मिक मुसलमान कहलाते हैं.

**मुसलिम सारे केहेलावहीं, पर ना सुध हकीकत ।**

**ना सुध रसूल ना खसम, ना सुध या गफलत ॥ ३४**

वैसे तो सभी मुस्लिम कहलाते हैं किन्तु किसीको भी यथार्थ ज्ञानकी सुधि नहीं है. न उन्हें रसूलकी सुधि है, न अपने स्वामी (परमात्मा) की सुधि है और न ही झूठी मायाकी सुधि है.

**जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर ।**

**तिनको मुसलिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर ॥ ३५**

जो लोग अन्दरसे नश्वर देवी-देवताओंकी बन्दगी कर बाहरसे परमात्माकी दिखावटी बन्दगी करते हैं, उन्हें सच्चे मुसलमान मत कहो. वे तो स्पष्ट ही मायावी (जगतके) जीव हैं.

**तो होए कबूल मुसलिम, जो पोहोंचे मजल इन ।**

**जोलों होए न हजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन ॥ ३६**

उपरोक्त उपदेशात्मक बातोंको जीवनमें चरितार्थ करते हुए कुरानके रहस्योंको भली प्रकार समझे एवं परमात्माके समीपकी बन्दगी करे, तभी वह मुस्लिम रूपमें स्वीकारा जाता है.

**इस्लाम बडा मरातबा, जो करे अपनी पेहेचान ।**

**जुलमत नूर उलंघ के, पोहोंचे नूर बिलंद मकान ॥ ३७**

इस्लामकी श्रेणी (दर्जा) ऊँची है. जो इसकी पहचान करेगा, वह शून्य निराकार (जुलमत) को पार कर अक्षर (नूर) के भी पार परमधाम (नूर बिलन्द) में पहुँच जाएगा.

**केहेलाए मुसलिम पकडे बजूद, पांड चले राह ऊपर ।**

**क्यों न कटाए पुल सरातें, जो रसूलें देखाई जाहेर कर ॥ ३८**

जो स्वयंको मुस्लिम कहलाकर शारीरिक दृष्टि रखते हैं तथा मात्र शराअके

मार्ग पर चलते हैं अर्थात् मात्र बाह्य आचरण ही करते हैं, ऐसे लोग तलवारकी धारके समान तीक्ष्ण मार्ग पर (पुलेसिरात) क्यों नहीं कटेंगे (अर्थात् पुलेसिरात पर कटकर दोजखमें पड़ेंगे.) जिसको रसूल साहबने कुरानमें स्पष्ट कहा है.

**जिन दिल पर सैतान पातसाह, सो नापाक बडा पलीत ।**

**खून करे छिन में कै, दिल पाक होए किन रीत ॥ ३९**

जिनके दिलपर शैतानका साम्राज्य है, वे बड़े अपवित्र (नापाक) तथा नीच (पलीत) कहलाते हैं. क्षणमात्रमें ही अनेक प्रकारसे हिंसा कर डालते हैं, ऐसे लोगोंका हृदय भला कैसे पवित्र हो ?

**दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपरसे धोए ।**

**धोए वजूद पाक दिल, कबहूँ न हुआ कोए ॥ ४०**

जब तक हृदय पवित्र न हो, तब तक ऊपरसे मात्र शरीरको धोने (स्नान करने) से क्या लाभ होगा ? शरीरको धोनेसे कभी भी किसीका हृदय पवित्र नहीं हुआ है.

**पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा पाक सब ।**

**हिरस हवा सब इन्द्रियां, तिन नहीं नापाकी कब ॥ ४१**

जिसका हृदय पवित्र हो गया, उसका तो शरीर भी पवित्र हो जाता है. इतना ही नहीं, उसकी तो सभी गुण-अङ्ग-इन्द्रियाँ भी पवित्र हो जाती हैं. उसको किसी भी प्रकारकी अपवित्रता (नापाकी) नहीं छूती.

**हलाल हलाल सब कोई कहे, पूछे हादी सिरदार ।**

**जिन दिल हुआ अरस हक का, तिन दुनी करी मुरदार ॥ ४२**

सब लोग अपने मुखसे हलाल-हलाल (ग्रहणीय-ग्रहण करने योग्य) कहते हैं (मात्र खानपानकी वस्तुको हलाल कहते हैं). वस्तुतः श्रेष्ठ सद्गुरु (हादी) को पूछो कि यह हलाल क्या है ? जिनका हृदय परमात्माका धाम (अर्श) हो गया है, उन्होंने तो संसारकी वस्तुको तुच्छ (मुरदार) मानकर छोड़ दिया है (सत्य वस्तुको ग्रहण करना ही हलाल कहलाता है, झूठी वस्तुको नहीं).

दिल अरस मोमिन कहा, तित आए हक सुभान ।

सो दिल पाक औरों करे, जाए देखो मगज कुरान ॥ ४३

ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के दिलको तो परमधाम कहा है, जहाँ परमात्मा (हक सुभान) आकर विराजमान होते हैं। ऐसी आत्माएँ अन्य लोगोंके दिलोंको भी पवित्र बना देती हैं। जरा कुरानके रहस्योंको तो समझो।

पांड तो कोई ना भर सक्या, पर उमेद करी सबन ।

सो महंमद मेहेदी आए के, नीयत पोहोंचाई तिन ॥ ४४

रसूलके बताए गए मार्ग पर कोई नहीं चल सका, यद्यपि सभीने मुक्ति स्थानों (बहिश्तों) में जाना चाहा। निजानन्द स्वामी (मुहम्मद महदी) ने प्रकट होकर उन सबको अपने-अपने आचरणके अनुरूप बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में स्थान देनेकी आज्ञा दी है।

ए कलमा जिन कानो सुन्या, ताए भी देसी सुख ।

तो मुसलिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख ॥ ४५

निजानन्द स्वामी प्रदत्त तारतम ज्ञान (कलमें) को जिसने भी अपने कानोंसे सुना, उसे भी अपार सुख दिया जाएगा। जिन्होंने इस ज्ञानका सही अर्थ समझा और जीवनमें उतारा, उन साधक आत्माओंका तो कहना ही क्या ?

ए कलमा जिन जिमिं, किया होए पसार ।

तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार ॥ ४६

इस तारतम ज्ञानका गूढ़ अर्थ जिस भूमि (भारतवर्ष) पर फैल गया है, उस पवित्र भूमिके लोगोंको अधर्मी (काफिर) नहीं कहना चाहिए।

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए ।

सो रूह आखर कजा समे, औरों भी लेसी बचाए ॥ ४७

जिन आत्माओंने तारतम ज्ञान (बाँगकी आवाज) को अपने कानसे सुना है (और हृदयमें भी धारण किया है), उन्हें अधर्मी (काफिर) कैसे कहा जाएगा ? वे आत्माएँ न्यायकी घड़ी (क्यामतके समय) में अन्य लोगोंको भी बचा लेंगी।



इन कलमें के सबद से, सब छूटेगा संसार ।

तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कहा नर नार ॥ ४८

इन तारतम (कलमा) के वचनोंको सुनने मात्रसे ही संसारके लोग मुक्त हो जाएँगे. किन्तु जिन्होंने इन वचनोंको पहचान कर ग्रहण भी किया है, उन नर-नारियोंके विषयमें तो कहना ही क्या ?

ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर ।

तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकुर ॥ ४९

यह तारतम ज्ञान (कलमा) इस संसारके सभी दुःखोंको दूर करेगा. इसमें इतना सामर्थ्य है कि जिनमें परमधामके अंकुर नहीं हैं, उन आत्माओंको भी मुक्तिस्थलों (बहिस्तों) का सुख प्राप्त होगा.

तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल ।

इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल ॥ ५०

चौदह लोकोंमें जितनी भी आत्माएँ हैं, वे सबकी सब इस तारतम ज्ञानके प्रतापसे अखण्ड सुख प्राप्त करेंगी.

दीन होए के चलसी, दरदी रसूल रहेमान ।

बोहोत कहा है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान ॥ ५१

ऐसी आत्माएँ विनम्र होकर चलेंगी और उनके हृदयमें कृपाके सागर परमात्माके वियोगकी पीड़ा (दर्द) होगी. ऐसी आत्माओंके सन्दर्भमें रसूलने बहुत कुछ कहा है किन्तु मैंने तो यहाँ पर उनका थोड़ा-सा ही वर्णन किया है.

ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम ।

जो बयान रसूलें ना किए, मोमिन वतन खसम ॥ ५२

हे आत्माओ ! यह तो बाह्य आचरण (कर्मकाण्ड-शराअ) की बातें हुई, अब गूढ़ रहस्यकी बातें करनी हैं. जिनका वर्णन रसूलने भी नहीं किया है, परमधाम तथा परब्रह्मकी उन ब्रह्मात्माओंकी बात अब करते हैं.

गुझ माएने कौन लेवहीं, जो जाहेर लिए न जाए ।

ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए ॥ ५३

जो बाह्य अर्थ (कर्मकाण्ड सम्बन्धी ज्ञान) को भी नहीं समझ सके, वे गूढ़

रहस्यको कैसे समझ सकते ? कर्मकाण्डके विषयमें मैंने जो कुछ बताया है, रसूलने पहले ही उन सबका स्पष्टीकरण कर दिया था.

**कोई जाहेर ना ले सके, तो गुझ होसी किन पर ।**

**हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर ॥ ५४**

जब बाह्य अर्थ भी कोई नहीं ले सके तो गुह्य बातें किनके लिए बताई जाएँ ? हम (ब्रह्मात्माओं) ने उस बाह्य अर्थके रहस्यको भी ग्रहण किया है, उनके विषयमें भी कुछ संक्षेपमें सुनो.

**प्रकरण २१ चौपाई ६१९**

**सनंध अरस अरवाहों के लछण की**

**गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखूं किन ।**

**पर पेहेले कहूं नेक मोमिनों, जो हमारा चलन ॥ १**

हे आत्माओ ! गूढ़ रहस्य तो तुम्हें बताएँगे ही और किसी प्रकारका सन्देह भी नहीं रहने देंगे, किन्तु पहले हम ब्रह्मात्माओंके आचरणके सन्दर्भ में थोड़ा-सा कहेंगे.

**बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर ।**

**लाख बेर कहा रसूलें, जन जनसों लर लर ॥ २**

रसूलने जिस मार्गका संकेत किया है, हम स्पष्ट रूपसे उसी (रूहानी-आत्मिक) मार्ग पर चल रहे हैं. रसूलने जन-जनसे झगड़ते हुए इस मार्ग पर चलनेके लिए लाखों बार आग्रह किया.

**कोट बेर जाहेर सबों, रसूलें फुरमाया जेह ।**

**सो कलमा सिर लेए के, पांड भरे हम एह ॥ ३**

रसूलने जिस मार्ग पर चलनेके लिए करोड़ों बार वचन कहे थे, हम उन्हीं वचनों (कलमा) को शिरोधार्य कर आगे पग बढ़ा रहे हैं.

**बडा जाहेर ए माएना, कहे हक पै ल्याया फुरमान ।**

**इन कलमें की दोस्ती, कहा मिलसी रेहेमान ॥ ४**

ये अर्थ नितान्त स्पष्ट हैं कि रसूलने कहा है, मैं परमात्माका सन्देश लेकर

आया हूँ, जो इन वचनोंको आत्मसात करेगा, उसे परमकृपालु परमात्मा (रहेमान) अवश्य मिलेंगे।

खातर तुम अरस मोमिन, मैं ल्याया हक फुरमान ।

कौल करत हों तेहेकीक, इत ल्याऊं बुलाए सुभान ॥ ५

उन्होंने यह भी कहा कि तुम परमधामकी आत्माओंके लिए मैं परमात्माका आदेश (कुरान) लेकर आया हूँ। तुमको यह निश्चित वचन भी देता हूँ कि मैं अवश्य ही परब्रह्म (सुभान)को बुला लाऊंगा।

जो किनहूँ पाया नहीं, ना कछू सुनिया कान ।

तिनका जामिन होएके, मैं इत मिलाऊं आन ॥ ६

जिन परब्रह्मको किसीने आज तक नहीं पाया एवं उनके विषयमें कानोंसे सुना तक नहीं, उन परमात्माका साक्षी बनकर मैं आऊंगा एवं तुम सबको उनसे इसी मायामें मिलाऊंगा।

अब रूहें जो अरस मोमिन, तिन कहा चाहिएत है और ।

रसूल कहे जानो हक, काजी कजा होसी इन ठौर ॥ ७

जो परमधामकी आत्माएँ हैं, उन्हें अब और क्या चाहिए ? रसूलने जो कहा है, उसे सत्य समझो। अन्त (कयामतके) समयमें परब्रह्म परमात्मा न्यायाधीश (काजी) बनकर आएँगे और यहीं पर सबको न्याय मिलेगा।

जाहेर हक देखाइया, हम लिए माएने ए ।

एही कलमा रसूल का, हम सिर चढाया ले ॥ ८

कुरानमें परमात्माके विषयमें जो स्पष्टता की गई है, उस अर्थको मैंने भली भाँति समझ लिया। रसूलके इन्हीं वचनोंको मैंने शिरोधार्य किया।

जाहेर दुलहा छोड के, ढूँढत माएने गुझ ।

ए खोज तिनों की देख के, होत अचंभा मुझ ॥ ९

प्रत्यक्ष प्रकट हुए परमात्माको छोड़कर जो लोग कुरानके गूढ़ार्थ ढूँढ़ने लगे हैं, उनकी इस खोजको देखकर मुझे आश्चर्य होता है।

हम याही फुरमान के, लिए माएने जाहेर ।

रूह बांधी रसूल सों, जिन हक की कही खबर ॥ १०

हमने कुरानके इन्हीं प्रत्यक्ष (जाहेर) अर्थोंको ग्रहण किया और रसूलके प्रति अपना ध्यान आकृष्ट किया, जिन्होंने पहले ही आकर परमात्माका समाचार दिया है।

हाथ पकड देखावहीं, आप आए दरम्यान ।

ए छोड और जो ढूँढहीं, तिन दिल आंख न कान ॥ ११

वे ही परमात्मा सद्गुरु (इमाम)के रूपमें संसारमें आकर हमारा हाथ पकड़कर हमें परमधाम दिखा रहे हैं। प्रत्यक्ष पधारे हुए सद्गुरुको छोड़कर जो अन्यको ढूँढ़ते हैं, उनका दिल, आँखें और कान नहीं हैं।

मोमिन थे सो समझे, ए तो सीधा कहा महंमद ।

ना मैं जिमी आसमान का, खबर जो ल्याया खुद ॥ १२

जो मोमिन थे, वे समझ गए, रसूलने तो सीधा ही कहा है कि मैं इस भूमि (संसार) तथा आसमान (स्वर्ग आदि लोकों)का नहीं हूँ, अपितु परमात्मा (खुदा) का समाचार लेकर आया हूँ।

और माएने सो ढूँढहीं, ठौर ना जाको दिल ।

रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूँढे कहा बेअकल ॥ १३

जिनके दिलका कोई ठिकाना नहीं है, वे ही अन्य अर्थोंको ढूँढ़ते हैं। रसूल स्वयं पुनः आकर परमात्मा (रहीम) से मिला रहे हैं। अब भी जो अन्यत्र ढूँढ़ रहे हैं, वे अज्ञानी (बेअकल) हैं।

हम तो एही हक किया, जाहेर रसूल बोल ।

ए छोड और ना देखहीं, हम एही लिया सिर कौल ॥ १४

हमने तो रसूलके इन स्पष्ट वचनोंको ही सत्य मानकर चरितार्थ किया है। उनके इन वचनोंको ही शिरोधार्य किया है। इन्हें छोड़कर हम अन्यत्र नहीं देख रहे हैं।

एही हमारा यकीन, हम लिया हक कर ।

यकीन कहा रसूल का, सब देखावे नजर ॥ १५

इन्हीं पर हमारा विश्वास है और इनको ही हमने सत्य मान लिया है। रसूलने जिस विश्वास (श्रद्धा) की बात की है, मैंने उसीको सबके (नजर) समक्ष रखा है।

देखाया रसूल ने, सो लीजो आप चेतन ।

अंकूर अपना देखिए, ज्यों याद आवे वतन ॥ १६

रसूलने जिनका सङ्केत किया है, उन्हें तुम सावचेत होकर समझो। अपने सम्बन्ध (अंकुर) को पहचानो, जिससे परमधामकी स्मृति जागृत हो जाए।

जिन खातर ए रसूल, ले आया फुरमान ।

हम ले यकीन चले जिन विध, नेक ए भी करूं बयान ॥ १७

जिनके लिए रसूल परमात्माका सन्देश (फुरमान) लेकर आए हैं, वे (हम) ब्रह्मात्माएँ उस पर विश्वास रखकर जैसा चल रहीं हैं, उस (आचरण) का भी थोड़ा-सा विवरण देता हूँ।

अरस अरवाहें मेरी बोहोत हैं, नेक तिनके कहूं लछन ।

वतन हक आप भूलियां, तो भी मोमिन एही चलन ॥ १८

परमधामकी हमारी आत्माएँ बहुत हैं। उनके थोड़े-से लक्षण बताता हूँ। भले ही वे परमधाम, परब्रह्म परमात्मा तथा स्वयंको भूल गई हैं, तो भी उनकी यह रीति रही है।

अरस अजीम की जो रूहें, तिनकी ए पेहेचान ।

जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान ॥ १९

परमधामकी आत्माओंकी यही पहचान है कि जो कदाचित् अपने धामको भूल भी जाएँ तो भी उनकी दृष्टि उसीको खोजनेमें लगी रहती है।

आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो बिरहिन ।

ताए कोई दरदन कहो, ए विध अरस रूहन ॥ २०

वे स्वयं परब्रह्म परमात्माकी चाहक (आशिक) हैं। उन्हें कोई प्रेमी (प्रेयसी)

कहे, विरहिणी कहे या विरह वेदनासे व्याकुल (दर्दी) कहे, किन्तु यह परमधामकी आत्माओंकी रीति है।

**रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन ।**

**पर हकें पकरी अंतर, ना तो रहे ना तन ॥ २१**

परब्रह्म परमात्माकी अङ्ग स्वरूपा अङ्गनाएँ अपने अङ्गी (परमात्मा) के बिना (मायामें) कैसे रह सकती हैं ? परब्रह्मने ही उनकी अन्तरात्मामें विराजकर उन्हें सहारा दिया है, अन्यथा उनका मायावी शरीर नहीं टिकता अर्थात् छूट जाता।

**ऊपर काहूँ ना देखावहीं, जो दम ना ले सके छिन ।**

**सो आसिक जाने मासूक की, एही मोमिन बिरहिन ॥ २२**

बाहरसे वे (अपने विरहको) कुछ भी नहीं दिखाती किन्तु अन्तरसे तो अपने प्रियतम परमात्माके बिना क्षणभर श्वास लेना भी उन्हें कठिन होता है। ऐसी प्रियतमाएँ (आशिक) ही प्रियतम परमात्मा (मासूक) की महिमा समझ सकती हैं, तथा विरहिणी कहलाती हैं।

**मोमिन यकीन ना छूटहीं, जो पडे अनेक बिघन ।**

**आसिक मासूक वास्ते, जीव को ना करे जतन ॥ २३**

अनेक विघ्न आने पर भी ब्रह्मात्माओंका अपने प्रियतम परमात्माके प्रति विश्वास नहीं टूटता। ऐसी प्रियतमा अपने प्रियतमसे मिलनेके लिए शरीर (प्राणों) की परवाह भी नहीं करती।

**रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन ।**

**साफ दिल रूह मोमिन, कबहूँ न दुखावें किन ॥ २४**

ऐसी विरहिणी आत्माएँ सदैव गुणातीत (निर्गुण) अवस्थामें रहती हैं। उनका आहार (आचरण आदि) भी निर्गुण (पवित्र) होता है। वे निर्मल हृदयवाली आत्माएँ कभी किसीको दुःख नहीं देतीं।

**मोमिन खोजे आप को, और खोजे कहां है घर ।**

**खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखर ॥ २५**

ऐसी आत्माएँ स्वयंको पहचानना चाहती हैं और ढूँढ़ती रहती हैं कि अपना

घर परमधाम कहाँ है. वे अपने प्रियतम परमात्माको ढूँढ़ती हैं और अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी) की प्रतीक्षा करती हैं.

**खोज मोमिन ना थके, जोलों पार के पारै पार ।**

**नित खोजें चरनी चढ़ें, नए नए करें बिचार ॥ २६**

जब तक पारके भी पार अर्थात् क्षर, अक्षरसे भी पार अक्षरातीतका अनुभव न हो, तब तक ब्रह्मात्माएँ खोज करनेमें थकती नहीं हैं. नित्य प्रति अपनी खोजमें वे एक-एक पग आगे बढ़ती जाती हैं और उन्हें नए-नए विचार सूझते रहते हैं.

**खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद ।**

**पल पल नूर बढ़ता, श्रवनों एही स्वाद ॥ २७**

ब्रह्मात्माएँ आदिके भी आदि ऐसे अनादि अक्षरातीत परमात्माको निरन्तर खोजती रहती हैं. इस खोजमें उनके मुखका तेज (नूर) पल पल बढ़ता रहता है. उनके कान भी धनीके गुण श्रवणसे तृप्त ही होते हैं.

**फुरमान हाथों ना छूटहीं, जोलों पाड़े हक वतन ।**

**मासूक वतन पाए बिना, दरद न जाए निसदिन ॥ २८**

जब तक उन्हें अपने धनीका घर-परमधाम नहीं मिलता, तब तक वे परमात्माके सन्देश (फुरमान) को नहीं छोड़तीं. अपने प्रियतमके धामको पाए बिना दिन-रात उनकी विरह वेदना नहीं मिटती.

**मोमिन अंदर उजले, छिन छिन बढ़त उजास ।**

**देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस ॥ २९**

ब्रह्मात्माओंका दिल उज्ज्वल होता है, क्षण-क्षणमें उनमें ज्ञानका प्रकाश बढ़ता रहता है. उन्हें अपने झूठे शरीर पर विश्वास नहीं है. वे तो अपने सद्गुरु (इमाम) से मिलनेकी आशा लिए बैठी रहती हैं.

**ज्यों ज्यों माएने बिचारहीं, त्यों बेधे सकल संधान ।**

**रोम रोम ताए बेधहीं, सबद रसूल के बान ॥ ३०**

जैसे-जैसे वे गूढ़ रहस्योंको समझती जाती हैं, वैसे-वैसे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग

बींधते जाते हैं। इतना ही नहीं, रसूलके शब्द उनके रोम-रोमको छेद डालते हैं।

मोमिन अंग कोमल, ताए बान निकसे फूट ।

गलित गात सब भीगल, सब अंगों टूक टूक ॥ ३१

ब्रह्मात्माओंका हृदय अतीव कोमल होता है। प्रेमके वचन भी उनके हृदयमें बाणकी भाँति चुभ जाते हैं। उनका शरीर प्रेम रसमें भीगा रहता है। वे सब अङ्गोंसे अपने आपको न्योछावर करनेके लिए तत्पर रहती हैं।

खिन खेलें खिनमें हंसें, खिनमें गावें गीत ।

खिन रोवें सुध ना रहे, एही मोमिन की रीत ॥ ३२

वे अङ्गनाएँ एक क्षणमें खेलती हैं, दूसरे क्षणमें हँसने लगती हैं। क्षण मात्रमें अपने धनीके गुणानुवाद गाने लगती हैं, तो दूसरे ही क्षण रोने लगती हैं। उन्हें किसी प्रकारकी सुधि नहीं रहती। बस यही ब्रह्मात्माओंकी रीति है।

हक बातें खेलें हंसें, और गीत पिया के गाए ।

रोवें उरझें पीउ की, और बातनसों मुरछाए ॥ ३३

अपने धनीकी बातें करती हुई वे कभी खेलती हैं, कभी हँसती हैं और कभी अपने प्रियतमके ही गीत (गुणानुवाद) गाती हैं। वे अपने प्रियतमके वियोगमें रोती हैं, भावनात्मक मिलनमें उपालम्भ देती हुई उनसे उलझ जाती हैं और उनकी बातें करती हुई मूर्च्छित भी हो जाती हैं।

मोमिन दरदा ना सहे, जब जाहेर हुए पीउ ।

मोमिन अंग पीउ का, पीउ मोमिन अंग जीउ ॥ ३४

प्रियतम धनीके प्रकट होने पर ब्रह्मात्माएँ उनका वियोग सह नहीं सकतीं। वे स्वयं परब्रह्मकी अङ्गनाएँ हैं और परब्रह्म स्वयं अङ्गनाओंके प्राण स्वरूप हैं।

जोलों सुध ना मासूक की, तोलों मोमिन अंगमें पीउ ।

जब मासूक जाहेर हुए, तब आसिक ले खडी अंग जीउ ॥ ३५

जब तक ब्रह्मात्माओंको अपने प्रियतमकी सुधि नहीं थी, तब तक वे अपने प्रियतमको अपने हृदयमें विराजमान करती थीं अर्थात् हृदयसे उनका स्मरण



करती थीं. जब प्रियतम प्रत्यक्ष प्रकट हो गए, तब प्रियतमाएँ सशरीर उनसे मिलनेके लिए तत्पर हो जाती हैं.

बोहोत निसानी और हैं, अरस अरवा मोमन ।

सो इन जुबां केते कहूं, मेरे वतनी के लछन ॥ ३६  
ब्रह्मात्माओंके लक्षण तो और भी बहुत हैं. मैं इस जिह्वासे अपने परमधामकी आत्माओंके क्या क्या लक्षण बताऊँ ?

जो होवे अरस अजीम की, सो निरखो अपने निसान ।

ए लछन मोमिन वतनी, सो देखो दिलमें आन ॥ ३७  
जो परमधामकी आत्माएँ हैं, वे अपने लक्षणों (सङ्केतों) को देख लें. उपरोक्त लक्षण ब्रह्मात्माओंके हैं, उन्हें हृदयपूर्वक देखें.

मोमिन रूहें अरस की, ए समझ लीजो तुम दिल ।

ठौर ठौर से आए मोमिन, सुख लेसी सब मिल ॥ ३८  
ब्रह्मात्माएँ परमधामकी हैं, इस बातको हृदयङ्गम करो. वे इस जगत्में विभिन्न स्थानोंसे एकत्र हुई हैं और अब एकसाथ मिलकर आनन्दका अनुभव करेंगी.

ए केहेती हों मोमिन को, जिन अरस बकामें तन ।

सो कैसे ढांपी रहें, सुन के एह बचन ॥ ३९  
यह बात मैं ब्रह्मात्माओंके लिए कह रहा हूँ, जिनका मूल शरीर (पर-आत्मा) परमधाममें है. वे इन वचनोंको सुनकर कैसे छिपी रह पाएँगी.

ए सबद सुन मोमिन, रेहे ना सकें एक पल ।

तामें मूल अंकुर को, रहे न पकरयो बल ॥ ४०  
इन वचनोंको सुनकर ब्रह्मात्माएँ पलभरके लिए भी पीछे नहीं रह सकेंगी. उनमें मूल अंकुर (परमधामका सम्बन्ध) है, इसलिए माया उनकी शक्तिको नहीं पकड़ पाएगी.

जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए ना रह्यो रूहन ।

ओ ख्वाबी दम भी ना रहे, तो क्यों रहें अरस मोमन ॥ ४१  
अपने धनीके आगमनकी सूचना सुनते ही इन ब्रह्मात्माओंसे रहा नहीं जाता.

स्वप्नके जीव भी अपने प्रियतम पर न्योछावर होनेसे नहीं चूकते, तो परमधामकी आत्माएँ कैसे चूक सकती ?

**मोमिन पाए कदम हादी के, खोल द्वार लिए हजूर ।**

**पट खोल दिया फुरमान का, पल पल बरसत नूर ॥ ४२**

ब्रह्मात्माओंने सद्गुरुके रूपमें आए प्रियतम धनीके चरण पकड़ लिए हैं और सद्गुरुने भी पारके द्वार खोलकर उन्हें अपनी शरणमें ले लिया। कुरान पर पड़ा परदा भी हटा दिया अर्थात् उसके गूढ़ रहस्य स्पष्ट किए, जिससे आत्माओं पर पल-पल ज्ञानका प्रकाश बरसने लगा।

**खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार ।**

**एक दोस्ती जाने हक की, दुनी सब करी मुरदार ॥ ४३**

ब्रह्मात्माओंका खाना-पीना भी परमात्माके दर्शन हैं। उनका व्रत (रोजा) और पाठ-पूजा (नमाज) भी परमात्माके दर्शनके लिए होते हैं। वे तो एक परमात्माके साथकी मित्रता ही पहचानती हैं, उन्होंने जगतको नाशवान् (मृतप्रायः) माना है।

**केतेक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास ।**

**पर इतथें नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास ॥ ४४**

ब्रह्मात्माएँ जिन-जिन स्थानोंमें हैं वहाँ पर भी ज्ञानका प्रकाश तो है परन्तु जब हमसे तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलेगा, तब वे उस प्रकाशको लेकर जागृत हो जाएँगी।

**कोई दिन हम छिपे रहे, सो भी मोमिनोके सुख काज ।**

**जो होवे नेक जाहेर, तब रहे न पकरयो आवाज ॥ ४५**

(वाणीके माध्यमसे) ब्रह्मात्माओंको अखण्ड सुख देनेके लिए ही कई दिनों तक सद्गुरुधनी मेरे अन्तरमें छिपे रहे। यदि वे पहले ही प्रकट हो जाते, तब उनकी आवाजको पकड़े बिना आत्माएँ नहीं रह पातीं, अर्थात् आत्माएँ जागृत हो जातीं (यदि ऐसा होता तो वाणी अवतरण नहीं हो पाता)।

मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम ।

सुख देऊं जगाए के, मोमिन रूहें तले कदम ॥ ४६

मैं स्वयं श्यामावतार सद्गुरु (इमाम) का नूर अङ्ग हूँ. श्रीश्यामाजी (खासी रूह) धामधनी (परब्रह्म) के अङ्ग हैं. मुझे उन ब्रह्मात्माओंको जागृत कर परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव कराना है जो श्री राजजीके चरणोंमें ही बैठी हुई हैं.

रूहों को अरस देखावने, उलसत मेरे अंग ।

करने बात मासूक की, मावत नहीं उमंग ॥ ४७

ब्रह्मात्माओंको परमधामका अनुभव करवानेके लिए मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्ग पुलकित हो रहे हैं. अपने प्रियतम धनीकी बातें उनके साथ करनेके लिए मेरे अङ्गोंमें उमङ्ग समा नहीं रही है.

नए नए रंग रूह मोमिन, आवत हैं सिरदार ।

बडो सुख होसी कयामत, नहीं इन सुख को पार ॥ ४८

शिरोमणि ब्रह्मात्माएँ नए नए रङ्ग (आनन्द) को लेकर हमारे पास आ रही हैं. आत्म-जागृति (कयामत) की वेला अपार सुखदायी होगी. उस सुखकी कोई सीमा नहीं रहेगी.

आसिक आवत मासूक की, ताको छिपो राखों उजास ।

राह देखों और रूहन की, सब मिल होसी विलास ॥ ४९

प्रियतम धनीकी आशिक ब्रह्मात्माएँ जाग्रत हो रहीं हैं. अभी भी हमने ब्रह्म ज्ञानके इस तेजको छिपाकर रखा है (परिक्रमा, सागर, सिनगार आदि वाणी उतरनी बाकी है अतः). हम शेष आत्माओंकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो वाणीके माध्यमसे जाग्रत होंगी और सब मिलकर एकसाथ जागनीरासका विलास होगा (परमधाममें सभी एक साथ जाग्रत होकर धामधनीके साथ विलास करेंगी).

नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन ।

तो पसरसी एक पलमें, चारों तरफों सब धरन ॥ ५०

सद्गुरु (इमाम) का ज्ञान (नूर) इस प्रकारका है कि उसके प्रकाशकी एक

भी किरण फूट पड़ेगी, तो एक ही पलमें इस धरती पर चारों ओर फैल जाएगी.

क्यों रहे प्रकाश पकरयो, इमाम नूर अति जोर ।

मैं राखत हों ले हुकम, ना तो गई रैन भयो भोर ॥ ५१

सद्गुरु (इमाम-बुद्धजी) का प्रकाश इतना प्रखर है कि उसे पकड़ा नहीं जा सकता. उनकी आज्ञासे ही मैंने इसे अपने अन्तरमें छिपा रखा है, अन्यथा अज्ञानका अन्धकार (रात्रि) मिटकर ब्रह्मज्ञानका प्रभात हो गया होता.

नूर बडो इमाम को, सो क्यों ढांपू मैं अब ।

सुख गोसे को या बखत, पीछे दुनी मिलसी सब ॥ ५२

इमाम (सद्गुरु) के ज्ञानका प्रकाश अति प्रबल है. उसे मैं कैसे छिपाए रखूँ ? यह घड़ी तो धामधनीके सान्निध्यमें एकान्त सुख लेनेकी है. बादमें तो सारी दुनियाँ एकत्र हो जाएगी (जागृत हो जाएगी).

मैं तुमको चेतन करूँ, एही कसौटी तुम ।

या विध अरस अरवाहों का, तसीहा लेवें खसम ॥ ५३

हे आत्माओ ! मैं तुम्हें सचेत कर रहा हूँ कि यही प्रेमकी कसौटी है. परब्रह्म परमात्मा इस प्रकार परमधामकी आत्माओंकी परीक्षा ले रहे हैं.

सबद हमारे सुनके, उठी ना अंग मरोर ।

आसिक मासूक सब देखहीं, तुम इसक का जोर ॥ ५४

जो ब्रह्मात्माएँ हमारे वचन (तारतम ज्ञान) सुनकर भी पूरी उमंगके साथ नहीं उठेंगी (जाग्रत नहीं होंगी), उन्हें पश्चाताप करना पड़ेगा, क्योंकि अन्य ब्रह्मात्माएँ, श्रीश्यामाजी एवं स्वयं श्रीराजजी तुम्हारे प्रेमका बल (जोर) देख रहे हैं.

ए सुनके जो दौडी नहीं, तो हांसी है तिन पर ।

जैसा इसक जिनपें, सो अब होसी जाहेर ॥ ५५

जो इन वचनोंको सुनकर भी नहीं दौड़ेंगी, उन पर बादमें हँसी होगी. श्रीराजजीके प्रति जिसका जितना प्रेम है, अब वह प्रकट हो जाएगा.

जो इसक ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार ।

दरद बिना दुख होएसी, सो जानो निरधार ॥ ५६

जो प्रेममें ओत-प्रोत होकर मिलेंगी, वे अपार सुख प्राप्त करेंगी. जिन आत्माओंके हृदयमें अपने धनीके प्रति पीड़ा नहीं होगी, उन्हें अवश्य दुःख (पश्चाताप) होगा.

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे ।

सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले ॥ ५७

लाहा तो ना लेवहीं, पर सामी हांसी होए ।

ए हांसी अरस के मोमिन, जिन कराओ कोए ॥ ५८

जो इन वचनोंको सुनकर भी असावधान बनी रहेंगी और धनीके चरणोंमें दिल समर्पित कर जाग्रत नहीं होंगी, वे यहाँ रहते हुए न दुनियाँका सुख प्राप्त कर पाएँगी और न ही धर्मका सुख ले सकेंगी (उन्हें शारीरिक एवं आत्मिक दोनों सुख नहीं मिलेंगे). वे इस अवसरका लाभ तो नहीं ले पाएँगी, किन्तु उनकी हँसी अवश्य होगी. इसलिए हे परमधामकी आत्माओ ! इस प्रकार कोई भी अपनी हँसी मत कराओ.

जिन उपजे मोमिन को, इन हांसी का भी दुख ।

सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख ॥ ५९

मैं चाहता हूँ कि ब्रह्मात्माओंको इस हँसीका भी दुःख न हो. परमधाममें जाग्रत होकर अखण्ड सुखका अनुभव करते हुए यदि इस प्रकारके उपहासका स्मरण होगा, तो उन्हें बहुत बुरा लगेगा.

ना तो जिन जुबां मैं दुख कहूँ, सो ए करुं सत टूक ।

तो एता रूहों खातर, विध विध करत हों कूक ॥ ६०

अन्यथा जिस जिह्वासे मैं उक्त दुःखकी बात कर रहा हूँ, उसके सैंकड़ों टुकड़े कर दूँ, किन्तु ब्रह्मात्माओंको अपार सुखका अनुभव करवानेके लिए ही मैं विभिन्न प्रकारसे पुकार कर रहा हूँ.

जब दुख मेरी रूह न को, तब सुख कैसा मोहे ।  
 हम तुम अरस अजीम के, अपनी रूह नहीं दोए ॥ ६१

जब मेरी आत्माओंको दुःख होगा, तो मुझे कैसे सुखका अनुभव होगा ?  
 वस्तुतः हम और तुम दोनों ही परमधामके हैं, अपनी आत्मा अलग-अलग नहीं है।

पेहेलें फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन ।  
 कलमा जाहेर करके, देखाया यकीन ॥ ६२

पहले झूठा खेल दिखाकर फिर मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट धर्मको स्पष्ट किया। पुनः तारतम ज्ञान द्वारा कलमाका रहस्य प्रकट कर धामधनीके प्रति होनेवाली निष्ठा दिखा दी।

माणे जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए ।  
 और गुझ भी करों नेक जाहेर, अरस वतनी जो कोए ॥ ६३

इस प्रकार कुरानके किए जा रहे बाह्य अर्थोंके सम्बन्धमें थोड़ी-सी बात कही। अब परमधामकी आत्माओंके लिए और भी गूढ़ रहस्य प्रकट करता हूँ।

प्रकरण २२ चौपाई ६८२

सनंघ दिल मोमिन अरस सुभान की

दिल हकीकी रूहें अरस की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान ।  
 तो कही गिरो ए रबानी, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ सच्चे दिलवाली हैं, जिनके बीच स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा (सुल्तान) चाहक (आशिक) बनकर बैठे हैं। कुरानमें इस समुदायको ब्रह्मात्माओंका समुदाय (रब्बानी गिरोह) कहा है। ऐसी ब्रह्मात्माओंके दिलको ही पूर्णब्रह्म परमात्मा (सुभान) का परमधाम (अर्श) कहा गया है।

जेता कोई दिल मजाजी, चढ सके न नूर मकान ।  
 दिल हकीकी पोहोंचे नूर तजल्ला, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २

जो आत्माएँ विकारयुक्त दिलवाली (दिल मजाजी) हैं, वे अक्षर धाम (नूर

मकान) तक भी नहीं पहुँच सकतीं. सच्चे हृदयवाली (दिल हकीकी) ब्रह्मात्माएँ तो परमधाम (नूरतजल्ला) पहुँच जाती हैं. ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है.

**रूहें उतरी लैलत कदर में, सो उमत रबानी जान ।**

**इनको हिदायत हक की, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३**

जो आत्माएँ महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कदर) के तीनों खण्डोंमें खेल देखनेके लिए उतरी हैं, वे ब्रह्मात्माएँ (रब्बानी गिरोह) कहलाती हैं. उनको ही परमात्माका सन्देश (उपदेश) प्राप्त हुआ है. ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमात्माका परमधाम कहा गया है.

**होवे फारग दुनी के सोर सें, ए दिल हकीकी निसान ।**

**करें हजूर बातून बंदगी, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४**

सच्चे दिलवाली आत्माओंके लक्षण हैं कि वे साँसारिक (दुनियाँके) बन्धनोंके कोलाहल वाले वातावरणसे अलग रहती हैं. ऐसी ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माके समीप रहकर हृदयसे उनकी वन्दना करती हैं. इन ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमात्माने अपना धाम बनाया है.

**हकें कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस हैं फुरकान ।**

**जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ५**

पूर्णब्रह्म परमात्माने जिन आत्माओंको जगानेके लिए परमधामकी साक्षियोंको भेजनेका वचन दिया था, वे ही ब्रह्मात्माएँ कुरानकी सच्ची उत्तराधिकारिणी हैं. प्रियतम परमात्मा उन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए (माशूक बनकर) परमधामसे इस संसारमें आए हैं. ऐसी ब्रह्मात्माओंका हृदय ही परमात्माका परमधाम है.

**याही वास्ते इमाम रूहअल्ला, आए उतर चौथे आसमान ।**

**कौल किया लाहूत में इनों से, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ६**

इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए श्यामाजी (रूह अल्लाह) सद्गुरु (इमाम) बनकर परमधाम (चौथे आसमान)से इस संसारमें आई हैं. इन्हीं ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए श्यामाजीको भेजनेका वचन परब्रह्म परमात्माने परमधाममें दिया

था. इसलिए इन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें परमात्माका सिंहासन सुशोभित है.

**ए गिरो कै बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान ।**

**एही उमत खासी महंमदी, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ७**

ब्रह्मात्माओंके इस समुदायको स्वयं परमात्माने कई बार विपत्तियों (तूफानों)से बचाया है और नास्तिक (काफिर) जीवोंको डुबोया है. श्यामाजीका खास समुदाय (मुहम्मदी उमत) यही है. इनके ही हृदयको परमात्माने परमधाम बनाया है.

**एही नाजी फिरका तेहेतरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान ।**

**खोलें हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ८**

रसूल महम्मदने इसी समुदायको तिहत्तरवाँ फिरका 'नाजी फिरका' कहा है. इनको ही तारतम ज्ञान (इलम लुदन्नी) की पहचान है. इसी तारतम ज्ञानके द्वारा ये आत्माएँ कुरानमें पूर्णब्रह्म परमात्माके लिए किए गए संकेतोंका रहस्य खोलती हैं. इन्हीं आत्माओंके हृदयमें परमात्माका सिंहासन है.

**हरफ मुक्ता इनों वास्ते, रखे बातून माहें फुरमान ।**

**सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ९**

कुरानके मुक्तआत (अलफ लाम मीम इत्यादि) इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए गुप्त रख दिए हैं. ये ही सच्ची हृदयवाली आत्माएँ इन रहस्योंको स्पष्ट करेंगी. इनके हृदयको ही परमात्माने परमधाम बनाया है.

**हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान ।**

**सो कही सिफत सब महंमदकी, ए जाने दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १०**

परमात्माने रसूल पैगम्बर द्वारा कुरान, हदीसों एवं पैगम्बरनामा (नूरनामा) में पैगम्बरोंकी विशेषताएँ अनेक प्रकारसे बताई हैं. ये सारी विशेषताएँ पूर्णब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रशंसित (मुहम्मद) श्यामाजीके समूह-ब्रह्मात्माओंकी प्रशंसाके लिए हैं. इस रहस्यको वही ब्रह्मात्माएँ जानती हैं, जिनके हृदयको परमात्माने परमधाम बनाया है.



एही भांत उमत महंमद की, कही सिफत रसूल समान ।

धरे बोहोत नाम उमत के, ए जाने दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ११

इस प्रकार ब्रह्मात्माओंके समुदायको कुरान और हदीसोंमें रसूल मुहम्मदके समान कहकर उनकी प्रशंसा की है और उनके कई नाम भी बताए हैं। इन रहस्योंको वे ही ब्रह्मात्माएँ जानती हैं, जिनके हृदयमें परमात्मा विराजमान हैं।

जबराईल असराफील, हक नजीकी निदान ।

सो भी आए उमत वास्ते, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १२

कुरानमें कहा है कि परब्रह्म परमात्माके निकट रहने वाले फरिश्ते जिब्रिल और असराफील भी ब्रह्मात्माओंके लिए ही संसारमें आए हैं। इसलिए उन ब्रह्मात्माओंके दिलको परमधाम कहा है।

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान ।

सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १३

चौदह लोकोंकी पूरी दुनियाँ परमात्मा द्वारा प्रशंसित (मुहम्मद) श्यामाजी के लिए बनाई गई है। यही श्यामाजी ब्रह्मात्माओंके लिए इस खेलमें अवतरित हुई हैं। उन्हीं ब्रह्मात्माओंका हृदय परमात्माका धाम है।

निसान लिखे कयामत के, फुरमान हदीसों दरम्यान ।

सो भी खोले एही उमत, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १४

कुरान और हदीसोंमें अन्तिम (कयामत) समयकी निशानियाँ लिखी गई हैं। उनके रहस्योंको भी ये ही ब्रह्मात्माएँ स्पष्ट कर सकती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं।

उठाई गिरो एक अदल से, कयामत बख्त रेहेमान ।

देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १५

कयामतके समय परम कृपालु परमात्माने एक समुदायको न्याय देकर अर्थात् तारतम ज्ञानसे खेल और परमधामकी पहचान करवा कर जाग्रत किया। वही समुदाय आखिरी मुहम्मदकी साक्षी देने वाला है। इन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ही परम कृपालु परमात्मा विराजमान हैं।

कहूं बेवरा मोमिन दुनी का, जो फुरमाया फुरमान ।

सक सुभे इनमें नहीं, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १६

कुरानमें ब्रह्मात्मओं और दुनियाँका जो विवरण दिया है, उसके सन्दर्भमें ब्रह्मात्माओंको किसीभी प्रकारकी शङ्का नहीं है. उन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें परमात्मा विराजमान हैं.

दिल मजाजी दुनी सरीयत, सो सके ना पुल हद भांन ।

याको तोड उलंघे ले हकीकत, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १७

विकारी दिलवाले दुनियाँके लोग कर्मकाण्डको ही महत्त्व देते हैं. वे इस नश्वरताकी सीमासे पार नहीं जा सकते. नश्वरताकी इस सीमाको लाँघकर यथार्थज्ञान ग्रहण करनेवाली आत्माओंके हृदयमें ही परमात्मा विराजमान हैं.

दिल मुरदा मजाजी जुलमत से, पैदा कुंन केहेते कुफरान ।

क्यों होए सरभर मोमिनो, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १८

परमात्माके द्वारा 'हो जा' (कुन्न) कहने मात्रसे शून्य निराकारसे पैदा हुए विकारी दिलवाले स्वप्नवत् तुच्छ जीव ब्रह्मात्माओंके समान कैसे हो सकते हैं, जिन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

ए जो कही गिरो मलकूती, पैदा जुलमत से दुनी फान ।

रुहें फिरस्ते उतरे अरस से, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ १९

इस प्रकार शून्य निराकार (जुलमत) से पैदा हुई झूठी दुनियाँके लोगोंको मलकूती गिरोह अर्थात् वैकुण्ठके अधिकारी कहा गया है. ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरी सृष्टि (फरिश्ते) अपने-अपने धामसे उतरीं हैं. किन्तु ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ही परमात्मा विराजमान हैं.

दिल मजाजी गोस्त टुकडा, किया रसूलें मुख बयान ।

सो क्यों उलंघे जुलमत को, बिना दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २०

सांसारिक चित्तवृत्तिवाले नश्वर जीवोंके हृदयको कुरानमें रसूल मुहम्मदने मांसपिण्ड (गोश्तका टुकड़ा) कहा है. वे शून्य निराकारको लाँघकर पार नहीं

जा सकते. केवल वे ही आत्माएँ पार जा सकती हैं, जिनके हृदयको परमात्माने अपना धाम बनाया है.

**जो उतरे होवे अरस से, रूहें तौहीद के दरम्यान ।**

**सो लेसी अरस अजीम को, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २१**

जो आत्माएँ अद्वैत परमधामसे अवतरित हुई हैं, वे ही परमधामका सुख प्राप्त कर सकती हैं. उनके ही हृदयमें परमात्मा विराजमान हैं.

**जो मुरदार करी दुनी मोमिनो, सो दिल मजाजी खान पान ।**

**नूर बिलंद पोहोचे पाक होए के, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २२**

ब्रह्मात्माओंने जिस दुनियाँको झूठी समझकर तुच्छ (मुरदार) माना है, उसी दुनियाँको सांसारिक चित्तवृत्ति वालोंने आहार (खान-पान)की भाँति अपनाया है. ब्रह्मात्माएँ पवित्र रहकर अपनी सुरतासे परमधाम (नूरबिलन्द) में विचरण करती हैं. ऐसी आत्माओंके हृदयमें ही परमात्मा विराजमान हैं.

**कह्या पर जले जबराईल, चढ सक्या न चौथे आसमान ।**

**रूहें बसें तिन लाहूत में, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २३**

रसूल मुहम्मदने बताया कि परमधाम (चौथे आसमान) जाते हुए जिब्रिल फरिश्ताके पंख जलने लगे और वह वहाँ तक नहीं पहुँच पाया, जब कि ब्रह्मात्माएँ उस परमधाममें सर्वदा रहती हैं. उन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें परमात्मा विराजमान हैं.

**मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंचमें, ना जबराईल तिन समान ।**

**ए माएने म्याराज रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २४**

कुरानमें कहा है, परमात्माके दर्शनके लिए जाते हुए मुहम्मद साहेबने परमधाममें देखा कि अपनी चोंचमें खाक लेकर एक मुर्गा बैठा हुआ है और यह भी कहा है कि जिब्रिल फरिश्ता उस मुर्गेके समान नहीं है. इस रहस्यको भी परमधामकी आत्माएँ ही जान सकती हैं, जिनके हृदयमें परमात्मा विराजमान हैं.

पोहोंचे महंमद म्याराजमें, दो गोसे फरक कमान ।

इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २५

जब मुहम्मद साहेब दर्शनके लिए आगे बढ़े तो उस समय उनके और परमात्मा (खुदा)के बीच दो कमानकी दूरी थी. इधर ब्रह्मात्माएँ तो सर्वदा उसी परमधामके अन्दर रहनेवाली हैं और इनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

नबे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रहेमान ।

सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २६

दर्शनके समय परमात्माने रसूल पैगम्बरको नब्बे हजार शब्दों (हफों)में उपदेश दिया और कहा कि उनमें-से कुछ गुह्य रखना. उन गुह्य रहस्योंको वही आत्माएँ प्रकट करती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

किए आपसमें रूहें गवाही, हकें अपनी जुबान ।

याको जाने दिल हकीकी, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २७

परमधाममें प्रेम सम्वादके समय श्रीराजजीने अपनी जिह्वासे ब्रह्मात्माओंको कहा था कि हे ब्रह्मात्माओ ! खेलमें जानेके बाद तुम एक दूसरेकी साक्षी बनना. इस रहस्यको सच्चे हृदयवाली ब्रह्मात्माएँ ही जान सकती हैं, जिनके हृदयमें परब्रह्म परमात्माका वास है.

दिया जवाब रूहों हक को, ए सुकन दिल बीच आन ।

ए रूहें रहें हक हजूर, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २८

श्री राजजीके इन वचनोंको हृदयमें ग्रहण करते हुए ब्रह्मात्माओंने उनको अपना स्वीकारात्मक उत्तर दिया था (कि आप ही हमारे सर्वस्व हैं और हम आपको नहीं भूलेंगी). ये ही ब्रह्मात्माएँ सदैव धामधनीके शरणमें रहती हैं, क्योंकि उनका हृदय ही श्रीराजजीका धाम बना हुआ है.

कह्या मोतिन के मुंह कुलफ, ए माएने तोडत पढों गुमान ।

ए अरस तन रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ २९

कुरानमें ऐसा कहा है कि हजरत मुहम्मद साहेबने दर्शनके समय परमधाममें

देखा कि ब्रह्मात्माओं (मोतियों)के मुखपर ताला (कुलफ) पड़ा है. कुरानके इस वाक्यका अर्थ स्वयंको विद्वान कहलाने वाले लोगोंका गर्व (गुमान) भी तोड़ देता है, अर्थात् वे इसे स्पष्ट नहीं कर सकते. इस रहस्यको परमधामकी आत्माएँ ही जान सकती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

**पोहोंच्या म्याराजमें गुनाह मोमिनों, ए सुन उरझे मुसलमान ।**

**ठौर गुन्हें न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३०**

म्याराजके प्रसंगमें रसूलने कहा कि (कुरानमें कहा है- म्याराजके समयमें खुदाने रसूल मुहम्मदको कहा कि तेरी रूहोंने गुनाह किया है इस प्रकार) ब्रह्मात्माओं तक गुनाह पहुँच गया है, ये वचन सुनकर मुसलमान उलझ रहे हैं. जिस स्थान पर स्वयं जिब्रील फरिश्ता भी नहीं पहुँचा, ऐसे स्थान पर गुनाह कैसे पहुँच सकता है ? इस रहस्यको वही आत्माएँ जान सकती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

**हकें हाथ हिसाब लिया मोमिनों, तोड्या गुमान दे नुकसान ।**

**तित बैठे अपना अरस कर, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३१**

परमात्माने ब्रह्मात्माओंका न्याय (हिसाब) अपने हाथमें लिया एवं उनको प्रेमकी परीक्षामें असफल दिखाकर उनके अहङ्कारको भी तोड़ दिया. फिर भी उनके हृदयमें वे स्वयं अपना आसन बनाकर बैठ गए. ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयको ही परमधाम कहा है.

**पोहोंची तकसीर रूहें अरस में, हके फुरमाया फुरमान ।**

**तित दूजा कोई न पोहोंचिया, बिना दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३२**

कुरानमें परमात्माकी ओर से ऐसा कहलाया है कि परमधाममें आत्माओंके मध्य तकसीर (जगतमें आकर भूल जानेका दोष) पहुँची है. वस्तुतः वहाँ पर उन ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं पहुँच सकता. इस रहस्यको केवल वे ब्रह्मात्माएँ ही जान सकती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं

आसिक नाचे अरस अजीममें, दूजा नाच न सके इन तान ।

और राहमें जले आवते, बिना दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३३

ऐसा भी कहा गया है कि परमधाममें आशिक ब्रह्मात्माएँ सर्वदा प्रेम-आनन्दमें मस्त होकर नाचती-झूमती रहती हैं, अन्य कोई भी इस मस्तीमें नहीं आ सकता. जिन आत्माओंके हृदयको परमात्माने परमधाम बनाया है, उनके अतिरिक्त कोई भी जीव इस ओर जाने लगे तो वह मार्गमें ही जल जाता है.

जो गिरो भाई कहे महंमद के, ताको इसकै में गुजरान ।

वाको एही फैल एही बंदगी, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३४

जिस समुदायको रसूल मुहम्मद साहेबने अपना भाई कहा है, वे ब्रह्मात्माएँ सर्वदा प्रेममय वातावरणमें रहती हैं. उनकी दिनचर्या एवं उनकी पूजा भी प्रेम ही है, इसलिए उनका हृदय ही परमात्माके लिए परमधाम बन जाता है.

एही खासल खास गिरो महंमदी, जाकी बंदगी इसक ईमान ।

इनों फैल ऊपरका ना रहे, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३५

यही सर्वोत्तम (खासल-खास) समुदाय श्यामाजीका समुदाय (मुहम्मदी गिरोह) कहलाता है. जिनकी पूजा-पाठ सब प्रेम और विश्वास ही है. ये आत्माएँ बाह्याचरण अथवा कर्मकाण्डको महत्त्व नहीं देती, क्योंकि इनके हृदयको परमात्माने परमधाम बनाया है.

दूजा जले इन राहमें, ए वाहेदत का मैदान ।

तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३६

इन ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य लोग इस प्रेमके मार्गमें चल ही नहीं सकते, वे तो बीचमें ही जल जाते हैं क्योंकि यह तो अद्वैत भूमिकाका मार्ग है. कुरानमें यह भी कहा है कि परमात्माका आदेश (हुकम) लेकर संसारमें आने वाले तीन स्वरूप (बशरी, मलकी और हकीकी) तथा ब्रह्मात्माएँ ये सब परमधाममें एक ही दिल (रूप) हैं. पूर्णब्रह्म परमात्मा उनके अन्दर ही विराजमान हैं.

महंमद क्यों ल्याए खासी उमत, इन बीच जिमी हैवान ।

ए उमत जाने इन स्वाल को, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३७

पाशविक वृत्तियोंसे भरी हुई इस दुनियाँ (हैवान जिमी) में श्रीश्यामाजी (मुहम्मद) अपनी आत्माओंके समुदायको क्यों लाई हैं, इस प्रश्नका उत्तर भी ये ही ब्रह्मात्माएँ जान सकती हैं, जिनके हृदयको परमात्माने अपना धाम बनाया है।

गलित गात अंग भीगल, ए दिल हकीकी गलतान ।

ए वाहेदत हक हादी गिरो, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३८

सच्चे और पवित्र हृदयवाली ब्रह्मात्माएँ अपने धनीके प्रेममें गलितगात्र (भीगी हुई) रहती हैं। ऐसी आत्माएँ, श्यामाजी तथा पूर्णब्रह्म परमात्मा वस्तुतः अद्वैत स्वरूप हैं। ऐसा अनुभव वही आत्माएँ कर सकती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं श्रीराजजी विराजमान हैं।

बका तरफ कोई न जानत, पढे ढूँढ ढूँढ हुए हैरान ।

सो बका हदें सब बेवरा किया, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ३९

परमधामके सन्दर्भमें कोई भी नहीं जान पाता। पढ़े लिखे विद्वान लोग भी ढूँढ़-ढूँढ़कर दुःखी हो गए हैं। इस सीमित जगतमें रहकर भी परमधामका वर्णन करनेकी क्षमता उन्हीं ब्रह्मात्माओंमें है, जिनके हृदयमें पूर्णब्रह्म परमात्मा विराजमान हैं।

अरस बका के बयान की, हुती न काहूँ सुध सान ।

सो जरे जरा जाहेर करी, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४०

परमधामके वर्णन करनेकी बुद्धि व क्षमता किसीके पास नहीं थी, किन्तु ब्रह्मात्माओंने वहाँके कण-कणका वर्णन कर बताया, उनके ही हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं।

लिखी हकें इसारतें रमूजें, सो किन खोली न फिरस्ते इनसान ।

सो दुनी सब बेसक हुई, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४१

कुरानमें लिखे गए संकेत तथा रहस्यकी बातें अभी तक अवतारों अथवा

मनुष्यों ने स्पष्ट नहीं कीं. परमात्मा को अपने हृदय में बैठाने वाली ब्रह्मात्माओं ने उसे स्पष्ट किया, तो सबके सन्देह मिट गए और सभी सन्देह रहित (बेशक) हो गए.

**रूहअल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान ।**

**ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४२**

श्यामाजी (रूहअल्ला) के अवतार श्री देवचन्द्रजी महाराज को प्राप्त कुञ्जी (तारतम ज्ञान) के द्वारा परमधाम के सभी द्वार खुल गए हैं. इसलिए ब्रह्मात्माओं ने मुहम्मद के तीनों स्वरूपों (बशरी, मलकी और हकीकी) के रहस्य को भी प्रकट किया है, उनके ही हृदय में स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

**तो हुई दुनी सब हैयाती, जो उडाए दिया उनमान ।**

**पट खोले महंमद भिस्त के, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४३**

जब श्यामाजी (मुहम्मद) ने मेरे हृदय में प्रकट होकर तारतम ज्ञान के द्वारा परमात्मा विषयक अनुमान को उड़ा दिया और मुक्तिस्थलों (बहिश्तों) के द्वार खोल दिए, तब सारी दुनियाँ अखण्ड हो गई. इस रहस्य को जानने वाली ब्रह्मात्माओं के हृदय में स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

**सब जिमी पर सेजदा, किया फिरस्ते घस पेसान ।**

**पर होए न हकीकी दिल बिना, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४४**

अजाजील फरिश्ताने सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना सिर घिसकर दण्डवत प्रणाम किया, किन्तु इस रहस्य को सच्चे हृदय वाली ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जान सकता. इन ब्रह्मात्माओं के हृदय में स्वयं परमात्मा विराजमान हैं.

**कलमा निमाज रोजा दिल से, दे जगात आप कुरबान ।**

**करे हज बका हमेसगी, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४५**

जिन आत्माओं के हृदय में प्रियतम परमात्मा विराजमान हैं, ऐसी आत्माएँ अपने दिल से ही कलमा, निमाज अथवा रोजा करती हैं. वे अहंभाव को समर्पित (त्याग) कर दान (जकात) देती हैं, तथा परमधाम का ही तीर्थाटन (हज) किया करती हैं.



**जिन चांद नूर देख्या महंमदी, सोई रोजे रमजान ।**

**न जाने दिल मुरदा मजाजी, ए जाने दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४६**

जिन ब्रह्मात्माओंने आखिरी मुहम्मदके मुख चन्द्रका नूर देख लिया, वे ही रमजानके महीनेमें

रोजा रखनेका गूढ़ार्थ जानती हैं। सांसारिक वृत्तिवाले मायावी जीव इस रहस्यको नहीं जान सकेंगे। इसे तो वही आत्माएँ जानती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं।

**सुध ना रोजे रमजान की, ना चांद सूरज पेहेचान ।**

**करें सरीकी गिरो रबानी, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४७**

जिनको रमजानके महीनेमें व्रत (रोजा) रखनेका ज्ञान नहीं है, वे चाँद तथा सूर्यको नहीं पहचानते हैं। ऐसे लोग अपनी समानता उन ब्रह्मात्माओंसे करना चाहते हैं, जिनके दिलमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं। (यहाँ पर चाँद और सूर्यका तात्पर्य श्रीदेवचन्द्रजी तथा श्रीप्राणनाथजीसे है)।

**जब ले उठसी रूहें लुदंनी, तब होसी सब पेहेचान ।**

**दै हैयाती सबन को, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४८**

जब ब्रह्मात्माएँ जागृत हो कर तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलाएँगी, तब सबको उनकी पहचान हो जाएगी। ऐसी आत्माएँ, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं, ही सबको अखण्ड स्थल प्रदान करेंगी।

**ईसैं आब हैयाती पिलाइया, काढ्या कुफर जिमी आसमान ।**

**दीन एक किया सब इसलाम, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ४९**

सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजने तारतम ज्ञानके रूपमें दिव्य अमृत (हैयाती आब) पिलाकर धरतीसे लेकर आकाशतक अर्थात् पातालसे लेकर सत्यलोक तक फैले हुए अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटा दिया। सबको एक ही परमात्माके प्रति विश्वास रखने वाले इस विश्वधर्ममें एकत्रित किया। इस रहस्यको वे ही ब्रह्मात्माएँ जान सकती हैं, जिनके हृदयमें स्वयं परमात्मा विराजमान हैं।

सेहेरग से हक नजीक, कहा खासल खास मकान ।

इत हिसाब इत कयामत, जो दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ५०

परमधाम दिलवाली आत्माओंके लिए ही ऐसा कहा गया है कि परमात्मा उनके लिए हृदयकी मुख्य धमनी (सुहरग) से भी अधिक निकट हैं। अन्तिम समय-कयामतके दिन ये ही आत्माएँ सबका लेखा कर उन्हें अखण्ड मुक्ति देंगी।

कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान ।

सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमिन अरस सुभान ॥ ५१

रसूल मुहम्मद साहेबने कहा है कि परमकृपालु परमात्मा इन ब्रह्मात्माओंके समूहकी प्रशंसा करते हैं। इस रहस्यको वे ही जान सकती हैं, जिनके हृदयमें ब्रह्मज्ञान (हक इलम) है। ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमात्माने अपना धाम बनाया है।

प्रकरण २३ चौपाई ७३३

सनंध रसूल साहेब की पेहेचान बातूनी

केहेती हों मोमिन को, सुनसी सब जहान ।

माणे गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान ॥ १

ब्रह्मात्माओंके लिए मुझे कहना है किन्तु उसे समस्त संसारके लोग सुनेंगे। अभी तक कुरानके बाह्य अर्थ अथवा आन्तरिक अर्थको कोई भी समझ नहीं पाया।

जाहेर माणे कलमें के, रसूलें कहे समझाए ।

सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए ॥ २

यद्यपि रसूल साहेबने कलमाके बाह्य (जाहिर) अर्थ ही समझाए हैं, तथापि उन्हें भी कोई समझ नहीं पाया, तो मैं उसके आन्तरिक रहस्यको कैसे समझाऊँ ?

नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमिनों के कारन ।

अंतर मैं ना कर सकों, अरस रूहें मेरे तन ॥ ३

फिर भी अपनी आत्माओंके लिए मुझे थोड़ा-सा तो कहना ही है। मैं

ब्रह्मात्माओंसे कुछ भी नहीं छिपा सकता, क्योंकि ये तो मेरे ही अंग हैं।

जाहेर कहा सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम ।

आगूं अरस रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम ॥ ४

रसूलने कलमाके बाह्य अर्थ तो बता ही दिए हैं। अब मैं इसका गूढ़ार्थ प्रकट करता हूँ। सब ब्रह्मात्माओंके एकत्र हो जाने पर सबको अपना घर परमधाम तथा पूर्णब्रह्म परमात्माके दर्शन करवाने हैं।

जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया ए ।

ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे ॥ ५

ऐसा नहीं समझना कि इस खेलकी रचना किसी विशेष कारणके बिना ही हुई है। साथ ही कुरानके इन गूढ़ रहस्योंको भी दिल देकर समझ लो।

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत ।

हक भेजें अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत ॥ ६

अक्षर (नूर) के पार अक्षरातीत परमधामसे सन्देशवाहक बनकर रसूल आए हैं, इस वास्तविकताको समझो। परब्रह्म परमात्माने स्वयं अपना सन्देश भेजा है, परन्तु संसारके लोग तो मोहके अन्धकारमें ही पड़े हुए हैं।

दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान ।

तो रसूल आया किन वास्ते, हक पैं ले फुरमान ॥ ७

दूसरा तो कोई है ही नहीं और यह जगत स्वप्नके समान मिथ्या है, तो परब्रह्मसे आदेश (सन्देश) लेकर रसूल मुहम्मद किसके लिए जगतमें आए ? (अतः इस पर विचार करके देखो)।

ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह ।

देखो आंखें दिल खोलके, कोई बडा मतलब है एह ॥ ८

परमात्माके नूरी फरिश्ते मात्र स्वप्नके जीवोंके लिए तो नहीं आते। अपनी आन्तरिक दृष्टि (हृदयकी आँखें) खोलकर देखो कि रसूलको संसारमें भेजनेका कोई विशेष कारण है।

दुनियां कहे ए हम पर, ल्याया है किताब ।

ऐसे रसूल को तो कहें, जो बोलत मिने ख्वाब ॥ ९

संसारके लोग कहते हैं कि रसूल मुहम्मद हमारे लिए ही कुरान लेकर आए हैं. ऐसे नूरी रसूलको 'ये हमारे लिए ही आए हैं', ये लोग ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि वे स्वयं स्वप्नावस्था (अज्ञानावस्था) में ही बोल रहे हैं.

क्यों मुख ऐसा बोलहीं, जो समझे होए कागद ।

ना सुध रसूल ना फुरमान, तो यों कहें सबद ॥ १०

यदि वे कुरानके वास्तविक रहस्यको जानते, तो रसूल साहेबके विषयमें इतनी ही सीमित बात नहीं करते. उन्हें रसूल साहेब तथा कुरानकी सुधि ही नहीं है, तभी तो वे इस प्रकारकी बातें करते हैं.

आसमान जिमी के लोक को, अरस बका नहीं खबर ।

तो तिनका कासद महंमद, होए अरस से आवे क्यों कर ॥ ११

इस मायाके ब्रह्माण्डमें धरती और आकाशके बीचमें रहनेवाले चौदह लोकोंके प्राणियोंमेंसे किसीको भी अखण्ड परमधामकी सुधि नहीं है. अतः ऐसे लोगोंके लिए परब्रह्म परमात्माका सन्देशवाहक (कासिद) बनकर रसूल मुहम्मदको यहाँ आने की क्या आवश्यकता थी ?

बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें इबलीस आदम नसल ।

तो कहे महंमद को कासद, जो लानत ऊपर अकल ॥ १२

यह जगत तो विवेकहीन है. यहाँके मनुष्य भी बहिश्तसे निष्कासित आदमकी सन्तान हैं, इनके मन पर इबलीसका ही राज्य है. इसलिए ये लोग मुहम्मदको अपना ही सन्देशवाहक (कासिद) मानते हैं, क्योंकि उनकी बुद्धि पहलेसे ही श्रापित है.

सो घर कहा दुनी का, जो फुरमाने कहा मुरदार ।

तो आदम काढया भिस्त से, ए दादा आदमियों सिरदार ॥ १३

संसारके लोग उसीको अपना घर मानते हैं, जिसे कुरानने तुच्छ (मुरदार)

कहा है. तुच्छ वस्तुको अपनानेके कारण ही तो आदमको बहिश्तसे दूर किया है, अब यही आदम मनुष्योंका श्रेष्ठ पूर्वज (सरदार) बनकर बैठा है.

**मोर साँप जिद ले निकस्या, और भिस्त सेती सैतान ।**

**हिरस हवा साथ आदम, लोक ताए कहें मुसलमान ॥ १४**

कुरानमें ऐसा उल्लेख है कि शैतान (इबलीस) ने जिदमें आकर बहिश्तके द्वारपाल मोर और साँपको बाहर निकाल दिया. शैतानके भुलावेमें आकर बहिश्त (भिस्त) से निकाला गया आदम भी वासना (हिर्स) और माया (हवा) के वशीभूत है. उसीकी सन्तानको संसारके लोग मुसलमान कहने लगे.

[कुरानमें एक कथानक है- अजाजील (नूरी फरिश्ता)ने खुदा (परब्रह्म) को नमन (सेजदा) करनेमें दो अंगुल भूमि भी नहीं छोड़ी थी. एक समय खुदाने अजाजील द्वारा आदमका बुत बनवाया और अपनी रूह डालकर उसको नमन (सेजदा) करनेके लिए कहा. परन्तु अजाजीलने स्वयंको आदमसे श्रेष्ठ मानते हुए नमन करनेसे मना कर दिया. तब अजाजीलको खुदाकी लानत लगी और वह बहिश्तसे निकाल दिया गया. फिर वह मायावी सृष्टिका सरदार बन गया. तब आदमको बहिश्त मिली. आदम अपनी पत्नी हवाके साथ वहाँ रहने लगा. खुदाने इन्हें एक विशेष फल खानेसे वर्जित किया. साँप और मोर दोनो उसकी रक्षा हेतु द्वार पर पहरा देने लगे. अजाजीलको ईर्ष्या हुई और उसने आदमको बहिश्तसे निकालनेका विचार किया. एक दिन उसीका पुत्र इबलीस बहिश्तमें गया. उसने साँप और मोरको दूध पिलाया तथा चकमाँ देकर अन्दर प्रवेशकर 'हवा' के पास पहुँचा. इबलीसने 'हवा' को फुसलाकर आदमकी अनुपस्थितिमें उसे वर्जित फल खिला दिया. खुदाके आदेशका पालन न करनेपर आदमको भी बहिश्तसे निकलकर इस सृष्टिमें आना पड़ा. यहाँ पर मनुष्य उनकी सन्तान कहलाए और मनुष्योंके दिलपर इबलीस बैठकर सत्य मार्गका अवरोध करने लगा. इसलिए मनुष्य मायाके भ्रममें उलझने लगे. अज्ञानतावश लोग ऐसे भ्रमित मनुष्योंको भी मुसलमानके नामसे पुकारने लगते हैं.]

इन आदम की औलाद, मारी अजाजीलें लानत ले ।

तिन सब दिलों पातसाह, हुआ अजाजील ए ॥ १५

इस आदमकी सन्तान (स्वप्नके जीवों - मानवों) को अजाजील फरिश्ता पथभ्रष्ट करता है क्योंकि उसे परमात्माकी आज्ञा न माननेका दोष (लानत) लगा हुआ है। इसलिए संसारके लोगोंके दिलों पर यह अजाजील राजा (बादशाह) बनकर बैठा है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जो कहे भाई महंमद के ।

महंमद आया इनों पर, खेल किया इनों वास्ते ॥ १६

ब्रह्मात्माएँ तो परमधाम (नूरबिलन्द) से अवतरित हुई हैं। रसूलने उन्हें अपना भाई कहा है। रसूल मुहम्मद इनके लिए ही आए हैं। इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए इस संसारकी रचना हुई है।

महंमद कहे मैं उनों से, ओ मुझ से जानो तुम ।

मुरदार करी जिनों दुनियां, करे बंदगी हजूर कदम ॥ १७

मुहम्मद साहबने कहा कि मैं उन्ही ब्रह्मात्माओंके समूहका हूँ और वे सभी मेरे ही अंग हैं। उन्हीं ब्रह्मात्माओंने संसारको मृतक समान (तुच्छ) माना है। वे सदा ही परब्रह्मकी सेवामें तत्पर रहती हैं।

महंमद आया वास्ते मोमिन, ले हक पैं फुरमान ।

सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दर्द सब जहान ॥ १८

रसूल मुहम्मद ब्रह्मात्माओंके लिए ही परमात्माका आदेश लेकर आए हैं। ये ही ब्रह्मात्माएँ समस्त संसारको एक (विश्व) धर्ममें सम्मिलित कर सबको अखण्ड मुक्ति स्थल (बहिश्त) का सुख दिलाएंगी।

ए जो खेल कबूतर, कहे अरस से आया रसूल ।

सो कहे हमारा रसूल, दोजखमें जले इन भूल ॥ १९

जादूगरके खेलके कबूतरके समान स्वप्नके जीव कहते हैं कि रसूल हमारे हैं और हमारे लिए सन्देश लेकर परमधामसे आए हैं। ब्रह्मात्माओंके सन्देशको अपना कहनेकी भूल (अपराध)के कारण ही वे नरकमें जलेंगे।

पढे कलाम अल्लाह को, ले माएने अपनी अकल ।

जो कही मुसाफें मुरदार, ताए छोडे ना दुनी एक पल ॥ २०

ऐसे लोग कुरान पढ़कर अपनी बुद्धिके अनुसार उसका अर्थ करते हैं। कुरानके अन्तर्गत मुहम्मद साहेबने जिन सांसारिक वस्तुओंको तुच्छ (मृतक तुल्य) माना है, मायाके जीव एक पलके लिए भी उन वस्तुओंका प्रयोग करना नहीं छोड़ते हैं।

किसा लिख्या अजाजील का, किया सेजदा सब जिमी पर ।

तिन मारी राह सब दुनी की, इन ए फल पाया क्यों कर ॥ २१

कुरानमें यह कथानक है कि अजाजीलने समस्त पृथ्वीपर परमात्माको नमन किया। अब वही फरिश्ता सब जीवोंको सत्यमार्गपर चलनेसे रोक रहा है। इतनी बड़ी उपासना (बन्दगी) का यह फल (अभिशाप) क्यों मिला ? (इस पर विचार करना होगा)।

कोई केहेसी ए फल गया गुमाने, पर सो दोजख जले गुमान ।

फल एता बडा बंदगी का, खोवे नहीं मेहेरबान ॥ २२

कोई कहेंगे कि अभिमानके कारण उसकी उपासना (बन्दगी) निष्फल हो गई है। यदि ऐसा होता, तो उसे नरक (दोजख) की आगमें जलना चाहिए, परन्तु परब्रह्म परमात्मा उसे इतनी बड़ी बन्दगीका ऐसा फल क्यों देते ?

दो अंगुल जिमी छोडी नहीं, इन सख्से सेजदे बिगर ।

एती एके बंदगी क्यों होवहीं, तुम क्यों ना देखो दिल धर ॥ २३

इस व्यक्तिने नमन किए बिना दो अंगुलीभर धरती भी नहीं छोड़ी। अकेले व्यक्तिसे इतनी बड़ी बन्दगी कैसे हो सकती है, तुम इस बातका अपने हृदयमें भली प्रकार विचार क्यों नहीं करते ?

ए बंदगी ना होए कै करोरो, ऐसी हक पर करी बेसुमार ।

तिन बंदगी बदला ए पाया, राह देत सबों की मार ॥ २४

करोड़ों मानवोंके द्वारा एक साथ मिलकर भी इतनी अधिक उपासना (बन्दगी) नहीं हो सकती। ऐसी बन्दगी अजाजीलने परमात्माके नाम पर की।

उस बन्दगीका उसे ऐसा फल मिला कि वह सबको पथभ्रष्ट कर परमात्मासे विमुख करता है.

ऐसी बंदगी खोए के, हक क्यों दे फल नुकसान ।

ए माएने जाहेर तो कहे, जो अजाजीलसों नहीं पेहेचान ॥ २५

परब्रह्म परमात्मा ऐसी वन्दनाके फलस्वरूप उसको इतनी बड़ी हानि क्यों पहुँचाएँगे ? इस कथानकका मात्र शब्दार्थ इसलिए प्रकट करते हैं कि लोग अजाजीलको पूर्णतः नहीं पहचानते हैं.

ना पेहेचाने आपको, ना पेहेचाने हादी हक ।

ना देखें अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक ॥ २६

इस प्रकार बाह्य अर्थ प्रकट करने वालोंको न तो अपनी आत्माकी पहचान होती है और न ही श्यामाजी तथा श्रीराजजीकी ही पहचान होती है. वे अपने दिल पर बैठे हुए अजाजील (शैतान) को भी नहीं पहचान रहे हैं. यही भूल उन्हें नरककी आगमें डाल देगी.

अजाजील जीव दुनी का, ए जो कहा माहें सब ।

किया भूल पथर पर सेजदा, कहे हम किया ऊपर रब ॥ २७

संसारके सभी प्राणियोंका जीव अजाजील कहलाता है. अपनी अज्ञानताके कारण संसारके लोग पत्थरके समक्ष नमन करते हैं और कहते हैं कि हमने परब्रह्मको नमन कर लिया है.

बाहेर देखावें इबलीस, वह कहा बैठा दिल पर ।

कहे दोजख जलसी इबलीस, आप पाक होत यों कर ॥ २८

लोग इबलीस(शैतान) को बाहर ढूँढ़ते हैं, परन्तु वह तो सबके दिल पर बैठा हुआ है. इबलीस तो दोजखकी आगमें जलेगा, ऐसा कहकर लोग स्वयंको पवित्र मानते हैं.

अब सुध होसी सबन को, खुली बातून हकीकत ।

इमाम रुहों पेँ लुदनी, जित अरस हक मारफत ॥ २९

अब कुरानके रहस्य स्पष्ट हो जानेसे सभीको पहचान हो जाएगी. सद्गुरु



श्रीदेवचन्द्रजी (इमाम) ब्रह्मात्माओंके लिए परमधामसे तारतम ज्ञान लेकर अवतरित हुए हैं, जिससे परमधाम तथा पूर्णब्रह्मकी पहचान होगी।

**दिल अरस न होए बिना मोमन, जो पढे चौदे किताब ।**

**सब जिमिएं करें सेजदा, दिल पावें ना अरस खिताब ॥ ३०**

ब्रह्मात्माओंके बिना अन्य किसीका भी दिल परमधाम नहीं हो सकता चाहे चौदहों प्रकारकी विद्या क्यों न जान ले। सारी धरती पर ही वह नमन क्यों न कर ले, फिर भी उसका दिल परमधाम नहीं कहा जा सकता।

**हक हादी ना चीन्ह सके, ना कछू चीन्हे मोमिन ।**

**भूले मोमिन का सेजदा, तो हुई दस विध दोजख तिन ॥ ३१**

रसूल मुहम्मदके अनुयायी कहलाकर भी जो परब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी-सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (हादी) तथा ब्रह्मात्माओं(मोमिनो) को नहीं पहचानते एवं ब्रह्मात्माओंको वन्दन करना भी भूल जाते हैं, ऐसे लोगोंको दस प्रकारके नरक (दोजख) प्राप्त होंगे।

**फैल हाल ना देखें अपने, कहे अजाजीलें फेरया फुरमान ।**

**अपनी दोजख देवें औरों को, पर हक पैं सब पेहेचान ॥ ३२**

ऐसे लोग अपने आचरण तथा मनोभावको नहीं देखते और कहते हैं कि अजाजीलने ही ब्राह्मी आदेशका पालन नहीं किया है। इस प्रकार अपने लिए मिला हुआ नरक (दोजख) दूसरोंके सिर पर डालना चाहते हैं, परन्तु परमात्मा तो सब कुछ जानते (पहचानते) हैं।

**ज्यों फरेब देवें दुनी को, त्यों हक को देने चाहे ।**

**पर हक की आग जो दोजख, फैल माफक चुन ले ताए ॥ ३३**

ये लोग जिस प्रकार दुनियाँको ठग लेते हैं, उसी प्रकार परमात्माको भी धोखा(फरेब) देना चाहते हैं। किन्तु यह सब परमात्माके हाथमें है, वे सबको उनके कर्मोंके अनुसार चुन कर नरक (दोजख) की अग्नि देंगे।

**कहें हक को सूरत नहीं, तो फुरमान भेज्या किन ।**

**दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन ॥ ३४**

ऐसे लोग कुरान पढ़ कर भी कहते हैं कि परमात्माका स्वरूप नहीं है। (यदि

ऐसा मान लें) तो फिर यह कुरान (फुरमान) किसने भेजा है ? संसारके लोगोंको यह भी सुधि नहीं कि यह किसके लिए भेजा गया है और इसका रहस्य कौन स्पष्ट करेगा ?

**एती सुध ना हमको, खोलसी कौन हकीकत ।**

**कौन करसी कयामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत ॥ ३५**

वे कहते हैं, हमें यह भी ज्ञात नहीं कि कुरानका यथार्थ कौन स्पष्ट करेगा, कयामतका समय कौन प्रकट करेगा तथा परब्रह्म परमात्माकी पहचानकी बात कौन करेगा ?

**माणे न पावें सबद के, बडे सबद रसूल ।**

**पर दम ना समझें ख्वाब के, जाको जुलमत मूल ॥ ३६**

ये लोग कुरानके वचनोंका रहस्य नहीं समझते. रसूलके मुखसे निकले हुए ये शब्द महान हैं. क्योंकि जिनकी उत्पत्ति ही मोह (अन्धकार) से हुई है, ऐसे स्वप्नके जीव इन रहस्योंको समझें भी कैसे ?

**ए माएने सो लेवे सबद के, जो रूह अरस की होए ।**

**एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए ॥ ३७**

इन रहस्योंका अर्थ तो वे ही समझ सकते हैं, जो परमधाम (अर्श) की आत्माएँ हैं. केवल रसूल ही अक्षरब्रह्मसे भी परे अक्षरातीत घरसे आए हैं, उनके अतिरिक्त जगतके सारे जीव स्वप्नके ही हैं.

**क्यों कर आवे झूठ पर, जो अरस बका का होए ।**

**ए गुझ माएने मोमिन बिना, क्यों लेवे हवा दम सोए ॥ ३८**

नश्वर (क्षर) जगतके जीवोंके लिए अखण्ड धामका दूत (फरिश्ता) क्यों आता ? इस गूढ़ रहस्यको ब्रह्मात्माओंके बिना मायासे उत्पन्न जीव कैसे समझ (ग्रहण कर) सकते हैं ?

**दुनियां कही सब ख्वाब की, सो नहीं झूठ सबद ।**

**तबक चौदे हद के, हक बका पार बेहद ॥ ३९**

समस्त संसारके जीव स्वप्नके कहे गए हैं, यह कोई असत्य बात नहीं है.

इतना ही नहीं चौदहलोक कालकी सीमामें होनेसे नश्वर हैं और परब्रह्म परमात्मा बेहदसे भी परे हैं।

**चौदे तबक कहे फरेब के, काहूँ ना किसी की गम ।**

**ना गम रसूल ना फुरमान, कहाँ हक कौन हम ॥ ४०**

ये चौदह लोक तो मायासे उत्पन्न कहे गए हैं किन्तु यहाँ तक भी कोई नहीं पहुँच पाता। इन जीवोंको तो रसूल मुहम्मद तथा उनके सन्देशका भी ज्ञान नहीं है। वे क्या समझ पाएँगे कि परब्रह्म परमात्मा कहाँ रहते हैं और हम कौन हैं ?

**पैगंमर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल ।**

**संग मेरे सो चले, जो चीन्हें सबद घर मूल ॥ ४१**

पैगम्बरने तो बार-बार कहा, मैं परमात्मा (अल्लाह) का सन्देश वाहक (रसूल) हूँ। मेरे साथ वही परमधाम चल सकता है, जो मेरे वचनोंका गूढ़ रहस्य समझ लेगा और परमधामकी पहचान कर लेगा।

**मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम ।**

**इनोँ को मेरी खातर, देसी भिस्त खसम ॥ ४२**

रसूलने यह भी कहा कि मेरा वतन नूर-अक्षरधामसे परे अक्षरातीतका धाम है और विश्वके सारे जीव स्वप्नके हैं। मेरी अनुशंसा (सिफारिश) पर ही परमात्मा इनको अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों) का सुख देंगे।

**ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात ।**

**ए दिल के फूटे यों तो कहे, जो पाई ना नबी की बात ॥ ४३**

ये सारे मायावी जीव चौपड़के गोठों (मोहरों) की भाँति झूठे हैं। इनके लिए दिव्यात्मा (नूरजात) कैसे आएँगे ? दिलसे अन्धे ये जीव इसलिए (रसूल मुहम्मद हमारे लिए आए हैं) ऐसा कहते हैं क्योंकि इन्होंने पैगम्बरकी बातके मर्मको नहीं जाना है।

**नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए ।**

**पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थें न आवे कोए ॥ ४४**

दिव्यआत्मा (देव-नूरी फिरस्ता) को तो उनके लिए ही भेजा जा सकता है

जो आत्माएँ स्वयं दिव्य (नूरी) हों, नश्वर जगतके झूठे जीवोंके लिए अक्षरातीत धामसे कोई नहीं आता.

ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अंतर ।

पर जिन आंख कान ना अकल, सो ए समझे क्यों कर ॥ ४५

स्वप्नके जीवोंके लिए ऐसी दिव्य आत्मा नहीं आ सकती, जिसका अद्वैत सम्बन्ध परमात्माके साथ है. परन्तु जिनमें हृदयकी आँखें, कान तथा विवेक बुद्धि नहीं है, वे इस रहस्यको कैसे समझेंगे ?

ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब ।

पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब ॥ ४६

रसूल हमारे लिए आए हैं, ऐसा कहकर जब ये लोग रसूलके महत्त्वको घटा (हल्का कर) देते हैं, तब ऐसा सुनकर मुझे जोश आ जाता है. किन्तु मैं किसको दोष दूँ, यह सारा संसार ही तो स्वप्नका है.

और जो टेढा कहें रसूल को, मैं तिनका निकालूँ बल ।

पर गुसा करूँ मैं किन पर, आगे तो सब मृगजल ॥ ४७

अन्यथा जो लोग ऐसी विपरीत बात कहकर रसूलका महत्त्व कम करते हैं, मैं उन लोगोंकी कुटिलता निकाल देता, किन्तु मैं किस पर गुस्सा करूँ ? ये सब तो मृगजलके समान अस्तित्वहीन हैं.

ए अपना नूरी तहां भेजिए, जो होवे अरस मोमन ।

सो ए रूहें हम मोमिन, हक मासूक के तन ॥ ४८

परमात्मा अपने दिव्य दूतको वहीं भेजते हैं, जहाँ परमधामकी आत्माएँ होती हैं. वस्तुतः हम ही वे ब्रह्मात्माएँ हैं, जो परब्रह्म परमात्माकी अङ्गना कहलाती हैं.

सो भी इत जाहेर कह्या, पैगंमर पुकार ।

रूहें अरस से उतरी, रस इसक लिए सिरदार ॥ ४९

यह बात पैगम्बरने भी स्पष्ट कही है कि ब्रह्मात्माएँ परमधामसे परब्रह्मके प्रेम रसको लेकर आई हैं, इसलिए वे श्रेष्ठ (सरदार) कहलाती हैं.

ए माएने सो समझहीं, जो नूर जमाल से होए ।

ए वतनी रूहें मोमिन, और ख्वाबी दम सब कोए ॥ ५०

कुरानके इन रहस्योंको वे ही समझ सकते हैं, जो अक्षरातीत (नूरजमाल) से सम्बन्धित हैं। ये ब्रह्मात्माएँ परमधामकी हैं, उनके अतिरिक्त सब जीव स्वप्न जगतके हैं।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जाको ए तो बडो मरातब ।

करसी पाक सब जिमी को, ताकी सरभर न होए किन कब ॥ ५१

ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अवतरित हुई हैं। उनका यही सबसे बड़ा पद (मरातिब) है कि वे समस्त जगतको पवित्र कर देंगी। उनके समान कभी भी कोई नहीं हो सकता।

दुनी दिल कहा सैतान, दिल मोमिन अरस हक ।

सो सरभर क्यों इनकी करे, जाए आगे पीछे दोजक ॥ ५२

संसारके जीवोंके दिल पर शैतान (इबलीस) बैठा हुआ है और ब्रह्मात्माओंका हृदय परब्रह्म परमात्माका सिंहासन है। इसलिए ये जीव ब्रह्माङ्गनाओंकी समानता कैसे कर सकते हैं, जिनके आगे पीछे (जन्मसे पूर्व और मृत्युके बाद) नरक ही होता है।

बडी बडाई मोमिनो, जाके बडे अंकूर ।

तो इन पर रसूल भेजिया, अपना अंगी नूर ॥ ५३

शास्त्रोंमें ब्रह्मात्माओंकी बड़ी महिमा गाई गई है, क्योंकि उनका सम्बन्ध (अङ्कुर) ही परमधामसे है। इसलिए ही परमात्माने अपने नूरी अङ्गको रसूल (सन्देशवाहक) बनाकर ब्रह्मात्माओंके लिए भेजा।

सो आए अब रूह मोमिन, जाको अरस वतन ।

ए फुरमान आया इनका, क्यों खुले माएने या बिन ॥ ५४

अब वे आत्माएँ इस संसारमें अवतरित हुई हैं, जिनका घर परमधाम है। कुरानका यह सन्देश भी इन्हींके लिए है। इसलिए ब्रह्मात्माओंके बिना कुरानके रहस्य कैसे स्पष्ट हो सकते हैं ?

खेल किया जिन खातर, सो आइयां देखन अब ।

ए खेल अरस रूहें देखहीं, और खेल है सब ॥ ५५

जिनके लिए इस खेलकी रचना हुई है, वे ही ब्रह्मात्माएँ अब उसे देखने के लिए अवतरित हुई हैं। इस खेलको देखनेवाली तो केवल ब्रह्मात्माएँ ही हैं, शेष सब तो मात्र खेलके पात्र हैं।

कोई केहेसी खेल कदीम का, सो अब आइयां क्यों कर ।

ए माएने गुझ वतन के, सो भी सब देऊं खबर ॥ ५६

कुछ लोग यह भी कहेंगे कि यह सृष्टि तो अनादि कालसे चली आ रही है। फिर ब्रह्मात्माएँ इस समय ही खेल देखने क्यों आईं ? इसमें परमधामका गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है, मैं तुम्हें इसकी भी जानकारी देता हूँ।

खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमैं समझाए ।

ए वतन के पाव पल में, कै पैदा फना हो जाए ॥ ५७

इस खेलकी रचनाका तो एक क्षण भी अभी नहीं हुआ है, इसका रहस्य भी मैं तुम्हें समझा कर कहता हूँ। परमधामके समयानुसार तो एक पलके चतुर्थांश मात्रमें असंख्य ब्रह्माण्डोंकी उत्पत्ति और लय हो जाता है।

करी बाजी चौदे तबकों, रूहों देखलावने खसम ।

सो रूहें तब ना हुती, पहले तो ना हुआ हुकम ॥ ५८

परब्रह्म परमात्माने ब्रह्मात्माओंको दुःखरूपी खेल दिखानेके लिए चौदह लोकोंके इस ब्रह्माण्डकी रचना की। उस समय (रसूलके समयमें) ब्रह्मात्माएँ आईं ही नहीं थीं, इसलिए कुरानके गूढ़ार्थ स्पष्ट करनेका आदेश ही रसूलको नहीं दिया।

कोई केहेसी रसूलें ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान ।

सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों पैं पेहेचान ॥ ५९

कोई यह कहे कि ठीक है, परमात्माके आदेशके बिना रसूलने कुरानके गुह्य अर्थ स्पष्ट नहीं किए, किन्तु नबी (रसूल) तो स्वयं हुक्मके ही स्वरूप हैं। (फिर उनको अन्य आदेश विशेषकी आवश्यकता ही क्यों पड़ेगी ?)

वस्तुतः रसूल हुक्मके स्वरूप हैं, यह जानकारी केवल हम ब्रह्मात्माओंको ही है।

जिन कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान ।

आसिक ए मासूक कहा, सो बिन देखे मिले क्यों तान ॥ ६०

कोई ऐसा ना कहे कि रसूल और परमात्मा (खुदा) के बीच परदा रहा। स्वयं परमात्माने इस खेलमें रसूलको माशूक (प्रियतमा) बनाया और वे स्वयं उनके आशिक (चाहक) बने। कुरानके बातिन अर्थ देखे बिना आशिक व माशूक (प्रेमी वे प्रेमिका) के अन्तरङ्ग सम्बन्धको कैसे जाना जा सकता है ?

इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब ।

तो इत आखर इमाम, काहे को आवत अब ॥ ६१

यदि रसूल उसी समय कुरानके गूढार्थ स्पष्ट कर देते, तो फिर अब आखिर (कयामत) के समयमें तारतम ज्ञान लेकर सद्गुरु (इमाम) किस लिए आते ?

जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रहेत क्यों कर ।

जो अरस अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखर ॥ ६२

यदि रसूल उसी समय कुरानके रहस्य खोल देते, तो यह संसार कैसे बना रहता अर्थात् अखण्ड क्यों नहीं हो गया होता ? यदि वे परमधामकी लीला प्रकट कर देते, तो तभी आत्म-जागृतिका अन्तिम समय हो गया होता।

ताथें गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए ।

तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अरस जाहेर क्यों होए ॥ ६३

उस समय नबी (रसूल) इन रहस्योंको गुप्त नहीं भी रखते (प्रकट कर देते) किन्तु उस समय उन रहस्योंको समझनेवाला भी कोई नहीं था। उस समय परमधामकी आत्माएँ नहीं थीं। इसलिए परमधामके गूढ़ रहस्य कैसे प्रकट होते ?

एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग ।

एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग ॥ ६४

कुरानमें रसूलने यह भी कहा कि इस समय मेरे साथ ब्रह्मात्माएँ नहीं हैं।

इस समय मेरी बातको माननेवाले एक अली हैं, उसके अतिरिक्त कोई भी ब्रह्मात्मा मेरे साथ नहीं है।

तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आवेंगे आखर ।

महंमद मेहेदी रूह अल्ला, इन मोमिनों की खातर ॥ ६५

इसलिए वे यह निश्चित कर वापस चले गए कि हम अन्तिम समयमें पुनः आएँगे। मुहम्मद महदी तथा रूहअल्ला इन ब्रह्मात्माओंके लिए आएँगे (तब मैं भी उनके साथ रहूँगा)।

तो ए माएने ना खुले, रसूल मुख फुरमान ।

चौदे तबक की दुनियां, सो इत हुई हैरान ॥ ६६

इसलिए उस समय कुरानके गूढ़ार्थ रसूल मुहम्मदके मुखसे स्पष्ट नहीं हुए। यह देखकर चौदह लोकोंका समस्त संसार चकित रह गया।

नूर पार अरस मोमिन, हुते ना तिन बखत ।

तो महंमद मेहेदी मोमिन, सो आए अरस से आखरत ॥ ६७

अक्षर (नूर) के पार अक्षरातीत धामकी आत्माएँ उस समय अवतरित नहीं हुई थीं। इसलिए मुहम्मद महदी (श्रीदेवचन्द्रजी) और ब्रह्मात्माएँ अन्तिम (आत्म-जागृतिके) समयमें परमधामसे अवतरित हुईं।

बात बड़ी मोमिन की, जिनके अरस में तन ।

ए रूहें दरगाह की, जिनको अरस वतन ॥ ६८

ब्रह्मात्माओंकी महिमा अपार है, उनके पर-आत्मा स्वरूप परमधाममें विद्यमान हैं। ये आत्माएँ उसी घरकी हैं, जिसको परमधाम कहते हैं।

अरस खावंद एक मासूक, दूसरा नहीं कोए ।

और खेल सब नूरियों किया, यामें भी विध दोए ॥ ६९

परमधामके स्वामी तो एक ही प्रियतम परमात्मा (श्री राजजी) हैं। वहाँ पर अन्य कोई नहीं है। यह खेल तो अक्षरब्रह्मकी शक्तियों-नूर फरिश्तों (त्रिदेवों) से बना हुआ है। इनकी भी दो प्रकारकी आत्माएँ हैं।



यामें अजाजील रूह असलू, दूजी रूह कुफरान ।

तीसरा दम देखन का, ना कछू ए हैवान ॥ ७०

इन दोनोंमें भी एक विशुद्ध आत्मा भगवान विष्णु (अजाजील फरिश्ता) है। दूसरे सभी जीव स्वप्नकी सृष्टि है। इनके अतिरिक्त तीसरे तो मात्र खेलेके लिए बनाए गए पाशविक (नास्तिक) वृत्ति वाले नहींके समान माने जाते हैं।

हैवान ना कछू तो कहे, जो उनको ना कछू बुध ।

जो जाने ना वेद कतेब को, सो उसी दाखिल बेसुध ॥ ७१

नास्तिकोंको पाशविक वृत्ति वाले इसलिए कहा गया है कि उनमें लाभ हानिको सोचनेकी बुद्धि ही नहीं है। जिन व्यक्तियोंको वेद या कतेब ग्रन्थोंके प्रति आस्था नहीं है, वे विवेकहीन (पशुओं) की श्रेणीमें ही गिने जाते हैं।

जो रूह अरस अजीम की, सो मिले नहीं कुफरान ।

ए बेवरा इमाम बिना, करे सो कौन बयान ॥ ७२

जो परमधामकी आत्माएँ हैं, वे स्वप्नके जीवोंके समान नहीं हो सकतीं। यह विवरण सद्गुरु (इमाम) के बिना कोई भी नहीं बता सकता।

सांचे सुख मोमिन के, अजाजील और सुख ।

पर जो सुख मोमिन के, सो कहे न जाए या मुख ॥ ७३

ब्रह्मात्माओंका सुख अखण्ड है। अजाजीलका सुख वैकुण्ठका होनेसे इससे भिन्न (क्षणिक) है। किन्तु ब्रह्मात्माओंको जो आनन्द प्राप्त हुआ है, उसकी महिमा इस नश्वर जिह्वासे कही नहीं जा सकती।

अजाजील और काफर, तिनों भी सुख नेहेचल ।

बरकत इन मोमिन की, साफ किए सब दिल ॥ ७४

अजाजील स्वयं तथा उनसे उत्पन्न जीवोंको भी अखण्ड सुख प्राप्त होगा। यह सारा प्रताप ब्रह्मात्माओंका है, जिन्होंने इन सबके हृदय पवित्र कर दिए हैं।

करके साफ सबन को, भिस्त देसी सबन ।

पर रूहों सुख हमेसगी, जहां मौला महंमद मोमन ॥ ७५

ये आत्माएँ सबके हृदयको पवित्र बनाकर उनको अखण्ड मुक्ति स्थल

(बहिस्त) का सुख देंगी. परन्तु ब्रह्मात्माओंका सुख तो अखण्ड परमधामका ही है, जहाँ स्वयं श्रीराजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं.

**नूर सरूपें रसूल, हक आगे खडा हुकम ।**

**मूल मेला महंमद रूहों का, सब बैठियां तले कदम ॥ ७६**

रसूल मुहम्मद अपना दिव्य (नूर) स्वरूप धारण कर आज्ञा प्राप्त करनेके लिए परब्रह्मके सन्मुख खड़े हैं. वहाँ पर मूलमिलावेमें श्यामाजी तथा उनकी अङ्ग स्वरूपा आत्माएँ श्रीराजजीके चरणोंमें एकसाथ मिलकर बैठी हुई हैं.

**नूर के एक पल में, इत इंड चले कै जाए ।**

**ए भी मोमिनों खेल देखाए के, देसी सबे उडाए ॥ ७७**

अक्षरब्रह्म (नूर) के एक पलमें ऐसे असंख्य ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं. ब्रह्मात्माओंको खेल दिखाकर वे इस जगतको भी उड़ा (मिटा) देंगे.

**रूहें फिरस्ते वास्ते, खेल किया चौदे तबक ।**

**दुनियां सक लिए खेलत, किन तरफ न पाई बका हक ॥ ७८**

ब्रह्मात्माओं और ईश्वरीय सृष्टि (फरिश्तों) को दिखानेके लिए चौदह लोकोंके इस ब्रह्माण्डकी रचना हुई है. संसारके लोग शङ्काएँ लेकर ही यह खेल खेल रहे हैं (कि यह सृष्टि क्यों बनी है), इसलिए उनमेंसे किसीको भी परमात्माकी सुधि नहीं हुई.

**सो सक भांनी सब दुनी की, महमंद मेहेदी ईसा आए ।**

**अरस कायम सूर हुआ रोसन, दिया काफरों कुफर उडाए ॥ ७९**

श्रीश्यामाजीने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी रूपमें मेरे हृदयमें आकर इन सब शङ्काओंका निवारण किया. उनके द्वारा तारतम ज्ञान (अखण्ड परमधामके अद्वैत ज्ञानके सूर्यके समान) प्रकाशित हुआ, जिसने अधर्मी (नास्तिक) लोगोंके हृदयके अन्धकारको उड़ा (मिटा) दिया.

**काफर रूह भी पाक होएसी, अंदर आग जलाए ।**

**मोमिनों मुसलिम खातर, भिस्त जो देसी ताए ॥ ८०**

नास्तिक जीवोंको भी उनके हृदयमें (प्रायश्चित्तकी) आग जलाकर पवित्र

किया जाएगा. ब्रह्मात्माओं तथा ईश्वरीय आत्माओंके यहाँ आनेके कारण इन जीवोंको भी अखण्ड मुक्ति स्थल (बहिश्तें) प्राप्त होंगे.

**बडे नसीब रूहें अरस की, जिन जावें खेलमें भूल ।**

**मोमिन वास्ते अरस से, आए इमाम ईसा रसूल ॥ ८१**

परमधामकी आत्माएँ बड़ी भाग्यशालिनी हैं. वे इस खेलमें भूल न जाएँ, इसके लिए सद्गुरु (इमाम महदी) के रूपमें ईसा रूह अल्ला (श्यामाजी स्वरूप श्री देवचन्द्रजी) परमधामसे तारतम ज्ञान लेकर सन्देश वाहक (रसूल) बन कर आए हैं.

**ए सब हुआ मोमिनोँ खातर, पेहेले भेज्या कागद ।**

**ए तमासा देखाए के, उडाए देसी ज्यों गरद ॥ ८२**

यह सम्पूर्ण खेल ब्रह्मात्माओंके लिए ही रचा गया है. इसलिए पहलेसे ही रसूल मुहम्मदके द्वारा सन्देश (कुरान) भेजा गया. अब इन आत्माओंको यह खेल दिखाकर, इसे धूलकी भाँति उड़ा दिया जाएगा.

**जैसा खेल अव्वल का, ए जो रूहों देख्या ब्रह्मांड ।**

**बरकत इन मोमिन की, सब दुनियां करी अखंड ॥ ८३**

पहले कालमाया तथा योगमायाके ब्रह्माण्डमें ब्रह्मात्माओंने व्रज तथा रासका जैसा खेल देखा था, उसको अक्षर ब्रह्मने अखण्ड कर लिया. इन ब्रह्मात्माओंमें ऐसी क्षमता है कि उनकी कृपासे संसारके समस्त प्राणी अखण्ड सुख प्राप्त करेंगे.

**इन जुबां मैं क्यों कहूं, मोमिन अरस अंकूर ।**

**आया इमाम सबन का, किया जो परदा दूर ॥ ८४**

परमधामकी अद्भुत आत्माओंकी महिमाका वर्णन मैं इस झूठी जिह्वासे क्या करूँ ? अब तो सबके सद्गुरु (इमाम) निजानन्द स्वामी प्रकट हुए और उन्होंने माया और ब्रह्मके बीचका परदा दूर कर दिया.

**ए जो नसीब मोमिन का, सो लिख्या मिने फुरमान ।**

**पर जहानमें गुझ जाहेर हुई, अब मोमिनोँ की पेहेचान ॥ ८५**

ब्रह्मात्माओंके भाग्यके विषयमें कुरानमें भी लिखा हुआ है किन्तु अब तो

ब्रह्मात्माओंकी पहचान पूरे जगतमें प्रकट हो गई है।

गिरो मोमिन नाम अनेक हैं, जुदे जुदे कहे नाम ।

बोहोत नामों बुजरकियां, लिखी माहें अल्ला कलाम ॥ ८६

विभिन्न धर्मग्रन्थोंमें ब्रह्मसृष्टियोंको अलग-अलग नामोंसे पुकारा है। इसी भाँति कुरानमें भी विभिन्न नामोंसे उनकी ही महिमा गाई गई है।

तारीफ ईसा मेहेदी की, सो इन जुबां कही न जाए ।

पेहेचान रसूल खुदाए की, अरस वतन दिया बताए ॥ ८७

श्रीश्यामाजीके अवतार सद्गुरु (ईसारूह अल्ला) की प्रशंसा इस जिह्वासे नहीं हो सकती, क्योंकि उन्होंने ही पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा उनके सन्देशवाहक रसूलकी पहचान करवाकर अपने घर परमधामका अनुभव करवा दिया है।

तारीफ काजी कजाए की, क्यों कर कहूं या मुख ।

नाबूद को कायम किए, दिए रूहों कायम सुख ॥ ८८

अन्तिम समयमें न्यायाधीश (काजी) बनकर न्याय (कजा) करनेवाले (मेरे हृदयमें बैठे सद्गुरु) की प्रशंसा इस मुँहसे कैसे करूँ ? उन्होंने नश्वर (नाबूद) जीवोंको अखण्ड किया और ब्रह्मात्माओंको इसी मायामें ही परमधामके अखण्ड सुखोंका अनुभव करवाया।

माणे इन कुरान के, गुझ रही थी बात ।

सो अरस रूहें जाहेर हुई, सब जनमें फैलात ॥ ८९

आज तक कुरानके अर्थ रहस्य ही बने हुए थे। परमधामकी आत्माएँ प्रकट हुई, तो अब वे गूढ़ार्थ सब लोगोंमें प्रकाशित हो जाएँगे।

नाहीं तुम बराबरी, सो इन जुबां कही न जाए ।

पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनो सब देखाए ॥ ९०

हे ब्रह्मात्माओ ! इस संसारमें तुम्हारी तुलना किसीसे भी नहीं की जा सकती। तुम्हारी महिमाका वर्णन इस जिह्वासे नहीं हो सकता। किन्तु मुझे तभी सुख प्राप्त होगा, जब मैं यहीं पर तुम्हें अखण्ड परमधामके दर्शन करा दूँ।

ए किया तुम खातर, समझ लीजो दिल माहें ।

रूहें मोमिन कदम तले, तित दूजा कोई नाहें ॥ ११

हे ब्रह्मात्माओ ! इस सृष्टिकी संरचना तुम्हारे लिए ही हुई है। इस बातको हृदयसे भलीभाँति समझ लो। वस्तुतः तुम सभी ब्रह्मात्माएँ धामधनीके चरणोंमें ही बैठी हो। वहाँ पर तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है।

प्रकरण २४ चौपाई ८२४

सनंध नबी नारायण की

कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम ।

पर कहे कोई ना समझ्या, अब कर देखाऊं तुम ॥ १

रसूलने कयामतके समय होने वाले न्यायकी जो बात कही है, उसीकी चर्चा मैंने ऊपरके प्रकरणमें की है। परन्तु कहने मात्रसे कोई समझ नहीं सका, इसलिए अब मैं उसे स्पष्ट कर दिखाता हूँ।

महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल ।

भी देखाऊं जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल ॥ २

रसूल मुहम्मद द्वारा उपदिष्ट धर्ममार्ग तथा मायावी छल इन दोनोंको मैंने स्पष्ट किया है। अब इसे और स्पष्ट कर देता हूँ, जिससे मायावी शक्ति दूर हो जाए।

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन ।

निकाल देऊं जड पेड से, ल्याए नूर अरस रोसन ॥ ३

हे ब्रह्मात्माओ ! अब मायावी शक्ति तुम्हारा क्या कर पाएगी, जब मैं तुम्हें अखण्ड परमधामके दर्शन करवा रहा हूँ। अज्ञानके अन्धकारको अब जड़ मूलसे ही उखाड़ देता हूँ, क्योंकि सद्गुरु धनी परमधामसे तारतम ज्ञानका प्रकाश ले आए हैं।

फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक ।

खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सबद बांन पुस्तक ॥ ४

तुमने झूठी माया द्वारा निर्मित चौदह लोकोंकी स्थावर जड़म सृष्टिकी सभी

बातें सुन ली हैं। इस खेलके स्वामी त्रिगुणाधिपति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर) के विषयमें भी विभिन्न धर्मग्रन्थोंमें वर्णन मिलता है।

**बैकुण्ठ से पाताल लों, बुनी आदम हैवान ।**

**इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रुद्र नारायण ॥ ५**

वैकुण्ठसे लेकर पाताल पर्यन्त तथा मनुष्यसे लेकर अन्य पशु-प्राणी पर्यन्त सबका वर्णन उन ग्रन्थोंमें है, जिनमें ब्रह्मा, रुद्र-शिवजी तथा विष्णु (नारायण) भी समाविष्ट हैं।

**अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुए नाहें ।**

**पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल माहें ॥ ६**

हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, यह खेल तो वस्तुतः कुछ भी नहीं है, किन्तु तुम अपनी आँखोंसे कुछ तो देख ही रही हो। तुम्हारे दिलमें कोई भी सन्देह न रह जाए (इसलिए मुझे कुछ कहना पड़ा)।

**जब जाग अरस हक देखिए, ए नहीं खेल कछू तब ।**

**पर जोलों हुकमें है खडा, तोलों क्यों होए झूठा अब ॥ ७**

जब जागृत होकर परमधामको देखेंगे, तब यह खेल कुछ भी दिखाई नहीं देगा। किन्तु जब तक परब्रह्म परमात्माके आदेश (हुकम) से इस स्वप्नका अस्तित्व बना हुआ है, तब तक यह कैसे झूठा हो सकता है ?

**ए खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित ।**

**तो कहा बडों की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत ॥ ८**

इस झूठे खेलको देखनेवाली आत्माएँ तो स्वयं सत्य हैं। इसलिए ब्रह्मात्माओंकी क्या महानता सिद्ध होगी यदि वे इस झूठे संसारको अखण्ड न कर दें।

**जो सांचे सांचा देवहीं, तो कहा बडाई बुजरक ।**

**पर खाकी बुत सत होवहीं, तो जानियो महंमद बरहक ॥ ९**

सत्य ब्रह्मात्माएँ मात्र सत्य परमधामका ही ज्ञान दें, तो उसमें उनकी क्या महत्ता मानी जाएगी ? परन्तु जब स्वप्नवत् जीव भी मुक्ति स्थलों (बहिश्तों)

में अखण्ड हो जाएँगे, तब अन्तिम सद्गुरु (आखिरी मुहम्मद) को सच्चा समझना।

महंमद आया नूर पार से, याही खेल के माहें ।

पर इन खेलमें का नहीं, सो भी सक राखों नाहें ॥ १०

रसूल मुहम्मद अक्षर (नूर) से भी परे अक्षरातीत धामसे इस नश्वर खेलमें आए हैं। वे इस जगतके खेलमें-से नहीं हैं। मैं तुम्हारे मनमें इस शंकाको भी रहने नहीं दूँगा।

नबी और नारायण की, कछुक कहूं पटंतर ।

रसूल कहे नूर जमाल की, नहीं नारायण गम अक्षर ॥ ११

रसूल पैगम्बर और भगवान नारायणके बीचका अन्तर भी स्पष्ट कर देता हूँ। रसूल मुहम्मद अक्षरातीत ब्रह्मका सन्देश लेकर आए हैं और भगवान नारायण अक्षरब्रह्मके स्वप्नके स्वरूप होनेसे उन्होंने अक्षरब्रह्म तककी बात भी नहीं की है।

सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल ।

अपने अपने मुख से, जाहेर करे मजल ॥ १२

इस संसारमें जितने भी अवतारी पुरुष, पैगम्बर, आदि हुए हैं, उन्होंने वहीं तककी बात की है जो जहाँ तक पहुँच पाए। उन्होंने स्वयं अपने ही मुखसे अपना गन्तव्य (मजिल) स्पष्ट कर दिया है।

सो सबद लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख ।

जो किन पाई दमडी, या किन लाखों लाख ॥ १३

जिनको जैसी उपलब्धि हुई है, उन सबने स्वयं अपने ग्रन्थोंमें अपने लिए साक्षी बताई है। उनमेंसे किसीने थोड़ी-सी (दमड़ीके समान) प्राप्त की हो या किसीने लाखोंकी उपलब्धि प्राप्त की हो।

मैं ना किसी की कम कहूं, ना किसी की कहूं बढाए ।

जो जैसा तैसा तिनों, दोऊ कहूं द्रढाए ॥ १४

न मुझे किसीकी उपलब्धिको कम बताना है और न ही किसीको बढ़ा-चढ़ा

कर कहना है. जो जैसे हैं, उनको उनके ही अनुरूप स्पष्ट कर देता हूँ.

एते दिन ढांपे हते, सबद सत असत ।

सो अब जाहेर हुए, आई सबोंकी सरत ॥ १५

इतने दिन तक सत्य और असत्य (ब्रह्म और माया) का ज्ञान स्पष्ट नहीं हुआ था. अब वह स्पष्ट हो गया है, अब सभी शास्त्रोंकी भविष्यवाणीको सत्य करनेका निश्चित समय आ गया है ?

हकीकत हिन्दुअन की, सो देखो चित ल्याए ।

और जो मुसलिम की, सो भी देऊं बताए ॥ १६

तुम ध्यानपूर्वक विचार करो, मैं हिन्दुओंके कर्मकाण्ड और मुस्लिमोंकी शराअकी बाह्यताका भी विवरण देता हूँ.

हिंदू जोरू जब करें, ले देवें मन के बंध ।

जिन कोई छोडे किनको, यों पडें गफलत फंद ॥ १७

हिन्दू लोग जब वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा पति और पत्नी बनते हैं, तब दोनों परस्पर आजीवन एक साथ रहनेके लिए वचनबद्ध होते हैं. इसलिए वे आजीवन एक दूसरेको नहीं छोड़ते हैं. इस प्रकार ममत्वके झूठे बन्धनमें बँध जाते हैं.

मुसलिम जोरू जब करें, मिल पेहेले बांधे सरत ।

जिन कोई किनसों दिल बांधे, यों न्यारे रहें गफलत ॥ १८

मुसलमानोंमें वैवाहिक सम्बन्धकी रीति दूसरी है. पति-पत्नीके सम्बन्धके लिए काजी द्वारा निकाह कराया जाता है जिसमें दोनोंको दिलसे बँध जानके लिए वचनबद्ध नहीं करते. इस प्रकार वे मायाके बन्धनोंसे स्वयंको अलग मानते हैं.

भी हिन्दू मुसलिम की, कहूं तफावत तुम ।

हिंदू हिसाब जमपुरी, मुसलिम हाथ खसम ॥ १९

हिन्दू और मुसलमानोंके विचारोंका अन्तर और भी मैं तुम्हें बता देता हूँ. हिन्दुओंकी मान्यता है कि उनके कर्मोंका लेखा-जोखा धर्मराज (यमराज)



रखते हैं (इसलिए वे कर्म सुधारना चाहते हैं). किन्तु मुसलमानोंका कहना है कि उनका लेखा-जोखा खुदाके हाथमें होता है

हिन्दुओं ए द्रढ कर लिया, इत जो करसी करम ।

सो जाए आपे अपना, दें हिसाब आगे राए धरम ॥ २०

सो हिसाब दिए पीछे, देह धरें चौरासी लाख ।

मन बाचा करम बांध के, कहें हम होत हलाक ॥ २१

हिन्दुओंका यह दृढ़ निश्चय है कि इस संसारमें उन्होंने जो भी ऊँच-नीच कर्म किए हों, उनका हिसाब धर्मराजके आगे देना पड़ेगा. इस प्रकार हिसाब सौंप कर वे अपने कर्मोंके अनुसार चौरासी लाख योनियोंमें पुनः देह धारण कर लेते हैं और मन, वचन तथा कर्मसे बद्ध होकर कहते हैं कि हम मारे (परेशान होते) जा रहे हैं.

हिंदू मुए जलावहीं, खाक भी देवें उडाए ।

जो डंड जम का छूटहीं, तो भी दिल सुन को चाहे ॥ २२

हिन्दू लोग पार्थिव देहको जला देते हैं और उसकी राखको भी उड़ा देते हैं अर्थात् कुछ भी शेष रहने नहीं देते. यमराजके भयसे छूट जाने पर भी उनका दिल शून्यकी ओर ही आकृष्ट होता है.

हिसाब मुसलिम कहावहीं, ए किया द्रढ दिल ।

खुद काजी हस्तक नबी, हम देसी सब मिल ॥ २३

मुसलमानोंका हिसाब इस प्रकार है, उन्होंने अपने मनको दृढ़ बनाया है कि खुदा स्वयं हमारे न्यायाधीश (काजी) बनकर आएँगे, तब हम अपना लेखा-जोखा उन्हें सौंप देंगे.

दूजा देह धरन का, रसूलें किया नाही हुकम ।

ताए दूजा देह क्यों होवहीं, जाको हिसाब हाथ खसम ॥ २४

रसूलने उन्हें दूसरा शरीर धारण करनेका आदेश नहीं दिया है. जिसके कर्मोंका लेखा-जोखा खुदाके हाथमें हो, उसको दूसरा शरीर धारण करनेकी आवश्यकता ही क्या रहेगी ?

मुसलिम मुए गाडहीं, बांध उमेद खसम ।  
तेहेकीक हक उठावहीं, यों सोवें पकड़ कदम ॥ २५

मुसलमान लोग खुदाकी आशा रखकर मुर्दोंको गाढ़ देते हैं कि खुदा आकर हमें निश्चित ही उठाएँगे. ऐसा सोचकर वे उनके ही चरण पकड़ कर कब्रमें सो जाते हैं.

मनके हारे हारिए, मनके जीते जीत ।  
मनहीं देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत ॥ २६

मनुष्यकी हार-जीत, विजय-पराजय सब मन पर निर्भर है. मनकी दृढ़ता व सङ्कल्पके कारण विजय श्रीचरण चूमती है, मनकी निर्बलता पराजयका मुख दिखाती है. मन ही सच्चे सुखोंके आनन्द सागरमें हिल्लोरें दिलाता है और मन ही निर्बलताके कारण लज्जाका अनुभव कराता है.

चल देखाया बडकों, सब चले जाए तिन लार ।  
अब सो क्योंए ना छूटहीं, जो बांध दर्ई कतार ॥ २७

संसारकी ऐसी परम्परा रही है कि अपने पूर्वजोंके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर ही सब लोग चलते हैं. इस प्रकार ऊँटकी कतारकी भाँति चलाई गई परम्परा किसी भी प्रकारसे छूट नहीं पाती.

कोई हिन्दू जो बैकुंठ जावहीं, सो भी खेल के माहें ।  
ए फना आखर कहावहीं, पर कायम भिस्त तो नाहें ॥ २८

हिन्दू अपना अन्तिम गन्तव्य स्थान वैकुण्ठ मानते हैं और इसीको ही अखण्ड मान लेते हैं, जब कि वैकुण्ठ भी चौदह लोकके अन्तर्गत है और प्रलयमें उसका भी नाश होता है. इसलिए वह स्थायी मुक्तिका स्थान नहीं है.

बैकुंठ मिने नारायनजी, जिन मुख स्वांसा वेद ।  
ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद ॥ २९

वैकुण्ठके अधिपति भगवान नारायण (विष्णु) हैं, वेदोंको जिनका श्वास कहा गया है. भागवान नारायण इस जगतके स्वामी हैं, उनका भी मैं थोड़ा स्पष्टीकरण कर देता हूँ.

नारायण कहावें निगम, कहे मोहे खबर नहीं खुद ।

नबी हक रसूल कहावहीं, कहे मैं ल्याया कागद ॥ ३०

भगवान नारायणने वेदोंके द्वारा ब्रह्मको निगम कहा है। उनका कहना है कि परब्रह्मका ज्ञान स्वयं उनको भी नहीं है। नबी स्वयं खुदाका रसूल (सन्देशवाहक) कहलाते हैं और कहते हैं कि मैं उनसे सन्देश पत्र (कुरान) लेकर आया हूँ।

ए नबिएं जाहेर कहा, मैं हक पें आया रसूल ।

दीन मुसलिम जो होएसी, सो लेसी सबद घर मूल ॥ ३१

नबीने यह स्पष्ट कहा है कि मैं परब्रह्म परमात्माका भेजा हुआ रसूल हूँ। जो धार्मिक मुस्लिम होगा, वह मूल घर (परमधाम) के इन सङ्केतोंको अवश्य ग्रहण कर लेगा।

मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम ।

याको मेरी खातर, भिस्त देसी खसम ॥ ३२

उन्होंने यह भी कहा कि मेरा मूल घर अक्षर (नूर) के पार अक्षरातीत धाम है और ये सांसारिक जीव शून्य (माया) से उत्पन्न हुए हैं। अन्तिम समयमें प्रकट होकर परमात्मा इन जीवोंको भी मेरी अनुशंसा (सिफारिश) पर अखण्ड मुक्ति स्थानोंमें पहुँचाएँगे।

कलाम अल्ला ल्याया रसूल, इन मुसलिम में यकीन ।

हुकम सिर चढाइया, जो सबसे बडा दीन ॥ ३३

रसूल मुहम्मद इसलिए कुरानके माध्यमसे ब्राह्मी आदेश लेकर आए ताकि उसके प्रति मुस्लिमोंमें विश्वास उत्पन्न हो। मुसलमानोंने उनके आदेशोंको शिरोधार्य किया और उस पर चलना परम धर्म मान लिया।

रसूलें खुद को देख के, हुकम लिया द्रढाए ।

जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढाए ॥ ३४

रसूल मुहम्मदने म्याराजके समय खुदाका दर्शन कर उनके आदेशको शिरोधार्य कर लिया। परन्तु जिन लोगोंको ब्रह्मका साक्षात्कार नहीं हुआ और

जिन्होंने उनके वचनोंको धारण नहीं किया, वे कर्म बन्धनमें ही जकड़े रहेंगे.

**हिंदू और मुसलिम के, बीच पड्यो है भ्रम ।**

**रसूल कहे सब हुकमें, और निगमें द्रढाए करम ॥ ३५**

इस प्रकार हिन्दू और मुसलमानोंमें भ्रान्तियाँ फैली हुई हैं. एक ओर रसूल कहते हैं कि सब कुछ परमात्मा (खुदा) के आदेश (हुक्म) से होता है, दूसरी ओर वेदोंने कर्मका महत्त्व दृढ़ किया है.

**रसूल हक हुकम बिना, और न काढे बोल ।**

**करम द्रढाए निगमें दिए, हिन्दुओं सिर डमडोल ॥ ३६**

रसूलने परमात्माके आदेशके अतिरिक्त अन्य कोई बात नहीं की. जबकि हिन्दू लोग वेदादि ग्रन्थोंमें निर्दिष्ट कर्मके अनुसार कर्म करते हुए सन्दिग्ध रहते हैं.

**हुए जो ग्यानी अगुए, जिन लिए माएने वेद ।**

**सो ग्यान हिन्दुओं आडा पड्या, हुआ बडा छल भेद ॥ ३७**

वेदोंके वे ज्ञाता पण्डित लोग जिन्होंने केवल कर्मकाण्डको ही प्रधानता प्रदान की, उनका कर्मकाण्डका ज्ञान ही हिन्दुओंके लिए सत्यमार्गको ग्रहण करनेमें रुकावट बनकर खड़ा हो गया. यही वास्तवमें हिन्दुओंके लिए भ्रमका परदा बना हुआ है.

**तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जबद ।**

**बैर लगाया या विध, कोई सुने न काहूं को सबद ॥ ३८**

ऐसे ही अग्रणी कहलाने वाले लोगोंने शास्त्रोंकी दुहाई देते हुए कर्मके नियम बनाकर संसारको कर्म बन्धनमें बाँध डाला. इस प्रकार अपने-अपने कर्मोंकी श्रेष्ठता बतानेसे लोगोंमें परस्पर मतभेद खड़े होने लगे, जिससे कोई भी एक दूसरेकी बात नहीं सुनता है.

**तो सत सबद के माएने, ले न सक्या कोए ।**

**डूबे हिन्दू स्यानपे, सो गए प्यारी उमर खोए ॥ ३९**

इसीलिए शास्त्रोंके गूढ़ार्थको कोई समझ नहीं पाया. इस प्रकार कर्मकाण्डी

हिन्दूलोग अपनी चतुराईके कारण अपना अमूल्य समय व्यर्थ ही गँवा रहे हैं.

जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात ।

और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात ॥ ४०

जिनको स्वप्न जगतकी तथा उससे परेकी कोई सुधि ही नहीं है, वे इस रहस्यको कैसे जान सकते हैं ? अन्य सभी लोगोंने परमात्माके विषयमें अनुमान किया है, जबकि रसूलने स्वयं अपनी आँखोंसे परब्रह्म तथा ब्रह्मात्माओंको देखा है.

तारी अरवाहें सबन की, चौदे तबक की ख्रस्ट ।

अवतार तिथंकर हो गए, किन तारे ना गछ इस्ट ॥ ४१

इन ब्रह्मात्माओंने जगतमें आकर चौदह लोकोंके सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थल (बहिश्त) का मार्गप्रशस्त किया. इस जगतमें कई अवतार, तीर्थंकर, गच्छ आदि विभिन्न इष्ट हो गए, किन्तु किसीने भी अपने अनुयायियोंको भवसागरसे पार नहीं किया.

कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम ।

यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम ॥ ४२

इस संसारमें ऐसा कोई समर्थ व्यक्ति नहीं हुआ है, जिसने अपनी आत्माको भवसागरसे पार किया हो. सभी शास्त्र ऐसा ही कहते हैं कि परमात्माका धाम तो अगम्य है.

सो बैराट चौदे तबक, थावर और जंगम ।

सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम ॥ ४३

इस विराट ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंके सभी स्थावर और जड़म (सचराचर) जीवोंको रसूलके ज्ञानकी साक्षी देकर ब्रह्मात्माओंने भवसागरसे पार उतार दिया.

खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फुरमान ।

आखर भी रसूल आए के, भिस्त दर्ई सब जहान ॥ ४४

संसारकी रचना और इसमें मुहम्मद साहबका आना, ये सभी कार्य परब्रह्म

परमात्माकी आज्ञासे हुए हैं. उनकी आज्ञासे ही कुरानका सन्देश लेकर रसूल आए हैं. अन्तिम (आत्म-जागृतिके) समयमें भी इमाम महदीके साथ आकर रसूल सब जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थल प्रदान करनेमें सहयोग करेंगे.

**भिस्त चौदे तबकों, देसी दुनियां दीन ।**

**देसी ब्रह्मा रुद्र नारायण को, आखर दे यकीन ॥ ४५**

अब आखिरी इमाम (बुद्धजी) चौदह लोकोंके सभी जीवोंको एक ही धर्ममें लाकर अखण्ड मुक्ति स्थलोंका सुख प्रदान करेंगे तथा त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु (नारायण) और महेश (महादेव) को भी इस बातका विश्वास दिलाएँगे.

**ए अव्वल का हुकम, आखर होसी जाहेर ।**

**करसी साफ सबन को, अंतर माहें बाहेर ॥ ४६**

रसूलके द्वारा पहलेसे ही आया हुआ आदेश (कुरान) अन्तिम समयमें बुद्धजी (आखिरी इमाम) के द्वारा स्पष्ट होगा. अब बुद्धजी जगतके लोगोंके बाह्य और आन्तरिक विकारोंको दूर (साफ) कर देंगे.

**प्रकरण २५ चौपाई ८७०**

**सन्ध दोजख की**

**नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान ।**

**ए जो सबद रसूल के, अंदर दिल में आन ॥ १**

रसूलके वचनोंको हृदयङ्गम कर अब मैं नरकाग्नि (दोजख) का थोड़ा-सा विवरण दे रहा हूँ, जिसमें परमात्मासे विमुख हुए काफिर लोग जल मरते हैं.

**कुफर चौदे तबक का, इन सबदों होसी नास ।**

**पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विस्वास ॥ २**

रसूलके इन वचनोंसे चौदहलोकोंका अन्धकार (अविश्वास) नाश हो जाएगा किन्तु उन अग्रणी प्रचारकोंको क्या कहा जाए, जिन्होंने दुनियाँके साथ विश्वासघात किया है.

**कुफर सारा काढसी, एक पलकमें धोए ।**

**खारे जल पछाडसी, याको धूप जो देसी दोए ॥ ३**

आखिरी इमाम (बुद्धजी) तारतम ज्ञानके प्रतापसे एक पलमें समस्त संसारकी

अज्ञानताका कलुष धो डालेंगे. भ्रम निवारणके लिए कठोर वचन रूपी खारे जलमें डालकर प्रेम (इश्क) और ज्ञान-विश्वास (इमान) दोनोंकी गर्मी देकर उन अग्रणियोंके हृदयको निर्मल बना देंगे.

**याही दोजख अगनी जलें, और जलें दुनी के दम ।**

**आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूलें हम ॥ ४**

ऐसे अग्रणी जन तथा संसारके जीव इसी नरकाग्निमें जल जाएँगे. अपने ही किए हुए कर्मके वे स्वयं फलस्वरूप नरकाग्निमें जलेंगे और हाय-हाय करते हुए पश्चात्ताप करेंगे कि हमसे ऐसी भूल क्यों हो गई ?

**खुद न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर ।**

**पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर ॥ ५**

परमात्मा स्वयं किसीको भी दुःख नहीं देते किन्तु सब लोग अपनी ही भूलोंसे पीड़ित होते हैं. अपनी ही भूलोंके कारण राजा, महाराजा अथवा फकीर-सबके सब सिर पीट-पीटकर रोएँगे.

**खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर ।**

**सो सोर याद जो आवहीं, हाए हाए झालें बढें त्यों जोर ॥ ६**

रसूल साहेबने ऊँची आवाजमें पुकार कर कहा था कि स्वयं परमात्मा न्यायाधीश बनकर प्रकट होंगे. रसूलकी यह पुकार उन लोगोंको तब याद आएगी, जब नरक (दोजख) की आगकी लपटें और तेज होती जाएँगी.

**जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बडा खसम ।**

**कलमा रसूल का सुनके, हाए हाए पकडे नहीं कदम ॥ ७**

न्यायाधीशके रूपमें आए हुए ऐसे परब्रह्म परमात्माको देखकर वे लोग अपनी भूलके कारण पश्चात्तापकी अग्निमें जलेंगे. उनको यही पश्चात्ताप होता रहेगा कि रसूलके वचनोंको सुनकर भी हम उनके पदचिह्नों पर क्यों नहीं चले ?

**ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख ।**

**ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख ॥ ८**

वे लोग न्यायाधीशके रूपमें आए हुए धामधनीको ज्यों-ज्यों देखेंगे, त्यों-

त्यों उनके हृदयमें पश्चात्ताप बढ़ेगा और कहेंगे कि बड़े खेदकी बात है कि ऐसे प्यारे धामधनीके समक्ष हम समर्पित न हो सके.

**खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं यकीन ।**

**अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन ॥ ९**

इस प्रकार परमात्माके प्रकट होनेकी बात रसूल साहेबने पहले ही कुरानमें कह दी थी किन्तु कुरान पढ़कर भी उनको इस बात पर विश्वास नहीं हुआ. बड़े खेदकी बात है कि रसूलको न पहचानने वाले लोग (बादमें परमात्माके प्रकट होने पर) पछाड़ खा कर भूमि पर गिर पड़ेंगे.

**एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूट्या फंद ।**

**दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए हुए बडे अंध ॥ १०**

परमात्माके अतिशय प्रिय (माशूक) रसूलने इतनी पुकार की फिर भी लोग मायाके बन्धनसे मुक्त न हो सके. अब अन्त समयमें रसूलके वचनानुसार परमात्माके प्रकट होने पर उन्हें याद करते हुए वे इस प्रकार पश्चात्ताप करेंगे जैसे अपने दाँतोंसे जीभ कट जानेसे पश्चात्ताप होता है. इस प्रकार वे अपनी भूल स्वीकारते हुए कहेंगे कि हम बिलकुल अन्धे हो गए थे (हमने कुछ भी न देखा).

**जाए जाए समसेर लेवहीं, अब कीजे आप घात ।**

**दिल दे कबहूं ना सुनी, हाए हाए पैगंमर की बात ॥ ११**

तब अपनी भूलोंको स्वीकारते हुए वे लोग बार-बार तलवार उठा कर आत्म-हत्या करना चाहेंगे. उनको इसी बातका पश्चात्ताप रहेगा कि हाय हमने रसूल साहेबकी बातको कभी भी ध्यान पूर्वक नहीं सुना.

**ले ले छूरी पेट डारहीं, यकीन न आया अंग ।**

**कही बात नबिएं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग ॥ १२**

वे लोग कटारी लेकर बार-बार अपने पेटमें भोंकना चाहेंगे कि उस समय हमारे मनमें क्यों विश्वास उत्पन्न नहीं हुआ. नबीने तो स्वयं परमात्माके



आनेकी बात कही थी किन्तु उनके प्रत्यक्ष प्रकट होने पर भी हमें उनके प्रेमका रङ्ग नहीं लगा।

**बात ना सुनी रसूल की, तिन सीखा लगियां कान ।**

**इसक हक का छोड के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान ॥ १३**

जिन्होंने रसूलकी बातें नहीं सुनीं, उनके श्रवण अङ्गोंको तप्त शलाकाओं द्वारा बीधा जाएगा। ये लोग परब्रह्म परमात्माका प्रेम छोड़कर व्यर्थ ही ज्ञानके चातुर्यमें जा डूबे।

**बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध ।**

**सो गुन अंग इन्द्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध ॥ १४**

दूर बैठकर उनकी बातें तो हमें सुनाई दीं किन्तु उनके पास जाकर कभी भी उनकी सुधि न ले सके। ऐसी गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ तथा बुद्धिको धिक्कार है, वे सब पश्चात्तापकी आगमें जल जाएँ।

**यकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन ।**

**और बिचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन ॥ १५**

रसूल मुहम्मदके वचनोंको सुनकर भी जिन्हें उन पर विश्वास नहीं हुआ, हाय हाय ! उनके ऐसे चातुर्यपूर्ण विचार जल क्यों नहीं गए ?

**धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत ।**

**सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बडी हरकत ॥ १६**

ऐसे ज्ञानके ज्ञाताओंको धिक्कार है, जिन्होंने लोगोंकी बुद्धिको ही उलटा दिया। ऐसे अग्रणी नरकाग्निमें जलेंगे, जिन्होंने इतना बड़ा अपराध किया है।

**बिना यकीने इसक, कबहुं न उपज्या किन ।**

**स्यानों ग्यान बिचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन ॥ १७**

परमात्माके प्रति विश्वासके बिना कभी भी किसीको प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु संसारके चतुरलोगोंने ज्ञानको अधिक महत्त्व देकर बड़ा अनर्थ किया है।

मैलाई ना छूटी मन की, ऊपर भए उजल ।

ना आया यकीन रसूल पर, हाए हाए छेतेरे छल ॥ १८

ऐसे लोगोंके मनका मैल तो नहीं गया किन्तु ज्ञानके कारण वे बाहरसे उज्ज्वल दिखने लगे. उनको रसूलके वचनों पर ही विश्वास नहीं हुआ. बड़े खेदकी बात है कि ऐसे लोग भी मायावी छलसे ठगे गए.

हराम न छूट्या दिल से, छल द्रस्ट हुई बाहेर ।

राह भूले मुसलिम की, हाए हाए बुरी हुई जाहेर ॥ १९

ऐसे लोगोंके दिलसे धूर्तता तो हटी नहीं, अपितु उनकी कपटपूर्ण दृष्टि भी बाह्य हो गई. इसलिए वे लोग रसूल साहेब द्वारा निर्दिष्ट मुस्लिमोंके मार्गसे विचलित हुए. इस प्रकार स्पष्ट ही उनकी स्थिति दयनीय हो गई.

ख्वाब के सुख कारने, किया आपसों छल ।

सबद ना सुने रसूल के, हाए हाए खाए गोते बिना जल ॥ २०

स्वप्नवत् संसारके नश्वर सुखोंको पानेकी चिन्तामें वे लोग स्वयंको ही धोखा देने लगे. वे रसूल मुहम्मदके वचनोंको सुन नहीं पाए, जिससे पानीके बिना ही भवसागरमें गोते खाने लगे.

सबद जो अगुओं सुनके, भूले मुसलिम की राह ।

इन दीन कलमें आखर, आवसी इत खुदाए ॥ २१

ऐसे अग्रणी लोगोंने कुरानके शब्दोंको तो सुना, किन्तु (अर्थ न समझनेके कारण) वे सब इस्लामके मार्गको भूल गए. रसूलने तो अपने वचनोंमें स्पष्ट कहा है कि कलमाका रहस्य स्पष्ट कर सत्य धर्मकी स्थापनाके लिए आखिरमें परमात्मा (खुदा) स्वयं आएँगे.

कुरान जिनों न बिचारिया, जलो सो तिनकी मत ।

जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत ॥ २२

जिन्होंने कुरानके गूढ़ अर्थों पर विचार नहीं किया, उनकी मूढ़मतिको आग लग जाए. रसूल साहेबके आदेशको सुनकर भी जो जाग्रत नहीं हुए, उनकी नींदको भी आग लग जाए.

बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल ।

आखर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल ॥ २३

स्वयंके जीवन व्यर्थ बीत जानेके पश्चात्तापमें ये लोग इतने व्याकुल होंगे कि उनके लिए उठना-बैठना और लेटना तक कठिन हो जाएगा. इतना ही नहीं कयामतका समय प्रत्यक्ष होने पर वे लोग पश्चात्तापकी अग्निमें जलकर भस्म हो जाएंगे.

जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसलमीन ।

हाथ काट पेट कूटहीं, जिन रसूल को न चीन ॥ २४

संसारके सभी लोगोंमें, चाहे हिन्दू हों या मुसलमान, जिन्होंने भी रसूलको नहीं पहचाना, वे स्वयं अपने हाथ काटना चाहेंगे और पेटमें मार-मारकर रोएंगे.

सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल ।

तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्योंए झाल ॥ २५

रसूल साहेबने तो सीधे ढङ्गसे ही समझाया है, किन्तु ये चण्डाल लोग समझ ही नहीं पाए. जब उनके अङ्गोंमें पश्चात्तापकी अग्नि जलेगी, तब वे खेद प्रकट करेंगे कि इस अग्निकी ज्वालाओंमें झाँप खाकर क्यों न जल जाएँ ?

खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर ।

सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर ॥ २६

ऐसे लोग परब्रह्म परमात्माके सामने अपना सिर कैसे ऊँचा कर पाएँगे ? उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें आग लग रही होगी और बार-बार उसकी लपटें उठती रहेंगी.

देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नाहें ।

पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल माहें ॥ २७

यदि नास्तिक लोगोंका शरीर नरकाग्निमें जलने लगे, तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है. किन्तु जो जान-बूझकर अग्निमें जलने लगे, तो समझो कि उनके तो दिलमें ही आग लग गई है.

कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन ।

तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन ॥ २८

बहुत-से लोग कुरानको पढ़ते रहे किन्तु उसकी यथार्थता कोई जान नहीं पाए, इसलिए तो उन्हें प्रियतम परमात्माके माशूक (रसूल) प्रिय नहीं लगे. उनके लिए तो यह धरती ही अग्निके समान हो गई.

कै महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे ।

तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जलें ए ॥ २९

ऐसे कई लोग रसूल मुहम्मदके अनुयायी कहलाते हैं, किन्तु वे भी पूरे मनसे उनके सङ्ग नहीं चल पाए. इसीलिए वे कुरानका मर्म समझ न सके. हाय ! ऐसे लोग जान-बूझकर आगमें जल रहे हैं.

कलाम अल्ला आया हाथमें, पर मारफत न पाई किन ।

सो भी आग छोडे नहीं, हाए हाए ताबा हुई जिमी तिन ॥ ३०

रसूल मुहम्मदके माध्यमसे परमात्माके वचन (कुरान) तो हाथ लगा, किन्तु उसका गूढ़ रहस्य (पूर्ण पहचान) किसीको ज्ञात नहीं हुआ. ऐसे लोग भी नरकाग्निसे छूट नहीं पाए, यह धरती उनको गर्म तवेकी भाँति जलाने लगी.

जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर ।

सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बडे बेडर ॥ ३१

जो लोग जान-बूझ कर भूल गए और रसूलके वचनों पर नहीं चल सके, उन्हें सूली पर लटका कर नीचेसे आग जलाई जाएगी और उनसे यह आग सही नहीं जाएगी. बड़े खेदकी बात है, फिर भी ये लोग बड़े निडर लगते हैं.

दुसमन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे ।

सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए ॥ ३२

वस्तुतः इनके दिल पर इनका ही शत्रु बनकर शैतान बैठा हुआ है. वह तो इन्हें नरकोंमें ही जलाना चाहता है. वह सबको स्पष्टरूपसे धोखा दे रहा है. बड़े खेदकी बात है कि उसे कोई पहचान नहीं रहा है.

पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए ।  
इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए ॥ ३३  
पीछे पछतानेसे क्या होगा, जब नरकाग्निमें डाल दिए जाओगे. इसीलिए  
रसूल सबको कृपापूर्वक चेतावनी दे रहे हैं.

यों आखर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान ।  
तब कहें ए सुध सुनी हती, पर आया नहीं ईमान ॥ ३४  
इस प्रकार रसूल अन्तमें इमाम महदीके साथ पुनः आ गए हैं, अब सबको  
उनकी पहचान हो जाएगी. तब सभी कहेंगे कि हमने भी यह बात सुनी तो  
थी, किन्तु हमें उस पर विश्वास नहीं हुआ था.

सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल ।  
सो दोऊ जाहेर किए, सांचा दीन झूठा छल ॥ ३५  
इस प्रकार इस जगतमें सत्य और असत्य (ब्रह्म और माया) एक रूप प्रतीत  
हो रहे थे. अन्तमें सद्गुरु (इमाम महदी) ने प्रकट होकर दोनोंको स्पष्ट कर  
दिया कि धर्म सत्य है और यह माया (छल) झूठी है.

प्रकरण २६ चौपाई १०५

सनंध अगुओं ग्यानी की

अब नींद उडी सबन की, आई जो हिरदें बुध ।  
समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध ॥ १  
अब सभी लोगोंकी अज्ञानरूपी नींद उड़ गई है और सबके हृदयमें तारतम  
ज्ञानका प्रकाश फैल गया है. इसलिए अब सभी लोग कुरानके गूढ़ार्थ भी  
समझ जाएंगे और उनको रसूलकी भी सुधि हो जाएगी.

अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सबद रसूल ।  
इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल ॥ २  
अब सभी आत्माओंको प्रियतमका सन्देश देने वाले नबी मुहम्मद प्यारे लगने  
लगे और उनके वचन (कुरान) भी प्रिय हो गए. कुरानके अनुसार इमाम

महदी भी प्रकट हो गए और सभी लोग प्रसन्न होकर उनके चरणोंमें पहुँचेंगे.

अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान ।

ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान ॥ ३

अब रसूल मुहम्मद और उनके साथ आए कुरानके गूढ़ रहस्योंकी सुधि सबको हो गई. जब स्वयं परमात्मा इमाम महदीके रूपमें आकर विराजमान हो गए, तब सभीको यह सुधि होने लगी.

बलिहारी महंमद की, बलिहारी मुसाफ ।

बल बल जाऊं काजी की, जिन आए किया इनसाफ ॥ ४

इस प्रकार परमात्माके आगमनकी सूचना देने वाले रसूल मुहम्मद तथा उनके साथ आया कुरान धन्य हैं. अन्तिम समयमें आकर न्याय देने वाले परमात्मा पर मैं न्योछावर हूँ, जिन्होंने तारतम्य द्वारा सबको न्याय दिया है.

ताथें इन बीच अगुओं, जिन करी बड़ी हरकत ।

ए जुलम किन विध कहूं, जिन या विध फेरी मत ॥ ५

इसलिए धर्मके अग्रणीय व्यक्तियोंकी बात क्या कहूँ ? जिन्होंने लोगोंको सत्य मार्गसे भटका कर उलटे मार्ग पर चलानेका दुष्कर्म किया. ऐसे जघन्य अपराधके सम्बन्धमें क्या कहा जाए, जिन्होंने लोगोंकी बुद्धिको इस प्रकार असत्यकी ओर मोड़ दिया.

पढों पढाई दुनियां, अगुओं उलटी गत ।

ए होसी सब जरदरू, अबहीं इन आखरत ॥ ६

तथाकथित पठित अग्रणी विद्वानोंने जगतके लोगोंको उलटा पढ़ाया, उलटी गति (चाल) सिखाई. अब इस आखरी (कयामत) की घड़ीमें ऐसे सभी अग्रणियोंके मुख शर्मसे फीके पड़ जाएँगे.

जब काफर देखें अगुओं, तब जाने काले नाग ।

करी दुनी को जरदरू, इनहूं लगाई आग ॥ ७

अवज्ञाकारी (काफिर) बने हुए लोगोंको जब समझ आएगी, तब वे इन

अग्रणियोंको काले नागकी भाँति समझेंगे क्योंकि इन्होंने ही भ्रमकी आग लगाकर सबको लज्जित कर दिया है।

दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर ।

यों दुनियां बीच अगुओं, बडा जो पडसी बैर ॥ ८

जब संसारके लोग इन अग्रगणियोंको पहचानेंगे, तब उन्हें ये विषतुल्य लगेंगे। इस प्रकार संसारके लोगों तथा अग्रणियोंमें परस्पर शत्रुता हो जाएगी।

ज्यों घायल साँप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब ।

त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब ॥ ९

जिस प्रकार आहत (घायल) हुए साँपको असंख्य चींटियाँ खाने लगती हैं, उसी प्रकार इन (भूलसे आहत) अग्रणियोंको भी संसारके लोग मिलकर पश्चात्ताप करवाएँगे।

आग दुनी को एक है, अगुओं को आग दोए ।

एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए ॥ १०

इस प्रकार जगतके लोगोंको एक ही (स्वयंके अपराधकी) आग जलाती है, किन्तु अग्रणियोंको तो दोहरी आगमें जलना पड़ेगा। एक आग तो उन्हें जगतके लोगोंकी है जिनको उन्होंने पथभ्रष्ट किया है, दूसरा उनको स्वयंके दुःख (भूल) के लिए भी रोना पड़ेगा।

और आग सब सोहेली, पर ए आग सही न जाए ।

अब देखोगे आपहीं, रहेसी सब तलफाए ॥ ११

अन्य तापको सहना सहज है, किन्तु पश्चात्तापके इस तापको सहन कर पाना असम्भव होगा। अब तुम स्वयं ही देख पाओगे, सब तड़पते हुए दिखाई देंगे।

आग सबों को बिरह की, देकर करसी साफ ।

जिन जैसी तैसी तिनों, आखर ए इनसाफ ॥ १२

इमाम महदी (निष्कलङ्क बुद्ध) अब सभीको विरहाग्निमें तपाकर शुद्ध करेंगे।

जिन्होंने जैसा किया है, उनको उसी प्रकारका फल दिया जाएगा और वही अन्तिम न्याय होगा.

**विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाक ।**

**सो बिना बिरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक ॥ १३**

काम, क्रोध और अहङ्कारादि जितने भी शरीरके विकार हैं, विरहाग्निका ताप दिए बिना वे नहीं जलते हैं और दिल भी पवित्र नहीं हो पाता.

**आखर भी इसक बिना, हुआ न काहूँ सुख ।**

**सो इसक क्यों छोडिए, जो रसूलें कहा आप मुख ॥ १४**

अन्तमें भी प्रेमके बिना किसीको भी अखण्ड सुख प्राप्त नहीं होगा. इसलिए ऐसे प्रेम (इश्क) को कैसे छोड़ा जाए ? जिसका वर्णन रसूलने स्वयं अपने मुखसे किया है.

**अव्वल जो रसूलें कहा, आखर सोई परवान ।**

**इसक सांचा हक का, और आग सब जान ॥ १५**

रसूलने पहले ही जो भविष्यवाणी की थी, अन्त समयमें वह सत्य सिद्ध हुई है. उन्होंने उस समय यह बताया था कि परब्रह्म परमात्माका प्रेम ही वास्तवमें सत्य है, अन्य सब कुछ अग्निके समान दाहक है.

**जब खसम काजी हुआ, तब नाहीं दुखिया कोए ।**

**महंमद मेहेर करावहीं, सब पाक हुए दिल धोए ॥ १६**

जब स्वयं परमात्मा न्यायाधीश होकर प्रकट हुए हैं, तब कोई भी दुःखी नहीं रह पाएगा. स्वयं रसूल मुहम्मद कृपापूर्वक सबकी अनुशंसा (सिफारिश) करेंगे, तब सभी लोग ब्रह्मज्ञानसे हृदयको निर्मल कर पवित्र हो जाएँगे.

**रसूल बडा सबनमें, जिन हक की दर्द खबर ।**

**कहा मासूक का सब हुआ, आई कजा आखर ॥ १७**

सभी पैगम्बरोंमें रसूल मुहम्मद सबसे बड़े इसलिए माने गए हैं कि उन्होंने परमात्माके प्रकट होनेका समाचार दिया है. परमात्माके प्रिय (माशूक) के



कथन सभी सत्य हुए. अब तो अन्तिम न्याय (कजा) का दिन आ पहुँचा है.

तारीफ़ रसूल की तो करूं, जो इन ज़िमी का होए ।

या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूँ ना बोल्या कोए ॥ १८

रसूलकी प्रशंसा तभी सम्भव होगी, जब वे इस स्वप्न जगतके (जीव) हों. इस संसारमें आज तक अक्षर ब्रह्म (नूर) के पारकी बात किसीने भी नहीं कही है.

या सुध पार के पार की, किन मुख ना निकसे दम ।

बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम ॥ १९

आज तक किसीने भी जगतके पार अक्षरब्रह्म और उनके पार अक्षरातीतब्रह्मकी बात नहीं की. यह रसूल मुहम्मदकी महत्ता है कि उन्होंने परमात्माके विषयमें स्पष्टता की है.

महंमद दीन की पेहेचान, काहूँ हुती न एते दिन ।

ना पेहेचान कुरान की, ना तो देख थके कै जन ॥ २०

आज तक किसीको रसूल मुहम्मद तथा इस्लामकी पहचान नहीं थी और न ही किसीने कुरानकी ही पहचानकी है. वैसे तो कई लोग कुरानको पढ़कर थक गए हैं.

पेहेलें ए सस्ती हुती, मुसलिम दीन कुरान ।

पीछे अति पछताएसी, पर क्या जाने कुफरान ॥ २१

कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होनेसे पूर्व रसूल द्वारा निर्देशित धर्म तथा कुरानका विशेष महत्त्व लोग नहीं समझ रहे थे. अब यह स्पष्ट हो जानेसे भविष्यमें ये लोग पश्चात्ताप करेंगे. वैसे भी ये स्वप्नके ही जीव हैं, सत्यको कैसे समझते ?

सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ़ दुनी दिल ।

किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल ॥ २२

अब तारतम ज्ञानके प्रकाशमें सबको इसकी पहचान हो जाएगी और सारे

जगतके लोगोंके दिलके संशय भी दूर हो जाएँगे। इस प्रकार कुरानके अर्थ स्पष्ट हो जानेसे सभी लोग मिलकर आनन्दका अनुभव करेंगे।

**सबद रसूल के पसरसी, तिन फिरसी बैराट ।**

**अकस सबों का भानसी, सब चलसी एक बाट ॥ २३**

तारतम वाणी द्वारा जब रसूल साहबके शब्दोंके रहस्य चारों ओर प्रकट हो जाएँगे, तब सबके दिलोंमें भरी हुई शङ्काएँ दूर हो जाएँगी एवं सबके हृदय भी निर्मल हो जाएँगे और सभी लोग एक ही सत्य मार्ग पर मिलकर चलेंगे।

**छोड गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान ।**

**जात पांत ना भांत कोई, एक खान पान एक गान ॥ २४**

तब संसारके सभी लोग अपने अभिमानको त्याग कर एकरूप हो जाएँगे। सबकी जाति-पाँति, वर्ण-वर्ग और मत-मतान्तर, रीति-रिवाज तथा खान-पान सब एक समान हो जाएँगे। साथ ही सब एक ही परमात्माके गुणानुवाद गाएँगे।

**एही सबद सुन जागसी, बडी बुध होसी बिचार ।**

**याही सदी आखर की, हक सुख देसी पार ॥ २५**

तारतम ज्ञानके ये शब्द सुनकर संसारके सभी लोग जागृत हो जाएँगे और इस महान बुद्धि (जागृत बुद्धिके ज्ञान) पर विचार करेंगे। कुरानके अनुसार यही सदी आखिरी मानी जाएगी। इसी सदीमें परब्रह्म परमात्मा परमधामका अखण्ड सुख प्रकट करेंगे।

**नूर सबोंमें पसरया, सो कहूं सब सनंध ।**

**याही सबदों बीच का, उड जासी बंध फंद ॥ २६**

तारतम ज्ञानका यह प्रकाश किस प्रकार सर्वत्र फैल गया ? अब मैं इसका भी विवरण कहता हूँ। इन्हीं शब्दोंके द्वारा मायाके सभी बन्धन उड़ जाएँगे।

**प्रकरण २७ चौपाई १३१**

[मुहम्मद शब्दका अर्थ प्रशंसित होता है अर्थात् परमात्मा जिसकी प्रशंसा करे वे मुहम्मद कहलाते हैं. इस प्रकार सर्व प्रथम परमात्माका सन्देश लेकर आनेवाले रसूल मुहम्मद, तारतम ज्ञान लेकर आनेवाले निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद-मुहम्मद महदी) तथा इसी तारतम ज्ञानके द्वारा सबको न्याय देने वाले श्रीप्राणनाथजी (इमाम मेहदी) को यहाँ पर मुहम्मद शब्दसे सम्बोधित किया है. वस्तुतः परमात्माका आवेश लेकर आई हुई श्रीश्यामाजीकी शक्ति मुहम्मद कहलाई है.]

सनंध बिना एक महंमद की

इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास ।

तबक चौदे उजाला, किया तिमिर सब नास ॥ १

रसूल मुहम्मदने इस संसारमें आकर परमात्माकी सुधि देनेका जो महान कार्य किया है उसको मैं थोड़ा प्रकाशित करता हूँ और उनके वचनोंको स्पष्ट करते हुए चौदह लोकोंमें तारतम ज्ञानकी ज्योतिको प्रकाशित कर अज्ञान-अन्धकारको दूर कर देता हूँ.

प्रताप बडा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख ।

चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख ॥ २

इस प्रकार अन्तिम समयमें सदगुरुके रूपमें आई हुई परमात्माकी शक्ति (मुहम्मद) की महिमा बहुत बड़ी है, जिन्होंने सबको आनन्दित किया है. उन्होंने चौदह लोकके प्राणियोंके सभी प्रकारके कष्ट मिटा दिए.

इमाम मोमिन इसक, सब मुख एही सबद ।

सबद ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद ॥ ३

इसलिए सभीके मुखमें सदगुरु (इमाम), ब्रह्मप्रियाओं (मोमिन) तथा उनके प्रेम (इश्क) की ही चर्चा होगी. इस प्रकार अन्तिम धर्मगुरु (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त अन्य कोई शब्द ही सुनाई नहीं देगा.

आलम सब अल्लाह की, तामें छोडी न काहूं हद ।

दौड के कोई न पोहोंचिया, बिना एक महंमद ॥ ४

ये सारे प्राणी परमात्माकी ही रचना हैं किन्तु उनमेंसे किसीने भी परमात्माको

खोजते हुए क्षर ब्रह्माण्डकी सीमाको पार नहीं किया. स्वयं परमात्मा द्वारा प्रशंसित अन्तिम धर्मगुरु (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त कोई भी साधक विहङ्गम मार्ग अपनाकर ब्रह्मधाम तक नहीं पहुँचा.

**कै जातें दौडी जहानमें, पर आया न काहूँ दरद ।**

**तो किन्हूँ न पाइया, बिना एक महंमद ॥ ५**

इस संसारमें विभिन्न प्रकारकी जाति तथा वर्णके लोगोंने तीव्र साधनाएँ कीं, किन्तु परब्रह्म परमात्माके विरहकी पीड़ाका अनुभव किसीको भी नहीं हुआ. परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्री श्यामाजीके अवतार श्रीदेवचन्द्रजीके अतिरिक्त किसीने भी परब्रह्मके साक्षात् दर्शन नहीं किए.

**पंथ पैडे दीन मजहब, कर कर गए रबद ।**

**पर हुआ न कोई काम का, बिना एक महंमद ॥ ६**

विभिन्न मत-मतान्तर तथा सम्प्रदायोंके लोग परमात्माके विषयमें परस्पर वादविवाद करते हुए चले गए. परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्रीश्यामाजी (मुहम्मद) के अवतार स्वरूप श्रीदेवचन्द्रजी द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञानके बिना, अन्य कोई भी ज्ञान परब्रह्मकी पहचान करवानेके लिए सक्षम न हुआ.

**बडे बडे ग्यानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूँ हारद ।**

**कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महंमद ॥ ७**

संसारमें बड़े-बड़े गुणवान् ज्ञानी मुनि हो गए किन्तु किसीने भी परमप्रिय (हार्दिक-हारद) परमात्माको साक्षात् रूपमें प्राप्त नहीं किया. परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्यामाजी (मुहम्मद) के अवतार श्रीदेवचन्द्रजी महाराजके अतिरिक्त अन्य सभी लोग परमात्माके विषयमें अनुमानकी बात करते हुए खाली हाथ लौट गए.

**कै पोथी पढ पढ पढहीं, पर ना सुध हद बेहद ।**

**मेहेनत सीधी ना हुई, बिना एक महंमद ॥ ८**

ऐसे कई विद्वान जीवन भर धर्मग्रन्थोंको पढ़ते रहे किन्तु क्षर जगत (हद) एवं उससे परे अक्षर (बेहद) को समझ नहीं सके. परमात्मा द्वारा प्रशंसित

श्यामाजीके अवतार श्री देवचन्द्रजीके अतिरिक्त अन्य किसीकी भी साधना सफल नहीं हुई.

**कै जुदी जुदी जिनसों खोजिया, सबों आप अपने मद ।**

**तिनसे कछुए ना सरया, बिना एक महंमद ॥ ९**

अनेक साधकोंने अपने-अपने मदमें विभिन्न साधनाओंके द्वारा परब्रह्म परमात्माको खोजना चाहा, परन्तु परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्रीश्यामाजीके अवतार सद्गुरुके अतिरिक्त किसीकी भी साधनाएँ सिद्ध नहीं हुईं.

**कै पढे किताबें सहीफे, पर हुआ न काहूँ मकसद ।**

**बका तरफ किन पाई नहीं, बिना एक महंमद ॥ १०**

कई ज्ञानियोंने विभिन्न प्रकारके धर्मग्रन्थों (सहीफों) को पढ़ा, किन्तु किसीको भी अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें सफलता नहीं मिली. परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्रीश्यामाजीके अवतार श्री देवचन्द्रजीके बिना किसीने अखण्ड परमधामका मार्ग प्राप्त नहीं किया.

**कै बंदे एक हादी के, जुदे पडे कर जिद ।**

**पर हक किने न पाइया, बिन एक महंमद ॥ ११**

एक ही पथ प्रदर्शक (गुरु) के अनुयायियोंमें भी कई लोग दुराग्रहके कारण एक दूसरेसे अलग हो गए, जिससे अनेक सम्प्रदाय बने, किन्तु परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्यामाजीके अवतार श्री देवचन्द्रजीके अतिरिक्त किसीने परब्रह्मको प्राप्त नहीं किया.

**कै पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूँढ ढूँढ हुए सरद ।**

**सुन सुरैया पार ना ले सके, बिना एक महंमद ॥ १२**

अपनी विद्वत्तामें धुरन्धर कहलाने वाले कई लोग परब्रह्मकी खोजमें असफल होकर शान्त पड़ गए. परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्रीश्यामाजीके अवतार निजानन्द स्वामी (मुहम्मद महदी) के अतिरिक्त शून्य निराकार ज्योति स्वरूपके पारका मार्ग कोई न ले सका.

कै नाम इमाम धर धर गए, बोल बोल गए बेरद ।

ठौर कायम किने न पाइया, बिना एक महंमद ॥ १३

कई लोग स्वयंको धर्मगुरु (इमाम) कहलानेके लिए बड़ी-बड़ी निरर्थक बातें करते चले गए किन्तु परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्रीश्यामाजीके अवतार श्री देवचन्द्रजी (महदी महंमद) के बिना किसीको भी अखण्ड (परम) धामकी प्राप्ति नहीं हुई.

बडे बडे सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद ।

जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद ॥ १४

परमात्मा प्राप्तिके विकट मार्ग पर चलनेके लिए बड़े-बड़े धर्मयोद्धा (पण्डितजन) तत्पर हुए, किन्तु कोई भी विजयी वीर पुरुषके समान सफल साधक न बन सका. निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं हुआ जो अक्षर (नूर) से परे अक्षरातीतकी सुधि प्राप्त कर सका हो.

केतेक पर सिर बांधेके, कर कर गए जबद ।

सो सारे बेसुध गए, बिना एक महंमद ॥ १५

अनेक विद्वान् विद्वत्ताके चिह्नोंको सिर पर बाँधकर स्वयं श्रेष्ठ कहलाए, किन्तु निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त अन्य सभी साधक ब्रह्मविषयमें बेसुधि ही रह गए.

अंग मार जार उडावहीं, जो हते जोर जलद ।

पर ए सुध काहूं ना परी, बिना एक महंमद ॥ १६

कई तपस्वियोंने कठिन तप साधनामें अपने शरीरको तपाया, इन्द्रियोंको निस्तेज बनाया तथा शरीरको भारी कष्ट दिया, किन्तु निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त ऐसे किसी भी साधकको परमधामकी सुधि नहीं हुई.

कै रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद ।

कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद ॥ १७

कई साधक परमात्माकी खोजमें दिन-रात भटकते रहे किन्तु परमात्माके दर्शन प्राप्त न कर सके. निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त परब्रह्म परमात्माके अखण्ड आनन्दका अनुभव उन्हें कौन करा सकता है ?

कै लालै लाल कहावते, सो हो गए सब जरद ।

और लाल कोई न हुआ, बिना एक महंमद ॥ १८

परमात्माकी प्राप्तिको सामान्य कार्य समझकर स्वयंका विशेष सामर्थ्य दिखाने वाले कई साधक (लाल) अपनी साधनाकी असफलताके कारण निस्तेज हो गए. निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति इस कार्यके लिए समर्थ (लाल) न हो सका.

ए खेल खावंद जो त्रैगुन, कहें हम ही हैं परमपद ।

और खावंद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद ॥ १९

इस मायावी रचनाके स्वामी कहलाने वाले त्रिगुणाधिपति-ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भी स्वयं परम पद कहलाने लगे, किन्तु इस पूरी सृष्टिको ब्रह्मज्ञान देनेका अधिकार रखनेवाले निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त कोई भी इस प्रकार जगतका स्वामी न हो सका.

कै वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद ।

और मुरसद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद ॥ २०

कई धर्म गुरु (मुर्शिद), ऋषि (वली), सन्देश वाहक (पैगम्बर) और महा मानव (आदम) कहलाए, किन्तु निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति सद्गुरु (मुर्शिद) नहीं बन सका.

औलिये अंबिये फिरस्ते, जेता कोई पैद ।

पर अलहा किनहू ना लह्या, बिना एक महंमद ॥ २१

इस सृष्टिमें कितने ही ऋषि जन (वली), नबी (पैगम्बर) तथा फरिश्ते (देवी-देवता) कहलाते हैं किन्तु निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त अन्य किसीको भी परब्रह्म परमात्माका साक्षात् अनुभव नहीं हुआ.

आद मध और अबलों, कोई न पोहोंच्या कद ।

खुद खबर किन ना दर्ई, बिना एक महंमद ॥ २२

सृष्टिके आरम्भसे लेकर मध्यकाल तथा अभी तक कोई भी साधक परमात्माकी सर्वोपरिता (उच्चता) को समझ नहीं पाया. निजानन्द स्वामी

(महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त किसीने भी परब्रह्म परमात्माके स्पष्ट समाचार नहीं दिए.

**चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद ।**

**सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महंमद ॥ २३**

इस सृष्टिमें चौदह लोकोंके सभी धर्मग्रन्थोंका सार मैंने देख लिया है. वे सभी क्षर ब्रह्माण्डकी सीमा तक पहुँच कर उससे आगेके लिए मौन हो गए. क्षर-अक्षरसे परे अक्षरातीतकी बात निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) के बिना कोई भी नहीं कर सका.

**ऊपर तले माहें बाहेर, ए उड जासी ज्यों गरद ।**

**सो फेर कायम कौन करावहीं, बिना एक महंमद ॥ २४**

इस ब्रह्माण्डमें सत्यलोकसे लेकर पाताल पर्यन्त चौदह लोकोंके अन्दरकी सृष्टि तथा बाहरके अष्टावरण आदि सबके सब महाप्रलयमें धूलकी भाँति उड़ जाएँगे. पुनः इस सृष्टिको अखण्ड करवानेकी क्षमता परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्यामाजीके अवतार निजानन्द स्वामी (मुहम्मद महदी)के अतिरिक्त अन्य किसके पास है ?

**जो दुनियां खाकें रल गई, सबों कर डारी रद ।**

**सो फेर कौन उठावहीं, बिना एक महंमद ॥ २५**

इस नश्वर जगतके जीव मिट्टीकी भाँति इस तुच्छ जगतमें लीन होकर अपना अस्तित्व खो बैठे हैं, उनको भी समर्थ बनाकर अखण्ड मुक्ति स्थलोंका सुख परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्रीश्यामाजीके अवतार निजानन्द स्वामी (आखिरी मुहम्मद) के अतिरिक्त अन्य कौन दे सकता है ?

**तबक चौदे ख्वाब के, ए खेल झूठा है सब ।**

**सो बका कौन करावहीं, बिना एक महंमद ॥ २६**

ये चौदह लोक स्वप्नवत् होनेसे यहाँकी सभी सृष्टि मिथ्या कहलाती है. इस मिथ्या सृष्टिको परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्यामाजीके अवतार श्रीदेवचन्द्र (आखिरी मुहम्मद) के बिना कौन सत्य (अखण्ड) बना सकता है ?



तत्त्व सबन को नास है, जाको मूल मोह मद ।

सो नेहेचल कौन करावहीं, बिना एक महंमद ॥ २७

जिन पाँच तत्त्वोंसे सारी सृष्टिका सर्जन हुआ, उन सबकी उत्पत्ति मोहसे है और मोह सहित सब नाशवान् हैं। ऐसे स्वप्नवत् ब्रह्माण्डको अखण्ड करने वाला श्रीश्यामाजीके अवतार सद्गुरु (आखिरी मुहम्मद) के बिना दूसरा कौन है ?

ऐसा हुआ न कोई होएसी, जो जावे छोड सरहद ।

फुरमान ल्यावें नूर पार का, बिना एक महंमद ॥ २८

इस ब्रह्माण्डमें सद्गुरु श्रीदेवचन्द्रजी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त कोई ऐसा न हुआ है और न कोई होगा, जो इस संसारकी सीमा (निराकार) को लाँघकर बेहदके पार पहुँचा हो तथा परब्रह्मका सन्देश लाया हो।

पाँच चीज जीव सब उड गए, मसी बका से ल्याए ओषद ।

खिलाए जिवाए कोई ना सक्या, बिना एक महंमद ॥ २९

इस संसारकी रचनाके पाँचों तत्त्व एवं यहाँके सभी प्राणी नाशवान् हैं। इन सबको अमरत्व प्रदान करनेके लिए परमधामसे औषधिके रूपमें तारतम ज्ञान लाने वाले एवं उन्हें उसको पिलाकर अखण्ड करनेवाले निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी (महदी मुहम्मद) के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हुआ है।

सो रसूल तुम खातर, होए आया कासद ।

ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद ॥ ३०

हे ब्रह्मात्माओ ! रसूल मुहम्मद तुम्हारे लिए ही सन्देश वाहक बनकर कुरान लेकर आए। अब वे पुनः प्रियतम परमात्माकी आज्ञासे अन्तिम सद्गुरु (आखिरी मुहम्मद) के साथ प्रकट हुए हैं।

मोमिन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद ।

काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी महंमद ॥ ३१

हे ब्रह्मात्माओ ! ये सन्देशवाहक तुम्हारे लिए सन्देश लेकर आए हैं, तारतम ज्ञान भी तुम्हारे पासमें है फिर भी तुम यहाँ सो कर क्या कर रही हो ?

रसूल मुहम्मदके वचनानुसार स्वयं परब्रह्म परमात्मा ही न्यायाधीश (काजी) बनकर न्याय (कजा) करनेके लिए आए हैं. उन्होंने रसूल मुहम्मदको इस शुभ सन्देश हेतु साधुवाद दिया है.

**उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद ।**

**इसक देखाओ अपना, मासूक करो परसंद ॥ ३२**

इसलिए हे ब्रह्मात्माओ ! अब अज्ञानताकी निद्राको त्यागकर उठ कर खड़ी हो जाओ. तारतम ज्ञान द्वारा परब्रह्म परमात्माका प्रेम प्राप्त कर अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग (हृदय)को आनन्दित करते हुए अपने प्रेमको अभिव्यक्त करो. प्रेमसे अपने धनीको प्रसन्न करनेकी यही शुभ घड़ी है.

**प्रकरण २८ चौपाई १६३**

**सनंध अब सो कहां है महंमद**

**अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग ।**

**कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग ॥ १**

हे ब्रह्मात्माओ ! अब वे मुहम्मद कहाँ पर हैं ? जिनके सन्दर्भमें रसूल मुहम्मदने कुरानमें भविष्यवाणी की थी. तुम अज्ञानकी नींदसे जागृत होकर क्यों विचार नहीं कर रही हो ? रसूल मुहम्मदने जिस समयके लिए भविष्यवाणी की थी, वह अवसर आ गया है. अब अज्ञानताकी नींदमें पड़े रहनेका अवसर नहीं है (उठो और उन मुहम्मदको पहचानो).

**तुम जो अरवाहें अरस की, पर छलें किए हैरान ।**

**बाहेर देखना छोड के, तुम अंतर करो पेहेचान ॥ २**

हे ब्रह्मात्माओ ! तुम तो परमधामकी आत्मा हो तथा परब्रह्मकी अङ्गरूपा हो, परन्तु मायाने तुम्हें व्याकुल (परेशान) किया है. अब बाह्य दृष्टिका त्यागकर तुम अपनी अन्तरात्माकी पहचान करो.

**हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अरस मोमिन कलूब ।**

**क्यों न जागो देख ए सुकन, दिल में अपना मेहेबूब ॥ ३**

परब्रह्म परमात्माने कुरानमें रसूल द्वारा इस प्रकार कहलाया है कि

ब्रह्मात्माओंका हृदय ही मेरा परमधाम है। तुम इन वचनोंको सुन (देख) कर क्यों जागृत नहीं हो रही हो ? वस्तुतः अपने प्रियतम धनी तो अपने ही हृदयमें बैठे हैं।

**ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध ।**

**तो नजर बाहेर पड गई, जो भूले अरस की सुध ॥ ४**

इस झूठी मायाको देखकर तुमने भी इसी मायाकी बुद्धिको ग्रहण किया है। तुम परमधामको भूल गई हो। इसलिए तुम्हारी दृष्टि बाहर (बाह्य शरीर) की ओर ही लगी हुई है।

**जात भेष ऊपर के, ए सब छल की जहान ।**

**जो न्यारा माहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान ॥ ५**

जाति-पाँति, वर्ण-वर्ग तथा भेष-भूषा आदि शरीरसे सम्बन्धित बाह्य आचरण होनेसे सब मायाकी ही रचना है। जो परमात्मा, पिण्ड ब्रह्माण्ड (ब्रह्माण्डके अन्दरकी सृष्टि तथा ब्रह्माण्डके बाहर शून्य निराकार आदि) से भिन्न हैं, तुम उनको पहचानो।

**काजी कजा जो करसी, तब कहा रसूलें संग हम ।**

**ए सोई दिन आइया, अब क्यों भूलें कदम ॥ ६**

रसूल मुहम्मदने कुरानमें कहा था कि जब परमात्मा न्यायाधीश बनकर आएँगे और न्याय करेंगे, तब मैं भी उनके साथ रहूँगा। अब वही समय आ गया है, इसलिए ऐसे परमात्माके चरण-शरणको क्यों भूल रही हो ?

**कहा रसूलें आवसी, आखर ए मेहेरबान ।**

**नजर जाहेरी क्यों देखोगे, जोलों बातून नहीं पेहेचान ॥ ७**

रसूल मुहम्मदने स्पष्ट कहा था कि अन्तिम समय (क्यामतकी घड़ी) में परम कृपालु परमात्मा आएँगे। जब तक कुरानके गूढ़ रहस्योंकी पहचान नहीं होगी, तब तक बाह्यदृष्टि वाले लोग उन्हें नहीं पहचानेंगे।

**पेहेलें क्यों थे रसूल हक पैं, क्यों ल्याए फुरमान ।**

**अब कौन सरूपें आखर, ए सब करो पेहेचान ॥ ८**

रसूल मुहम्मद परमात्माके पास पहले क्यों पहुँचे, परमात्माके पाससे उनका

आदेश (कुरानके रूपमें) क्यों लेकर आए तथा अब इस अन्तिम समयमें प्रकट हुए स्वरूप कौन हैं ? इन सबकी पहचान कर लो.

**वजूद आवे जो खेल में, सो सब ख्वाब के जान ।**

**ख्वाब देखे जो पार थें, तुम तासों करो पेहेचान ॥ ९**

इस सृष्टिमें शरीर धारण कर आने वाले सभी जीव स्वप्नके माने गए हैं. जो इस स्वप्नसे परे परमधाममें रहकर इस स्वप्नके खेलको देख रही हैं, उन ब्रह्मात्माओंको पहचानो.

**जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब देवे सब भान ।**

**ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान ॥ १०**

जब इन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें तुम परब्रह्म परमात्माके स्वरूपको देखोगे, तब ये सारा स्वप्न (सृष्टि) उड़ जाएगा. इसलिए कुरानके गूढ़ अर्थोंको समझनेका प्रयत्न करो, जिससे पूर्ण पहचान हो जाए.

**ए तो आगे थें कै उडहीं, नूरै की नजर ।**

**तो नूर तजल्ला की नजरो, ए रहेसी क्यों कर ॥ ११**

ऐसे कई स्वप्नवत् ब्रह्माण्ड अक्षरब्रह्मकी दृष्टि मात्रसे ही उड़ जाते हैं, तब अक्षरातीत ब्रह्मकी दृष्टिके समक्ष इनका अस्तित्व ही क्या रहेगा ?

**हक नजर या पर पडे, तो उडे जिमी आसमान ।**

**नूर आगे अंधेरी ना रहे, तुम दिल दे करो पेहेचान ॥ १२**

यदि परब्रह्म परमात्माकी दृष्टि इस मायावी ब्रह्माण्ड पर पड़ेगी, तो धरतीसे लेकर आकाश तकका अस्तित्व ही उड़ जाएगा, क्योंकि प्रकाशके समक्ष अन्धकार नहीं रह सकता. इस तथ्यको तुम हृदयपूर्वक समझलो.

**अब बताऊं या विध, देखो दिल में आन ।**

**जाहे मैं देखाऊंगी, मेरे इमाम की पेहेचान ॥ १३**

हे ब्रह्मात्माओ ! अब मैं इस प्रकार समझानेका प्रयत्न करता हूँ. तुम इस रहस्यको हृदयपूर्वक विचार करो. मैं तुम्हें मेरे सद्गुरु (इमाम) की पहचान स्पष्टरूपसे करवाता हूँ.

आवे अरस से हुकम, तिन हुकमें चले कै हुकम ।

फिरे सो मतलब करके, जाए मिले खसम ॥ १४

परमधामसे पूर्णब्रह्म परमात्माका आदेश इस जगतमें आता है और विभिन्न रूप धारण कर निर्दिष्ट कार्य करता है. इस प्रकार अपने दायित्वका निर्वहन कर वह आदेश पुनः लौट कर धामधनीमें ही मिल जाता है.

[पूर्णब्रह्म परमात्माने प्रकट होकर ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेका आदेश सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीको दिया. सद्गुरुने पुनः यह दायित्व श्रीप्राणनाथजीको सौंपा. इस प्रकार जागनी लीला सम्पन्न कर श्रीप्राणनाथजी श्रीराजजीके चरणोंमें पहुँच जाते हैं. इसी प्रकार रसूल मुहम्मद भी अपना कार्य पूर्ण कर अपने मूल स्वरूपमें मिल जाते हैं.]

भी तितथें रूह आवहीं, आवे नूर से जोस कूवत ।

सो फुरमाया सब करे, पकड के सूरत ॥ १५

ब्रह्मात्माएँ भी उसी परमधामसे अवतरित हुई हैं. उनके लिए ही अक्षरधामसे जिब्रील (जोशका फरिश्ता) अवतरित हुआ. परब्रह्मके आदेशानुसार उसे जितना दायित्व सौंपा गया है, वह शरीर धारण कर सम्पूर्ण दायित्वका निर्वहन करेगा.

नूर मकान से फिरस्ता, आवे असराफील ।

सब उडावे सूर बजाए के, पलक न होवे ढील ॥ १६

अक्षरधाम (नूर मकान) से अक्षरब्रह्मकी बुद्धिका फरिश्ता इस्त्राफील आएगा. वह तारतम ज्ञानरूपी नरसिंहा बजाकर अज्ञानके अन्धकारको उड़ा देगा. इसके लिए वह एक क्षणका भी विलम्ब नहीं करेगा.

भी इत अरस अजीम से, मसी ल्यावें कुंजी रोसन ।

सो तोड कुफर आलम का, साफ करें सबन ॥ १७

श्यामावतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी सभी धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको खोलनेके लिए प्रकाशमय कुञ्जी (तारतम ज्ञान) लेकर परमधामसे आए. वे (इसीके द्वारा) पूरे विश्वमें फैले हुए अज्ञानान्धकारको मिटाकर सबके हृदयको निर्मल बनाएँगे.

**जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग ।**

**सरूप मेहेदी याही को, यामें देखोगे कै रंग ॥ १८**

जब निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (इमाम) इस संसारमें आए, तब ये सारी शक्तियाँ (धामधनीका आदेश, तारतमज्ञान, इस्त्राफील, जिब्रील फरिश्ता आदि) उनके साथ आईं. यही स्वरूप (सभी शक्तियोंको साथ) मेरे हृदयमें प्रवेश कर अन्तिम समयका धर्मगुरु (इमाम महदी) कहलाया. अब ये सभी शक्तियाँ समय और आवश्यकतानुसार विभिन्न कार्य करती हुई दिखाई देंगी.

**याही साथ मिलावा मोमिनों, सबों खास बंदों सोहोबत ।**

**बंदगी जाहेर या बातून, सब बेवरा होसी इत ॥ १९**

इन्हीं स्वरूप (अन्तिम धर्मगुरु) के साथ सभी ब्रह्मात्माएँ आकर मिलेंगी. इस प्रकार सभी जीवोंको भी ब्रह्मात्माओं (खास बन्दों) का सङ्ग प्राप्त होगा. तब बाह्य (दैहिक कर्मकाण्ड) तथा आन्तरिक (मानसिक) उपासनाके महत्त्वका विवरण निरूपित होगा.

**औलियाँ अबिए आसिक, जो खास बंदे सिरदार ।**

**हक बिना कछू ना रखें, इनों दुनी करी मुरदार ॥ २०**

इन आशिक ब्रह्मात्माओंको महात्मागण (औलिया) तथा पैगम्बरगण (अम्बिए) भी कहा गया है. ये ही शिरोमणि विशेष आत्माएँ (खास बन्दे) कहलाती हैं. ये आत्माएँ सत्य वस्तुके अतिरिक्त कुछ भी स्वीकार नहीं करतीं. इन्होंने इस संसारको मृततुल्य (मुरदार) समझकर त्याग दिया है.

**ए माएने ले रसूलें, आए केता किया पुकार ।**

**ए सो किन खातर किया, रूहें अजू ना करें बिचार ॥ २१**

कुरानके इन्हीं गूढ़ार्थोंको लेकर आए हुए रसूल मुहम्मदने कितनी पुकार की ? उन्होंने यह सब किनके लिए किया ? ब्रह्मात्माएँ अभी भी इस पर विचार नहीं करतीं.

ए किन भेज्या कौन आइया, ए सो कौन कारन ।

अब कहे कौन कासों कहे, तुम उठ देखो बातन ॥ २२

यह सन्देश किसने भेजा है, इस सन्देशको लेकर इस जगतमें कौन आया है, और यह सन्देश किसके लिए भेजा गया है ? अब इस सन्देश (कुरान) के रहस्यको कौन किसको समझाएगा ? हे ब्रह्मात्माओ ! जागृत होकर इस रहस्यको समझो.

तुम सूती कौन जगावहीं, केहे केहे मगज कुरान ।

सुध देवे काजी कजाए की, ले माएने करो पेहेचान ॥ २३

हेब्रह्मात्माओ ! तुम तो इस मायामें आकर अज्ञानकी निद्रामें सो गई. कुरानके इन गूढ़ अर्थोंको स्पष्ट कर तुम्हें कौन जगाएगा ? अब आत्म-जागृति (क्यामत) की वेलाके न्यायाधीश एवं उनके न्यायकी सुधि तुम्हें कौन देगा ? तुम इन सब रहस्यों पर विचार करो.

पेहेले ओलखो आप को, पीछे करो मोसों पेहेचान ।

देखो अपने अरस को, याद करो निसान ॥ २४

सर्वप्रथम तुम स्वयंको पहचानो, फिर मेरी पहचान करना (कि मेरे अन्दर कौन-सी शक्ति है). अपने परमधामकी ओर दृष्टि करो और वहाँके चिह्नों (निशानों) को याद करो.

यामें रूह कै भांत के, लेत लजत खान पान ।

अंतर बैठा ताए देखहीं, तुम सब विध करो पेहेचान ॥ २५

इस संसारमें अनेक प्रकारके जीव हैं. वे आहार, विहार आदि लौकिक स्वादमें ही प्रसन्न हैं. हृदयमें बैठी हुई परमात्माकी शक्ति सब कुछ देख रही है. अब तुम उन सबको पहचानो.

कहां इनों की असल, द्रढ करो सोई निसान ।

पार अरस जो कायम, तुम तासों करो पेहेचान ॥ २६

इन जीवोंका मूल (उद्गम स्थल) कहाँ है ? उन सङ्केतों (निशानियों) को

अपने मनमें दृढ़ करो. अखण्ड परमधाम तो शून्य निराकारसे परे है, विशेषतः तुम उसकी पहचान करो.

रूहें फिरस्ते पैगंमर, सुध होवे नूर मकान ।  
सो नूर छोड आगूं चले, तब होवे पेहेचान ॥ २७

तारतम ज्ञानसे ब्रह्मात्माओं, ईश्वरी सृष्टि (फरिश्ते) तथा पैगम्बरोंको अक्षरधाम (नूर मकान) तककी सुधि तो हो जाती है, परन्तु ब्रह्मात्माएँ जब अक्षर धामसे भी आगे चली जाएँगी, तब उन्हें अपने धनीकी पहचान होगी.

ए सुध सब विध ल्याइया, रसूल हाथ फुरमान ।  
काजी कजा भिस्त पार की, ले माएने करो पेहेचान ॥ २८

रसूल साहब इन सब बातोंकी जानकारीके साथ अपने साथ कुरान लेकर आए हैं. अब अन्तिम समयमें न्यायाधीश बनकर आए हुए परमात्मा सबका न्याय कर मायावी सृष्टिको अखण्ड मुक्ति स्थल (बहिश्त) का सुख देंगे और ब्रह्मात्माओंको परमधामका अनुभव करवाएँगे. कुरानके इन गूढ़ अर्थोंको समझकर तुम अपनी पहचान कर लो.

बात रसूल की जो सुने, ताको ताजुब बडा होए ।  
हक बका सुध देवहीं, सो कहे न दूजा कोए ॥ २९

रसूल मुहम्मद द्वारा कथित परब्रह्म परमात्मा एवं उनके धामकी बातोंको सुनकर सभीको आश्चर्य होता है. इस प्रकार अन्य किसीने भी परम सत्यकी बात नहीं की.

एक पैंडे चले दुनियां, रसूल सामी बल ।  
नबी नजर देखें चले, दुनियां चले अटकल ॥ ३०

संसारके लोग तो रसूलका सामना करते हुए अपने ही कर्मकाण्ड (शराअ) के मार्ग पर चलते हैं. रसूल पैगम्बर तो सत्य और असत्यकी पहचान कर चले हैं, जबकि अन्य संसारी जीव अनुमानित मार्ग पर चलते हैं.

दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक ।  
छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख ॥ ३१

छायाके समान अज्ञानके अन्धकार (माया) में रहनेवाले संसारके लोग



परमात्माके विषयमें अनेक अटकलें करते हैं. जिस प्रकार अन्धकार (छाया) सूर्यको नहीं देख सकता, उसी प्रकार अज्ञानके अन्धकारमें रहनेवाले जीव भी परमात्माको देख नहीं सकते और कहते हैं कि उनकी रूप-रेखा कुछ भी नहीं है अर्थात् ब्रह्म निराकार है.

**क्यों सबद आगे चले, तुम कर देखो बिचार ।**

**छाया पार किरना रहें, और सूरज किरनों पार ॥ ३२**

तुम विचार पूर्वक देखो, नश्वर संसारके शब्द इससे परे कैसे पहुँच सकते हैं ? इस मायाजनित क्षर जगतसे परे सूर्यकी किरणोंकी भाँति बेहद-अक्षर हैं और उसके भी मूल सूर्यकी भाँति परब्रह्म परमात्मा तो अक्षर (किरणों) से भी परे हैं.

**पैदास जुलमत काल की, सो तो है सब नास ।**

**खेलें काल के मुखमें, ताए अबहीं करेगो ग्रास ॥ ३३**

यह अज्ञानरूप अन्धकारकी सृष्टि कालसे प्रभावित है, इसलिए उसका नाश अवश्य होना है. सृष्टिके सभी जीव कालके ही मुखमें खेल रहे हैं और काल उन्हें तत्काल ही अपना ग्रास बना लेगा.

**हक सूरत नूर के पार है, तहां सबद न पोहोंचे बुध ।**

**चौदे तबक छाया मिने, इने नहीं सूर की सुध ॥ ३४**

परमात्माका चिन्मय (सच्चिदानन्दमय) स्वरूप तो अक्षर ब्रह्मसे भी परे है. वहाँ न शब्द पहुँचता है और न ही बुद्धि पहुँचती है. ये चौदह लोक छायाके समान अज्ञानरूप अन्धकारमें हैं. इसलिए यहाँके प्राणियोंको परब्रह्म परमात्मारूप सूर्यकी सुधि नहीं होती है.

**कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुन ।**

**याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपन ॥ ३५**

कोई भी प्राणी शून्य-निराकार सहित इस कालको लाँघकर आगे नहीं जा सकता. यहाँके सभी प्राणी उत्पन्न होते ही कालके ग्रास (प्रभाव) में चले जाते हैं, इसलिए अभी तक किसीने भी इसका पार नहीं पाया.

बात बड़ी है काल की, ऐसे कै ब्रह्मांड उपाए ।

काल भी आखर ना रहे, पर ए पेहेलें सबको खाए ॥ ३६

यह काल बड़ा शक्तिशाली है, क्योंकि इसीसे अनेक ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं। अन्तमें तो यह काल भी मिट जाता है, किन्तु उससे (अपने मिटनेसे) पूर्व ही यह पूरे ब्रह्माण्डको अपना घास बना लेता है।

रसूल बिना इन काल को, किने न उलंघ्यो जाए ।

ए सबद काल के पार है, सो क्यों औरों समझाए ॥ ३७

रसूलके अतिरिक्त किसी (भी पैगम्बर) ने कालको लाँघकर पारकी सुधि नहीं दी। रसूलके वचन (शब्द) कालसे परेके हैं, इसलिए वे अन्य लोगोंकी समझमें नहीं आते।

छाया की जो दुनियां, ताए अचरज होए सबन ।

काल के पार जो पोहोचहीं, सो क्यों कर रेहेवे तन ॥ ३८

अज्ञानके अन्धकार (छाया) में निमग्न सभी सांसारिक जीवोंको यह आश्चर्य होता है कि जो कालके पार पहुँचते हैं, वे यहाँ पर यह भौतिक तन धारण कर कैसे रहते हैं अर्थात् उनको तो चिन्मय शरीरमें रहना चाहिए।

हक की खबर जो ल्यावहीं, सो तेहेकीक न रहे आकार ।

जो कदी रहे तो बेहोस, पर कर ना सके पुकार ॥ ३९

परमात्माका सन्देश लेकर जो आता है, वह निश्चय ही शरीरको ही महत्त्व देकर नहीं रह सकता। सम्भवतः उसका शरीर न छूटे तो भी वह बेसुध रहेगा, किन्तु वह अपने मुखसे कुछ कह तो नहीं सकता।

जिन कोई सक तुमें रहे, मैं सब विध देऊं समझाए ।

माणे इन रसूल के, भांत भांत देऊं बताए ॥ ४०

तुम्हारे मनमें किसी भी प्रकारके सन्देह शेष न रह जाँ, इसलिए मैं तुम्हें सब प्रकारसे समझाता हूँ। रसूलके इन वचनोंके गूढ़ार्थ भी मैं तुम्हें विभिन्न प्रकारसे कह देता हूँ।

सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए ।

ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए ॥ ४१

स्वप्नके जीवों पर यदि सत्यकी छाया भी पड़ जाए, तो वे तत्काल मूर्च्छित हो जाते हैं। स्वप्नके जीव सत्य वस्तुको देख ही नहीं सकते, क्योंकि जाग कर सत्यको देखने मात्र से ही वह स्वप्न मिट जाता है।

पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल ।

सो तो पार से आया हक पै, याको जुलमत ना मूल ॥ ४२

परन्तु जिनका नाम ही परमात्माके सन्देशवाहक (रसूल) है, उनको ये अज्ञानी जीव कैसे समझ सकते ? रसूल तो इस स्वप्न जगतसे परे परमधामसे आए हैं, यह अज्ञानरूप अन्धकार (निराकार) उनका मूल नहीं है।

बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग ।

कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग ॥ ४३

अतः उन्होंने प्रियतम परमात्माकी बात उनकी ही चाहक (आशिक) अङ्गनाओंके लिए (सन्मुख) की है। इसलिए कुरान पुकार कर कहता है कि रसूलका सम्बन्ध अज्ञान अन्धकारसे नहीं, अपितु उससे परे परब्रह्म परमात्मासे है।

सो बात करे मेहेबूब की, वाको अंग न कोई उरझाए ।

ज्यों किरने सूरज देखहीं, त्यों त्यों जोत चढाए ॥ ४४

इसलिए उन्होंने प्रियतम परमात्माकी बात कही, इसके लिए उन्हें किसी भी प्रकारका सङ्कोच नहीं हुआ। जिस प्रकार किरणें सूर्यकी ओर उन्मुख हो जाती हैं, तो उनकी ज्योति और बढ़ जाती है। उसी प्रकार परमात्माकी बात करनेसे रसूल मुहम्मदका जोश बढ़ता गया, इसलिए वे अधिक महत्वपूर्ण माने गए हैं।

सो जाने सुध पार की, हक मिलिया जिन ।

किरना सूरज ना अंतर, यों मासूक आसिक तन ॥ ४५

पारकी सुधि वही प्राप्त कर सकता है, जिसको परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार हो गया है। जैसे किरण और सूर्यमें अन्तर नहीं है, इसी भाँति आशिक और मासूकका भी अङ्ग-अङ्गीका सम्बन्ध है।

सीधे सबद रसूल के, पर ए समझे कछू और ।

जोलों सबद ना चीनहीं, तोलों न पाइए ठौर ॥ ४६

वैसे तो रसूलके सभी शब्द सीधे (सरल) हैं, किन्तु अल्पज्ञ जीव उन्हें और ही समझ पाए. जब तक इन शब्दोंकी वास्तविकताको न समझा जाए, तब तक परमधामका अनुभव नहीं होगा.

प्रकरण २९ चौपाई १००९

सनंध इमाम रसूल की

खातर प्यारी रूहें मोमिन, मैं कहूं अरस सबद ।

बका सबद कहे बिना, उडे ना सरियत हद ॥ १

मैं अपनी प्यारी ब्रह्मात्माओंके लिए परमधामकी बात कह रहा हूँ, क्योंकि अखण्ड परमधामकी बात (ज्ञान) कहे बिना उनसे लौकिक कर्मकाण्ड नहीं छूट रहा है.

सुध दुनी हद ना बेहद, कौन रसूल कौन हम ।

कागद ल्याया किनका, कहाँ सो अरस खसम ॥ २

संसारके सामान्य प्राणियोंको तो यह भी सुधि नहीं कि यह सीमित संसार (हद) क्या है, इससे परे असीम भूमिका (बेहद) क्या है, रसूल मुहम्मद कौन हैं, हम कौन हैं, रसूल साहब किसका समाचार लेकर आए हैं तथा सभीके स्वामी परमात्मा कहाँ रहते हैं ?

ए सुध किन पाई नहीं, जो लिखी माहें कागद ।

ए सब खेलें ख्वाब में, कोई न छोडे हद ॥ ३

कुरानके द्वारा परमात्माने जो सन्देश भिजवाया है, उसकी सुधि किसीको भी नहीं हुई. क्योंकि ये सभी सांसारिक जीव स्वप्नमें ही खेल रहे हैं, इसलिए वे नश्वर जगतकी सीमाको छोड़ नहीं रहे हैं.

हद की बांधी सब दुनियां, हक तरफ न करे नजर ।

पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवें खबर ॥ ४

नश्वर जगतके कर्मबन्धनोंमें बँधी हुई दुनियाँ परमात्माकी ओर दृष्टि ही नहीं

डालती. इसलिए सद्गुरु (हादी) ने हृद और बेहृदको छोड़ कर उससे परे परब्रह्म परमात्माकी सुधि दी है.

**हाए हाए किनें ना पेहेचानिया, ए जो रसूल रेहेमान ।**

**कहे किताबें जाहेर, सब पर ए मेहेरबान ॥ ५**

बड़े खेदकी बात है कि किसीने भी दयालु रसूलकी पहचान नहीं की. कुरानमें स्पष्ट कहा है कि वे सबके प्रति दयावान् हैं.

**सबद रसूल क्यों चीनहीं, ए जो चाम के दाम ।**

**ख्वाबी दम क्यों समझहीं, ए जो अल्ला के कलाम ॥ ६**

मात्र बाह्य स्वरूपका ही मूल्य समझने वाले ये लोग रसूल द्वारा कहे गए वचनोंको कैसे पहचानेंगे ? वस्तुतः ये स्वप्नके जीव परमात्मा द्वारा कहलाए हुए वचनोंको कैसे समझ सकते हैं ?

**जो दम होवे ख्वाब के, तिन क्यों उपजे विचार ।**

**ए सब ढूँढे ख्वाब में, माएने हवा नूर पार ॥ ७**

जो स्वयं ही स्वप्नके जीव हैं, उनमें स्वप्नसे परेकी बात जाननेकी इच्छा ही उत्पन्न नहीं होती. इसलिए वे शून्य निराकारसे परे अक्षर एवं उनसे भी परेके शब्दका अर्थ स्वप्नमें ही ढूँढते हैं.

**ए सांचा नूरी साईं का, इनके सबद अगम ।**

**फिरस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम ॥ ८**

रसूल तो स्वयं परब्रह्म परमात्माकी किरणों (नूर) मेंसे हैं. इसलिए इनके शब्द भी अगम्य होते हैं. इस संसारके देवता (फिरिस्ते) तथा मानव सब मिलकर भी अपने मुखसे परमधामकी बात नहीं कर सकते.

**आप रसूल नहीं हृद का, इनों अरस अजीम असल ।**

**दुनी सुरैया उलंघ ना सके, पूरी हृद की भी नहीं अकल ॥ ९**

रसूल साहब इस क्षर जगतके नहीं हैं. इनका मूल तो परमधाम है. संसारके जीव तो ज्योति स्वरूपको भी पार नहीं कर सकते. उन्हें क्षर जगतके सम्बन्धमें भी पूरी जानकारी नहीं है.

ए सबद पार बेहद के, ताके माएने करसी सोए ।

सबद महंमद जानें मेहदी, दूजा हद का न जाने कोए ॥ १०

ये वचन तो बेहदसे भी परेके हैं. इसलिए उनका अर्थ भी वे ही कर सकते हैं, जो स्वयं बेहदसे परेके हैं. पारके वचनोंको तो निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी महाराज (महदी मुहम्मद) ही जानते हैं. इस नश्वर जगतके अन्य जीव इनको नहीं जान सकते.

हद बेहद दोऊ जुदे, मेहेदी महंमद बिना न होए ।

अब देखो जाहेर हुए, रह्या सबद न हद का कोए ॥ ११

नश्वर जगत (हद) और अखण्ड भूमि (बेहद) दोनोंकी अलग-अलग पहचान निजानन्द सद्गुरु (महदी मुहम्मद) के बिना अन्य किसीसे नहीं हुई है. देखो, वे स्वयं अब मेरे हृदयमें प्रकट हो गए हैं. इसलिए अब नश्वर जगतके ज्ञान (शब्द) का अस्तित्व नहीं रहेगा.

एही किताब बहुतन पें, पर माएने न पाए किन ।

अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन ॥ १२

अनेक लोगोंके पासमें यही कुरान ग्रन्थ है, किन्तु इसके गूढ़ रहस्योंको अब तक कोई भी ग्रहण नहीं कर सका. अब तारतम ज्ञानके द्वारा पूरे ब्रह्माण्डमें इसके प्रकाशको फैलते हुए देख लो.

जो दम होवे ख्वाब के, सो क्यों करसी पेहेचान ।

चीन्हा नहीं रसूल को, किन हिंदू न मुसलमान ॥ १३

जो स्वयं स्वप्नके जीव होंगे, वे इसकी पहचान कैसे कर पाएँगे ? हिन्दू या मुसलमान किसीने भी अब तक रसूल मुहम्मदको नहीं पहचाना.

केतेक संग रसूल के, रेहेते रात दिन माहें ।

ना तो ओ बुजरक हुते, पर कछू अली बिन चीन्हा नाहें ॥ १४

कुछ लोग रात-दिन रसूल मुहम्मदके साथ रहते थे. वैसे तो वे सब महान (समझदार) थे, किन्तु अलीके बिना अन्य कोई भी रसूलको पहचान नहीं सका.

तबक चौदे हद के, चौगूद निराकार ।

ए सबद हदी क्यों समझहीं, जो निराकार के पार ॥ १५

इस ब्रह्माण्डके चौदह लोक सभी नश्वरताकी सीमामें आते हैं तथा ब्रह्माण्डके चारों ओर शून्य निराकार व्याप्त है। इसलिए निराकारके पारका ज्ञान (शब्द) हदके जीव कैसे समझ सकते हैं ?

बेहद को सबद न पोहोचहीं, ए हदमें करें बिचार ।

कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार ॥ १६

सीमित जगतका ज्ञान (शब्द) अखण्डभूमि (बेहद) तक नहीं पहुँच सकता, इसलिए हदके जीव नश्वर जगत (हद)का ही विचार करते हैं। यदि इस जगतमें कोई समझदार भी कहलाते हैं, वे भी परमात्माको निराकार ही कहते हैं।

फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून ।

क्या है सुन निरंजन, कछू खबर ना दर्ई इन ॥ १७

फिर उनको पूछा जाए कि अद्वितीय (बेचूँ) और अवर्णनीय (बेचगून) किसके लिए कहा गया है ? शून्य निराकार निरंजन किसे कहते हैं ? (तो वे कुछ भी उत्तर नहीं दे सकते) वस्तुतः उनको किसीने भी इस सन्दर्भमें जानकारी नहीं दी है।

निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम ।

ना सुध छल ना वतन, ए बुजरकों बडी गम ॥ १८

इन जीवोंको साकार तथा निराकारकी सुधि नहीं है। उन्हें न अपनी सुधि है और न परमात्माकी पहचान है। न वे इस स्वप्नवत् जगतको जानते हैं और न ही वे परमधामको पहचानते हैं। नश्वर जगतके अल्प ज्ञानियोंकी गति ही इस प्रकारकी है।

खासा नूरी खुदाए का, ए बोल्या सबदातीत ।

सब मिल सबद बिचारहीं, पर पावें ना वे रीत ॥ १९

रसूल मुहम्मद स्वयं परमात्माके किरण (नूर) स्वरूप हैं, उन्होंने शब्दातीत परमधाम एवं परब्रह्मका समाचार दिया है। यहाँके ज्ञानीजन सभी मिलकर

उनके वचनों पर विचार तो करते हैं, किन्तु गूढ़ रहस्यको प्राप्त नहीं कर सकते.

**आदम मिलो कै औलिए, अंबिए बडे यकीन ।**

**नूरी कहावें फिरस्ते, पर किन रसूल को ना चीन ॥ २०**

संसारमें प्रथम मानव (आदम), ऋषिगण (औलिए) अवतारीजन (अंबिए) तथा नूरी फरिश्ते इत्यादि बहुत हुए, किन्तु किसीने भी रसूलकी पहचान नहीं की.

**सिफत बडी रसूल की, निराकार के पार अखंड ।**

**ऐसा कोई ना हुआ, ना तो हुए कै ब्रह्मांड ॥ २१**

रसूल साहेबकी बड़ी प्रशंसा की गई है, उन्होंने निराकारके पार अखण्ड परमधामकी बातें बताई हैं. पहले भी ऐसे कई ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुए हैं, किन्तु उन ब्रह्माण्डोंमें इस प्रकार परमधामकी बात करने वाला कोई भी नहीं हुआ.

**दीन दरसन फिरके मजहब, और मिलो कै जात ।**

**पढ पढ सिर बांधे पर, पर पाई ना नबी की बात ॥ २२**

इस संसारमें प्रचलित धर्म-सम्प्रदाय, मत-मतान्तर तथा कई जातियाँ हैं. उनमें कई विद्वान तथा दार्शनिक भी हो गए, जिन्होंने धर्म ग्रन्थोंको पढ़-पढ़ कर अनेक उपाधियाँ अपने सिर पर बाँध भी लीं, किन्तु उनमें से कोई भी पैगम्बरके वचनोंका रहस्य नहीं समझ पाया.

**चौदे तबक की रूहमें, ऐसा ना कोई समर्थ ।**

**सबद महंमद मेहेदी बिना, करे सो कौन अरथ ॥ २३**

चौदह लोकोंके जीवोंमें ऐसा कोई भी समर्थ नहीं हुआ है (जो कुरानके इन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर सके). मेरे हृदयमें बैठे निजानन्द सद्गुरु (महदी मुहम्मद)के अतिरिक्त कुरानके गूढ़ रहस्योंको कौन स्पष्ट कर सका ?

**ए माएने इमाम बिना, कोई कर ना सके और ।**

**अब देखोगे इन माएनों, सुख लेसी सब ठौर ॥ २४**

वस्तुतः सद्गुरु (इमाम)के बिना यह रहस्य कोई स्पष्ट नहीं कर सकता. अब



इन रहस्योंके स्पष्ट होनेसे सभी लोग आनन्दका अनुभव करते हुए दिखाई देंगे.

नूर बड़ा इन सबद में, सो देख थके सब कोए ।

इमाम बिना इन नूर को, रोसन क्यों कर होए ॥ २५

इन वचनों (शब्दों)में ज्ञानका बड़ा प्रकाश भरा हुआ है, इसको देखकर सभी लोग चकित हो गए. वस्तुतः सद्गुरु (इमाम)के बिना यह ज्ञान कैसे प्रकाशित हो सकता है ?

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मुसाफ मगज नूर ।

कुफर चौदे तबक का, किया इमामें दूर ॥ २६

मैं इस जीह्वाके द्वारा कुरानके रहस्योंके प्रकाशका वर्णन कैसे करूँ ? सद्गुरु (इमाम)ने प्रकट होकर चौदह लोकोंके अज्ञानरूप अन्धकारको दूर कर दिया.

फुरमान नूर के पार का, सो क्यों कर इनों समझाए ।

ए माएने रोसन तब होवहीं, जब बैठे इमाम इत आए ॥ २७

अक्षरसे भी परे अक्षरातीत धामसे आए हुए आदेश पत्र (कुरान) के गूढ़ार्थ स्वप्नके जीवोंकी समझमें कैसे आते ? ये रहस्य तभी प्रकाशित हुए जब सद्गुरु (इमाम) तारतम ज्ञान लेकर परमधामसे आए.

ल्याए खजाना वतनी, करसी आए इंसाफ ।

देसी सुख कायम, आवसी सो असराफ ॥ २८

कुरानमें कहा है कि परब्रह्म परमात्मा परमधामसे ही तारतम ज्ञानरूप सम्पत्ति लेकर न्यायाधीशके रूपमें आएँगे और न्याय करेंगे. समस्त जीवोंको अखण्ड सुख देनेके लिए उनके साथ श्रेष्ठ आत्माएँ (अशराफ) भी आएँगी.

ए रसूलें पेहेलें कहा, खोलसी माएने इमाम ।

उमेदा मोमिन दुनी की, होसी जाहेर हुए कलाम ॥ २९

रसूल साहेबने पहले ही भविष्यवाणी की थी कि सद्गुरु (इमाम) प्रकट होकर कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट कर देंगे. परमात्माने सद्गुरु (इमाम) के रूपमें पधारकर कुरानके गूढ़ार्थ स्पष्ट कर दिए. अब ब्रह्मात्माओं तथा सांसारिक

जीवोंकी आशाएँ पूर्ण हो जाएँगी.

मोमिन कारन आवसी, आखर करी सरत ।

हम भी फेर तब आवसी, सुख देसी कर सिफायत ॥ ३०

उन्होंने यह वचन दिया था कि परमात्मा ब्रह्मात्माओंके लिए अन्तिम समयमें आएँगे. पुनः मैं भी उस समय उनके साथ आऊँगा और संसारके जीवोंकी अनुशंसा (सिफारिश) कर उन्हें अखण्ड सुख दिलानेमें सहयोग करूँगा

जो सुख देसी इमाम, सो या जुबां कह्यो न जाए ।

उमेदा मोमिन की, पूरी ईसा इमामें आए ॥ ३१

उस समय सद्गुरु (इमाम)के रूपमें आए हुए परमात्मा सभी जीवोंको अखण्ड सुख प्रदान करेंगे, इस जिह्वासे उसका वर्णन नहीं हो सकता. इस प्रकार सद्गुरुने आकर ब्रह्मात्माओं तथा सांसारिक जीवोंकी आशाएँ पूरी कर दीं.

नूर बडो इन माएनों, सो अब हुआ रोसन ।

तबक चौदे गरजिया, बरस्या नूर वतन ॥ ३२

तारतम ज्ञानसे कुरानके गूढ़ रहस्य खुल जानेसे चारों ओर इसका प्रकाश फैल गया. चौदह लोकमें इस ज्ञानकी गर्जना होने लगी और सर्वत्र परमधामके दिव्य (नूरी) ज्ञानकी वर्षा होने लगी.

कह्या जो इमाम आवसी, सो सरत हुई सत ।

आगे इन इमाम के, जाहेर होसी बडी मत ॥ ३३

रसूल साहेबने कहा था कि अन्तिम समयमें परमात्मा सद्गुरु (इमाम) के रूपमें प्रकट होंगे, उनके ये वचन अभी (निजानन्द स्वामीके प्रकट होनेसे) सत्य सिद्ध हुए. अब इन सद्गुरु (इमाम) से प्राप्त जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान, बड़ी बुद्धि) (मेरे द्वारा) प्रकाशित होगी.

एक लुगा झूठ ना होवहीं, जो बोले हजरत ।

आगे ही थें सब कह्या, पर क्यों समझे रूह गफलत ॥ ३४

हजरत मुहम्मदने जैसा कहा है, उसमें एक भी शब्द असत्य नहीं होगा. उन्होंने

तो पहले से ही कह दिया है किन्तु स्वप्नके अल्पज्ञ जीव इसे क्या समझ पाएँ ?

अब सो इमाम आइया, याही दिन आखर ।

सबद रसूल के जाहेर, फिरवलसी सब पर ॥ ३५

अब वे सद्गुरु (इमाम) (मेरे अन्दर) प्रकट हो गए हैं, इसलिए आखिर (कयामत)का समय आ गया है. अब रसूलके कहे हुए वचन सर्वत्र (सबके हृदयमें) फैल जाएँगे.

पैन्डा बताया रसूलें, पर कोई न समझया तब ।

तिन राह सब चलसी, राजी हो हो अब ॥ ३६

रसूल साहेबने उसी समय सत्य मार्गके लिए संकेत किया था, तब किसीने भी उसे नहीं समझा. अब (तारतम ज्ञानसे अज्ञान दूर हो जाने पर) सब लोग प्रसन्न होकर उस सत्य मार्गका अनुसरण करेंगे.

धन रसूल धन फुरमान, धन आया जिन खातर ।

धन मेहेदी महंमद रूहअल्ला, धन धन ए आखर ॥ ३७

इसलिए रसूल मुहम्मद धन्य हैं, उनके द्वारा आया हुआ सन्देश (कुरान) भी धन्य है और वह जिनके लिए आया है, वे ब्रह्मात्माएँ भी धन्य हैं. निजानन्द सद्गुरु (महदी मुहम्मद) बन कर आई हुई श्यामाजी (रूह अल्लाह) भी धन्य हैं तथा यह अन्तिम वेला (कयामतकी घड़ी) भी धन्य है.

अब सबमें जाहेर हुए, बडे रसूल के सबद ।

इमाम आए फजर हुई, उड गई अंधेरी हद ॥ ३८

रसूल साहेबके महत्त्वपूर्ण वचन (शब्द) सर्वत्र प्रकाशित हो गए हैं. अन्तिम धर्मगुरु (इमाम मेहदी) के मरे हृदयमें आगमनसे नश्वर जगतका अज्ञान मिट गया और ब्रह्मज्ञानका प्रभात हो गया.

एते दिन ढांपे हुते, मगज माएने बातन ।

आए इमाम बखत बदल्या, सैतान मारया सबन ॥ ३९

इतने समयसे कुरानके गूढ़ रहस्य छिपे हुए थे. अब अन्तिम धर्मगुरु (इमाम

महदी) के आगमन से समयमें परिवर्तन हुआ और उन्होंने सबके हृदयसे कलियुग (अज्ञान) रूपी शैतानको मार भगाया।

जाहेर साहेब हुए पीछे, चले न दूजी बाट ।

पंथ पैडे मजहब सब उड गए, सब हुआ एकै ठाट ॥ ४०

इस प्रकार सद्गुरुके रूपमें परमात्माके प्रकट होने पर उनके द्वारा निर्दिष्ट मार्गके अतिरिक्त किसी अन्य मार्गको लोग नहीं अपनाएँगे। इसलिए अब सभी सम्प्रदाय, मत-मतान्तरोंका अस्तित्व नहीं रहा। सभी एकरूप हो कर एक ही परमात्माके उपासक हो गए।

आया सबका खसम, सब सबदों का उस्ताद ।

महंमद मेहेदी आए बिना, कौन मिटावे बाद ॥ ४१

अब तो सबके स्वामी प्रकट हो गए हैं। वे सभी धर्म ग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको खोलनेमें समर्थ हैं। इस प्रकार जागृत बुद्धिके धनी बुद्धजी-निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद)के प्रकट हुए बिना संसारमें प्रचलित मत-मतान्तरोंके वाद-विवादको कौन मिटा सकता है ?

घर घर होसी सादियां, उड गई गफलत ।

जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखरत ॥ ४२

ऐसे सद्गुरुके प्रकट होने पर घर घरमें प्रसन्नता छा जाएगी, क्योंकि सभीके हृदयसे अज्ञानका अन्धकार उड़ गया। रसूलने कुरानमें जिस प्रकार कहा था, वही सब हो गया। इस प्रकार अन्तिम वेला (कयामतकी घड़ी) आ गई।

तारीफ महंमद मेहेदी की, ऐसी सुनी न कोई क्याहें ।

कै हुए कै होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नाहें ॥ ४३

परब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रशंसित श्री श्यामाजीके अवतार निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी (महदी मुहम्मद) की इस प्रकारकी प्रशंसा किसीने भी कहीं पर नहीं सुनी थी। ऐसे कई ब्रह्माण्ड पहले भी उत्पन्न हुए हैं और भविष्यमें भी होंगे, किन्तु इस प्रकार परब्रह्म परमात्माकी शक्ति किसी भी ब्रह्माण्डमें नहीं आएगी।

प्रकरण ३० चौपाई १०५२

## सनंथ दजाल की

[इस प्रकरणमें माया अथवा आसुरी प्रवृत्तिको कलियुगी शैतान-दज्जाल कहा गया है]

जिन मोमिन के कारने, रचिया एह मंडल ।

तिनकी उमेदां पूरने, मेहेदी महंमद आए मिल ॥ १

जिन ब्रह्मात्माओंके लिए इस संसारकी रचना की गई है, उन्हीं ब्रह्मात्माओंकी इच्छाओंको पूर्ण करनेके लिए निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) मेरे हृदयमें प्रकट हुए हैं।

अब नेक कहूं आखर की, जो होसी सब जाहेर ।

बांधें दजालें मोमिन, अंतर माहें बाहेर ॥ २

अब मैं आत्म-जागृति (क्यामत) की वेला की थोड़ी-सी चर्चा करता हूँ, बादमें तो वह सब प्रत्यक्ष हो जाएगी. इस समय कलियुगरूपी शैतान (दज्जाल)ने ब्रह्मात्माओंको अन्दर (मन)से और बाहर (बाह्य कर्मकाण्ड)से बाँध लिया है.

आया इमाम आलम का, तब कुफर रहेवे कित ।

पर कहूं मोमिन दजाल की, नेक हुइ लडाई इत ॥ ३

जब समस्त जगतके धर्मनेता (सद्गुरु) प्रकट हो गए हैं, तब अज्ञानका अन्धकार कहाँ टिक पाएगा ? किन्तु मैं ब्रह्मात्माओं और कलियुगी प्रवृत्ति (दज्जाल)के संघर्षकी थोड़ी-सी बातें कह रहा हूँ.

क्यों कहूं बल दजाल का, जाहेर बडा पलीत ।

जोर न चले काहू का, लिए जो सारे जीत ॥ ४

इस शैतानके बलकी बात क्या कहें ? यह तो प्रत्यक्ष ही अधम है. इसके समक्ष किसीकी भी शक्ति काम नहीं करती, इसने तो सभीको जीत लिया है.

अंग जो बांधे या विध, पेहेले पेड से फिराई बुध ।

उलटाए सबों या विध, परी न काहूं सुध ॥ ५

इसने सभी ब्रह्मात्माओंके शरीरके अंग प्रत्यंगको इस प्रकार बाँध रखा है कि

सर्व प्रथम उसने उनकी बुद्धिको मूल परमधामसे ही विमुख कर दिया. सभी अंग-प्रत्यंगोंको इस प्रकार उलटा दिया कि किसी को भी किसी प्रकारकी सुधि नहीं रही.

**दजाल नजरों ना आवहीं, सब में किया दखल ।**

**जाने दोस्त को दुसमन, कोई ऐसी फिराई कल ॥ ६**

यह शैतान किसी की भी दृष्टिमें प्रत्यक्ष नहीं आता, किन्तु इसने सबके अन्दर प्रवेश कर उनको प्रभावित कर लिया है. इसने सबकी बुद्धि इस प्रकार विमुख कर दी कि लोग अपने मित्रको भी शत्रु समझने लगे.

**अंदर जो बांधे या विध, कही न जाए क़ामत ।**

**सत असत कर देखहीं, असत लग्या होए सत ॥ ७**

यह तो सबके अन्दर (मनमें) प्रवेश कर सभीको इस प्रकार वशीभूत कर लेता है कि इसके ऐसे चमत्कारपूर्ण कार्य गिनाए (बताए) नहीं जा सकते. इसके प्रभावमें आते ही लोगोंको सत्य वस्तु असत्य दिखाई देती है और असत्य वस्तु सत्य प्रतीत होती है.

**मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफ़लत ।**

**आउथ ए दजाल के, स्यानप ग्यान असत ॥ ८**

अंतःकरण-मन, बुद्धि, चित और अहंकार तथा काम, क्रोध, असावधानी (गफ़लत), भौतिक चतुराई, मायावी ज्ञान (अविद्या) एवं असत्य ये सब शैतानके शस्त्र माने गए हैं.

**भी आउथ अमृत रूप रस, छल बल वल अक्ल ।**

**कोमल कुटिल अंग सीतल, चंचल चतुर चपल ॥ ९ ॥**

इसके और भी शस्त्र बताए गए हैं- अमृत (भौतिक सुखोंका प्रलोभन), रूप (मायावी सौन्दर्य), रस (मधुर-मीठी भाषा) छल, शक्ति, दाँव-पेंच (वल), बुद्धि चातुर्य, कोमलता (विनम्रता), कुटिलता (कपट), बाह्य (अंग) शीतलता, चंचलता, चतुरता तथा चपलता.

**जाकी अग्याएं अगनी चले, चले जिमी और जल ।**

वाउ भी हुक़म पर खडा, ऐसा दजाल का बल ॥ १०

जिसकी आज्ञा मात्रसे अग्नि प्रज्ज्वलित होती है, पृथ्वी टिकी रहती है, जल तथा वायु प्रवाहित होते हैं, उस दज्जाल (माया) का इतना बड़ा सामर्थ्य है.

ए दजाल बड़ा जोरावर, मूल गफ़लत याके साथ ।

मनसा बाचा क़रमना, ए सब इनके हाथ ॥ ११

वास्तवमें यह दज्जाल बड़ा शक्तिशाली है, क्योंकि मूलरूपमें असावधानी (गफ़लत) इसके साथ है. इसीलिए मनुष्यके मन, वचन और कर्म इसीके वशीभूत हो जाते हैं.

जुध बड़ा दजाल का, लिए जो सारे जीत ।

भागे भी ना छूट्ही, कोई ऐसा बड़ा पलीत ॥ १२

इस दज्जाल (माया)के साथ इतना बड़ा युद्ध होता है, फिर भी यह सबको जीतकर वशीभूत कर लेता है. यह इतना अधम (पलीत) है कि भाग जाने पर भी पीछा नहीं छोड़ता.

सूर बडे़ इन जहानमें, जिन किए सामें बल ।

ताबें अपने कर लिए, बाए गले सांकल ॥ १३

इस संसारमें बड़े बड़े ऋषि, महर्षि, योगी, साधक आदिने बड़ा पराक्रम दिखाकर इसका सामना किया, तथापि उन सबके गलेमें फन्दा डालकर उनको इसने वशीभूत कर लिया.

छीन लिए बल सबन के, जो सूमें बडे़ वेहेनाए ।

बांध्या जो कोई बल करे, तो बडे़ जो गोते खाए ॥ १४

जितने भी महान तपस्वी कहलाते थे, उन सबकी शक्तिका इसने हरण किया. इसके बन्धनमें बँधे हुए व्यक्ति इन बन्धनोंसे छूटना चाहें, तो वे और अधिक बँध जाते हैं. इस प्रकार वे गोते खाते रहते हैं.

जो बुजरक बडे़ कहावहीं, तिन जुध किए मिल मिल ।

सो फिरस्ते ऊनटाए के, ले डारे गफ़लत दिल ॥ १५

यहाँ पर जितने महान ज्ञानी कहलाए, उन्होंने परस्पर मिलकर भी इसका सामाना किया, किन्तु इस मायावी फरिश्तेने सबकी बुद्धिको उलटाकर उनके हृदयमें (परमात्माके प्रति) अनिश्चितता (अज्ञानता) भर दी.

ए जुध करे सबनसों, आप नजर न आवे किन ।

दजाल जोर करामात, सब किए आप से तन ॥ १६

वैसे तो यह सबके साथ युद्ध करता है, किन्तु किसीकी भी दृष्टिमें नहीं आता. यह दज्जाल अपने चमत्कारके बल पर सबको अपने समान अधम बना देता है.

कोई न छोड्या दजालें, जीत लिए सकल ।

ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल ॥ १७

इस दज्जालने किसीको भी नहीं छोड़ा, अपितु सबको वशीभूत कर लिया. इसने सबको इस प्रकार मदान्ध बना दिया कि कोई भी सन्मार्ग पर नहीं चल सकता.

सब अंग बांधी दुनियां, सारे हुए बेअकल ।

अबलों किन देख्या नहीं, कुमर करामात करल ॥ १८

इस दज्जालके बन्धनसे अंग प्रत्यंग बँधे हुए सभी व्यक्ति बुद्धिहीन हो गए हैं. अभी तक कोई भी इसकी झूठी चमत्कार पूर्ण चालको समझ नहीं सका.

या विध बांधी दुनियां, खोल ना सके कोई बंध ।

राह हक की छुड़ाए के, ले डारे गफलत फंद ॥ १९

संसारके लोग इस प्रकार मायाके बन्धनोंमें बँधे हुए हैं. अभी तक कोई भी इन बन्धनोंको खोल नहीं सका. वस्तुतः यह दज्जाल लोगोंको सन्मार्गसे हटाकर झूठे फन्दोंमें फँसा देता है.

दुनियां बाहेर देखहीं, अजूं आया नहीं दजाल ।

बंदगी करते आवसी, तब लडसी तिन नाल ॥ २०

शराअके (कर्मकाण्डी) लोग बाहर देखते हैं कि अभी तक दज्जाल नहीं आया है. नमाज पढ़ते समय वह अवश्य आएगा, तब हम उसी समय उसके साथ युद्ध करेंगे (इसीलिए मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हुए दाएँ-बाएँ देखते हैं).



खाए गया सबन को, अजू देखत नाहीं ताए ।

तिनसों लडने बाहेर, बांध बांध कमरें जाए ॥ २१

इस दज्जालने सबके अन्तःकरणमें प्रवेशकर उन्हें वशीभूत कर लिया है, किन्तु लोग अभी तक उसे देख नहीं पाए हैं। इसलिए उससे लड़नेके लिए तैयार होकर (कमर बाँधकर) बाहर जाते हैं।

जुध याको जाहेर कहा, देसी बंदगी छुड़ाए ।

आप अंदर से उठसी, जीत्यो न कहूं जाए ॥ २२

कुरानमें इसके युद्धके विषयमें स्पष्ट कहा है कि यह सबसे पूजा-पाठ छुड़वा देगा। किन्तु यह तो स्वयं मनुष्यके अन्तःकरणसे ही (नास्तिकताके रूपमें) उत्पन्न होगा, इसीलिए यह किसीसे भी जीता नहीं जा सकेगा।

जाहेर कहे जो माएने, ए तित भी रहे उझाए ।

लिखियां जो इसारतें, सो इनों क्यों समझाए ॥ २३

इस प्रकार स्पष्ट कही हुई बातको समझनेमें भी लोग उलझ जाते हैं, तो जो बात संकेत मात्रसे बताई गई है, वह इन लोगोंको कैसे समझमें आएगी ?

तो कहा नबिएं इमन को, ला बारकला मुसलमीन ।

दर्द बारकला हिंद मुसलिम, लिए सिर कलाम यकीन ॥ २४

इसलिए रसूल पैगम्बरने यमन (अरबका एक देश)के मुसलमानोंको कहा कि अब इस कुरानकी समृद्धि (बरकत) हिन्दुस्तानके मुस्लिमोंको दी गई है, क्योंकि उन्होंने कुरान पर विश्वास कर उसकी आज्ञाको शिरोधार्य किया है।

कहा कहूं बल दजाल को, जोर बडा जालिम ।

पेहेले पढे सब लिए, पीछे छोडया न कोई आलम ॥ २५

दज्जालके सामर्थ्यकी बात ही क्या करें ? यह तो बड़ा ही दुष्ट (अधम) है। सर्व प्रथम इसने पठित विद्वानोंको अपने वशीभूत किया, पश्चात् इसने जगतमें किसीको भी नहीं छोड़ा अर्थात् सभीको वशीभूत कर लिया।

नाम इमाम धरावहीं, पर फुरमान की ना सुध ।

बरकत कलामे रसूल के, साफ होसी सब विध ॥ २६

स्वयंको इमाम कहलाने वाले लोगोंमें भी कुरानकी कोई सुधि नहीं है वस्तुतः अब रसूल मुहम्मादके वचनोंके प्रताप (बरकत)से सबके हृदय निर्मल हो जाएंगे.

**नजरों काहूं न आवहीं, करत गैब की मार ।**

**कोई छूट्या मोमिन भाग के, और कर लिए सब कुफार ॥ २७**

यह दज्जाल प्रत्यक्षरूपसे किसीकी दृष्टिमें नहीं आता परन्तु परोक्षरूपसे सभी पर प्रहार करता है. कोई ब्रह्मात्मा ही इसके प्रभावसे बच सकती है, शेष सभी लोगोंको इसने परमात्मासे विमुख (काफिर) बना दिया है.

**फिरस्ता चौदे तबकों, फिरवल्या सब पर ।**

**हुकम चलाया अपना, कोई रह्या न ताबे बिगर ॥ २८**

इस अजाजील फरिश्ताने पातालसे लेकर वैकुण्ठ तक चौदह लोकमें अपना प्रभुत्व जमाया है. इसने सभी पर अपना शासन चलाया है, कोई भी इसकी अधीनता स्वीकार किए बिना नहीं रह सका.

**ओ जाने हम सीधा चलें, इन विध राह मारत ।**

**तो कही पुल सरात, तरवार धार है इत ॥ २९**

यह दज्जाल लोगोंके हृदयमें बैठकर इस प्रकार उनके मार्गको विपरीत (बदल) कर देता है कि लोग यही समझने लगते हैं कि वे ठीक ही मार्गसे चल रहे हैं. इसीलिए धर्मके मार्ग पर चलना तलवारकी धारके समान (पुले सिरात) कहा गया है.

**ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक पें ।**

**क्यों छूटे बंध दुसमन के, तो किन चल्या ना इनसें ॥ ३०**

आदमके वंशज इन सभी मनुष्योंको भली भाँति ज्ञात है कि इस अजाजील फरिश्ताने लोगोंको सत्य मार्गसे विचलित करनेके लिए परमात्मासे वचन माँगा था, इसलिए ऐसे शत्रुके बन्धनसे कोई कैसे छूट सकेगा ? अत एव इस पर अभी तक किसीका भी नियन्त्रण नहीं रहा है.

क्यों करें जंग दजालसों, काफ़र या मुसलमान ।

औलाद आदम सब ताबीन, पातसाह दिलों सैतान ॥ ३१

अतः परमात्मासे विमुख काफ़िर लोग हों अथवा परमात्माके प्रति विश्वास रखने वाले मुसलमान हों, वे इस दज्जालके साथ कैसे युद्ध कर सकेंगे. सभी मनुष्य इसीके अधीनस्थ हैं. यह सभीके दिलों पर राजा (पातसाह) बनकर बैठा हुआ है.

तो क्या चले बंदन का, जिन दिल पर ए पातसाह ।

सब जाने दुसमन मारसी, हक तरफ़ चलते राह ॥ ३२

जिनके हृदय पर यह राजा (बादशाह) बनकर बैठा हुआ है, ऐसे मनुष्योंका नियन्त्रण उसके ऊपर कैसे हो सकता है ? सभी लोग जानते हैं कि यह परब्रह्मकी ओर (सन्मार्ग पर) चलने वालोंके मार्गको अवरुद्ध करता है.

दिल मोमिन हक अरस कहा, तो इन दुनियां करी हराम ।

पीठ दर्ई मुरदार को, जिन दिलों अरस आराम ॥ ३३

ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है, क्योंकि इन ब्रह्मात्माओंने संसारको त्याज्य माना है. संसारकी तुच्छ वस्तुओंसे विमुख होनेके कारण इनके हृदयमें परमात्मा विराजमान हैं.

जो दिल कहा अरस हक का, तिन तरफ़ जले काफ़र ।

मार ना सके राह मोमिनों, सब बंधे इनों बिगर ॥ ३४

जिन ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है, उनके द्वारा स्वीकार किए हुए मार्ग पर चलनेसे नास्तिक लोग ईर्ष्यामें जल जाते हैं. वस्तुतः यह दज्जाल इन ब्रह्मात्माओंके मार्गको रोक नहीं सकता, क्योंकि ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य सभी जीव इसीके बन्धनमें बंधे हुए हैं.

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, तो कहा अरस कलूब ।

तिन तरफ़ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब ॥ ३५

ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अवतरित हुई हैं, इसीलिए उनके हृदयको परमात्माका धाम कहा गया है. जिन आत्माओंके स्वामी अतिप्रिय परब्रह्म परमात्मा हैं,

उनकी ओर यह दज्जाल कैसे आ सकता है ?

सब साफ किए दिल मोमिन, जब इत आए इमाम ।

जिन दिल पातसाह सैतान, किए पाक जलाए तमाम ॥ ३६

जब इस संसारमें सद्गुरु (इमाम) का अवतरण हुआ तब उन्होंने तारतम ज्ञानसे ब्रह्मात्माओंके हृदयको पवित्र बना दिया. इसके साथ ही जिन सांसारिक जीवोंके हृदय पर दज्जालका साम्राज्य होता है, उन सबके विकारों को भी जलाकर उनके हृदयको पवित्र बना दिया.

खबर न पाई काहूँ ने, जो दिल ऊपर सैतान ।

सो साफ किए सबन को, जाहेर कर हुकम सुभान ॥ ३७

किसीको भी यह ज्ञात नहीं था कि उनके हृदय पर यह दज्जाल बैठा हुआ है. सद्गुरुने प्रकट होकर परमात्माकी आज्ञासे उन सबके हृदयको पवित्र बना दिया.

जाहेर काहूँ ना हुआ, छिप कर लिए सब ।

इमाम आए जाहेर हुआ, ए जो दज्जाल न देख्या किन कब ॥ ३८

यह दज्जाल अभी तक किसीके द्वारा भी प्रकट नहीं हुआ, परोक्षरूपसे ही इसने सबको वशीभूत किया है. जिस दज्जालको किसीने अभी तक नहीं देखा, वह सद्गुरुके प्रकट होने पर प्रत्यक्ष हुआ है.

जब इमाम इत आए, तब क्यों रहे ढांप्या चोर ।

मोमिन पेहेले छुड़ाए के, दिए दुनी के बंध तोर ॥ ३९

जब सद्गुरु स्वयं इस संसारमें पधारे हैं, तब यह चोररूप दज्जाल कैसे छिपकर रह सकता है ? सद्गुरुने सर्वप्रथम ब्रह्मात्माओंको इस दज्जालके फन्देसे छुड़ाया, पश्चात् समस्त संसारके लोगोंके मायाके बन्धन तोड़ दिए.

ए जो जीती दजालें दुनियां, कर लई थी निरबल ।

सो बल सबको देए के, दिए सुख नेहेचल ॥ ४०

संसारके लोगोंको इस दज्जालने वशीभूत कर निर्बल बनाया था. सद्गुरुने

तारतम ज्ञानकी शक्ति देकर सबको शक्तिशाली बनाकर अखण्ड सुख प्रदान किए.

लिख्या है फुरमानमें, मेहेदी आवेगा आखर ।

उडाए मारसी दजाल को, राह देसी सीधी कर ॥ ४१

कुरानमें इस प्रकार लिखा गया है कि अन्तिम समयमें परमात्मा धर्मगुरु (महदी) के रूपमें आएँगे और वे इस दज्जालको मारकर भगा देंगे तथा सबको सीधा मार्ग दिखाएँगे.

अब हुए सब जाहेर, कुफर करामात कल ।

महंमद मेहेदी के प्रताप से, जासी बंध सब जल ॥ ४२

सद्गुरुके प्रकट होने पर अब इस दज्जालके स्वभाव-अविश्वास (कुफर), चमत्कार तथा बुद्धि चातुर्य सब प्रकट हो गए. अब निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद)के प्रतापसे सबके बन्धन जलकर भस्म हो जाएँगे.

कुदरत रूप दजाल को, किनहूं न जान्या जाए ।

तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उडाए ॥ ४३

इस दज्जालके स्वाभाविक स्वरूपको अभी तक कोई भी नहीं जान पाया. जब सद्गुरुने तारतम ज्ञानके द्वारा इसे भगा दिया, तब सभीको इसके स्वरूपकी सुधि हुई.

इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद ।

इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद ॥ ४४

यदि इस दज्जालका कोई प्रत्यक्ष स्वरूप होता, तो सद्गुरु इसको अवश्य मारकर भगा देते. वस्तुतः सद्गुरुकी आवाज (तारतम ज्ञानका प्रकाश) मात्रसे ही यह समाप्त हो गया है.

जब इमाम जाहेर हुए, तब क्यों रेहेवे अंधेर ।

अपनी तरफ सबन के, लिए दुनी दिल फेर ॥ ४५

जब अखण्ड ज्ञानके सूर्यके समान सद्गुरु (इमाम) प्रकट हो गए हैं, तब

अज्ञानरूप अन्धकार कैसे टिका रह सकता, क्योंकि सद्गुरुने सबके हृदयको प्रकाशितकर अपनी ओर खींच लिया है।

**जो कबहूँ प्रगटे होते, तो होत कुफर को नास ।**

**जब इमाम जाहेर हुए, तब नूर हुआ उजास ॥ ४६**

यदि सद्गुरुका प्रकटीकरण पहले ही हो जाता, तब यह सारा अज्ञान उसी समय नष्ट हो गया होता। जब सद्गुरु प्रकट हुए, तब तारतम ज्ञानका प्रकाश सर्वत्र फैल गया।

**मेहेदी महंमद ढांपे ना रहें, जासों झूठ भी सांच होए ।**

**ऐसा खसम जोरावर, यासे सुख पावे सब कोए ॥ ४७**

अब निजानन्द स्वामी (महदी महंमद)के ज्ञानका प्रकाश छिपा नहीं रह सकेगा, जिससे यह मिथ्या जगत भी अखण्ड होने वाला है। धामके धनी इतने समर्थ हैं कि इनके प्रतापसे संसारके सभी प्राणी आनन्दका अनुभव कर सकेंगे।

**प्रकरण ३१ चौपाई १०९९**

**सन्ध इमाम के प्रताप की**

**प्रताप इमाम कहा कहूँ, इन जुबां कह्यो न जाए ।**

**तो भी नेक रोसन करूँ, तुम लीजो चित ल्याए ॥ १**

अब मैं सद्गुरुके प्रतापका वर्णन करता हूँ। यद्यपि इस जिह्वासे उसका वर्णन नहीं हो सकता तथापि उस पर थोड़ा-सा प्रकाश डाल रहा हूँ। हे सुन्दरसाथजी ! तुम ध्यान पूर्वक इन बातोंको अपने चित्तमें धारण करो।

**ए नेक करूँ इसारत, तुम सुनियो आखर दिन ।**

**पेहेले मिलसी रूह मोमिन, पीछे तो सब जन ॥ २**

तुम अन्तिम (कयामतके) दिनके विषयमें सुनो, मैं उसका मात्र संकेत कर रहा हूँ। उस समय सर्व प्रथम ब्रह्मात्माएँ मिलेंगी, पश्चात् समग्र संसारके जीव एकत्रित हो जाएँगे।

ए सरत सोई जो आगे करी, हक इलम होसी जाहेर ।

लिख्या है कुरान में, आया सो आखर ॥ ३

रसूल महंमदने कुरानमें पहले ही ये वचन कहे थे कि परब्रह्म परमात्माका ज्ञान अन्तिम समयमें प्रकट होगा. कुरानमें जिस प्रकार लिखा है, वह अन्तिम समय अब आ गया है.

सबद गुझ पुकारहीं, सब में सचाराचर ।

सो सारे कदमों तले, जब आए इमाम आखर ॥ ४

वेद और कतेबके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो जाने पर इस सचराचर जगतमें सद्गुरु (इमाम) के प्रकट होने की बात सर्वत्र फैल गई. इस आवाजको सुनकर सभी वर्णों एवं वर्गोंके लोग आत्म जागृति (आखिर) के समयके धर्मगुरु (इमाम महदी) के चरणोंमें आ गए.

खेल पाया इसदाए से, आप असल बका घर ।

सब सुध हुई प्रताप तें, जब आए इमाम आखर ॥ ५

इस सृष्टिकी रचना जबसे हुई है, तबसे यहाँ विभिन्न प्रकारके खेल दिखाई दिए हैं, किन्तु अभी तक यह सुधि किसीको भी नहीं हुई कि परमात्मा कौन हैं एवं उनका मूल घर कहाँ है ? जब वे इस अन्तिम घड़ीमें सद्गुरु (इमाम) बनकर आ गए, तब उनके ज्ञानके प्रतापसे सभीको परमात्मा तथा उनके धामके विषयमें सुधि प्राप्त हुई.

ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर ।

सो उडाए दई पेड जुलमत, जब आए इमाम आखर ॥ ६

इस संसारकी रचना प्रकृतिके द्वारा हुई है किन्तु अभी तक किसीने भी अपनी दृष्टि खोलकर इस रचनाको नहीं देखा. जब अन्तिम घड़ीमें सद्गुरुका अवतरण हुआ, तब उन्होंने तारतम ज्ञानके प्रतापसे इस संसारके झूठे अन्धकार (अज्ञान) को मिटा दिया.

त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहांतें हुई किन पर ।

सो संसे न रह्या किन का, जब आए इमाम आखर ॥ ७

सत, रज और तम इन तीनों गुणोंसे युक्त तीनों लोकोंकी यह लौकिक सृष्टि

कहाँसे उत्पन्न हुई और किसके लिए उत्पन्न हुई है ? जब सद्गुरुका प्राकट्य हुआ, तब उन्होंने ऐसे सभी सन्देह निर्मूल कर दिए.

निरंजन निराकार तैं, खेल रच्यो नारी नर ।

ए सुध हुई सबन को, जब आए इमाम आखर ॥ ८

प्रकृति और पुरुषके द्वारा निरंजन और निराकारसे इस जगतके नर-नारियोंकी सृष्टि हुई है. इस रहस्यकी सुधि सबको तभी प्राप्त हुई, जब अन्तिम घड़ीमें सद्गुरु प्रकट होकर इस संसारमें आए हैं.

ए जो फिरस्ते नूर से, खेल तिने किया पसर ।

ए गुझ सारोंने पाइया, जब आए इमाम आखर ॥ ९

अक्षर ब्रह्मके फरिश्तों (त्रिदेवों-ब्रह्मा, विष्णु, महेश) द्वारा ही सृष्टिके इस खेलका विस्तार हुआ है. इन गूढ़ रहस्योंकी जानकारी सद्गुरु (इमाम)के आने पर ही प्राप्त हुई है.

काल सुंन जड चेतन, ए सब हुए जाहेर ।

ए धोखा किन का ना रह्या, जब आए इमाम आखर ॥ १०

काल निरन्जन शक्ति, शून्य निराकार तथा जड़ और चेतन सभीका रहस्य स्पष्ट हो गया. सद्गुरुके आगमनसे किसीके मनमें किसी भी प्रकारकी शंका नहीं रही.

वेद कतेब के माएने, सब द्रढ हुए दिल धर ।

किए मगज माएने जाहेर, जब आए इमाम आखर ॥ ११

जब सद्गुरु इस जगतमें आए, तब वेद और कतेबके रहस्य भी स्पष्ट हो गए और सभीने इन रहस्योंको अपने मनमें दृढ़ किया.

इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर ।

सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखर ॥ १२

धर्मके जानकार लोग अपने अपने ज्ञानको लेकर झगड़ा करते हुए पृथक्-पृथक् हो गए थे (इसके कारण इस जगतमें विभिन्न संप्रदायोंका उदय हुआ).



जब अन्तिम समयमें सद्गुरुका आगमन हुआ है, तब उनके ज्ञानके प्रतापसे ये सारे धर्म और सम्प्रदाय एक ही सत्य धर्ममें प्रतिष्ठित हो गए.

**गैबी मार दजाल का, सब में गया पसर ।**

**सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखर ॥ १३**

संसारके सभी लोगोमें इस दज्जालका गुप्त प्रभाव फैला हुआ था. सद्गुरुके आगमनसे उन सभी लोगोके हृदय पवित्र हो गए.

**आग बिना सब दुनियां, अग्नि हुई जर बर ।**

**सो सारे ठंढे किए, जब आए इमाम आखर ॥ १४**

संसारके लोग अग्निके बिना ही काम, क्रोध, लोभ इत्यादि से जल रहे थे. सद्गुरुने आकर अपने निर्मल ज्ञानरूपी अमृतसे सींच कर सबको शीतलता प्रदान की.

**दुनियां गोते खावहीं, बिन जल भवसागर ।**

**सो सारे ही थिर किए, जब आए इमाम आखर ॥ १५**

संसारके लोग इस भवसागरमें जलके बिना (मोह-मायामें) ही गोते खा रहे थे. सद्गुरुने अन्तमें प्रकट होकर उन सभीको अखण्ड मुक्ति प्रदान की.

**क्यों पैदा क्यों होसी फना, ए ना काहूं को खबर ।**

**सो सारों को सुध हुई, जब आए इमाम आखर ॥ १६**

सृष्टिकी रचना क्यों हुई है और अन्तमें यह क्यों नष्ट हो जाएगी अर्थात् इसका लय क्यों हो जाएगा ? इस रहस्यकी जानकारी किसीको भी नहीं थी. सद्गुरुके आगमनसे संसारमें सभी लोगोको यह सब जानकारी प्राप्त हुई.

**छिपियां सांच सबन से, झूठ गया पसर ।**

**सो सारे सत ले खडे, जब आए इमाम आखर ॥ १७**

मायाके प्रभावके कारण सभीकी दृष्टिमें सत्य वस्तु छिप गई थी और झूठी वस्तु ही सर्वत्र फैली हुई थी, किन्तु सद्गुरुके आगमनसे सब लोग सत्य वस्तुको ग्रहणकर जागृत हो गए.

काम क्रोध दिमाग में, सब धखे निस बासर ।

सो सारे ठंढे हुए, जब आए इमाम आखर ॥ १८

काम, क्रोध और अहंकारकी अग्निमें सभी प्राणी रात-दिन जल रहे थे। सद्गुरुने प्रकट होकर तारतम ज्ञानरूपी अमृतसे सींचकर सभीको शीतलता प्रदान की।

सबद न लगे काहूँ को, ऐसे हिरदे भए बजर ।

सो गलित गात हुए निरमल, जब आए इमाम आखर ॥ १९

संसारके लोगोंके हृदय इस प्रकार वज्रके समान कठोर हो गए थे कि किसीपर भी ज्ञानके वचनोंका प्रभाव नहीं पड़ता था। सद्गुरुके आगमनसे वज्रके समान ऐसे कठोर हृदय भी द्रवित हो गए और तारतम ज्ञानके प्रभावसे निर्मल हो गए।

मुसलिम को मुसलिम की, हिन्दुओं हिन्दुओंकी तर ।

ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखर ॥ २०

सद्गुरुने प्रकट होकर मुस्लिमको मुस्लिमकी भाँति और हिन्दुओंको हिन्दुओंकी भाँति समझाया। इसलिए उनके आगमनसे ये सब लोग अपनी-अपनी बुद्धिके अनुसार परम तत्त्वको समझने लगे।

मने फिराई दुनियां, रहे ना सक्या कोई थिर ।

सो मन सारे थिर किए, जब आए इमाम आखर ॥ २१

इस दज्जालने संसारके लोगोंके मनको उलटाकर विपथगामी बना दिया, जिसके कारण सभी लोगोंका हृदय स्थिर नहीं हो रहा था। जब सद्गुरु इस जगतमें आए, तब उन्होंने अपने ज्ञानके प्रभावसे सभीके मनको स्थिर कर दिया।

अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर ।

सो सक सुभे सब उड गई, जब आए इमाम आखर ॥ २२

अभी तक जो परमात्मा अलक्ष्य और अगम्य कहलाते थे और जिस परमात्माके विषयमें खोज करते हुए साधकजन थक चुके थे, अब सद्गुरुके

आगमनसे उन सबके हृदयसे परमात्मा विषयक सन्देह दूर हो गए.

सुध आतम पर आतमा, सक्का ना कोई कर ।

सो सारे धोखे मिटे, जब आए इमाम आखर ॥ २३

अभी तक कोई भी व्यक्ति आत्मा और पर-आत्माकी सुधि प्राप्त नहीं कर सका था. सद्गुरुने आकर उन सबके सन्देहको मिटाकर आत्मा और पर-आत्माकी सुधि दी.

हद बेहद के पार की, सब देख थके फेर फेर ।

सो सारोंने देखिया, जब आए इमाम आखर ॥ २४

इस क्षर जगतसे आगे बेहद भूमि अक्षर तथा उससे भी परे परब्रह्म परमात्माको खोजनेके लिए कई साधकोंने प्रयत्न किए, किन्तु उन्हें विफलता ही मिली थी. अब सद्गुरुके आगमनसे उन सभीने परम तत्त्वका साक्षात् अनुभव किया.

पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर ।

सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखर ॥ २५

हद और बेहदसे परेकी सुधि किसीको भी नहीं थी, इसीलिए वे परमात्माको बाहर इस ब्रह्माण्डमें तथा अन्दर अपने अन्तःकरणमें ढूँढ़ रहे थे. अब सद्गुरुके आगमनसे उन सबके सन्देह दूर हो गए.

ढूँढ़ ढूँढ़ के सब थके, ए जो लैलत कदर ।

ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखर ॥ २६

कुरानमें वर्णित महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र) को सब लोग ढूँढ़ते हुए थक गए. अन्तिम समयमें प्रकट हुए सद्गुरुने पारके द्वार खोलकर इस महिमामयी रात्रिको स्पष्ट कर दिया.

कहांतें नूर तजल्ला की, जो नूरकी भी नहीं खबर ।

सो परदे उडे सबन के, जब आए इमाम आखर ॥ २७

परम तत्त्वके जिज्ञासुओंको अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माकी सुधि कैसे प्राप्त

हो सकती ? जबकि उनको अक्षर ब्रह्मकी भी सुधि प्राप्त नहीं हुई. अन्तिम समयमें सद्गुरुके आगमनसे अब सबके हृदय पर छाए हुए अज्ञानके आवरण दूर हो गए हैं.

**कहां तैं अक्षरातीत की, जो सुध ना अक्षर क्षर ।**

**सो सारे जाहेर हुए, जब आए इमाम आखर ॥ २८**

जिन लोगोंको क्षर तथा अक्षरकी भी सुधि नहीं थी, वे अक्षरातीतकी सुधि कैसे प्राप्त कर सकते ? सद्गुरुके आगमन होने से ही ये सारे रहस्य स्पष्ट हो गए हैं.

**इसक खसम बतावहीं, उडाए दिया सब डर ।**

**कायम सुख सब लेवहीं, जब आए इमाम आखर ॥ २९**

परमात्मा प्रेमस्वरूप हैं और उनकी प्राप्तिका साधन प्रेमलक्षणा भक्ति है, ऐसा कहते हुए अन्तिम समयके सद्गुरु (इमाम)ने प्रकट होकर सबका भय दूर कर दिया. अब सब लोग अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिशतों) के नित्य सुखोंका अनुभव कर लेंगे.

**मोमिन पीछे ना रहे, ताए सके ना कोई पकर ।**

**उमेदां पूरी सबन की, जब आए इमाम आखर ॥ ३०**

अखण्ड सुखकी अनुभूतिके लिए ब्रह्मात्माएँ कभी भी पीछे नहीं रह सकतीं और इसके लिए उनको कोई रोक भी नहीं सकता. अब सद्गुरुके आगमनसे सभी प्राणियोंकी मनोकामनाएँ भी पूर्ण हो गईं तथा सभीको अखण्ड मुक्ति स्थलोंके सुख भी प्राप्त हुए.

**बडे सुख मोमिन लेवहीं, रस इसक पिएं भर भर ।**

**औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखर ॥ ३१**

अन्तिम समयमें सद्गुरु (इमाम)के प्रकट हो जाने पर ब्रह्मात्माओंने महान सुख प्राप्त किया. उन्होंने परब्रह्मके प्रेमके प्याले भर भरकर स्वयं पिए और अन्य लोगोंको भी पिलाए.

ए सुख कह्यो न जावहीं, रह्यो न कछू अंतर ।

मोमिन रूहें जाहेर हुए, जब आए इमाम आखर ॥ ३२

किसीके भी हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह न रहनेसे उन्हें जो आनन्दका अनुभव हुआ, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि अन्तिम समयमें सद्गुरुके प्रकट होने पर ब्रह्मात्माओं तथा अन्य जीवोंकी स्पष्ट पहचान हो गई.

सुख आसकों क्यों कहूं, जो लेवें मासूक अंदर ।

सुन मोमिन टूक होवहीं, जब आए इमाम आखर ॥ ३३

पूर्णब्रह्म परमात्माको अतिशय चाहनेवाली (आशिक) उन ब्रह्मात्माओंके सुखका वर्णन कैसे किया जाए, जो प्रियतम धनी परब्रह्म परमात्माको अपने हृदयमें स्थापित कर सदा उनसे रमण करती हैं. जब वे ही परमात्मा अन्तिम समयमें सद्गुरु बनकर आए, तब उनके आगमनको सुनकर ब्रह्मात्माएँ उनके प्रति समर्पित होनेके लिए तत्पर हो गई हैं.

पीछे जहांन इन दुनी की, दौडी आवे एकदर ।

तब तो सुख सागर हुआ, जब आए इमाम आखर ॥ ३४

ब्रह्मात्माओंके जागृत होनेपर (उनके सुखोंको देखकर) संसारके जीव भी उनके पीछे दौड़ते हुए अन्तिम समयमें प्रकट हुए सद्गुरुके चरणोंमें आएँगे. ऐसे सद्गुरुके आगमन होने पर संसारके समस्त जीवोंको सागरके समान अपार सुख होगा.

चौदे तबक हुई कजा, एक जरा ना रह्यो कुफर ।

सो साफ किए सबन को, जब आए इमाम आखर ॥ ३५

इस प्रकार परमात्माके न्यायाधीश होकर सद्गुरुके रूपमें आनेसे चौदह लोकोंके जीवोंको न्याय प्राप्त हुआ. उनके हृदयमें लेश-मात्र भी भ्रान्ति नहीं रही. इस प्रकार सद्गुरुने प्रकट होकर उन सभीके हृदय निर्मल बना दिए.

ए जो काजी कजा करी, सो भी मोमिनों की खातर ।

औरों पाया मोमिन बरकतें, जब आए इमाम आखर ॥ ३६

इस प्रकार परमात्माने न्यायाधीश बनकर संसारके सभी जीवोंका न्याय किया,

वस्तुतः वह ब्रह्मात्माओंके लिए ही है, क्योंकि सद्गुरुके आगमन होने पर ब्रह्मात्माओंके सामर्थ्यसे ही यह अखण्ड सुख अन्य जीवोंको भी प्राप्त हुआ है।

बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर ।

सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखर ॥ ३७

कुरानमें परमात्माके लिए बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून आदि नामोंसे क्यों पुकारा गया है ? सद्गुरुके आगमनसे सबको ये सारे रहस्य स्पष्ट हो गए।

सेहेरग से हक नजीक, ए खोली ना किन नजर ।

सो पट उडाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखर ॥ ३८

वस्तुतः परमात्मा हृदयकी मूल धमनी (सेहेरग)से भी अति निकट हैं, किन्तु किसीने भी अपनी आन्तरिक दृष्टिको खोलकर उनके दर्शनका प्रयत्न नहीं किया। सद्गुरुने इस प्रकार अन्तिम समयमें प्रकट होकर सभीके हृदयसे अज्ञानताका आवरण दूर किया और सबको परमात्माकी पहचान करवा दी।

कै आलम पल में पैदा फना, करें हक कादर ।

सो देखाए दुनी कायम करी, जब आए इमाम आखर ॥ ३९

परब्रह्म परमात्मा इतने समर्थ हैं कि वे अपनी आज्ञा मात्रासे अक्षरब्रह्मके द्वारा ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्डोंको पल मात्रमें पैदा करते हैं और पलमात्रमें उनको लय भी करते हैं। अब अन्तिम समयमें सद्गुरुने प्रकट होकर ऐसे नाशवान् संसारके जीवोंको भी परमात्माका अनुभव करवाकर अखण्ड मुक्ति स्थलोंका सुख प्रदान किया।

थी उरझन चौदे तबक में, सब जाते थे मर मर ।

दर्ई हैयाती सबन को, जब आए इमाम आखर ॥ ४०

इस प्रकार चौदह लोकोंमें परमात्मा विषयक उलझनें थीं, जिनके कारण सभी लोग जन्म और मृत्युके चक्रमें गोते खा रहे थे। सद्गुरुने अन्तिम समयमें प्रकट होकर उन सब जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थल प्रदान किए।

किन पाया ना मगज मुसाफ का, जो ल्याया आखरी पैगंमर ।

किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखर ॥ ४१

अन्तिम पैगम्बर कहलाने वाले रसूलने कुरानका सन्देश दिया, किन्तु उसके

रहस्योंको कोई समझ नहीं सका. अब अन्तिम समयमें सद्गुरुने प्रकट होकर कुरानके इन रहस्योंको स्पष्ट करते हुए परब्रह्म परमात्मा एवं परमधामको प्रकट कर दिया.

**लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले ना इन बिगर ।**

**सो खोलके भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखर ॥ ४२**

कई लोगोंने स्वयंको इमाम होनेका दावा किया किन्तु इन अन्तिम समयके सद्गुरुके बिना किसीको भी कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं हुए. अन्तिम समयमें सद्गुरुने प्रकट होकर कुरानके रहस्योंको स्पष्ट करते हुए सभी जीवोंको अखण्ड स्थलोंमें मुक्ति प्रदान की.

**थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर ।**

**मकसूद किया सबन का, जब आए इमाम आखर ॥ ४३**

यद्यपि सभी लोगोंके हृदय पर रात्रिके अन्धकारके समान अज्ञानरूपी अन्धकार छाया हुआ था, तथापि अन्तिम समयके सद्गुरुने प्रकट होकर अपने तारतम ज्ञानके प्रतापसे अखण्डके दर्शन करवाते हुए ज्ञानका प्रभात कर दिया और सभी की मनोकामनाएँ पूर्ण कीं.

**इलम लुदंनी कहूं ना हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर ।**

**दिया सुख कायम सबको, जब आए इमाम आखर ॥ ४४**

सद्गुरुके आगमनसे पूर्व इस संसारमें कहीं भी यह तारतम ज्ञान (इलम लुदंनी) प्रकट नहीं हुआ था. सद्गुरुने इसे प्रकट कर सब जीवोंकी भ्रान्तियोंको मिटा दिया तथा सभीको अखण्ड सुख प्रदान किए.

**कोई बेसक दुनी में ना हुता, गई दुनियां एती उमर ।**

**सो द्रढ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखर ॥ ४५**

यद्यपि सृष्टिके आरम्भसे अभी तक इतने दिन व्यतीत हो गए किन्तु कोई भी परमात्माके प्रति सन्देह रहित नहीं हो सका था. अब सद्गुरुने प्रकट होकर सभीको परमात्माके स्वरूपका अनुभव करवाते हुए परमात्माके प्रति दृढ़ बना दिया.

इमाम नूर है अति बडो, पर सो अब कह्यो न जाए ।

मेला होसी जब मोमिनो, तब देऊंगी नीके बताए ॥ ४६

सद्गुरुके ज्ञानका प्रकाश इतना तेजोमय है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जब सभी ब्रह्मात्माएँ एकत्रित होंगी, तब इसके सन्दर्भमें और प्रकाश डाला जाएगा।

प्रकरण ३२ चौपाई ११४५

सनंध कजाकी आरबी सिंधी

सुनियो दुनियां आखरी, भाग बडे हैं तुम ।

जो कबू कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम ॥ १

आत्मजागृतिके इस अन्तिम समयमें जन्मलेने वाले हे मानवो ! सुनो, तुम बड़ें भाग्यवान हो। जिन परमात्माके विषयमें कभी कानोंसे भी नहीं सुना था, अब साक्षात् सद्गुरुके रूपमें प्रकट हुए उन परमात्माके दर्शन कर लो।

कै राए राने पातसाह, छत्रपती चक्रवर्त ।

ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिए गफलत ॥ २

इस जगतमें कितने राजा, राणा, बादशाह, छत्रपति तथा चक्रवर्ती हो गए किन्तु उनको स्वप्नमें भी परब्रह्म परमात्माके दर्शन नहीं हुए, वे तो मात्र अज्ञानके अन्धकारमें डूबे हुए चले गए।

कै देव दानव हो गए, कै तीर्थंकर अवतार ।

किन सुपने ना श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार ॥ ३

इसी प्रकार असंख्य देव, दानव, अवतार एवं तीर्थंकर बड़े शक्तिशाली हो गए हैं, उन्होंने स्वप्नमें भी परमात्माके विषयमें नहीं सुना। वे पूर्णब्रह्म परमात्मा इस समय संसारके सामान्य नर-नारियोंको भी सहजतासे प्राप्त हुए हैं।

करी अनेकों बंदगी, इसक लिया कै जन ।

तिन काहू ना नजीक, सो इत मिल्या सबन ॥ ४

अनेक लोगोंने परमात्माकी उपासना की एवं कई लोगोंने विहंगम (प्रेम) मार्गका भी अनुसरण किया तथापि जो परमात्मा कदापि उनके समीप नहीं



हुए, वे अभी यहाँ पर सभीको अनायास प्राप्त हो गए हैं.

चौदे तबक के खाबंद, कर कर गए उपाए ।

तित परदा सबन पर, सो इत दिया उडाए ॥ ५

चौदह लोकोंके स्वामी कहलाने वाले ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर आदि भी अनेक प्रयत्न करते रह गए, किन्तु उन सभीके हृदय पर अहंकारका आवरण बना रहा. सद्गुरुने प्रकट होकर तारतम ज्ञानके द्वारा उस आवरणको दूर कर दिया.

तुम जानते थे मलकूत को, हम सिर एही बुजरक ।

तिनको न बका ख्वाब में, सो इत पाया सबों हक ॥ ६

तुम लोग मात्र इतना ही जानते थे कि वैकुण्ठ ही हमारे लिए सर्वोच्च है किन्तु वहाँके अधिपतियोंको स्वप्नमें भी अविनाशी तत्त्वकी सुधि नहीं होती. उन परमात्माको यहाँ पर सभी लोगोंने साक्षात् प्राप्त कर लिया.

मारता था राह दुनी की, सबका था दुसमन ।

जित हिदायत एक हादी की, तित भी मारे तिन ॥ ७

यह दज्जाल संसारके सभी जीवोंको सन्मार्गसे विचलित करता था, जिससे वह सबका शत्रु बन गया. जिस समुदायको सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजका मार्ग दर्शन प्राप्त है, ऐसे ब्रह्मात्माओंके मार्गमें भी इसने बाधाएँ डालीं.

एक राह थी अव्वल, तित भी दिए फिराए ।

कै इलम देखाए जुदे डारे, बल सैतान कह्यो न जाए ॥ ८

सर्व प्रथम रसूल मुहम्मदने एक परमात्माका मार्ग प्रशस्त किया, परन्तु इस दज्जालने उन लोगोंकी मतिको भी उलटा दिया. सबको भिन्न-भिन्न प्रकारका ज्ञान समझाकर उन्हें एक दूसरेसे अलग कर दिया. इस प्रकार इस दुष्टकी क्षमता बताई नहीं जा सकती.

बैठ दुनी के दिल पर, चलाया हुकम ।

हक राह छुडाए डारे उलटे, ए दुसमने किया जुलम ॥ ९

इसने संसारके प्राणियोंके हृदयमें बैठकर उन पर अपना शासन जमाया और

उनको सत्यमार्गसे छुड़ाकर विपरीत मार्गकी ओर उन्मुख कर दिया. इस प्रकार इस दुष्टने बड़ा अत्याचार किया है.

ए दुसमन देखाया रसूलें, पर इनसों चल्या न किन ।

आप जैसा होए के, राह मारी सबन ॥ १०

रसूल मुहम्मदने इस दज्जालके स्वरूपकी पहचान करवा दी थी, किन्तु इसके समक्ष किसीका भी वश नहीं चला. इसने स्वयंको संसारके जीवोंका स्वामी कहकर (अथवा स्वयं भी सांसारिक जीवोंके समान बनकर) सबका मार्ग अवरुद्ध किया है.

सो काफर उडाए दिया, जिन मारी थी सबकी राह ।

सो जानिए हता नहीं, जब आया हक पातसाह ॥ ११

जिसने सबके मार्गको अवरुद्ध किया था, उस अवज्ञाकारी दज्जालको सबके सम्राट परमात्माने प्रकट होकर इस प्रकार निर्मूल बना दिया कि मानो वह कभी था ही नहीं.

मैं बडभागी तुमें तो कहे, जो आए इन आखर ।

तो कहूं जो दूर होवहीं, अब देखोगे नजर ॥ १२

मैंने इसलिए तुम्हें भाग्यवान कहा है कि तुम इस अन्तिम (कयामतकी) घड़ीमें आए हो. यदि तुम सद्गुरु-इमामसे दूर होते तो मुझे अवश्य कहना पड़ता किन्तु तुम सम्मुख हो, अतः अपनी आखोंसे यह सब देख लोगे.

यामें बडे रूह मोमिन, सो जुबां कह्यो न जाए ।

अबहीं इमाम के कदमों, देखोगे सब आए ॥ १३

इस सृष्टिमें ब्रह्मात्माएँ सबसे महान हैं, नश्वर जिह्वासे उनकी महिमाका वर्णन नहीं हो सकता, क्योंकि उनको तुम इसी समय अपने सद्गुरु (इमाम) के चरणोंमें पहुँची हुई देखोगे.

ए कह्या रसूलें अवल, ए जो चौदे तबक ।

इनमें काजी आखर दिनों, इत कजा जो करसी हक ॥ १४

रसूल मुहम्मदने पहलेसे ही कहा था कि इस चौदह लोकवाले ब्रह्माण्डमें

अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी)में स्वयं परमात्मा न्यायाधीश बनकर आएँगे और सबका न्याय करेंगे.

रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार ।

आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार ॥ १५

रसूलने पहले ही यहाँ आकर लोगोंसे यह बात कही थी कि समग्र संसारके नियन्ता परमात्मा आएँगे, उस समय तुम सावचेत हो जाना.

लिख्या आगम कदीम का, सो आए मिल्या दिन ।

याही सदी आखर की, पुकार करे सब जन ॥ १६

प्राचीन कालमें आत्म-जागृतिके समयकी भविष्यवाणी की गई थी, अब वह दिन आ गया. यही अन्तिम (आत्म जागृतिकी) सदी है, जिसके विषयमें सभी भविष्यवेत्ताओंने बात कही थी.

नूर अकल ले लुदनी, हुकमें किया पसार ।

महंमद मेहेदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार ॥ १७

इसी समय (ग्यारहवीं सदीमें) पूर्णब्रह्म परमात्माकी आज्ञासे बुद्धजी (अक्षरकी बुद्धि) इस संसारमें तारतम ज्ञानका प्रसार करेंगे. इसी समय श्यामाजी अन्तिम युगके सद्गुरु (महदी मुहम्मद) के रूपमें संसारमें आएँगी. इस प्रकार पहलेसे ही भविष्यवेत्ताओंने सभी नर-नारियोंको चेतावनी दी थी.

आप इमाम अजूं गोप हैं, होत आगे रोसन नूर ।

रात अंधेरी क्यों रहे, जब उग्या कायम सूर ॥ १८

अन्तिम युगके इन सद्गुरु (इमाम) की शक्ति अभी तक गुप्त रही है, अब इनका तेज प्रकाशित होगा. जब तारतम ज्ञानरूपी अखण्ड सूर्योदय हो गया है, तो फिर अज्ञानरूपी अन्धकारमय रात्रि कैसे रह पाएगी ?

सांच झूठ तफावत, जैसे दिन और रात ।

सांच सूर जब देखहीं, तब कुफर रात मिट जात ॥ १९

सत्य और असत्यमें उतना ही अन्तर है जैसे दिन और रातमें होता है. अब

सत्यज्ञान (तारतमज्ञान) रूपी सूर्योदय हो गया है, इसलिए यह अज्ञानरूपी रात मिट जाएगी अर्थात् सर्वत्र ब्रह्मज्ञानका प्रसार होगा।

**जो लों थे परदे मिने, दुनियां उड़नी तब ।**

**सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाह्या सुख सब ॥ २०**

जब तक अज्ञानके आवरणके कारण लोगोंको परमात्माकी सुधि नहीं हुई थी, तब तक सभी जीव परमात्माके विषयमें उलझे हुए (अस्पष्ट) थे। इस अन्तिम युगके सद्गुरुने तारतमज्ञानके द्वारा अब अज्ञानके आवरणको दूर कर दिया और सभी जीवोंको मनोवाञ्छित सुख प्रदान किए।

**जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक ।**

**हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक ॥ २१**

जब तक सद्गुरुके रूपमें पधारे हुए परमात्मा प्रकट नहीं हुए थे, तब तक लोग अपनी तुच्छ बुद्धि लड़ा रहे थे। अब तो स्वयं परमात्माके प्रकट हो जाने पर यह सारा अज्ञान दूर हो गया और सारे संसारके जीव पवित्र हो गए।

**जब कुफर कछू ना रह्या, तब दुनियां हुई एक दीन ।**

**ए नूर कजा का झिल मिल्या, आया सबों यकीन ॥ २२**

जब अज्ञान कुछ रहेगा ही नहीं, तब संसारके लोग एक ही धर्मका पालन (एकब्रह्मोपासना) करेंगे। जब परमात्माके अन्तिम न्यायका प्रकाश सर्वत्र प्रदीप्त हो गया (झिल मिलाया), तब सबको विश्वास हो गया (कि परमात्मा प्रकट हो गए हैं)।

**दुनियां टेढी मूल की, ताको गयो पेड से बल ।**

**पाक किए सब इमामें, कुफर गया निकल ॥ २३**

सृष्टिके आरंभसे ही संसारके लोगोंकी बुद्धि विपरीत (टेढ़ी) रही है। तारतम ज्ञानके प्रकाशसे अब उसकी वक्रता (टेढ़ापन) मूलसे मिट गई। इस प्रकार सद्गुरु (इमाम)ने सबके अन्तः करणको पवित्र किया, जिससे सारा अज्ञान मिट गया।

पुकार कहा वेद कतेबों, पर बस न किया काहूँ दिल ।

कर कर मेहेनत कै थके, पर हुआ न कोई निरमल ॥ २४

वेदों और कतेबोंमें हृदयको पवित्र बनानेकी बात स्पष्ट कही गई है, किन्तु किसीने भी अभी तक अपने मनको नियन्त्रित नहीं किया. इसलिए कई साधक साधना करते हुए थक गए, किन्तु अपने मनको निर्मल न बना सके.

ना तो कै बुजरक हुए, कैयों करियां नसीहत ।

ओ मुरीद बिचारे क्या करें, किने पीर न पाई मारफत ॥ २५

वैसे तो संसारमें बड़े-बड़े ज्ञानी लोग हो गए और अनेक लोगोंने सन्मार्ग पर चलनेका उपदेश भी दिया, किन्तु वे शिष्य (मुरीद) बेचारे क्या कर सकते, जिनके गुरुजन (पीर)को ही परमात्माकी पहचान नहीं थी.

सो इमामें इत किए, सब जन के मन बस ।

होए ना किन इमाम को, इन जुबांएं जस ॥ २६

अब आत्म जागृतिके समयके धर्मगुरु (इमाम)ने प्रकट होकर तारतम ज्ञानके द्वारा सब लोगोंके मनको नियन्त्रित किया. इसलिए इस नश्वर जिह्वासे इन सद्गुरु (इमाम)की महिमाका वर्णन नहीं किया जा सकता.

सो इमाम इत आइया, इन जिमी हिन्दुस्तान ।

सब तलबें याही दिसा, चौदे तबक की जहान ॥ २७

अन्तिम युगके ये धर्मगुरु (इमाम) अब इस भारत भूमिमें प्रकट हो गए हैं. चौदह लोकोंके सभी देवी, देवता, मनुष्य आदि इसी घटना (सद्गुरुके प्राकट्य)की प्रतीक्षा (चाहना) कर रहे थे.

पर मुझे प्यारी बरारब, जिन जिमी आए रसूल ।

मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल ॥ २८

पीछे केहेर नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर ।

पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर ॥ २९

मुझे बरारबकी भूमि भी प्यारी लगती है जहाँ पर रसूल आए हैं. रसूल मुहम्मदने तो वहाँके लोगोंके प्रति कृपा कर उन्हें ब्रह्मज्ञान दिया, किन्तु

अविश्वासी (काफिर) लोग उनके वचनोंको भूल गए. फिर रसूलने उन पर कोपदृष्टि रखी, वह भी उन लोगोंके हित (लाभ)के लिए ही था, किन्तु विपरीत मतिवाले अविश्वासी लोग कृपा (मेहेर) को भी विषतुल्य (जहर) समझने लगे.

[जिस प्रकार श्री प्राणनाथजीने औरंगजेबको समझानेका प्रयत्न किया किन्तु उसके न समझनेसे हिन्दू राजाओंको उसके विरुद्ध तैयार किया. यह भी अत्याचारियोंको सन्मार्ग पर लानेके लिए ही किया था किन्तु औरंगजेब जैसे लोग श्री प्राणनाथजीके प्रति सम्मान नहीं रख सके. इसी प्रकारकी घटना रसूलके साथ भी घटी थी.]

केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर मांहें ।

मुसलिम नाम धराए के, बैठे मुसलिमकी छांहें ॥ ३०

ऐसे अविश्वासी लोगोंके प्रति कोपदृष्टि रखकर भी पुनः उनको अपनी कृपा दृष्टिके अन्तर्गत ही समा लिया. इस प्रकार रसूल मुहम्मदने अपने अनुयायियोंका नाम मुस्लिम रखकर उनको भी अपनी छत्रछायामें रखा.

अब तो लगे सब बंदगी, आया भला यकीन ।

नर नारी हक कलमें, कायम खडे हैं दीन ॥ ३१

अब कुरानके अर्थ स्पष्ट हो जानेसे सभीको अन्तिम धर्मगुरुके प्रति विश्वास उत्पन्न हुआ. इसलिए सभी नर-नारी सत्य वचन-तारतम ज्ञान प्राप्त कर सर्वदाके लिए धर्मके प्रति समर्पित हुए.

पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल ।

आरब समझें आरबी, दोए कहूं लुगे दिल खोल ॥ ३२

सर्व प्रथम मुझे रसूल साहबके विषयमें कहना है, वह बात भी संक्षेपमें सुनो. आरबलोग अरबी भाषा ही समझते हैं, इसलिए अरबी भाषामें ही दो चार वचन दिल खोलकर स्पष्ट करता हूँ.

प्रकरण ३३ चौपाई ११७७

सम्मे न कलीम कलामी, नास कुरब ना कसीर ।  
 नेक मैं कहूं मेरी बोलीमें, आदमी कबीले मेरे बहुत हैं ।  
 अना हाकी हकाइयां कलूब ना, मिसान इस्म कबीर ॥ १  
 मैं कहूं बातें दिल मेरे की, जिनके नाम बड़े हैं ॥  
 फआल नफस इस्म इमाम, बाद कलिम कुल्ल नास ।  
 धराया अपना नाम इमाम, पीछे कहेंगे सब आदमी ।  
 व लाकिन ला अरफ कुरान, अना मिन्हुम कुल्ल लि रास ॥ २  
 ए पर नहीं समझेंगे कुरान, मैं इनमें से सब लिए साथ सिर के ॥  
 अल्लजी हकाइयां कलूब ना, मा खफी मिन्कुम ।  
 जो बातें दिल मेरे की, ना छिपाऊं तुम से ।  
 कुम् यकून कुरब ना, अल्लजी रूह मुस्लिम ॥ ३  
 तुम हो कबीले मेरे के, जो कोई रूहें मुस्लिम हैं ॥  
 लेस खबर मा कुम कमा, अल्लजी बरारब ।  
 नहीं है खबर तुमकों ऐसी, जैसी कछू जिमी अरब की ।  
 हाजा मुस्लिम कुल्ल हुंम, फआल अली मिनजरब ॥ ४  
 ए मुसलमान सारे जो हैं, किए अलिएं मोहो मारके ॥  
 व ला लहुम्मा ऐयून, खारज व ला दखल ।  
 और नहीं हैं इनोंकों आंखें, बाहेरकी और नहीं हैं भीतर की ।  
 व लहुम्म लेस इगनू, व लहुम्म लेस अकल ॥ ५  
 और नहीं हैं इनोंके कान, और नहीं हैं इनोंके अकल ॥  
 जरब ना वजहे मिन्सेफ, फआल ना मुसलमीन ।  
 मारे मैं मोहों समसेर से, किए मैंने मुसलमान ।  
 लाकिन जाहिल यमन, व लाए जाआ यकीन ॥ ६  
 पर मूरख जो अरब के, और नहीं आया इन को इमान ॥

लिहाजा कमा काल यमन, ला बारकला मुसलमीन ।  
इस वास्ते ऐसा कहा इमनको, नहीं है बरकत इन मुसलमानोंको ।

बारकला धन्य ला बारकला धृक

कुलू बारकला हिन्द मुस्लिम, खुजू रास कलाम यकीन ॥ ७  
कही इमानरूपी बरकत हिन्दके मुसलमानों को, लिए सिर कलाम आकीन से ॥  
हाजा फास खबर इन्द कुम्म, यजिलस हिन्द सुब्हान ।  
ए जाहेर खबर पास तुमारे है, बैठेंगे हिन्दमें खावंद ।  
कमा अव्वल काल रसूल, अना हस्ना हिन्द मकान ॥ ८  
ऐसे पहले कहा रसूलने, मेरा नेक है हिन्द स्थान ॥  
व ला लेतनी मौला रदो, अल्लजी हाकीयतो महंमद ।  
और न कदी मौला रद करे, जो कछू कहा है महंमदने ।

याने नहीं कभी मौला पीछे फिरेगा

लागिल मुस्लिम इमाम, जाआ हिन्दल्अर्ज ॥ ९  
वास्ते इन मुसलमानों के इमाम मेहेदी, आया हिन्द की जिमी ॥  
कुम अल्लजी मुस्लिम, रसूल कुल्लहो कलिम ।  
तुम जो कोई मुस्लिम हो, रसूलने सबको कहा है ।  
यजाआ यकीनल्कुम, खैर तलबो हिन्द मुस्लिम ॥ १०  
आवेगा यकीन तुमारे ताई, पनाह मांगो हिन्दके मुसलमानों से ॥  
ऐवसरो हाजा कलमा, दाखल कलूब कुम्म ।  
देखो एह बचन, बीच दिल तुमारे के ।  
सैयवो विलाद कुल्लहुम्म, खैर तलबो हिन्द मुस्लिम ॥ ११  
छोडो विलायत सबकी, बगसीस मांगो हिंदके मुसलमानों पे ॥  
अल्लजी कलिमा रसूलना, खुजो महुब्ब कलाम ।  
जिन किनोंने बचन रसूल मेरे के, लिए प्यारसों बोल ।  
लागिल हिन्द मुस्लिम, हुबहुम्म जाआ इमाम ॥ १२  
वास्ते हिंद के मुसलमानों के, प्यार कर इनों पर आया इमाम ॥



याने वास्ते इन्होंके आया है इमाम मेहेदी

अल्लजी रसूल सैयवो, ऐयो ना फआली हुम्म ।  
जो रसूलने छोड दर्ई, क्या मैं करूं उनको ।  
खला ना अर्ज आरब, जाआ ना इन्द कुम्म ॥ १३  
छोडी हम जिमी अरब की, आए हम पास तुमारे ॥  
इस्म्यो हिन्द मुस्लिम, इनी कलिम सिदक ।  
सुनो हिंद के मुसलमानों, मेरे कहना है सांच ।  
यकीन कान इन्द कुम्म, व कायम् उल कलमे हक ॥ १४  
इमान है पास तुमारे, और मजबूत हो, साथ कलमे सांच के ॥  
अव्वल स्वाल रसूल ना, व लाए आरफ अहद ।  
पहले बोल रसूल मेरेके, और न समझा कोई आदमी ।  
दलहिन कुल्ल यआरिफो, जाआ कलिम महंमद ॥ १५  
अब सब समझेंगे, आया बोल रसूल का ॥  
अल्लजी जाआ कुम्म मुस्लिम, हाजा लागिल कुम्म फआल सुगल ।  
जो आए हो तुम मुसलिम, यह खातिर तुमारे किया है खेल ।  
इक्सर सुगल ना यरजा, अल्लजी मुस्लिम कुल्ल ॥ १६  
देख खेल हम फिरेंगे, जो कोई मुसलिम सब ॥  
अनी मुस्लिम कुल्ल वाहिद, अस्तू वाहिद मकानी ।  
हम मुसलिम सब एक हैं, असल एक ठौर हमारा ।  
कान हक वाहिद अना, गैर मुस्लिम लेस सानी ॥ १७  
है खसम एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं कोई दूसरा ॥  
अनी हबो कुल्ल मुस्लिम, लाकिन जायद सिंध ।  
मेरे प्यारे सब मुसलिम, लेकिन अधिक हैं सिंधके ।  
हाला ना कलिम सिंध मुस्लिम, बाद कलिम अना हिन्द ॥ १८  
अब मैं कहूं सिंध के मुसलमानों को, पीछे कहूंगा मैं हिंदकी बोली ॥

प्रकरण ३४ चौपाई ११९५

कारण अरवा असजी, चुआं सिंध गालाए ।  
जिन कलमें रसूल जे, सचो यकीन आए ॥ १

परमधामकी उन ब्रह्मात्माओंके लिए सिन्धी बोलीमें कहता हूँ, जिनको हजरत मुहम्मदकी वाणीके प्रति सच्चा विश्वास है.

मोमिन वलहा महंमद, जे सदाई जाण ।  
थियो सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो पाण ॥ २

ब्रह्मात्माएँ सदा सर्वदा श्यामाजीके अवतार श्री देवचन्द्रजी (महदी मुहम्मद)की प्रिय रही हैं, इसे सत्य समझना. जब प्रियतम परमात्मा स्वयं पधारे, तब सभी ब्रह्मात्माओंको अखण्ड सुख प्राप्त हुआ.

चुआं कुजाडो हिंद के, सांई बडो डिन्यो सुहाग ।  
आयो रब आलम जो, सभनी उघड्यो भाग ॥ ३

भारतवर्षके लोगोंकी क्या बात करूँ ? परमात्माने उन्हें अति सुख प्रदान किया है. समस्त जगतके स्वामी सद्गुरुके रूपमें यहाँ अवतरित हुए हैं, जिससे सबका भाग्य उदय हो गया.

अदयूं रसूल पांहिजो, कोठे आयो इमाम ।  
आलम सभे उलट्यो, अची करें सलाम ॥ ४

हे सखी ! रसूल मुहम्मदके कथनानुसार परमात्मा स्वयं सद्गुरु बनकर हमें बुलानेके लिए पधारे हैं. उनके दर्शनके लिए सारा संसार उमड़ पड़ा. अब सभी आकर उन्हें प्रणाम करते हैं.

सिंधडी थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर ।  
पुन्यूं उमेदूं सभनी, खिल्ली थेयां सभ खीर ॥ ५

सिन्ध प्रदेश (की इन्द्रावती) को अभिनन्दन (बधाई) मिला. धर्माचार्य (मीर), गुरु (पीर), संन्यासी (फकीर) इन सभीकी मनोकामनाएँ पूर्ण होनेसे सभी आनन्दसे आत्मविभोर हो गए.

अची बिठो हिंद में, त्रूठो चौडे तबक ।

थेयूं सुहाग सिंधी, जिन कलमें यकीन हक ॥ ६

परमात्मा भारतवर्षमें सद्गुरुके रूपमें विराजमान हुए हैं। उनकी कृपाकी वर्षा चौदह लोकोंमें हुई। सिन्धकी सखी (इन्द्रावती) को भी सुहागका सुख प्राप्त हुआ, जिसको सद्गुरुके सत्यवचन (तारतम ज्ञान) पर पूर्ण विश्वास है।

ई अरब रसूलजी, वलही सिंध सुजांण ।

यकीने पण अगरी, इसक सिंधी खांण ॥ ७

जिस प्रकार अरबके रसूल अल्लाहके प्रिय कहे जाते हैं, उसी प्रकार सिन्धकी विदुषी (सुजान) सखी इन्द्रावती धामधनीकी प्रिय आत्मा है। विश्वास पात्रमें भी वह अग्रगण्य है और प्रेमका भी भण्डार है।

आंऊं जोए इमाम जी, सिंधाणी सिरदार ।

डिन्यो धणी सभ पांहिजो, मूंही हथ मुदार ॥ ८

मैं, सिन्धकी अग्रगण्य इन्द्रावती, ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुकी अङ्गना हूँ। सद्गुरु धनीने अपना सम्पूर्ण दायित्व मुझे हस्तान्तरित किया है।

आयो मिठडो मेहेबूब, आंऊं पण पिरियन सांण ।

अची बिठासी हिंदमें, डिजां सिंधी जांण ॥ ९

मेरे प्यारे धनी (संसारमें) आए हैं, मैं भी अपने प्रियतम धनीके साथमें हूँ। वे भारतवर्षमें आकर बैठे हैं। सिन्धकी शिरोमणि सखी इन्द्रावती समझकर उन्होंने मुझे यह दायित्व सौंपा है।

डिजां संडेहडो सिंधी, तूं घणूं वलही इमाम ।

सिंध हिंद माधा थेई, पोरयां जेदां रूम स्याम ॥ १०

श्री कृष्णजीने सुन्दरबाईसे कहा था, सिन्धकी सखी (इन्द्रावती) को इस प्रकार सन्देश देना कि तुम परमात्मा स्वरूप सद्गुरु (इमाम) की बहुत प्यारी हो। सिन्धकी सखी (इन्द्रावती) और हिन्दकी सखी (सुन्दरबाई) तुम सभी ब्रह्मात्माओंमें अग्रणी होंगी, तत्पश्चात् रोम और श्याम (हामी और सामी परम्पराके अर्थात् पूर्व और पश्चिम) के सभी लोग तुम्हारा अनुसरण करेंगे।

हांगे चुआं सचो साईजी, जे अची बिठो हिंद ।

ईसे माधा अची करे, भंगो दजाल जो कंध ॥ ११

अब मैं सत्य परमात्माकी बात कहता हूँ, जो भारतवर्षमें आकर बैठे हैं। सर्वप्रथम सद्गुरुने यहाँ आकर सभीका नेतृत्व करते हुए नास्तिकता (दज्जाल) को दूर भगाया।

दीन कियाऊं हिकडो, भजी सभे कुफरांन ।

अरस बका केयाऊं जाहेर, जित हक बिठो पांण ॥ १२

सद्गुरुने एक ही सत्य धर्मकी स्थापना की, जिससे सभीकी भ्रान्तियाँ दूर हो गईं। उन्होंने इस संसारमें अखण्ड परमधामको प्रकट किया, जहाँ स्वयं परब्रह्म परमात्मा विराजमान हैं।

आसमान जिमी जे बीचमें, व्यो कोए न चाए हक ।

से हंद सभे उडी बियां, जे सेजदा कंदी हुई खलक ॥ १३

आकाश और धरतीके मध्य अब एक परब्रह्मके अतिरिक्त अन्य कोई परमात्मा नहीं कहलाएगा। वे स्थान सब अस्तित्वहीन हो गए (उड़ गए) हैं, जिन पर नश्वर जीव नमन करते थे।

सचो साईं जडे आइयो, तडे व्यो पुजाए केर ।

सुज कायम उगी थेयो जाहेर, तडे उडी बेई सभे अंधेर ॥ १४

जब सत्य स्वरूप परब्रह्म परमात्मा प्रकट हो गए, तब अन्य किसीकी पूजा कैसे हो सकती है ? अब तारतम ज्ञानरूपी अखण्ड सूर्य उदय हो गया तथा सम्पूर्ण रूपसे अज्ञानरूपी अन्धकार मिट (उड़) गया।

धणी जमाने जो आइयो, तडे छुटी बेई तांणों बांण ।

तित मोमिन उथी ऊभा थेयां, दोजख थेई कुफरांन ॥ १५

अन्तिम समयके धनी (परमात्मा) के प्रकट होने पर विश्वमें ब्रह्म विषयक खींचातान छूट गई। ब्रह्मात्माएँ जाग्रत होकर उठ खड़ी हुईं एवं श्रद्धाहीन (नास्तिक) लोगोंको नरककी अग्नि (जन्म-मरण) प्राप्त हुई।

हित के के बजरक आइया, जे नजीकी हक जा ।

ए बडा दीन दुनी में, रूहें चाइन पातसा ॥ १६

इस संसारमें कई ज्ञानी पुरुष हुए जो परमात्माके निकटके कहलाते थे. विश्वमें वही धर्म सर्वोच्च कहलाया, जिसमें ब्रह्मात्माएँ शिरोमणि (सम्राट) कहलाई.

सेर सेरे मके मुलक, आई तेआं पुकार ।

रह्या ईमानसे सतजणां, व्या काफरें मार केयां कुफार ॥ १७

सिंधमें अदियूं पांर्हिजयूं, हे खबर डिजां तिन ।

असां गाल सुणी दंम ना रहे, जा हूंदी रूह मोमिन ॥ १८

शराअ (कर्मकाण्ड) को प्राथमिकता देने वालों (कट्टरपन्थी मुसलमानों) के सिर झुकानेके स्थान मक्कासे पुकार आई कि सात व्यक्ति ही परमात्माके प्रति विश्वास रखने वाले रह गए अन्य सभीको अविश्वासने घेर लिया. इस प्रकार श्री कृष्णजीने सुन्दरबाई (सद्गुरु)को कहा था कि तुम सिन्धकी अपनी बहन (इन्द्रावती) को यह समाचार देना. जो ब्रह्मात्माएँ होंगी, वे हमारी बात सुनकर एक क्षण भी संसारमें नहीं रहेंगी.

[औरङ्गजेबके शासन कालमें मक्कासे समाचार आया कि हजारों लोग (सत्तर हजार व्यक्ति) एक साथ नमाज पढ़ रहे थे, उस समय सोनेकी अशरफियोंकी वर्षा हुई, तो सभी लोग प्रलोभनसे उसे उठाने लगे. केवल सात व्यक्ति ही नमाजमें दृढ़ रह गए. यहाँ उसी प्रसङ्गका सङ्केत किया है.]

सुख बका अरस हिन जिमी, हिए गिनणजी बेर ।

पोए आलम जडे उलट्यो, तडेलखे पुछे चोए केर ॥ १९

परमधामका अखण्ड सुख इस संसारमें प्राप्त करनेका यही स्वर्णिम अवसर है. इसके पश्चात जब सारा संसार इस सुखको पानेके लिए उमड़ पड़ेगा, तब लाखों लोग (परमधामका ज्ञान तथा सुख प्राप्त करनेका माध्यम) पूछेंगे परन्तु उत्तर देगा कौन ?

निसवती अची गडवी, पंग ही सुख फजर कित ।

सुख बका अरस केर गिनी सगे, जे नूर जमाल बूठडो हित ॥ २०

परमधामकी सभी ब्रह्मात्माएँ आ मिलीं, किन्तु प्रभात (जागनी)का यह सुख

पुनः कब प्राप्त होगा ? परमधामका अखण्ड सुख, जिसे अक्षरातीत धामधनीने स्वयं यहाँ वर्षाया है, कौन ग्रहण कर सकेगा ?

हे सुख मोमिन हमेसगी, अरस में सभे गिनन ।

पण जे सुख अरसजा हिन जिमी, से व्यारे न्हाए रूहन ॥ २१

सभी ब्रह्मात्माओंको परमधाममें यह अखण्ड सुख प्राप्त है, परन्तु इस संसारमें यह सुख ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य किसीको भी प्राप्त न हो सका।

हकें डिना सुख आलम में, त्र भेरका पांणके ।

से सुख गिडां रात निद्रमें, के भत चुआं सुख ए ॥ २२

इस नश्वर संसारमें भी धामधनीने यह सुख हमें तीन बार (ब्रज, रास और जागनीमें) प्रदान किया। ब्रज और रासका यह सुख हमने अनभिज्ञ अवस्था (रात)में ही प्राप्त किया, उसका वर्णन मैं कैसे करूँ ?

जी सुख सोणेंमें गिनजे, तीं सुख गिडां रात ।

डीहें सुख गिनजे जागन्दे, ही आए रेहेमानी दात ॥ २३

जिस प्रकार ब्रजका सुख स्वप्नमें प्राप्त किया, उसी प्रकार रासका सुख भी रातमें ही लिया। किन्तु अब जागनीके ब्रह्माण्डमें (तारतम ज्ञान द्वारा) जागृत अवस्थामें दिनका सुख प्राप्त हुआ है, यह धनीकी असीम कृपा है।

जे सुख डिना हकें रातजा, तेजी पण हित लजत ।

अरसजा सुख पण हिनमें, हित गिडां कै कोडी भत ॥ २४

धामधनीने (ब्रज रासका) जो सुख अनभिज्ञ अवस्था (रात) में दिया, उसका भी आनन्द यहाँ (जागनीमें) प्राप्त हुआ है। परमधामके कोटि सुखोंका आनन्द भी हमने यहाँ (जागनीमें) प्राप्त किया।

हे सिफत न जिभ चई सगे, सेई जांणे गिडां जिन ।

सुख कीं चुआं हिन भूअजा, सुख डिना महें बका वतन ॥ २५

नश्वर जिह्वासे इस सुखकी महिमाका वर्णन नहीं हो सकता। जिन्होंने इन सुखोंका अनुभव किया है, वे (ब्रह्मात्माएँ) ही इसे जान सकती हैं। जागनी

के इस ब्रह्माण्डमें धामधनीने परमधामके जिन सुखोंका अनुभव इसी संसारमें करवाया है, अब मैं उनका वर्णन कैसे करूँ ?

**बरकत हिन रूहनजी, सुख गिडां सभनी मुलक ।**

**सिफत न थिए हिन सुखजी, हे जा पेराई सभे खलक ॥ २६**

इन ब्रह्मात्माओंकी शक्तिसे संसारके समस्त जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थलोंके सुख प्राप्त हुए. इन सुखोंकी महिमाका वर्णन नहीं हो सकता, जिन्हें सारे विश्वने प्राप्त किया है.

**कागर केयां सभ पधरो, खोल्या हकजा गंज ।**

**सुख डिनाऊं सभ बका, जिनी रात डीहें हुआ दुख रंज ॥ २७**

सभी धर्मग्रन्थों (वेद, कतेब आदि) में परमात्माके अवतरणके सम्बन्धमें जो कुछ कहा गया है, उन सङ्केतोंका रहस्य भी स्पष्ट कर दिया है. परमधामका अखण्ड सुख उन्हें भी दिया गया, जो (संसारी जीव) दिन-रात दुःखके जंजालमें पड़े हुए थे.

**कारैं सदीमें कयामत, लिखी मंझ कुरान ।**

**से सभ केयांऊं पधरा, जे गुझ हुंदा निसान ॥ २८**

ग्यारहवीं सदीमें आत्म जागृति (कयामत) होगी, इस प्रकार कुरानमें लिखा है. वे सभी गुह्य सङ्केत अब स्पष्ट हो गए हैं (जो प्रकाशमें आए नहीं थे).

**सदी बारैं बी खलक, जिमी या आसमान ।**

**आखर थेई सभनी, समझे जा सुजान ॥ २९**

कुरानके अनुसार बारहवीं सदीमें आकाश और धरतीके सभी अन्य जीवोंकी भी आत्म जागृति (कयामत) होगी अर्थात् उनकी अज्ञानता दूर हो कर उन्हें अखण्ड सुख प्राप्त होगा. सुज्ञ (समझदार) व्यक्ति ही इस रहस्यको समझ सकते हैं.

**कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण ।**

**महामत जोए इमामजी, जाहेर केयांऊं फुरमान ॥ ३०**

इस प्रकार तेरहवीं सदीमें सारा संसार अखण्ड होगा. सभी जीव मुक्ति

स्थलोंमें पहुँचेंगे. सद्गुरु (इमाम) की अङ्गना महामति प्राणनाथने कुरानके रहस्योंको इस प्रकार स्पष्ट कर दिया है.

### प्रकरण ३५ चौपाई १२२५

सनंध ईसा इमामके कजाकी

इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम ।

काटे आउध दजालके, पीछे आए रसूल इमाम ॥ १

सर्वप्रथम धनी श्री देवचन्द्रजी (ईसा) ने प्रत्यक्ष पदार्पण कर सत्य धर्मको सुनियोजित रूपसे प्रतिष्ठित किया. उसके पश्चात् अन्तिम धर्मगुरु (इमाम महदी) के रूपमें मेरे हृदयमें अवतरित होकर मायारूपी दज्जालके सारे आयुध (अस्त्र) काट दिए.

अब सबदातीतकी सबदमें, सोभा वरनी न जाए ।

जो कछू कहूं सो सबदमें, बोलूं कौन जुबां ॥ २

अब मैं शब्दातीत परब्रह्मकी शोभाका वर्णन करता हूँ, जो शब्दोंके द्वारा सम्भव नहीं है. अतः जो कुछ भी कहूँ संसारके शब्दोंमें ही कहना है, अन्यथा कौनसी भाषासे व्यक्त करूँ ?

खूबी तखत ना केहे सकों, इन जुबां के जोर ।

जानूं रात कुफरकी मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर ॥ ३

परब्रह्मके सिंहासनकी शोभाका वर्णन इस जिह्वाके बलसे कर नहीं सकता. अब नास्तिकतारूपी अज्ञानकी रजनीका मानो अवसान हुआ तथा दिनके प्रभातका उदय हुआ है.

हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खडा लुदंनी नूर ।

जाए ना बरन्यो इन जुबां, खडी अरस अरवा हजूर ॥ ४

सद्गुरु (इमाम) स्वयं ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान)का तेज लेकर खड़े हो गए, जिसके आलोकका लेखा सम्भव नहीं है. इसी प्रकार परमात्माके समीपस्थ ब्रह्मात्माओंका वर्णन करना भी इस नश्वर जिह्वासे असम्भव है.



आगे खड़ा असराफील, और जबरईल हुकम ।

जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम ॥ ५

सम्मुख ही अक्षरकी बुद्धि (इसराफील) तथा उनका आवेश (जिब्रील) खड़े हैं. अखण्ड परमधामके अधिपति परब्रह्म परमात्माका आवेश सभी ब्रह्मात्माओंमें समाया हुआ है.

यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कै चमर ।

रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर ॥ ६

इस प्रकार अन्तिम समयमें न्याय देनेके लिए परमात्माके रूपमें अवतरित सद्गुरु (इमाम) मेरे हृदयरूपी सिंहासन पर आसीन हुए हैं, उनके सिर पर छत्र है तथा उनको चँवर भी डुलाया जा रहा है. सद्गुरुके साथ परमात्माके सन्देशवाहक रसूल मुहम्मद एवं अली भी (अपने वचनोंके अनुसार) आकर मिल गए, जिससे घर-घरमें बधाइयाँ होने लगीं.

गुझ थे मोमिन अरस के, ताकी जाहेर हुई खबर ।

सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर ॥ ७

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ अभी तक छिपी हुई थीं, उनके अवतरणका समाचार सर्वत्र प्रकाशित हुआ. अब वे सद्गुरुके रूपमें पधारे परमात्माको घेरकर बैठ गईं. अतः घर-घरमें बधाइयाँ होने लगीं.

कै औलिए कै अंबिए, कै फिरस्ते पैगंमर ।

सो सब आगे आए खड़े, हुई बधाइयां घर घर ॥ ८

अनेक ऋषि महर्षिगण (परमात्माके मित्र औलिया), पैगम्बर गण (अंबिए), देवता (फिरस्ते), अवतार इत्यादि सभी लोग न्यायाधीश बनकर सद्गुरुके रूपमें पधारे हुए परमात्माके सम्मुख खड़े हो गए, इसलिए घर-घरमें बधाइयाँ होने लगीं.

आइयां किताबें जिन पर, बुजरक जो मेहेतर ।

मुसलमान आए संग, हुई बधाइयां घर घर ॥ ९

जिन पैगम्बरों पर आध्यात्मिक पुस्तकें (तौरेत, जंबूर, इंजील तथा कुरान)

उत्तरी तथा जो श्रेष्ठ एवं शिरोमणि कहलाए, वे सब भी अपने अनुयायी मुसलमानोंके साथ सद्गुरुके रूपमें पधारे परमात्माके साथ आकर समाहित हो गए. इसलिए घरोंमें बधाइयाँ होने लगीं.

**मुसलमान कै भेषसों, पीर मरद फकर ।**

**पीछा कोई ना रेहेवहीं, हुई बधाइयां घर घर ॥ १०**

मुसलमानोंमें भी विभिन्न प्रकारके वेश धारण करनेवाले गुरु (पीर) सन्त (फकीर) साधारण मनुष्य सब लोग सद्गुरुके चरणोंमें आए, जिससे घर-घरमें बधाइयाँ गाई जाने लगीं.

**जुदी जुदी जातें जहानमें, सब आवत हैं मिल कर ।**

**होत दीदार सबन को, हुई बधाइयां घर घर ॥ ११**

विश्वमें विस्तरित भिन्न-भिन्न जातिके लोग एक साथ मिलकर आ रहे हैं और सभीको सद्गुरुके अन्दर परब्रह्म परमात्माके दर्शन हो रहे हैं, फलतः घर-घरमें बधाइयाँ होने लगीं.

**दुनियां चारों खूंट की, सब आवत हैं एकदर ।**

**मंगल गावें सब कोई, हुई बधाइयां घर घर ॥ १२**

चारों दिशाओंसे सभी लोग एक ही द्वार पर आ रहे हैं. सभी मङ्गल बधाइयाँ गा रहे हैं तथा घर-घरमें आनन्द छा गया है.

**जो कबूं कानों ना सुनी, जात वरन भेष धर ।**

**आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर ॥ १३**

विभिन्न जाति, वर्ण तथा वेशधारी लोगोंमें जिन्होंने परमात्माके विषयमें सुना ही नहीं था, वे भी आनन्द उल्लासके साथ आने लगे, अतः घर-घरमें बधाइयाँ होने लगीं.

**बिना हिमाबें आलम, वैराट सचराचर ।**

**दौडत सब दीदार को, हुई बधाइयां घर घर ॥ १४**

विश्वके असंख्य सचराचर प्राणी सद्गुरुके रूपमें पधारे हुए परमात्माके दर्शनार्थ दौड़कर चले आ रहे हैं, जिससे घर-घरमें बधाइयाँ होने लगीं.

अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर ।

इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारोंकी नजर ॥ १५

चौदह लोकके सभी जीव, जिन्होंने नर या नारीका शरीर धारण किया है, उन सबकी दृष्टि न्यायके सिंहासनपर विराजमान परमात्माके चरणों पर टिकी है।

जब आया रब आलमीन, तब आया सबों यकीन ।

और मजहब सब उड गए, एक खडा महंमद दीन ॥ १६

जब सम्पूर्ण जगतके सृष्टिकर्ता परमात्मा स्वयं सद्गुरुके रूपमें अवतरित हुए, तब सभीको उनके प्रति विश्वास हुआ। अब अन्य सभी सम्प्रदाय अस्तित्वहीन हो गए और परमात्मा द्वारा प्रशंसित सत्यधर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-निजानन्द सम्प्रदाय) ही इस मायावी प्रवाहमें टिका रहा।

जात एक खसम की, और न कोई जात ।

एक खसम एक दुनियां, और उड गई दूजी बात ॥ १७

सृष्टिके सभी जीव परब्रह्मकी जातिके हैं। उसके अतिरिक्त अन्य कोई जाति ही नहीं है। अब तो एक धनी तथा एक संसार ही रह गया है, शेष सभी बातें मिट गई हैं।

करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान ।

साफ हुए दिल सबन के, उड गई कुफरान ॥ १८

इस भूतलमें अवतरित परब्रह्म परमात्माके दर्शनके लिए जगतके सभी लोग एकत्रित हैं। तारतम ज्ञानके द्वारा सभीके हृदय निर्मल हो जानेसे सबके हृदयका अज्ञानरूप अन्धकार मिट गया।

खाए पिए सब मिलके, बंदगी एक खसम ।

नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम ॥ १९

सभी सूत्रबद्ध होकर खा-पी रहे हैं तथा अद्वैत भावसे एक ही परमात्माकी अर्चना कर रहे हैं। सभीके भिन्न-भिन्न इष्टोंकी विविधता मिट जानेसे एक नई रीति तथा व्यवस्थाका सूत्रपात हुआ।

मेला अति बडा हुआ, पसर गई पेहेचान ।  
सेहेदाने सबों घरों, चारों खूंटों बजे निसान ॥ २०

आत्म जागृतिके इस महान मिलनमें परमात्माकी पहचान सर्वत्र फैल गई तथा सभी घरोंमें आनन्दोल्लास होने लगा एवं चारों दिशाओंमें वाद्ययंत्र बजने लगे.

आए इमाम बाजे बजे, सो केते कहूं विचित्र ।  
बिना हिसाबें बाजहीं, हिसाब बिना बाजंत्र ॥ २१

आत्मजागृतिके समयमें अन्तिम धर्मगुरु (इमाम) के रूपमें परमात्माके प्रकट होने पर सर्वत्र विचित्र वाद्ययन्त्र बजने लगे, उनका मैं कहाँ तक वर्णन करूँ ? वाद्ययन्त्र भी असंख्य हैं और बजानेका ढङ्ग भी अतुलनीय है.

कजा हुई तब जानिए, जब खुले माएने कुरान ।  
तब आगे तें उड गई, जाने हती नहीं कुफरान ॥ २२

रसूल मुहम्मदने पहले ही कहा था, जब कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो जाएँगे, तब समझना कि अब सभीको न्याय प्राप्त होगा. तब अज्ञानरूप अन्धकार इस प्रकार उड़ जाएगा कि कभी वह छाया हुआ ही नहीं था.

मगज माएने किन ना खोले, अव्वल बीच और अब ।  
ए कजा तब होवहीं, जब खुले माएने सब ॥ २३

प्राचीन समयसे लेकर मध्यकाल तथा वर्तमान समय पर्यन्त भी किसीके द्वारा कुरानके ये गूढ़ रहस्य स्पष्ट नहीं हुए थे. जब वे सारे रहस्य स्पष्ट हो जाएँगे, तब सभीको न्याय प्राप्त होगा.

कछुक रखे रसूले, माएने सब थें गुझ ।  
सो इमाम मुख खोलाए के, करत काजीकी सुझ ॥ २४

रसूल मुहम्मदने कुरानके कुछ रहस्य गुह्य (गुप्त) ही रखे थे. अब परमात्मा उन रहस्योंको इस समयके धर्मगुरु (इमाम महदी) के मुखसे स्पष्ट करवाकर सभीको इन न्यायाधीशकी पहचान करवा रहे हैं.

गुझका गुझ और जो सुन्या, सो लिख्या न रसूले कुरान ।

जाने काजी जुबां केहेलाएके, कर देऊं काजीकी पेहेचान ॥ २५

रसूलने दर्शन (म्याराज)के समय परमात्मासे गूढ़से भी अतिगूढ़ रहस्य सुने थे, किन्तु उन्होंने उन रहस्योंको कुरानमें नहीं लिखा था। उसका यही तात्पर्य था कि ऐसी रहस्यमयी बात (परमधामकी चर्चा) अन्तिम न्यायाधीशके मुखारविन्दसे बुलवाकर, वे इन न्यायाधीशकी पहचान करवाना चाहते थे।

याही वास्ते गुझ रख्या, ए बात दिलमें आन ।

कसनी सेती परखिए, काजी कसोटी कुरान ॥ २६

इसी उद्देश्यसे ये बातें गुह्य रखी गई थीं। अतः इन न्यायाधीशको न्यायकी कुशलताके द्वारा ही पहचान लो, कुरानके गूढ़ रहस्योंका स्पष्टीकरण ही न्यायाधीशकी परीक्षा (कसौटी) है।

मोमिनोसों असल का, महंमद सदा सनेह ।

सो आखरलों फुरमान, लिए खडा है एह ॥ २७

मूल सम्बन्धके कारण रसूल मुहम्मदको ब्रह्मात्माएँ अतीव प्रिय लगती थीं, इसलिए वे आत्म जागृतिके समय भी इसी कुरानको लेकर अन्तिम धर्मगुरु (इमाम महदी)के साथ खड़े हुए हैं।

महंमद बिना मेहेदीय की, करदे कौन पेहेचान ।

इन विध माएने तो लिखे, जो निसबत अव्वलकी जान ॥ २८

इस प्रकार रसूल मुहम्मदके (कुरानके रहस्य स्पष्ट किए) बिना अन्तिम समयके धर्मगुरु (महदी मुहमद)की पहचान कौन करवा देता ? आरम्भ से ही उनका परस्पर सम्बन्ध था, इसीलिए रसूल मुहम्मदने सांकेतिक शब्दोंमें कुछ गूढ़ रहस्य लिखे थे।

एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर ।

काजी ईसा मेहेदी महंमद, ए जुदे होए क्यों कर ॥ २९

यही कुरान (अल्लाह कलाम) ब्रह्मात्माओंका समाचार दे रहा है। इसीलिए ज्ञात होता है कि अन्तिम समयमें न्याय देनेवाले न्यायाधीश (इमाम महदी)

तथा सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (ईसा रूह अल्लाह) पृथक स्वरूप नहीं हैं (एक ही स्वरूप हैं) इसलिए वे भिन्न कैसे हो सकते हैं ?

केहेनी अकथ इमाम की, खसमें कथाई हम ।

इन कुरान के माएने, ना होवे बिना खसम ॥ ३०

इस प्रकार सद्गुरु (इमाम) प्रदत्त तारतम ज्ञानका महत्त्व अवर्णनीय है। स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्माने हमारे द्वारा इसका महत्त्व कहलाया, क्योंकि कुरानके इन रहस्योंका स्पष्टीकरण परमात्माकी शक्तिके बिना संभव नहीं था।

कलाम अल्लाहके माएने, कबूं ना खोले किन ।

एही कलाम यों केहेवहीं, ना खुले मेहेदी बिन ॥ ३१

कुरानके गूढ़ रहस्य कभी भी किसीने इसीलिए स्पष्ट नहीं किए थे कि इसी कुरानमें ही ऐसा कहा गया है कि अन्तिम समयके धर्मगुरु (इमाम महदी)के अतिरिक्त किसीसे भी ये स्पष्ट नहीं होंगे।

सो खसमें खोलाए मुझपें, यों कर किया हुकम ।

कहे तू आगे रूहें फिरस्ते, जिन प्यारे हक कदम ॥ ३२

इन्हीं रहस्योंको मुझसे स्पष्ट करवाकर सद्गुरु निजानन्द स्वामीके रूपमें पधारे हुए परमात्माने मुझे आदेश दिया कि तुम इन रहस्योंको ब्रह्मात्माओं तथा ईश्वरी सृष्टिके सम्मुख स्पष्ट करना क्योंकि उनको ही परब्रह्म परमात्माके चरण कमलोंसे प्यार है।

हरफ हरफ के माएने, तामें गुझ मता अनेक ।

खोल तूं आगे अरस रूहें, जो प्यारी मुझे विसेक ॥ ३३

सद्गुरुने मुझे इस प्रकार कहा, कुरानके प्रत्येक शब्दके अर्थमें अनेक गूढ़ रहस्य छिपे हुए हैं, उन्हें तुम ब्रह्मात्माओंके समक्ष स्पष्ट करना, क्योंकि ये ब्रह्मात्माएँ मुझे विशेष प्रिय हैं।

अब तुम सुनियो मोमिनो, सुनते होइयो श्रवन ।

पीछे बिचार होए बिचारियो, तब मगज पाइए बचन ॥ ३४

इसलिए हे ब्रह्मात्माओ ! अब तुम सुनो, अपने कर्णोंको भी सुननेके लिए

तत्पर बनाओ. फिर चिन्तनशील बनकर विचार कर लेना, तभी इन वचनोंका गूढ़ रहस्य समझ सकोगी.

सनंधे सनंधे साखियां, तिन साखी साखी पाव ।

तिन पाव पाव के हरफ का, तुम लीजो दिल दे भाव ॥ ३५

यहाँ पर (इस ग्रन्थमें) प्रत्येक प्रसंगोंकी साक्षियाँ दी गई हैं, उन साक्षियोंके भी एक एक चरण तथा उसके भी एक एक शब्दके भावको तुम ध्यान पूर्वक ग्रहण करो.

नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर ।

इत थें दूजे पसरे, पर न होवे कहूं और ॥ ३६

परब्रह्म परमात्माके आवेशकी ज्योति एक ही स्थान पर होती है (यह पहले सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीमें थी, अब वे स्वयं मेरे हृदयमें बैठे हैं. अतः यह ज्योति अब मेरे अन्दर है) अब यह मुझसे ही चारों ओर फैल जाएगी. मेरे अतिरिक्त अन्य किसीसे भी यह कार्य संभव नहीं है.

ईसा महंमद मेहेदीय की, जो लों ना पेहेचान तुम ।

तो लों तुममें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम ॥ ३७

जब तक तुम्हें सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज, रसूल मुहम्मद तथा इमाम महदीकी पहचान नहीं होगी तब तक तुम पर न्याय करनेके आदेश कैसे क्रियान्वित होंगे ?

सुध नाही फिरस्तन की, ना पेहेचान रूहन ।

ना पेहेचान मुतकी की, ना पेहेचान मोमन ॥ ३८

संसारके जीवोंको तो देवताओं तथा अन्य जीवोंकी ही पहचान नहीं है, फिर उन्हें ईश्वरी सृष्टि (मुतकी) तथा ब्रह्मसृष्टि (मोमिन)की पहचान तो हो ही नहीं सकती.

सुध ना उतरने पुलसरात, ना सुध सरा तरीकत ।

ना पेहेचान हकीकत, ना पेहेचान हक मारफत ॥ ३९

इन जीवोंको तलवारके धारके समान धर्ममार्ग (पुले सिरात) को पार करनेकी

समझ नहीं है. अतः वे कर्मकाण्ड (शराअ) तथा उपासना (तरीकत) को भी समझ नहीं पाते. इसीलिए उनमें यथार्थ ज्ञान (हकीकत) न होने से उनको परमात्माकी पूर्ण पहचान (हक मारफत) भी नहीं हो सकती.

**पेहेचान आप ना नासूत की, ना पेहेचान मलकूत ।**

**ना सुध बका जबरूत की, ना सुध अरस लाहूत ॥ ४०**

ऐसे जीवोंको स्वयंकी एवं नश्वर संसारकी ही सुधि नहीं होती है. उन्हें बैकुण्ठ धाम (मलकूत) तथा अक्षरधाम (जबरूत) एवं परमधाम (लाहूत)का ज्ञान भी नहीं होता.

**ए पेहेचान काहूँ ना परी, क्या बेचून बेचगून ।**

**ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून ॥ ४१**

इनमें से किसीको भी अनुपम (बेचून), निर्गुण (बेचगून), शून्य (ला मकान) तथा निराकार (बेसबी) एवं अद्वितीय (बेनिमून) किसीकी भी पहचान नहीं है.

**ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत ।**

**जिन से आए काफर, ना सुध तिन जुलमत ॥ ४२**

इनको शून्य मण्डल (हवा) की भी पहचान नहीं है, जहाँ पर यह चौदहलोक वाला ब्रह्माण्ड लटका हुआ है. साथ ही उन्हें मोहतत्वकी भी सुधि नहीं है, जहाँसे ये स्वप्नके जीव (काफर) इस खेलमें आते हैं.

**ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत हैं बुजरक ।**

**जिन को हिदायत हक की, तिन सोहोबतें पाइए हक ॥ ४३**

इन सांसारिक जीवोंको ब्रह्मात्माओंके विशिष्ट समूह, जो श्रेष्ठ और महान कहलाता है, की सुधि नहीं है. उन्हीं ब्रह्मात्माओंको स्वयं परमात्माने निर्देश (मार्गदर्शन) दिया है तथा उनके सान्निध्य मात्रसे ही परमात्माकी प्राप्ति होती है.

**ना सुध निराकार की, ना सुध निरगुन सुंन ।**

**ना सुध ब्रह्म क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन ॥ ४४**

न उन्हें निराकारकी सुधि है, न ही निर्गुण तथा शून्यकी सुधि है. ब्रह्मकी



सत्ता कण-कणमें व्याप्त होने पर भी किस प्रकार उसका स्वरूप दिखाई नहीं देता (निरञ्जन) है, इस रहस्यको भी वे नहीं जानते.

**ना सुध ब्रह्म सृष्ट की, सुध सृष्ट ना ईश्वरी ।**

**हिंदू जो जीव सृष्ट के, तिन ए सुध ना परी ॥ ४५**

हिन्दुओंमें भी जो जीव सृष्टि कहलाते हैं, उन्हें भी ब्रह्म सृष्टि तथा ईश्वरी सृष्टि किसीकी भी पहचान नहीं है.

**बिजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार ।**

**वेदों कहा आखर जमाने, एही हैं सिरदार ॥ ४६**

वेदादि धर्मग्रन्थोंमें कहा है कि अन्तिम युगमें विजयाभिनन्द-निष्कलङ्कबुद्धावतार प्रकट होंगे, वे ही सभी अवतारोंमें शिरोमणि कहलाएँगे.

**इनमें लिखी आखर, सुध ना परी काहूं जन ।**

**पढ़ पढ़ गए कै वेद को, पर उनों पाया न कयामत दिन ॥ ४७**

इन धर्म ग्रन्थोंमें अन्तिम समयकी सभी बातें लिखी गई हैं किन्तु किसीको भी इसकी सुधि नहीं हुई. वेदोंको पढ़-पढ़कर अनेक विद्वान इस संसारसे चल गए, किन्तु आत्म जागृतिकी वह (अन्तिम) घड़ी कौन-सी है, इस रहस्यको वे नहीं जान सके.

**करनी कजा चौदे तबक, देना सबों यकीन ।**

**कुरान माजजा नबी नबुवत, होए साबित हुए एक दीन ॥ ४८**

इसलिए अब मुझे चौदह लोकोंके जीवोंको न्याय देना है और सभीके हृदयमें विजयाभिनन्द बुद्धजीके प्रति विश्वास उत्पन्न करना है. इस प्रकार जब सभी लोग एक ही (परमात्माकी उपासनारूप) धर्मको स्वीकार करेंगे, तब कुरानका चमत्कार तथा पैगम्बरका संसारमें आना सार्थक माना जाएगा.

**कहां अरस कहां हक बका, कहां है नूर मकान ।**

**क्यों पावें महंमद तीन सूरत, जो लों ना ए पेहेचान ॥ ४९**

जब तक तुम्हें परमधाम कहाँ है, परमात्मा कौन हैं तथा अक्षरधाम कहाँ है ? इन सबकी पहचान नहीं होगी, तब तक तुम परब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रशंसित

श्रीश्यामाजीका आवेश, जो इस संसारमें तीन भिन्न-भिन्न स्वरूपों द्वारा आया है, उनको नहीं पहचान पाओगे. [तीन स्वरूपका तात्पर्य इस प्रकार है, बशरी-रसूल मुहम्मद, मलकी-श्री देवचन्द्रजी तथा हकी-श्री प्राणनाथजी.]

**पेहेले माएने हक कलमें के, सुध हक इमाम रसूल ।**

**और कजा सब होएसी, पर बडी कजा ए मूल ॥ ५०**

सर्व प्रथम कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होंगे, जिससे पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा उनके सन्देश वाहक रसूल मुहम्मद तथा अन्तिम समयके धर्मगुरु (इमाम)की पहचान होगी. पश्चात् सभी जीवोंको न्याय (अखण्ड मुक्ति स्थल) प्राप्त होगा. किन्तु सबसे बड़ा न्याय वह होगा कि मूल परमधामकी आत्माएँ अपने धाममें जागृत होंगी.

**आसिक मासूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए ।**

**दो कहें कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए ॥ ५१**

कुरानमें कई स्थानों पर अल्लाहको आशिक तथा मुहम्मदको माशूक कहा है और पुनः कहा है कि ये दो होने पर भी एक ही कहलाते हैं. यदि दोनोंको भिन्न भिन्न कहें, तो वह अज्ञान है. देखना है, अब इस पर न्यायाधीश क्या कहेंगे ?

**एक भी कहें ना बने, दो भी कहे न जाए ।**

**ना भेले ना जुदे कहे, अब फुरमान क्या फुरमाए ॥ ५२**

दोनोंको एक भी कह नहीं सकते और भिन्न-भिन्न भी कहा नहीं जाता. न उन्हें एक (अद्वैत) कह सकते और न ही अलग-अलग (द्वैत) कह सकते. देखना है, अब इस पर कुरानके अन्तर्गत क्या कहा गया है ?

**सिरदार न होवे एकला, ज्यों हुकम हाकिम संग ।**

**त्यो महंमद मेहेदी हक से, ए दोऊ एकै अंग ॥ ५३**

शिरोमणि (सरदार) व्यक्ति अकेले नहीं होते. जिस प्रकार अधिकारीके साथ उसकी आज्ञा जुड़ी रहती है, उसी प्रकार इस समय प्रकट हुए परमात्मा (के आवेश)के साथ निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद) हैं. ये दोनों एक ही अंग हैं.

जो कछू कहूं महंमद को, तामें अली जान ।

हुकम छोड़ हाकिम फिर्या, सो हाकिम हुकम सुभान ॥ ५४

रसूल मुहम्मदके सन्दर्भमें कहा जाए तो समझना कि उनके आदेशका पालन अलीने किया. रसूल मुहम्मद अपना हुक्म-आदेश (कुरानके द्वारा) छोड़कर लौट गए. वस्तुतः रसूल मुहम्मद भी पूर्णब्रह्म परमात्मा (हक सुभान)के हुक्म (आदेश)के स्वरूप हैं.

जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए ।

पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए ॥ ५५

इसी गूढ़ रहस्यको स्पष्ट करना है, यही न्यायाधीश (काजी)का न्याय कहलाता है. अब आशिक और माशूककी पहचानके विषयमें भी थोड़ा-सा कहना है.

जिन कोई कहे पट बीचमें, मासूक और आसिक ।

कबूं आसिक परदा ना करे, यों कह्या मासूक हक ॥ ५६

(कुरानमें ऐसा उल्लेख है कि जब रसूल म्याराजके समय खुदाके सामने पहुँचे तब खुदा और उनके बीच परदा था. अतः उन्होंने परदेमें खुदाके दर्शन किए. इधर जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीको पूर्णब्रह्म परमात्माके दर्शन हुए, तब वे दर्शन साक्षात् थे, बीचमें कोई परदा नहीं था. इसी प्रसंगका स्पष्टीकरण कर रहे हैं.)-

किसीको भी यह सन्देह न हो कि माशूक और आशिकके बीच परदा था. परमात्मा ऐसे प्रेमी कहलाते हैं कि वे कभी भी आशिकके बीच कोई परदा रहने नहीं देते हैं.

परदा आडा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए ।

आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए ॥ ५७

कोई भी आशिक कभी भी अपने माशूकके सामने परदा रहने नहीं देता. आशिक और माशूक तो तभी कहे जाते हैं, जब दोनों एक ही अंग हो जाएँ.

ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया परवान ।

तो बीच कहा क्यों फिरस्ता, जो जाए आवे दरम्यान ॥ ५८

आशिक और माशूक कभी पृथक कहे नहीं जाते, वस्तुतः ये तो एक ही माने जाते हैं तो फिर उन दोनोंके बीच जिब्रील फरिश्ताकी बात क्यों की गई, जो (फरिश्ता) रसूलको खुदाका समाचार देता था.

कह्या हक सेहेरगसे नजीक, सब हैवान या खलक ।

तो रसूल जुदागी क्यों हुई, जो बीच भेज्या जबराईल हक ॥ ५९

कुरानमें एक ओर यह भी कहा है कि पशु हो या मानव, परमात्मा सभी प्राणियोंके हृदयकी मूलधमनीसे भी अति निकट हैं. फिर खुदाने जिब्रीलके साथ अपना समाचार भेज कर रसूल मुहम्मदके साथ अन्तर क्यों रखा ?

जो लों ए सक ना मिटे, तो लों होए ना पेहेचान हक ।

ए भी कीजे जाहेर, सब मोमिन करूं बेसक ॥ ६०

जब तक यह सन्देह न मिटे, तब तक पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान नहीं होती. इस सन्देहको स्पष्ट कर सभी ब्रह्मात्माओंको निःसन्देह बनाना है.

एक सुरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान ।

तिनको कहिए फिरस्ता, नूर जोस अंग का जान ॥ ६१

वस्तुतः पूर्णब्रह्म परमात्मा एवं उनकी अंगना (एक ही स्वरूप होनेसे) के बीच जो सन्देशका आदान प्रदान करता है, उसे फरिश्ता कहते हैं, वह अक्षरब्रह्म (नूर अंग)का जोश (आवेश) स्वरूप होता है.

रसूल आया हुकमें, तब नाम धराया गैन ।

हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन ॥ ६२

जब परमात्माकी आज्ञासे रसूल मायावी तन धारण कर इस संसारमें आए तब दायित्वका वहन करते हुए मायाका सम्पर्क (गाँठ) होनेके कारण 'ऐन'से 'गैन'( ) कहलाए. परमात्माका सन्देश देकर जब वे लौट गए तब वे पुनः 'ऐन'( ) कहलाए.

सब सक्के दूर कीजिए, साफ कीजे समझाए ।

मासूक क्यों महंमद कहा, क्यों होए आसिक अल्लाह ॥ ६३

अब सभी सन्देशोंको दूर करते हुए अपनी चित्तवृत्तिको समझाकर हृदयको निर्मल बनाओ. यह भी विचारणीय है कि स्वयं परमात्माने रसूल मुहम्मदको अपना मासूक कहा और वे स्वयं आशिक हो गए.

तो कहा मासूक महंमद, आसिक अपना नाम ।

बांध्या आप हुकम का, केहेवत यों कलाम ॥ ६४

पुनः रसूल मुहम्मदने तो परमात्माको मासूक कहा और वे स्वयं उनके आशिक कहलाए. वे स्वयं परमात्माके आदेश (हुकम)से बंधे हुए हैं, इसलिए यह बात कर रहे हैं.

वली पैगंमर फिरस्ते, आए मिले सब संग ।

ज्यों गुन इन्दी जुदे जुदे, उठ खडे सब अंग ॥ ६५

महात्माजन, अवतारी पुरुष, फरिश्ताके रूपमें आनेवाला परमात्माका जोश, सभी एक साथ आकर अन्तिम समयके धर्मगुरु (इमाम महदी)में एकाकार हो गए. जैसे शरीरमें गुण, अंग, इन्द्रियाँ अलग-अलग होती हैं किन्तु कार्य करनेके लिए सब एक साथ खड़ी हो जाती हैं, इसी भाँति श्यामाजीकी सभी शक्तियाँ भी (मुझमें आकर) एकरूप हो गईं.

जब ईसा मेहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए ।

फेर पीछा क्या देखहीं, परदा दिया उडाए ॥ ६६

जब सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (ईसा) इमाम महदी और रसूल मुहम्मद एक ही स्वरूपमें समाहित हो गए, तब पीछे देखनेकी बात ही कहाँ रही ? आशिक और मासूकके बीचका परदा ही उड़ गया.

हक जो नूर के पार हैं, तिन खुद खोले द्वार ।

बका द्वार तब पाइया, जब खोल देखाया पार ॥ ६७

अक्षर (नूर)से परे अक्षरातीत परमात्माने यहाँ पर अवतीर्ण होकर स्वयं परमधामके द्वार खोले हैं. जब उन्होंने ही पारके द्वार खोलकर दिखाए, तभी

अखण्ड परमधामका अनुभव हो सका।

पेहेचान मेहेदी महंमद, और ईसा अली मोमन ।

ए कजा दिल भीतर, निसां हुई हम सबन ॥ ६८

जब इमाम महदी, रसूल मुहम्मद, ईसा रूह अल्लाह एवं रसूलके आज्ञापालक अली तथा ब्रह्मात्माओंकी पहचान हुई, तब हम सभी ब्रह्मात्माओंको सभीकी पहचान हो गई। इस प्रकार इस न्यायसे सभी हृदयसे सन्तुष्ट हो गए।

अब कहो क्यों फिरस्ते, क्यों फना आखरत ।

भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी कयामत ॥ ६९

ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल ।

पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमिन मिल ॥ ७०

अब ये फरिश्ते कौन हैं, अन्तमें ब्रह्माण्डका प्रलय (फना) क्यों होता है, सभी जीवोंको अखण्ड मुक्तिस्थल (बहिश्त) क्यों प्राप्त होंगे तथा ब्रह्मात्माएँ कैसे जागृत होंगी ? इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माएँ अपने न्यायाधीशको पूछती हैं कि इन सब बातोंको समझाकर हमारे हृदयको पवित्र करो, पश्चात् हम सब ब्रह्मात्माएँ मिलकर परमधामकी बातें पूछेंगी।

प्रकरण ३६ चौपाई १२९५

सनंध फिरस्ते फना आखरत भिस्त कयामत की

अब कहूं विध नूरियों, जो जहां जिन ठौर ।

ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और ॥ १

अब मैं अक्षरब्रह्मसे उत्पन्न नूरी फरिश्तोंका वर्णन करता हूँ। उनमें-से जो जिस स्थानमें है, (जिसका जितना महत्त्व है) उसका विवरण सद्गुरु (इमाम)के बिना अन्य कोई होता, तभी कह सकता।

पांच फिरस्ते नूर से, खडे मिने हुकम ।

पाउ पलमें पैदा करे, ऐसा कै इंड आलम ॥ २

अक्षरब्रह्मसे उत्पन्न ये पाँच फरिश्ते (देवदूत) पूर्णब्रह्मकी आज्ञासे ही

अस्तित्वमें आए हैं। इस प्रकार अक्षरब्रह्म एक पलके भी चतुर्थांश भागमें ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड बनाते हैं।

यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल ।

सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील ॥ ३

इन पाँच फरिश्तोंमें से एक जिब्रील नामक फरिश्ता रसूल मुहम्मदके साथ आया। वह ब्रह्मात्माओंके लिए अक्षरधामसे इस संसारमें आया है। परमात्माने उसे ब्रह्मात्माओंकी अनुशंसा (सिफारिश)के लिए वकील बनाकर भेजा है।

ए जो ले खडे खेल को, और कहे जो चार ।

ए असल कतरा नूर का, जिन को एह विस्तार ॥ ४

इसके अतिरिक्त इस जगतके खेलके आधाररूप अन्य चार फरिश्ते माने गए हैं। ये सभी वस्तुतः अक्षरके ही अंश (बूँद-कतरा) स्वरूप हैं। ये चौदह लोक सब इनका ही विस्तार है।

यामें एक फिरस्ता, तिन से उपजे सब ।

सरत आखर असराफील, नूर से आया अब ॥ ५

इन चारोंमें एकका नाम अजाजील है, उसीसे सभी जीवोंकी उत्पत्ति हुई है। दूसरा इस्त्राफील फरिश्ता है उसके प्रकट होनेका समय अन्तिम वेला (कयामतकी घड़ी) मानी गई है। इसीलिए यह अब (इस अन्तिम समयमें) अक्षरधामसे आया है।

अजाजील असराफील, इन दोऊकी असल एक ।

पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक ॥ ६

अजाजील और इस्त्राफील इन फरिश्तोंका उद्गमस्थल (मूल) एक ही है। अब अजाजीलसे उत्पन्न जीवोंका विवरण भी विवेक पूर्वक कहता हूँ।

कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए ।

तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज रूह सोए ॥ ७

अक्षरब्रह्मके (बूँदके समान) अंशसे उत्पन्न इस अजाजीलसे ब्रह्माजी और भगवान शंकर इस प्रकार दो देव (फरिश्ते) उत्पन्न हुए। उन दोनोंमें से एक (ब्रह्माजी-

मेकाइल) सभी प्राणियोंके पालनके लिए विभिन्न सामग्रियोंकी सृष्टि करते हैं और दूसरे (भगवान शंकर-इज्राइल) सभी जीवोंके प्राण हरण करते हैं.

ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खडे सब छल ।  
नूर की नजरों चढे, तिनों आया सबों बल ॥ ८

इस प्रकार समुत्पन्न हुए ये दोनों फरिश्ते मायावी जगतको धारण किए हुए हैं. अन्तमें वे दोनों ही अक्षरब्रह्मकी दृष्टि (स्मृति)में अंकित होने पर अखण्ड हो जाएँगे.

यों चारों पैदा हुए, खडे रहे जिन खातर ।  
सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊं खबर ॥ ९

ये चारों फरिश्ते उत्पन्न होकर जिनके लिए कर्तव्य परायण बने हैं तथा जो कार्य उन्हें सौंपा गया है, उसके लिए वे उसी स्थान पर निरन्तर अपना कर्तव्य पालन कर रहे हैं. इन दोनोंका विवरण यहाँ पर देता हूँ.

एक पैदा कर वजूद खेलावहीं, दूजा पाले तिन ।  
तीसरा किन किन लेवहीं, चौथा उडावे सबन ॥ १०

एक फरिश्ता (मेकाइल-ब्रह्माजी) सांसारिक प्राणियोंके शरीरकी सृष्टिकर खेलका सम्पादन करते हैं, दूसरे (अजाजील-भगवान विष्णु) इन प्राणियोंका पालन पोषण करते हैं, तीसरे (इज्राइल-भगवान शंकर) अलग-अलग प्राणियोंका चुन-चुन कर संहार करते हैं और चौथे (इस्माफील-अक्षर ब्रह्मकी बुद्धि) अज्ञानरूप अन्धकारको दूर कर सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों)में मुक्ति देंगे.

यों नूर नजर चारों पर, इन विध हुई पैदास ।  
फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास ॥ ११

इस प्रकार समुत्पन्न इन चारों फरिश्तों पर अक्षरब्रह्मकी दृष्टि बनी रहती है. ये लोग किस प्रकारका रूप धारणकर इस रचनाके पात्र बने हैं, मैं उसका पुनः विवरण देता हूँ.



या विध उपजे नूर से, इन से सब विस्तार ।

थिर चर चौदे तबकों, हुआ खेल कुफार ॥ १२

इस प्रकार अक्षर ब्रह्मसे उत्पन्न हुए इन देवगणों (फरिश्तों)से सम्पूर्ण जगतका विस्तार होता है। चौदह लोकोंमें स्थावर जंगम जितनी भी रचना है, यह सब इनका ही बनाया हुआ झूठा खेल है।

अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए ।

ले तख्त बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए ॥ १३

अज्ञान (गफलत)के कारण अजाजील फरिश्ताने परमात्माका आदेश उलटाया (नहीं माना)। इसलिए उसको झूठी माया द्वारा बनाए गए इस जगतके सिंहासन पर (चौदह लोकोंकी राजधानीके समान वैकुण्ठधामके अधिपतिके रूपमें) बैठाया गया।

अजाजील से फिरस्ते, उपजे बिना हिसाब ।

सो दम सबोंमें इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब ॥ १४

इसी अजाजीलसे अन्य असंख्य फरिश्ते (देवता) उत्पन्न होते हैं एवं स्वप्नवत् जगतमें खेलनेवाले सभी जीवोंमें भी प्राणरूपमें यही अजाजील रहता है।

परदा इन सिरदार पर, ए जो कही जुलमत ।

पीछा हटाया हुकमें, ताए कुफर सेवें कर सत ॥ १५

जगतके शिरोमणि इस फरिश्तेके ऊपर निराकार (जुलमत) का परदा लगा हुआ है। परमात्माका आदेश न माननेके कारण इसे अखण्ड स्थानसे हटाया गया है। स्वप्नके जीव इसको ही सत्य परमात्मा मानकर इसकी पूजा करते हैं।

ले बैठा हुकमें साहेबी, जाकी असल कतरा नूर ।

सो सरमाए के पीछा हट्या, अपना देख अंकूर ॥ १६

मूलरूपमें तो यह अक्षरब्रह्मके अंश (नूरकी एक बूँद) से पैदा हुआ है, किन्तु परमात्माके आदेशके द्वारा पीछे हटाए जाने पर यह नश्वर जगतका साम्राज्य लेकर बैठ गया। जब उसे अपने मूल सम्बन्धकी सुधि हुई, तब (अपनी नश्वर

जगतकी सत्ता देखकर) लज्जित होकर वह पीछे हट गया.

इनसेती जो उपजे, तिन सिर दिया भार ।

आप तिन से न्यारा रख्या, ए दोए भए सिरदार ॥ १७

स्वयंसे उत्पन्न हुए दो फरिश्तों (मेकाइल और इज्राईल) पर संसारका भार सौंपकर वह स्वयं उनसे भिन्न (शेषशायीके रूपमें) रहने लगा, जिससे वे दोनों जगतमें शिरोमणि कहलाने लगे.

एक दाना पानी घास सबको, मेकाईल बुध बल ।

ठौर बैठा आप देवहीं, कर पसारा अकल ॥ १८

इन दोनोंमें से एक-मेकाइल (ब्रह्माजी) अपनी बुद्धि और बल (सामर्थ्य)को विस्तृतकर स्वयं बैठे-बैठे सभी प्राणियोंको अन्न-जल, घास इत्यादिकी व्यवस्था कर देते हैं.

जोर जालिम अजराईल, बैठा छलमें हुकम ले ।

फिरत दुहाई इन की, तले काफर खेलत जे ॥ १९

मृत्युके देवता इज्राइल (महादेव) अपने आदेशके द्वारा समग्र संसारमें बलपूर्वक अपना शासन चलाते हैं. सांसारिक खेलमें मग्न रहने वाले स्वप्नवत् जीवों पर इन्हीं इज्राइलकी आज्ञा (दुहाई) चलती है.

फरामोस सरूप अजराईल, मौत हुकम सिर सबन ।

जिन वजूद धर्या खेलमें, आए लेत कौल पर तिन ॥ २०

इज्राइल स्वयं विनाश (फरामोशी)के स्वरूप हैं, वे मृत्युके रूपमें सब पर शासन चलाते हैं. जिन्होंने भी इस खेलमें शरीर धारण किया है, अवधि पूर्ण होने पर उन्हें निश्चितरूपसे ले जाते हैं.

पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल ।

ए खेल समेत फिरस्तों, आखर उडावे असराफील ॥ २१

ब्रह्माजी (मेकाइल) अन्नादिकी सृष्टिके द्वारा जगतके जीवोंका पालन करते हैं और महादेव (इज्राईल) उन सबका संहार करते हैं. जब अन्तिम समय

(कयामतकी घड़ी) आएगा, तब इस्माफील देवताओं सहित पूरे जगतको मिटा देगा.

ला हवासे तेहेतसरा लग, ए सब खेलमें पातसाह एक ।

कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक ॥ २२

शून्य निराकार (मोहतत्त्व)से लेकर पाताल (तहत-उल-सरा) पर्यन्त जगतके खेलके एक ही अधिपति (सम्राट) हैं. जगतके जीवोंका मानना है कि इन अजाजील (विष्णु भगवान)के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, ये ही एक मात्र सर्वेश्वर हैं.

और जो इनके तले, ठकुराइयां कहावत ।

देखाए दुनी को साहेबी, अपने तले ल्यावत ॥ २३

इनके अधीन अन्य भी कई विशेष शक्तियाँ कार्यरत कहलाती हैं. वे सभी संसारके जीवोंको अपना प्रभाव दिखाकर अपने अधीन कर लेती हैं.

एक दूजे के गुमास्ते, वजीर वकील दिवान ।

एक फिरस्ता सबका खावंद, यों खेल बन्या सब जहान ॥ २४

जिस प्रकार सम्राट आवश्यकतानुसार मंत्री (वजीर), वकील, दीवान आदिकी परस्पर नियुक्ति करते हैं और स्वयं सब पर शासन चलाते हैं, ठीक उसी प्रकार यह अजाजील फरिश्ता भी अन्य फरिश्तोंको नियुक्त कर उन पर शासन चलाता है. इस प्रकार जगतमें खेल हो रहे हैं.

यामें बुजरक आलम आरफ, तिन करियां कै किताब ।

इन सिर हक एक मलकूत, चौदे तबकों लेत हिसाब ॥ २५

इस संसारमें बड़े-बड़े ज्ञानी तथा ब्रह्मज्ञानी हुए हैं. उन्होंने महान ग्रन्थोंकी रचना भी की किन्तु उन्होंने भी वैकुण्ठ (मलकूत)के अधिपतिको ही सर्वश्रेष्ठ माना है, जो चौदह लोकोंका लेखा रखते हैं.

ब्रह्मा सिव या देव जन, कै दुनियां तिन सेवक ।

सो कहें ए सुख देवहीं, खैंचे अपनी तरफ खलक ॥ २६

ब्रह्माजी, भगवान शंकर तथा देवताओंके साथ संसारके असंख्य लोग, उनकी

सेवा (पूजा) करते हैं और कहते हैं कि ये ही हमें इच्छित सुख देते हैं। इस प्रकार वे सामान्य लोगोंको अपनी ओर आकृष्ट करते हैं।

करे पातसाही खेल में, ऐसी कर बंदोबस्त ।  
देत काफ़रों दोजख, बंदो कदमों चार भिस्त ॥ २७

भगवान विष्णु इस जगतरूप साम्राज्य पर ऐसी व्यवस्थाके साथ शासन करते हैं कि वे अधर्मियोंको नरकमें डाल कर भक्तोंको अपने चरणोंमें चार प्रकारकी मुक्ति देते हैं।

जिन हक बका अरस न पाइया, तिन खुदा हवा या मलकूत ।  
सो कटे पुलसरात में, जिन पकडे वजूद नासूत ॥ २८

जिन जीवोंको पूर्णब्रह्म परमात्माके अखण्ड परमधामकी सुधि नहीं होती, वे वैकुण्ठ या शून्य निराकारको ही ब्रह्मधाम मानते हैं। इस प्रकार नश्वर जगतके देवी-देवताओंके स्वरूपको ही ब्रह्मका स्वरूप मानकर पूजा करनेवाले जीव तलवारकी धार (पुले सिरात) पर कट जाते हैं।

सो ले न सके भिस्त कदमों, तिन अरवाहों देत दोजक ।  
और हिसाब सुख दुख हैं कै, ए खेल कह्यो चौदे तबक ॥ २९

भगवान विष्णु आदि देवगण जिन जीवोंको अपने चरणोंमें स्थान देने योग्य नहीं समझते, उन्हें नरकमें डाल देते हैं। इस प्रकार पुण्य और पापके आधार पर ही सभी जीवोंके सुखों और दुःखोंका लेखा रखा जाता है। चौदह लोकोंका खेल इसी प्रकार चलता रहता है।

ए जो खेल पैदा की सब कही, इनों सिर अरस मलकूत ।  
ला मकान जिमी तेहेतसरा, ए सब फना तले जबरूत ॥ ३०

इस प्रकार सृष्टि रचनाकी बात कही गई। ये सब लोग वैकुण्ठको ही शिरोमणि परमधाम मानते हैं, किन्तु पातालसे लेकर शून्य निराकार पर्यन्त जो कुछ भी अक्षरसे नीचे है, सब नाशवान् है।

ए जो तले ला हवा के, जो खेल कह्यो फना ।  
इनों सुथ ना जबरूत लाहूत, ए बका वह सुपना ॥ ३१

शून्य निराकारसे नीचेके सभी लोक नाशवान् हैं, इसलिए यहाँके जीवोंको

अक्षरधाम तथा परमधामकी सुधि नहीं होती, क्योंकि ये धाम अखण्ड हैं और ये सभी जीव स्वप्नके माने गए हैं।

**लोक जिमी आसमान के, सुरैया ना उलंघत ।**

**कह्या चौदे तबक का पलना, बीच हवा के झूलत ॥ ३२**

पृथ्वीसे लेकर अन्तरिक्ष पर्यन्तके जीव ज्योति स्वरूप (सुरैया)को भी पार नहीं कर सकते। ये चौदह लोक शून्य मण्डलमें झूलकी भाँति झूलते रहते हैं।

**चार लाख कौम आजूज माजूज, ए जो आवें जाएं रात दिन ।**

**गिनती कौल पूरा कर, आखर एही काल सबन ॥ ३३**

कतेब ग्रन्थोंमें याजूज और माजूजकी चार लाख जातियाँ मानी गई हैं। वस्तुतः ये दिन और रात हैं जो चार-चार प्रहर (चार प्रहर दिन और चार प्रहर रात)के रूपमें व्यतीत होते (आते जाते) हैं। सभी की आयुकी गिनती पूर्ण कर अन्तमें ये ही सबके काल बन जाते हैं।

**जबरूत लाहूत अरस कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत ।**

**ए बका मता दोऊ अरसोंका, सो महंमदपें मारफत ॥ ३४**

अक्षरधाम (जबरूत) और परमधाम (लाहूत)को अविनाशी धाम कहा गया है। इनकी यथार्थताको सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (रूह अल्लाह)ने स्पष्ट किया है। इन दोनों धामोंकी अखण्ड निधिकी पहचान निजानन्द स्वामी (महदी मुहम्मद)के द्वारा ही हुई है।

**रूहें अरस अजीम की, फौज असराफील फिरस्तन ।**

**दोऊ गिरो उतरी दोऊ अरसों से, खेल फिरस्तोंका देखन ॥ ३५**

ब्रह्मात्माएँ परमधामकी हैं और ईश्वरीसृष्टि (फरिश्ते) अक्षरकी बुद्धि (इस्त्राफील)के अंश रूप हैं। ये दोनों प्रकारकी आत्माएँ (ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरी सृष्टि) भगवान विष्णुके साम्राज्यरूप इस जगतके खेलको देखनेके लिए दोनों धामों (क्रमशः परमधाम तथा अक्षरधाम) से संसारमें अवतरित हुई हैं।

**पेहेले कही सब खेल की, और कहे देखनहार ।**

**रूहें फिरस्ते खेल देखहीं, पकड ख्वाब आकार ॥ ३६**

अभी तक (इससे पूर्व) इस सृष्टिकी बात की है, अब उनको देखने वालोंकी

बात करता हूँ, ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरी सृष्टि स्वप्नवत् जगतके शरीर (स्वप्नके तन)के माध्यमसे जगतका खेल देख रही हैं।

अजाजील खेल खावन्द, ए भी न्यारा रह्या सबन ।

ए खेल कुफार इन भांत का, तो ऐसा किया इन ॥ ३७

स्वयं भगवान विष्णु (अजाजील) इस जगतके स्वामी होने पर भी (जगतकी नश्वरता देखकर) उन्होंने स्वयंको जगतसे अलिप्त रखा है। यह संसार स्वप्नवत् (नश्वर) होनेसे ही उन्होंने ऐसा किया है।

ऐसी छोड साहेबी अजाजील, पीठ दर्ई आप बचाए ।

ए खेल ऐसा कुफारका, बिना काजी कौन बताए ॥ ३८

जगतके ऐसे स्वामित्वको छोड़कर (उससे विमुख होकर) अजाजीलने स्वयंको बचाया। यह रचना ही ऐसी झूठी (अधर्मपूर्ण) है कि न्यायाधीश बनकर आए हुए परमात्माके बिना इसका रहस्य अन्य कौन स्पष्ट कर सकता है ?

मोमिनों को देखलावने, किया खेल कुफार ।

अब जो अरस रूहें होवहीं, सो क्यों चलें इन लार ॥ ३९

ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए ही इस मायावी खेलकी रचना की गई है। इसलिए जो ब्रह्मधामकी आत्माएँ होंगी, वे जगतकी रीतिके अनुरूप कैसे चलेंगी ?

खेल कुफार इन भांत का, सब खेलें हक बका भूल ।

इनमें फुरमान ल्याइया, मेरे मासूक का रसूल ॥ ४०

यह मायावी रचना ही कुछ इस प्रकारकी है, जिसमें सभी आत्माएँ परम सत्यको भूलकर खेल रही हैं। ऐसे संसारमें मेरे प्रियतम परमात्माका आदेश (कुरान) लेकर रसूल मुहम्मद आए हैं।

आया रसूल पुकारता, राह सीधी बका वतन ।

ए माएने कौन लेवहीं, बिना अरस रूह मोमन ॥ ४१

रसूलने यहाँ आकर पुकार की कि अखण्ड परमधामका मार्ग सीधा है, किन्तु इस संकेतको परमधामकी ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त कौन ग्रहण कर सकता है ?

हम उतरे लैलत कदरमें, माहें उरझे खेल कुफार ।

दसों दिस हम ढूँढिया, पर काहूँ न पाइए पार ॥ ४२

हम ब्रह्मात्माएँ महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र)में इस झूठे खेलमें उतर आई और इसीमें भूल गईं. यहाँ आकर दशों दिशाओंमें हमने ढूँढ़ा, परन्तु कहीं भी पारका मार्ग नहीं मिला.

रसूले हम वास्ते, मुनारे मुल्लाँ चढाए ।

जिन कोई मोमिन भूलहीं, ठौर ठौर पुकार कराए ॥ ४३

हमारे लिए ही रसूलने मुल्लाओंको मिनारे पर चढ़कर बाँग पुकारने की व्यावस्था की. कोई भी ब्रह्मात्मा जगतमें भूल न जाए, इसके लिए ही विभिन्न स्थानोंमें पुकार करवाई.

कोई भूली राह बतावहीं, ताए बडा सवाब ।

ढंढेरा फिराइयां, कर कर एह जवाब ॥ ४४

भूली हुई आत्माओंको मार्ग दिखाने वालेको पुण्य मिलेगा, इसी उद्घोषणाके फलस्वरूप उन्होंने सर्वत्र ढिँढोरा पिटवाया.

हम ढूँढ ढूँढ कुफरमें, गए जो तिनमें भूल ।

ऐसे मिने खसम के, पाए दसखत हाथ रसूल ॥ ४५

हम ब्रह्मात्माएँ भी इसी प्रपंचपूर्ण जगतमें अपने धनीको ढूँढ़-ढूँढ़कर इसीमें भूल गईं. ऐसे समयमें रसूलके हाथ भेजे गए परब्रह्मका पत्र हमें प्राप्त हुआ.

इन फुरमान में इसारतें, लिखियां जो खसम ।

निसान अरस अजीम के, पाए हमारे हम ॥ ४६

इस सन्देशपत्र (कुरान) में धामधनीने जो संकेत भेजे हैं, वे हमारे परमधामके संकेत हैं. इसलिए हमें ही वे प्राप्त हुए हैं.

हम ढूँढे हक वतन, और रसूल ढूँढे हम ।

यों करते सब आए मिले, मोमिन रसूल खसम ॥ ४७

हम ब्रह्मात्माएँ अपने धनी तथा परमधामको ढूँढ़ रही थीं, इधर रसूल मुहम्मद हमें ढूँढ़ रहे थे. ऐसा करते हुए हम ब्रह्मात्माएँ, रसूल मुहम्मद तथा परब्रह्म परमात्मा एक साथ आ मिले.

सुनो मोमिनो बेवरा, ए जो आपन देख्या खेल ।

जो तीनों देखे आलम, उतर के माहें लैल ॥ ४८

हे ब्रह्मात्माओ ! हम लोग जो खेल देख रहे हैं, उसका विवरण सुनो. हम लोगोंने महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र)में उतरकर ब्रज, रास और जागनी इन तीनों ब्रह्माण्डोंको देखा.

हकें बचाए कोहतूर तले, तोफान हूद मेहेतर ।

दूसरे तोफान नूह के, बचाए किस्ती पर ॥ ४९

सर्व प्रथम ब्रजलीलामें श्री कृष्णजीने हमें गोवर्धन पर्वतके नीचे रख कर इन्द्र कोपसे बचाया (इसे कतेब ग्रन्थोंमें हुद तोफान कहा है. उस समय हुद पैगम्बरने अपने अनुयायियोंको कोहेतूर नामक पर्वतके नीचे बचाया था). दूसरी बार योगमाया रचित वृन्दावनमें ले जाकर अकालिक प्रलयसे बचाते हुए हमें रासका आनन्द दिलाया. (इस प्रसंगको कुरानमें नूह तोफान कहा है. उस समय नूह पैगम्बरने अपनी आत्माओंको नावमें बैठाकर एक बागमें पहुँचाया था. उसी बातको यहाँ स्पष्ट करते हैं कि योगमाया की नावमें बैठाकर श्री कृष्णजी ब्रह्मात्माओंको वृन्दावनमें रास रचाने ले गए और अकालिक प्रलयसे ब्रह्मात्माओंको अलिस रखा).

साल हजार पीछे रसूल के, माहें उतरे लैलत कदर ।

हुआ अरस बका दिन जाहेर, सदी अग्यारहीं के फजर ॥ ५०

रसूल मुहम्मदके पश्चात् एक हजार वर्ष व्यतीत होने पर अर्थात् हिजरीकी ग्यारहवीं शताब्दीमें इस महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र)के तीसरे चरणमें ब्रह्मात्माएँ इस जगतमें पुनः उतरीं. इसी समय निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने प्रकट होकर परमधामकी अखण्ड लीला प्रकट की, जिससे (स्वप्नवत् संसारमें) ब्रह्मज्ञानका प्रभात हुआ.

एही फरदा रोज कयामत, जो कही हजरत ।

सोए हुए सब जाहेर, जिन को दुनी दूँढत ॥ ५१

हजरत मुहम्मदने 'कलका दिन आत्म जागृतिका है (फरदारोज कयामत)'



इस प्रकार कहा था. अब आत्मजागृतिका वही समय प्रकट हुआ है, जिसको संसारके लोग अभी तक ढूँढ़ रहे थे.

[कुरानके अनुसार खुदाका एक दिन एक हजार वर्षका होता है और रात्रि सौ वर्षकी होती है. इस प्रकार एक दिन और एक रात व्यतीत होने पर (१०००+१०० ११००) अर्थात् ग्यारह सौ वर्ष बीतने पर आत्म जागृति (कयामत)की वेला आएगी. श्री प्राणनाथजी कहते हैं, अब वह समय आ गया है.]

**सीधी राह वतन की, अब लों न पाई किन ।**

**पैगंमर ना फिरस्ते, ना अहंमद मेहेदी बिन ॥ ५२**

(इस प्रकार आत्माको जागृतकर परमधामका अनुभव करनेका) ब्रह्मात्माओंका सीधा मार्ग आज पर्यन्त किसीको भी प्राप्त नहीं हुआ था. सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (अहमद) तथा इमाम महदीके बिना पैगम्बरों तथा फरिश्तों तकको यह ज्ञात नहीं था.

**खेल फिरस्ते अरस बका, हक मता पाया हम सब ।**

**आखर भिस्त कयामत, ए कजा कहिए अब ॥ ५३**

यह स्वप्नवत् संसारका खेल, इसके स्वामी देवतागण (फरिश्ते), अखण्ड परमधाम तथा पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान, यह सब ब्राह्मी सम्पदा हम तारतम ज्ञानके द्वारा समझ पाए हैं. अन्तिम समयमें किस प्रकार सांसारिक जीव अखण्ड मुक्ति स्थल (बहिश्त)का सुख प्राप्त करेंगे, अब इस न्याय (कजा)की बात करेंगे.

**ए कहूं फना पेहेले जिन विध, होसी इन आखरत ।**

**ज्यों पावें सुख भिस्तमें, उठ के रूह कयामत ॥ ५४**

अन्तिम समय (कयामत की घड़ी)में यह संसार किस प्रकार लय हो जाएगा, मैं पहले यह बात करता हूँ. पश्चात् सांसारिक जीव अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों)का सुख कैसे प्राप्त करेंगे, उसका भी वर्णन करूंगा.

**ए कजा हुई दुनियां मिने, खोलें हकीकत मारफत ।**

**तिन मता बका अरस का, जाहेर करी न्यामत ॥ ५५**

संसारमें न्याय इस प्रकार हुआ कि निजानन्द स्वामी (आखिरी इमाम) ने मेरे हृदयमें बैठकर यथार्थ ज्ञान (हकीकत) तथा पूर्ण पहचान (मारफत) का रहस्य स्पष्ट कर दिया. उन्होंने ही इस संसारमें परमधामकी अखण्ड निधि (तारतम ज्ञान) को प्रकट किया है.

**बका सूरत पर बंदगी, करी इमामें इमामत ।**

**दोऊ अरस बताए दोऊ गिरोह को, करी महंमद सिफायत ॥ ५६**

एक ही परब्रह्म परमात्माकी उपासनाका उपदेश देकर सद्गुरु (इमाम) ने अपना गुरुत्व (इमामत) सिद्ध किया. इसी प्रकार ब्रह्मात्माओं तथा ईश्वरी सृष्टिको क्रमशः परमधाम तथा अक्षरधामकी पहचान करवा कर आखिरी मुहम्मदने उनको अखण्ड सुख प्रदान किया.

**ए नूर कजा का या विध, जिन टाली फेर अंधेर ।**

**जो न राखूं ले हुकम, तो भोर होत केती बेर ॥ ५७**

इस न्यायका प्रकाश ही इस प्रकारका है कि इसने अज्ञानमय जगत्के जन्ममृत्युके चक्रको ही मिटा दिया. यदि धामधनीकी आज्ञाके द्वारा इस जगतके अस्तित्वको न रहने दें, तो फिर आत्मजागृतिका प्रभात होनेमें कितना समय लगेगा ? कुछ भी नहीं, अर्थात् धामधनीके आदेश से ही यह जगत टिका हुआ है अन्यथा कबका प्रभात हो गया होता.

**कयामत काजी मोमिनों, पेहेले होसी जब ।**

**फैलसी नूर आलममें, काजी कजा का सब ॥ ५८**

आत्म-जागृति (कयामत) के समयमें जब न्यायाधीशके द्वारा पहले ब्रह्मात्माओंको न्याय मिलेगा, तब पूरे ब्रह्माण्डमें उनके न्यायका प्रकाश फैल जाएगा अर्थात् सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थल (बहिश्तों) का सुख प्राप्त होगा.

ए किरने कौन पकरे, इन नूर के आवाज ।

करत ए सब खसम, अरस अरवाहों काज ॥ ५९

तारतम ज्ञानकी किरणें और न्यायके प्रकाशका स्वर, इनको कौन पकड़ सकता है (ये तो निर्बाध गतिसे आगे बढ़ेंगे)। वस्तुतः धामधनी ब्रह्मात्माओंके लिए ही यह सब कर रहे हैं।

काजी कजा के नूर की, बजसी कै करनाल ।

नूर अकल असराफील, बजाए स्वर रसाल ॥ ६०

अन्तिम घड़ीमें न्यायाधीशके द्वारा न्याय करते समय न्यायके प्रकाशके कई बिगुल बजेंगे, तब अक्षरब्रह्म की बुद्धि (इस्त्राफील फरिश्ता) सुमधुर स्वरमें नरसिंहा फूकेगी।

कै करोर करनाइयां, कै करोर निसांनों घोर ।

यों गरज्या आलम में, सो कहा न जाए सोर ॥ ६१

तब करोड़ों दुन्दुभियाँ बजेंगी और असंख्य नगाड़े बजेंगे। यह ब्रह्मज्ञान जगतमें इस प्रकार गर्जना करेगा कि उसकी ध्वनिका वर्णन ही नहीं हो सकेगा।

याही सबद के सोर से, पेहेले उडसी इंड अंधेर ।

कुदरत बुरका गफलत, उडाय़ा फिरस्तों फेर ॥ ६२

इस तारतम ज्ञानकी ध्वनिसे सर्व प्रथम ब्रह्माण्डका अज्ञानरूपी अन्धकार उड़ जाएगा पश्चात् संसारका मिथ्या आवरण दूर होगा। इस प्रकार त्रिदेवों (फरिश्तों) के साथका जीवोंका सम्बन्ध उड़ा दिया गया।

आकास जिमी जड मूल से, पहाड आग जल वाए ।

फिर्या कतरा नूर का, और दिया सब उडाए ॥ ६३

आकाश, भूमि, पहाड़, अग्नि, जल, वायु आदिको परमात्मा मानकर पूजनेकी परम्परा पूर्णरूपसे निर्मूल हो जाएगी। इस प्रकार अक्षरब्रह्मके अंश (बूँद) मात्र (इस्त्राफील) ने सभी भ्रान्तियोंको मिटा दिया।

इन घाव के पडघाव से, उडसी चौदे तबक ।

और आवाज के नूर से, बैठे भिस्त में कर हक ॥ ६४

इस्त्राफील फरिश्ताके नरसिंहाकी ध्वनि-प्रति ध्वनिसे चौदह लोक मिथ्या

सिद्ध हो जाएँगे. पुनः दूसरी ध्वनिके प्रतापसे सभी जीव अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों) में मुक्त हो जाएँगे.

पेहेले दिए सब उडाए के, चौदे तबक दम जे ।

काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले ॥ ६५

इस नरसिंहाकी प्रथम ध्वनि (पहलीबार फूँकने)से चौदह लोकोंके सभी प्राणियोंका अस्तित्व (मिथ्याभिमान) मिट जाएगा. पश्चात् दूसरी ध्वनि (न्यायाधीशके न्याय) के प्रकाशसे सभी जीव अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों)में चिन्मय शरीर प्राप्त करेंगे.

क्यों बरनों सुख भिस्त के, हो बैठे नूरी नेहेचल ।

रेहेमत इन रेहेमान की, रच दिया और मंडल ॥ ६६

अखण्ड मुक्तिस्थलों (बहिश्तों) के सुखोंका क्या वर्णन करें, जहाँ सभी जीव चिन्मय शरीर प्राप्त कर अखण्ड हो गए हैं. यह तो परम कृपालु परमात्माकी ही कृपा है कि उन्होंने जीवोंके लिए अनुपम स्थलोंकी रचना कर दी है.

अपने अपने ताएफें, अरवाहें मिली सब धाए ।

महंमद मेहेदी की मेहेर से, भिस्त में बैठे आए ॥ ६७

आत्माएँ अपने अपने समुदायको लेकर मुक्तिस्थलोंमें जानेके लिए उत्सुकता पूर्वक दौड़ने लगीं. इस प्रकार अन्तिम धर्मगुरु (महदी मुहम्मद)की कृपासे सांसारिक जीव भी अखण्ड मुक्ति स्थलोंका सुख पाने लगे.

पेहेले सब फना कर, उठाए लिए ततखिन ।

साफ किए सब नूरने, यों भिस्त भई वतन ॥ ६८

सर्व प्रथम उन जीवोंका अज्ञान मिटा दिया फिर उन्हें मुक्ति स्थलोंमें प्रवेश दिया. इस प्रकार तारतम ज्ञानके प्रकाशसे सभी जीवोंको निर्मल बनाकर उन्हें अखण्ड सुख प्रदान किए.

निमख में नूर नजरोँ, उठे अंग उजास ।

बरस्या नूर सबन में, कायम सुख में बास ॥ ६९

अक्षरब्रह्मकी सृष्टि मात्रसे ही उन जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों)

में दिव्य तन प्राप्त हुए. इस प्रकार सबमें यह प्रकाश फैल गया, जिससे सभीको मुक्ति स्थलोंके अखण्ड सुख प्राप्त हुए.

**ए कायम नूर नजरकी, सिफत या जुबां कही न जाए ।**

**पाक हुए सब खेलहीं, जरा खतरा न पाइए ताए ॥ ७०**

अक्षरब्रह्मकी तेजोमयी दृष्टिकी छत्र-छायामें होनेसे इन मुक्तिस्थलोंकी प्रशंसा इस जिह्वासे संभव नहीं हो सकती. तारतम ज्ञानके प्रतापसे सभी जीव निर्मल होकर यहाँ खेलते हैं, जहाँ पर उन्हें लय होनेका लेश मात्र भी भय नहीं है.

**खाना पीना दिल चाहता, सब विध का करार ।**

**नूर सरूपें होए के, भिस्त में बसें नर नार ॥ ७१**

वहाँ पर उन्हें मनोवाञ्छित आहार विहार मिलनेसे सब प्रकारकी शान्ति है. सभी सांसारिक नर-नारियाँ अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों) में चिन्मय स्वरूपमें रहते हैं.

**रूप रंग सब नूर के, गुन अंग इन्दी नूर ।**

**बस्तर भूषण नूर सबे, नूर दिए अंकूर ॥ ७२**

यहाँ पर सभी जीवोंके रूप, रंग, गुण, अंग, इन्द्रियाँ, वस्त्र, आभूषण आदि सभी चिन्मय हैं. तारतम ज्ञानके द्वारा ही उन्हें बहिश्तोंका सम्बन्ध (अंकुर) प्राप्त हुआ है.

**मेवा मिठाई सेज सुख, सकल विध भर पूर ।**

**इसक सबों में अति बडा, दिल हिरदै नूर हजूर ॥ ७३**

वहाँ पर आहारके लिए मेवा मिठाई आदि तथा विश्रान्तिके लिए शय्या इत्यादि सभी सर्व प्रकारके सुखोंसे परिपूर्ण हैं. सभी जीवोंमें परस्पर अपार प्रेम है और उनके हृदय ज्ञानसे प्रकाशित रहते हैं.

**या भिस्तमें इन सुख को, केतो कहूं विस्तार ।**

**दिल चाह्या सब पावहीं, सब विध सुख करार ॥ ७४**

इन मुक्तिस्थलोंके सुखोंका विस्तार पूर्वक कितना वर्णन किया जाए ? वहाँ

पर सभी जीव मनोवाञ्छित सुख प्राप्त करते हैं। इस प्रकार इन मुक्तिस्थलोंमें सर्व प्रकारके सुख और शान्ति विद्यमान है।

लागी बरसा नूर की, चौदे तबक चौफेर ।

अंतर माहें बाहेर, कहूं पैठ न सके अंधेर ॥ ७५

इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमें चारों ओर तारतम ज्ञानकी वर्षा होने लगी। इसलिए किसी भी प्राणीके मन वचन एवं कर्ममें अब अज्ञानरूप अन्धकार प्रवेश नहीं कर सकेगा।

चौदे तबक नूरने, फिर किया मंडल ।

खेल चाल दिल चाहती, नूर अरवा नूर बल ॥ ७६

इस तारतम ज्ञानने इन नश्वर चौदह लोकोंको अखण्डरूपमें परिणत कर दिया। मुक्ति स्थलोंमें मनोनुकूल लीलाएँ तथा व्यवहार होता है। वहाँके चिन्मय जीवोंकी शक्ति भी चिन्मय ही है।

सुंन चाही तिन सुंन दई, भिस्त चाही तिन भिस्त ।

नूर चाह्या तिन नूर दिया, यों पाई अपनी किस्त ॥ ७७

न्याय करते हुए न्यायाधीशने शून्यमंडल चाहने वाले जीवोंको शून्य मंडलमें प्रवेश दिया तथा अखण्ड मुक्ति स्थलोंका सुख चाहने वालोंको मुक्तिका ही सुख प्रदान किया। इसी प्रकार अक्षरधामकी इच्छुक ईश्वरी सृष्टिको अक्षरधामका अनुभव करवाया। इस प्रकार सभीने अपनी-अपनी साधनाका फल प्राप्त किया।

मात हुई मात चाहते, बुध बाबा आलम ।

मन चाह्या सबको दिया, अरस रूहों के खसम ॥ ७८

अक्षरब्रह्मकी इस जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान)ने बुद्धिके (अथवा प्रेमकी मस्तीके) इच्छुक लोगोंको बुद्धि (अथवा प्रेमकी मस्ती) प्रदान की। इस प्रकार ब्रह्मात्माओंके स्वामी धामधनीने न्यायाधीशके रूपमें प्रकट होकर सभीको मनोवाञ्छित सुख प्रदान किए।

मोमिन रूहें कदमों लिए, फिरस्ते नूर समाए ।

तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छाए ॥ ७९

धामधनीने ब्रह्मात्माओंको अपनी शरणमें लिया और ईश्वरी सृष्टिको अक्षरब्रह्ममें समाहित किया. तीसरी सभी जीव सृष्टिको अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों) में पहुँचाया, जहाँ वे अक्षर ब्रह्मकी छत्रछायामें रहती हैं.

भिस्त भी बरकत मोमिनों, दर्ई दुनियां को अविनास ।

पर सुख बडे मोमिन के, लिए कदमों अपने पास ॥ ८०

संसारके जीवोंको ब्रह्मात्माओंके प्रतापसे ही अखण्ड मुक्तिस्थलोंका सुख प्राप्त हुआ है. परन्तु ब्रह्मात्माओंका सुख तो इतना महान है कि उनको तो धामधनीने स्वयं अपने चरणोंमें ले लिया है.

पैदास कतरे नूर की, ए जो हुई चल विचल ।

फेर समेत समानी नूरमें, सो नूर सदा नेहेचल ॥ ८१

अक्षरब्रह्मके तेजकी एक बूँद मात्रसे इस सचराचर जगतकी रचना हुई है और प्रलयमें पुनः यह उन्हींमें समा जाएगा. ऐसे महान समर्थ अक्षरब्रह्म सदा सर्वदा अविनाशी हैं.

असराफील बुध नूर की, ए जो आई काजी हजूर ।

सो नूरमें जाए झिल मिली, ऐसी हुई कजा के नूर ॥ ८२

इन्हीं अक्षरब्रह्मकी बुद्धि इस्त्राफील फरिश्ता कहलाती है. वह अन्तिम समयमें न्यायाधीश बनकर आए हुए परमात्माकी शरणमें आई. न्यायाधीशके न्यायके प्रकाशसे वह पुनः अक्षरब्रह्ममें ही पहुँच कर प्रकाशमान होने लगी.

उडाय़ा कतरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर ।

फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर ॥ ८३

अक्षरब्रह्मसे ही उनकी यह बुद्धि (इस्त्राफीलके रूपमें) संसारमें आई और पुनः अक्षरब्रह्ममें ही जा कर समा गई. जब अक्षरब्रह्मने अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों)के प्रति अपनी दृष्टि डाली, तब वहाँ सर्वत्र प्रकाश छा गया.

कजा हुई सबन की, पर मोमिन ★डे अंकूर ।

इन को खेल देखाए के, लिए कदमों अपने हजूर ॥ ८४

इस प्रकार सभी जीवोंको न्याय प्राप्त हुआ. परन्तु ब्रह्मात्माएँ तो महान सम्बन्ध (अंकुर) वाली हैं, धामधनीने इनको नश्वर जगतका खेल दिखाकर पुनः अपने ही चरणोंमें ले लिया.

यों कजा करी सबन की, बांट दिए सब ठौर ।

ए सुख इन काजी बिना, कोई देवे जो होवे और ॥ ८५

इस प्रकार सभीको न्याय दिलाया. सभीको अपने अपने स्थान बांट दिए. ऐसा अखण्ड सुख इन न्यायाधीशके बिना कोई नहीं दे सकता. उनके अतिरिक्त कोई अन्य होता तभी तो दे सकता.

काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमन ।

पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन ॥ ८६

ये न्यायाधीश सबको न्याय देकर ब्रह्मात्माओंको लेकर परमधाममें उठेंगे. सर्व प्रथम ब्रह्मात्माओंकी जागृति (कयामत) होगी, पश्चात् सभी आत्माओंको अपने अपने स्थानोंमें पहुँचा दिया जाएगा.

माणे इन कुरान के, या जाहेर या बातन ।

दै सबोंको हैयाती, खोलके इलम रोसन ॥ ८७

इस प्रकार कुरानके बाह्य अर्थ हों या गूढ़ रहस्य हों, सभीको तारतम ज्ञानके द्वारा स्पष्ट कर संसारके सभी जीवोंको अमरत्व प्रदान किया.

कुदरत की सारी कही, बुरका जो गफलत ।

दोजख भिस्त फिरस्ते, आखर कही क्यामत ॥ ८८

इस प्रकार प्रथमतः प्राकृतिक जगतके अन्तर्गत अज्ञानके आवरणकी बात स्पष्ट कर दी. पश्चात् नरक, मुक्ति स्थलों तथा देवताओं (फरिश्तों)की पूरी बात कहकर अन्तमें आत्म जागृति (कयामत)की बात की है.

ए सबद तो लों कहे, जो लों आए जुबांए ।

सबद न अब आगे चले, आवे नहीं कजाए ॥ ८९

यह वर्णन उतना ही किया है जितना नश्वर जिह्वा की सीमाके अनुरूप हो



सकता था. अब न्यायके विषयमें शब्द आगे नहीं बढ़ सकेंगे अर्थात् और वर्णन नहीं हो सकता.

**आखर हुआ इन जिमी, इन जिमी आया कागद ।**

**जिन कोई हिसबो खेलमें, याको ना लगे सबद ॥ ९०**

इसी भारत भूमि पर आत्मजागृति (कयामत) हुई है और इसी भूमि पर जागृत बुद्धिका ज्ञान (तारतम ज्ञान) भी अवतरित हुआ है. अतः इस खेलमें तारतम ज्ञानका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, क्योंकि कोई भी शब्द वहाँ तक नहीं पहुँच पाते.

**इन जिमीमें महंमद, होए आया कासद ।**

**जिन कोई हिसबो खेलमें, याको न लगे सबद ॥ ९१**

इसी नश्वर संसारमें रसूल मुहम्मद पत्र वाहक (कासिद) बनकर आए हैं. अतः उनका भी मूल्यांकन यहाँ पर नहीं किया जा सकता. ये शब्द इनके लिए भी असमर्थ हैं.

**ल्याए ल्याए रूहों पिलावहीं, इसक प्याले मद ।**

**जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सबद ॥ ९२**

जागृत बुद्धिके ज्ञानके साथ परमधामके प्रेमको इस जगतमें अवतरित कर ब्रह्मात्माओंको वारंवार पान करवाने वाले सद्गुरु का मूल्यांकन कभी नहीं हो सकता, क्योंकि इसके लिए शब्द सीमित रह जाते हैं.

**करी कजा चौदे तबकों, उडाए दर्ई सब हद ।**

**जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सबद ॥ ९३**

न्यायाधीश बनकर चौदह लोकोंके जीवोंको न्याय देते हुए क्षर जगतके अस्तित्वको मिटा देने वाले इमाम महदी (अन्तिम धर्मगुरु) का भी लेखा जोखा नहीं हो सकता, क्योंकि इनके लिए भी शब्द सीमित रह जाते हैं.

**नूर अकल असराफील, ले पोहोंच्या पार बेहद ।**

**जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सबद ॥ ९४**

अक्षरकी बुद्धि इस्त्राफिलने सभी नश्वर जीवोंको बेहद भूमिमें पहुँचा दिया,

इसलिए इनका भी लेखा जोखा इन सीमित शब्दों द्वारा नहीं हो सकता.

**नूर इन आखर का, और रोसन काजी सुभान ।**

**क्योंकर इन जुबां कहूं, रसूल नूर फुरमान ॥ ९५**

अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी)में प्रकट हुए तारतम ज्ञानकी दिव्य ज्योति एवं न्यायाधीश बने हुए परमात्माका दिव्य तेज अवर्णनीय है. इसी प्रकार रसूल साहब एवं उनके द्वारा लाए गए सन्देश (कुरान) के प्रकाशका वर्णन भी इस जिह्वासे कैसे किया जाए ?

**काजी नूर सोहागनियों, इसक प्याला ले ।**

**क्यों वरनों मैं इन जुबां, ए जो भर भर सब को दे ॥ ९६**

न्यायाधीश बनकर आए हुए परमात्मा अपनी ब्रह्मात्माओंको तारतम ज्ञान (वाणी)के द्वारा प्याले भर-भरकर प्रेमामृत पिला रहे हैं. इसका वर्णन इस जिह्वासे कैसे हो सकता है ?

**नूर इसक इन मद का, ए जो चढसी सबन ।**

**ताए लेसी असलू नूर में, क्यों करे जुबां वरनन ॥ ९७**

इस तारतम सागर (वाणी)के द्वारा जब सभी जीव प्रेमकी मस्तीमें निमग्न हो जाएँगे तब उनको मुक्ति स्थलोंमें पहुँचाया जाएगा. इन सुखोंका वर्णन नश्वर जिह्वासे संभव नहीं है.

**अरस रूहें मोमिन, ए सब रूहें सोहागिन ।**

**क्यों वरनू मैं इसक इनका, ए जो रूह अल्ला के तन ॥ ९८**

सभी ब्रह्मात्माएँ परमधामकी सुहागिनियाँ हैं. इनके प्रेमका वर्णन कैसे किया जाए ? ये तो साक्षात् श्री श्यामाजीकी अंग स्वरूपा हैं.

**ए झूठी जिमी जो ख्वाब की, खाकी बुत सब रद ।**

**ताए भी मद ऐसा चढ्या, जो लगे न काहूं को सबद ॥ ९९**

माटीके पुतलेके समान इस नश्वर संसारके स्वप्नके जीवोंमें भी प्रेमका ऐसा मद चढ़ गया, जिसका वर्णन भी इन शब्दोंके द्वारा नहीं हो सकता है.

लिखे हरफ सारे कहे, ए जो लिखे हरफ नाहें ।

अब सोए करूं मैं जाहेर, जो रसूल के दिल माहें ॥ १००

रसूल मुहम्मदने म्याराजके समय परमात्मासे सुने हुए शब्दों (हरफों)में से जितने शब्द (हरफ) कुरानमें लिए, उन सबका रहस्य इस प्रकार स्पष्ट कर दिया है. किन्तु जो शब्द वे कुरानमें नहीं लिख पाए और वे उनके दिलमें ही रह गए, उनको भी मैं इस तारतम वाणी द्वारा अब प्रकाशित करता हूँ.

ए जो रसूलें कानों सुने, पर लिखे नहीं फुरमान ।

सो गुझ मोमिनों को देऊंगी, अरस अजीम के निसान ॥ १०१

म्याराजके समय जो शब्द रसूलने कानोंसे तो सुन लिए किन्तु उनको कुरानमें नहीं लिए, वे गूढ़ शब्द परमधामके संकेत हैं, अब उनका रहस्य भी ब्रह्मात्माओंके लिए स्पष्ट कर देता हूँ.

क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर ।

ए सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमिन सदा हजूर ॥ १०२

परमधाम कहाँ है, अपने धामधनी कौन हैं, अक्षरब्रह्म तथा उनका धाम (अक्षरधाम) कहाँ पर है ? इन सब रहस्योंको समझकर सदैव श्री राजजीके चरणोंमें रहने वाली ब्रह्मात्माएँ अपने धामधनी तथा परमधामको अपने हृदयकी मूलधमनीसे भी निकट देखती हैं.

दोऊ अरस बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल ।

हादी रूहें लाहूत में, हक सूरत नूर जमाल ॥ १०३

दोनों अखण्ड धामोंको स्पष्ट कर दिया है. उनमें अक्षरधाममें अक्षरब्रह्म रहते हैं एवं उससे भी परे अखण्ड परमधाममें (किशोर स्वरूप) पूर्णब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं.

अब कहूं हुकम की, जिन से सब उत्पत ।

खेल फिरस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई कयामत ॥ १०४

अब मैं परमात्माके आदेश (हुक्म)के विषयमें कहता हूँ, जिससे सभी की उत्पत्ति होती है. जगतका यह नश्वर खेल तथा यहाँके नश्वर देवता गण सभी

परमात्माके आदेश (हुक्म)से ही उत्पन्न हुए हैं, पुनः परमात्माके आदेशसे ही उन सबकी जागृति (क्यामत) हुई है।

**हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल ।**

**अब हुकम कजामें न आवहीं, पर तो भी कहूं नेक बल ॥ १०५**

परमात्माके आदेशने ही जगतके नश्वर जीवोंको अविनाशी बनाकर उन्हें मुक्ति स्थलोंमें अखण्ड मुक्ति प्रदान की है। इसलिए अब इस आदेश (हुक्म)का न्याय (परिचर्चा) नहीं किया जा सकता, किन्तु उसके विषयमें भी यत्नपूर्वक थोड़ा-सा कहता हूँ।

**प्रकरण ३७ चौपाई १४००**

**सनंध हुकमकी**

**हुकमें परदा उडाइया, कर देऊं सब पेहेचान ।**

**तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान ॥ १**

परब्रह्म परमात्माके आदेशने माया (अज्ञान) का आवरण दूर कर दिया। इसलिए हे ब्रह्मात्माओ ! अब मैं तुम्हारे समीप बैठकर परमधामके सभी संकेतोंको स्पष्ट करते हुए तुम्हें सम्पूर्ण पहचान करवा देता हूँ।

**हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम ।**

**गोसे तुम को कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम ॥ २**

अक्षरातीतके आदेशके द्वारा ही मैं तुम्हारे साथ एकान्तमें बैठकर परमधाम तथा धामधनीके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करता हूँ। सद्गुरुने मुझे यही आदेश दिया है।

**निसान बका हक अरसके, सो सब देऊंगी तुम ।**

**पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम ॥ ३**

अखण्ड परमधाम तथा धामधनीके लिए धर्म ग्रन्थोंमें दिए गए सभी संकेतोंको मैं तुम्हारे लिए स्पष्ट कर देता हूँ, परन्तु उससे पूर्व मैं यह संक्षिप्तमें कहता हूँ जो तुम्हारे लिए मुझे आदेश हुआ है।

कहूँ हुकम हक के, जो बैठे कदमों मोमन ।

सो हमेसा अरस में, ताए मेहेर बडी बातन ॥ ४

अब मैं परब्रह्म परमात्माके आदेशकी बात कहता हूँ जो ब्रह्मात्माएँ धामधनीके चरणोंमें बैठी हैं, वे सर्वदा परमधाममें ही रहती हैं तथा उन पर धामधनीकी विशेष (आन्तरिक) कृपा रहती है।

खसमें हमारे दिल पर, ऐसे किया हुकम ।

तो यों दिलमें उपज्या, मांगें खेल खसम ॥ ५

धामधनीने हमारे हृदयमें इस प्रकारकी प्रेरणा (आज्ञा) दी, तब हमारे मनमें यह इच्छा हुई कि हम धामधनीसे नश्वर खेल देखने की माँग करें।

तब हम मोमिन मिल के, खेल माग्या हादी हकपें ।

तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेलमें ॥ ६

तब हम सब ब्रह्मात्माओं एवं श्यामाजीने मिलकर श्री राजजीसे खेल देखनेकी माँग की। तब श्री राजजीके आदेशने पहले ही हमारे लिए (अक्षरब्रह्मके द्वारा) खेलकी रचना करवाई, फिर हमारी दृष्टि (सुरता) खेलमें चली आई।

तब सरूप हुकम के, खेल किया मिने पल ।

हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल ॥ ७

उस समय परब्रह्म परमात्माके आदेशके स्वरूपने अक्षरब्रह्मके द्वारा पल भरमें यह खेल बनाया। उसी खेलमें परमात्माका सन्देश अपने हाथमें लेकर रसूल मुहम्मद आए हैं।

हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमिन मिल ।

दूँढें अपने खसम को, पेड हुकमें फिराई कल ॥ ८

हम सब ब्रह्मात्माएँ भी मिलकर श्री राजजीके आदेश (हुकम)से ही यह खेल देख रही हैं। इसी आदेश (हुकम)के स्वरूपने हमारी बुद्धिका मूल परमधामसे मायाकी ओर फिरा दिया, जिससे हम मायामें ही अपने धनीको खोज रही हैं।

ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम माहें ।

हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नाहें ॥ ९

यह सम्पूर्ण खेल श्री राजजीके आदेशके द्वारा ही बना हुआ है और सभी

लोग उनके आदेशके अधीन रहकर खेल रहे हैं. अन्तमें यह खेल इसी आदेशके द्वारा नष्ट (लय) हो जाएगा. वस्तुतः परमात्माके आदेशके बिना कोई भी कार्य संभव नहीं है.

एक हुकमें बुजरक, दूजे न खाक समान ।  
बेसुध कर सब हुकमें, खेलावत है जहान ॥ १०

इसी आदेशने जगतमें भी ब्रह्मात्माओंको विशेष स्थान दिया और स्वप्नवत् अन्य जीवोंको माटीके समान नगण्य माना है. यही आदेश (हुक्म) सभी चेतनाओंको बेसुध बनाकर नश्वर संसारमें खिला रहा है.

हुकमें जड चेतन करे, करे चेतन को जड ।  
हुकमें सेती हारिए, हुकमें मारे पकड ॥ ११

यह आदेश ही जड़वत् शरीरमें चेतनाका सञ्चार कर देता है और चैतन्य आत्माको अज्ञानके प्रभावसे बेसुध बना देता है. इसी आदेशके कारण चैतन्य आत्मा स्वप्नवत् मायासे पराजित होती है और यही आदेश सभी प्राणियोंको पकड़कर कर्मानुसार मृत्युके मुखमें धकेल देता है.

एक चलाए पांउसों, एक उडाए पर ।  
पेटें हुकम चलावहीं, एक खडे रखे जड कर ॥ १२

इसी आदेशके कारण ही सृष्टिमें कितने प्राणी पाँवके द्वारा चलते हैं, कितने पंखोंसे उड़ते हैं तथा कितने ही पेटके बलसे रेंगते हैं. इसी प्रकार कई वनस्पतियाँ जड़वत् खड़ी रहती हैं.

कै दीन फिरके मजहब, खेल फिरस्ते दम ।  
ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम ॥ १३

अनेक धर्म, सम्प्रदाय, समुदाय, मतमतान्तर, विभिन्न प्राणियों तथा देवताओंको लेकर परमात्माके आदेशने मात्र देखनेके लिए यह खेल बनाया है. इसलिए इन सभी पर परमात्माका एक ही आदेश काम करता है.

भेष भाषा जातें जुदियां, ना तो सोई दम सोई देह ।  
खैँचाखैँच कर हुकमें, खेल बनाया एह ॥ १४

वेशभूषा, भाषा तथा जातियाँ ही भिन्न-भिन्न हैं अन्यथा जीव तथा शरीरमें तो

कोई अन्तर नहीं है. इस प्रकार इस आदेशने यह संघर्षपूर्ण खेल बनाया है.

एको को हुकम हुआ, तिन लई राह मुसलिम ।

पीछे जुदी जुदी जिनसों, ए सब खेलें खेल हुकम ॥ १५

किसी एक समुदायको परमात्माका आदेश मिला, तो उन्होंने इस्लामका मार्ग लिया. फिर वे ही अनेक समुदायों (फिरकों)में बँट गए. इस प्रकार ये सब आदेशके द्वारा ही खेल खेल रहे हैं.

हुकमें करहीं बंदगी, हुकमें इसक ले ।

हुकमें चोरी कर ल्यावहीं, हुकमें जाए सिर दे ॥ १६

परमात्माके आदेशसे ही मनुष्य परमात्माकी आराधना करता है और उसी आदेशसे ही परमात्माके प्रति प्रेम उत्पन्न होता है (सृष्टिकी सम्पूर्ण रचना इसी आदेशके द्वारा होनेसे) यदि अज्ञानतामें चोरी भी हो जाए तो वहाँ पर भी परमहंसोंको यह आदेश ही दृष्टिगोचर होता है. इसी आदेशके फलस्वरूप मनुष्य अपना सिर तक समर्पित कर देता है.

चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम ।

बिना हुकम रूह सबके, मुख ना निकसे दम ॥ १७

चलायमान होना, स्थिर होना, निद्रा मग्न होना, बैठना आदि संसारकी क्रियाएँ परमात्माके आदेशके अंतर्गत आती हैं. उनके आदेशके बिना कोई भी प्राणी (जीव) सुखसे श्वास तक नहीं ले सकता.

करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम ।

भिस्त दोजरख हुकमें, हुकमें देवे कदम ॥ १८

परमात्माके आदेशके द्वारा ही काल और कर्मका चक्र चलता है जीवोंका कर्म बन्धन तथा उनसे मुक्ति भी आदेशसे प्राप्त होती है. इसी आदेशके द्वारा ही पुण्यशाली जीवोंको मुक्तिस्थलों (बहिस्तों)का सुख एवं पापियोंको नरक का दुःख, तथा ब्रह्मात्माओंको परब्रह्म परमात्माके चरणोंमें स्थान प्राप्त होता है.

दाना दिवाना हुकमें, हुकमें दोस निरदोस ।

दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस ॥ १९

परमात्माके आदेशके प्रतापसे ही मनुष्यमें बुद्धिमत्ता, पागलपन, दुष्टता तथा

निर्दोषता जागृत होती है। यह आदेश ही किसी (अजाजील जैसे) को दूर भगाता है, तो किसी (इस्त्राफील जैसे) को समीपवर्ती बनाता है। स्वयं धामधनी भी इसी आदेशके द्वारा अपना जोश प्रदान करते हैं।

हुकमें जोग जो लेवहीं, हुकमें देवे भोग ।  
हुकमें रोग जो आवहीं, हुकमें देवे सोग ॥ २०

परमात्माकी आज्ञाके द्वारा ही परमात्मासे संयोग होता है। यहाँतक कि सांसारिक वैभवका उपभोग, शारीरिक रोग तथा शोक भी आदेशके द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

लेवे देवे सब हुकमें, नेकी बदी हुकम ।  
मरे मारे सब हुकमें, या चीजें या दम ॥ २१

आदान-प्रदान, सत्कर्म, दुष्कर्म, मृत्यु तथा हत्या, यह सब वस्तुपरक अथवा प्राणीपरक हो, सभी आदेशके द्वारा ही होता है।

दुसमन हुकमें सजन, सजन हुकमें बैर ।  
खूनी मेहेर सीधा उलटा, हुकमें मीठा जेहेर ॥ २२

इसी आदेशके प्रतापसे एक ओर शत्रु स्वजन बन जाते हैं तो दूसरी ओर स्वजनोंके साथ भी शत्रुता हो जाती है। हत्यारा कृपालु बन सकता है तो सरल व्यक्ति विपरीत हो सकता है। इसी प्रकार मधुर अमृत विषतुल्य भी हो जाता है।

जिमी हद न छोडहीं, ना हद छोडे जल ।  
रुत रंग सब हुकमें, होवे चल विचल ॥ २३

जिस प्रकार यह पृथ्वी अपनी सीमामें रहती है, जल भी अपनी सीमाका उल्लंघन नहीं करता, इसी प्रकार विभिन्न ऋतुओंमें प्रकृतिका रंग बदलना एवं वस्तुओंका चलायमान तथा स्थिर होना, सब परमात्माके आदेश पर निर्भर करता है।

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए ।  
पलमें हुकम यों करे, पलमें देवे उडाए ॥ २४

वायुके प्रवाहमान होने से मेघ गर्जना करते हैं, जिससे बिजली चमकती है



तथा वर्षा हो जाती है. वर्षाका जल पृथ्वीपर नहीं समाता. इस प्रकार पलमात्रमें परमात्माके आदेशसे यह सब होता है, और पलमात्रमें फिर ये सब नष्ट कर दिए जाते हैं.

**जल को थल उलटावहीं, थल को उलटावे जल ।**

**कायर सूरे खाली भरे, सब में हुकम बल ॥ २५**

जलको स्थलमें परिणत करना तथा स्थलको जलमग्न बना देना, डरपोक व्यक्तिको शूरवीर बनाना तथा रिक्त स्थानको भर देना, यह सब परमात्माके आदेशका ही प्रताप है.

**पात ना रहेवे बनमें, हुकमें फल फूल बास ।**

**हुकमें उजाला अंधेर, हुकमें अंधेर उजास ॥ २६**

परमात्माके आदेशके बिना वनके वृक्ष-लताओंमें पत्ते (हरियाली), तथा फल-फूलोंमें सुगन्ध इत्यादि नहीं रहती. इसी आदेशके प्रतापसे दिन रातमें तथा रात दिनमें परिवर्तन होते हैं.

**ताता सीरा फिरे हुकमें, ससी सूर नखत्र ।**

**इन जुबां बल हुकम के, केते कहूँ विचित्र ॥ २७**

ग्रीष्म तथा शीत ऋतु, चन्द्रमा, सूर्य तथा तारागण, सभी परमात्माके आदेशके प्रतापसे ही गतिमान हैं. इस प्रकार इस आदेशके विचित्र सामर्थ्यकी बात जिह्वासे कहाँ तक कहूँ ?

**सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल ।**

**जल थल चौदे तबकों, कोई जरा ना हुकमें भूल ॥ २८**

रसूल मुहम्मदने भी वारंवार यही कहा कि सर्वत्र परमात्माका आदेश ही कार्य करता है यहाँ तक कि जल, स्थल तथा चौदह लोकोंको भी यही नियन्त्रित करता है, उसमें लेशमात्र भी भूल नहीं होती.

**कै कोट इंड ऐसे पलमें, करके पैदा उडाए ।**

**बल जरा इन हुकम का, इन जुबां कह्यो न जाए ॥ २९**

परब्रह्म परमात्माका आदेश प्राप्त कर अक्षर ब्रह्म ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड पलमें

उत्पन्न कर उनका लय भी कर देते हैं. इस प्रकार इस आदेशके सामर्थ्यकी लेशमात्र बात भी जिह्वासे कही नहीं जा सकती.

**सरूप रसूल हुकम, आगे खडा खसम ।**

**हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम ॥ ३०**

इसी आदेश (हुकम)के स्वरूप रसूल परमात्माका ही आदेश लेकर सम्मुख खड़े होते हैं. इसी आदेशने सभी ब्रह्मात्माओंको यह खेल दिखाया है और ब्रह्मात्माएँ इसी आदेशके प्रतापसे श्री राजजीके चरणोंमें ही रह कर यह नश्वर खेल देख रही हैं.

**इन हुकम की इसारतें, कै फिरस्ते उपजत ।**

**कै समावें सुन में, कै ले डारे गफलत ॥ ३१**

इस आदेशके संकेत मात्रसे अनेक देवता उत्पन्न होते हैं. उनमें-से कितने शून्य मंडलमें समा जाते हैं, तो कितनेको इस झूठी मायामें डाल दिया जाता है.

**जिन कहो अजाजील को, इनने फेर्या हुकम ।**

**इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम ॥ ३२**

ऐसा नहीं मानना कि अजाजील फरिश्ताने धामधनीके आदेशका पालन नहीं किया. परब्रह्म परमात्माके आदेशका संकेत प्राप्त करने पर ही इसने श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओं (को खेल दिखाने)के लिए ऐसा किया है.

**अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भूलाया ताए ।**

**ओ तो सिर ले हुकम, खडा है एक पाए ॥ ३३**

अजाजील स्वयंने तो भूल नहीं की किन्तु इसी आदेशने ही उससे ऐसी भूल करवाई. वह तो परमात्माका आदेश शिरोधार्य कर एक पाँव पर खड़ा है.

**तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए ।**

**हुकम सबों समझावहीं, हुकमें न समझे कोए ॥ ३४**

परमात्माके आदेशके अतिरिक्त किसी अन्यका सामर्थ्य होता, तभी आदेशका उल्लंघन होता (ऐसा तो कुछ है ही नहीं). यही आदेश ही सभीका मार्ग दर्शन करता है किन्तु इसके सामर्थ्यको कोई समझ नहीं पाता यह भी इसीका प्रताप है.

नूरी फिरस्ता हुकमें, ले डारया उलटाए ।

ए मोमिनोँ खातर हुकम, कै विध खेल बनाए ॥ ३५

परमात्माके आदेशने ही नूरी फरिस्ता (अजाजील)को अखण्ड भूमिकासे दूर हटाकर नश्वर जगतमें भेज दिया. इस प्रकार यह आदेश ब्रह्मात्माओंके लिए ही ऐसे अनेक खेल बनाता है.

पाँउ ना उठे हुकम बिना, मुख ना निकसे दम ।

दिल चितवन भी ना करे, फिरस्ता बिना हुकम ॥ ३६

परमात्माके आदेशके बिना अजाजील फरिस्ता अपना पाँव भी उठा नहीं सकता, मुखसे श्वास तक नहीं निकाल सकता तथा चित्तसे चिन्तन भी नहीं कर सकता.

तले खड़ा हुकम के, नाम जो नूरी जिन ।

माणे जाहेर ना किए, हुकमें एते दिन ॥ ३७

यह नूरी फरिस्ता अजाजील परमात्माके आदेशके अधीन ही खड़ा है. इसी आदेशने आज पर्यन्त कुरानके रहस्य स्पष्ट नहीं किए थे.

बुरका डाल अजाजील पर, हुकमें किया रद ।

सेजदा कराया आदम पर, जित मेहेदी मोमिन महंमद ॥ ३८

अजाजीलकी बुद्धि पर अज्ञानका परदा डालकर इसी आदेशने परमात्माका आदेश अस्वीकार करवाया अर्थात् उसने उस समय आदमको नमन करने नहीं दिया. पुनः इसी आदेशने अजाजीलको अन्तिम समयमें धर्मगुरु श्रीदेवचन्द्रजी, तथा ब्रह्मात्माओंके द्वारा धारण किए हुए मानव तनों पर नमन करवाया.

बेसुध हुकमें करके, खेल कराया छल ।

ताए जो सेजदा करावहीं, पर हुकम बस अकल ॥ ३९

इसी आदेशने अजाजीलको बेसुध बनाकर उसके द्वारा ऐसे छल-कपट पूर्ण खेलकी रचना करवाई और मानव तन धारण की हुई ब्रह्मात्माओंको उससे नमन करवाया. वस्तुतः सबकी बुद्धि परमात्माके आदेशके अधीन होती है.

फिरस्ता कतरे नूर से, लानत दीनी ताए ।

सो मोमिन जाहेर करके, हुकमें सेजदा कराए ॥ ४०

अक्षरब्रह्मकी बुद्धिके अंश (बूँद)से उत्पन्न इस अजाजील फरिश्ताको भी इस प्रकार (परमात्माके आदेशका उल्लंघन करवाकर) धिक्कार दिया गया. पुनः ब्रह्मात्माओंको प्रकट कर इस आदेशने उसको ब्रह्मात्माओंके समक्ष नमन करवाया.

जिन आदम में महंमद, हुकमें आए मोमन ।

अजाजील अब हुकमें, पकड कदम हुआ रोसन ॥ ४१

परमात्माके आदेशसे सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज, अन्तिम मुहम्मद तथा ब्रह्मात्माओंने जिस मानव तनको धारण किया उन्हींके चरण पकड़वा कर इस आदेशने अजाजीलके हृदयको प्रकाशित किया अर्थात् उसे दोषमुक्त किया.

हुकमें आवे लुदनी, हुकमें आवे किताब ।

सोई खोले हक हुकमें, जिन सिर दिया खिताब ॥ ४२

इसी आदेशके प्रताप से ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके द्वारा यह तारतम ज्ञान अवतरित हुआ है और इसी आदेशके द्वारा ही कुरान भी संसारमें आया. अब इसी आदेशके प्रतापसे इमाम महदी तारतम ज्ञान द्वारा इसके रहस्यको स्पष्ट करेंगे, उनको ही विजयाभिनन्द बुद्धजी की उपाधि प्राप्त हुई है.

नफा नुकसान सब हुकमें, हुकमें भिस्त दोजक ।

झूठा सांच करे हुकमें, हुकम करे सबों हक ॥ ४३

लाभ, हानि सभी परमात्माके आदेशके अधीन है. इसी आदेशके प्रतापसे धार्मिक प्राणियोंको मुक्ति स्थलका सुख तथा पापियोंको नरकका दुःख प्राप्त होता है. यह आदेश ही स्वप्नवत् जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थलों (बहिश्तों)का सुख प्रदान करता है और पूरे ब्रह्माण्डको अखण्ड बना देता है.

हुकमें मोमिनो वास्ते, कै चीजें करी पैदाए ।

अरस अरवाहें पेहेचान, कै विध हुकम कराए ॥ ४४

इसी आदेशने ही ब्रह्मात्माओंके लिए अनेक सामग्रियाँ उत्पन्न कीं हैं और यही

आदेश परमधामकी आत्माओंकी अनेक प्रकारसे पहचान करवाता है।

हुकमें मुसाफ इसारतें, करें मोमिनों पेहेचान ।

खोले बातून मोमिन हुकमें, याद आवे अरस निसान ॥ ४५

परमात्माके आदेशके प्रतापसे ही कुरानमें लिखे गए संकेतोंके द्वारा ब्रह्मात्माओंकी पहचान होती है। इसी आदेशके द्वारा ही ब्रह्मात्माओंके समक्ष कुरानके गूढ़ रहस्योंका स्पष्टीकरण हुआ, जिससे परमधामके चिह्न उनके स्मृति पटल पर उभर आए।

ए खेल किया हुकमें, हुकमें आए रसूल ।

हुकमें मोमिन आए के, गए खेलमें भूल ॥ ४६

परमात्माके आदेश से ही इस खेल की रचना हुई है और रसूल मुहम्मद भी उसी आदेशको लेकर आए हैं। इसी आदेशके प्रतापसे ब्रह्मात्माएँ इस मायामें सुरता रूपमें आई और यहीं भूल गईं।

आप हुकम आया इत, चलाया हुकम ।

हुकमें छलतें छोडाए के, जाहेर किए खोल इलम ॥ ४७

परमात्माके आदेशने स्वयं इस संसारमें आकर अनेक प्रकारसे शासन (आदेश) चलाया। इसी आदेशने ब्रह्मात्माओंको इस छलवती मायाके प्रभावसे मुक्त किया और धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया।

रुहों को खेल देखाइया, विध विध हुकम कर ।

आप बांध्या हुकम का, होए रसूल आया आखर ॥ ४८

परमात्माके आदेशने ही ब्रह्मात्माओंको विभिन्न प्रकारकी लीलाएँ दिखाईं। इसी आदेशसे बाँधकर रसूल मुहम्मद (स्वयं आदेश (हुकम)के स्वरूप) अन्तिम समय (कयामतकी घड़ी)में पुनः प्रकट हुए।

बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए ।

कौल किया मोमिनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए ॥ ४९

स्वयं परमात्मा अपने आदेशके अनुसार (वचनके अनुरूप) आवेशके रूपमें

न्यायाधीश बनकर इस संसारमें आए. उन्होंने ब्रह्मात्माओंको खेल दिखानेका वचन दिया था, उसे यहाँ आकर पूर्ण किया.

**हुकमें सब जुदे जुदे, खेल किए विवेक ।**

**मोमिनों को देखाए के, आखर किया दीन एक ॥ ५०**

इस प्रकार श्री राजजीके आदेशने विभिन्न प्रकार के खेल विवेकपूर्वक बनाकर ब्रह्मात्माओंको दिखाए फिर अन्तमें एक धर्मकी स्थापना की.

**अबलों बेसुध हुकमें, खेली सकल जहान ।**

**तिनों सुध हुई हुकमें, यों खुली इसारतें फुरमान ॥ ५१**

आज पर्यन्त बेसुध होकर मायामें खेल रहे जीवोंको भी इसी आदेशने परब्रह्म परमात्माकी सुधि दी. इस प्रकार कुरानके संकेत स्पष्ट हो गए.

**अजाजील दम सबन में, लगी लानत दम तिन ।**

**लोक जाने लगी अजाजील को, वह तो हुकमें कही सबन ॥ ५२**

अजाजील फरिश्ता सभी सांसारिक प्राणियोंमें जीवके रूपमें विराजमान है. इसी लिए (अजाजीलको धिक्कार प्राप्त होनेसे) सभी जीव धिक्कारके पात्र माने गए. लोग तो यही समझते हैं कि अजाजीलको ही भर्त्सना मिली है, किन्तु परमात्माके आदेशने ही स्पष्ट कर दिया कि यह दोष सभीको लग गया है.

**पीछे हुकमें जाहेर करी, इबलीस सब दिलों पातसाए ।**

**हुआ सबों का दुसमन, ना करने देत सेजदाए ॥ ५३**

तत्पश्चात् इस आदेशने तारतम ज्ञानके द्वारा यह स्पष्ट कर दिया कि सभी प्राणियोंके हृदय पर इब्लीस फरिश्ता (मन) सम्राट बन कर बैठा है. (उसने परमात्मासे वरदान माँगा था कि आदमकी सन्तानोंको मैं पथभ्रष्ट कर सकूँ) इसलिए यह सभीका शत्रु बन गया और इसने कयामतकी वेलामें अवतरित परमात्माको नमन करने नहीं देता.

**एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत ।**

**पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत कयामत ॥ ५४**

वस्तुतः अन्तिम घड़ी (कयामतकी वेला)में पधारे हुए परमात्माको नमन न

करने वाले लोग ही अजाजीलकी सेना है, और इनकी ही बुद्धिको फटकार (भर्त्सना) मिली है। जब परमात्माके आदेशके प्रतापसे लोगोंको परमात्माकी पहचान हुई, तब वे कयामतके समय इस दोषसे मुक्त हुए।

**असल आदम रसूल, कह्या सेजदा इन पर ।**

**चीन्हा न नबीको लानती, तो दुनी रही सेजदे बिगर ॥ ५५**

वस्तुतः वास्तविक आदम तो रसूल हैं और उनको ही नमन करनेके लिए परमात्माने कहा है। किन्तु धिक्कारके पात्र लोगोंने पैगम्बरको नहीं पहचाना, इसलिए संसारके लोग नमनके बिना रह गए।

**हुकमें चिन्हाया रसूल, तब आया सबों यकीन ।**

**किया सबोंने सेजदा, जब हुकमें हुआ एक दीन ॥ ५६**

जब परमात्माके आदेशने अन्तिमघड़ीमें इमाम महदीके रूपमें पधारे परमात्माके साथ उपस्थित रसूलकी पहचान कराई, तब सभी लोगोंको विश्वास हुआ। जब परमात्माके आदेशके प्रतापसे एक सत्य धर्मकी स्थापना हुई, तब सभीने उनको नमन किया।

**लानत उत्तरी अजाजील से, सब कायम हुए तले नूर ।**

**दर्द हैयाती सबों हुकमें, उग्या रोसन अरस बका सूर ॥ ५७**

तब अजाजीलको प्राप्त भर्त्सना दूर हो गई (उसे क्षमा प्राप्त हुई) जिससे सभी जीवोंको तारतमज्ञानके प्रकाशमें अमरत्व प्राप्त हुआ। फिर परमात्माके आदेशने उन सभीको मुक्ति स्थलोंमें अखण्ड सुख प्रदान किया। इस प्रकार अखण्ड परमधामके प्रकाशके रूपमें तारतम ज्ञान रूपी सूर्यका उदय हुआ।

**हुकमें हम आए इत, ले हुकमें हक इलम ।**

**मैं खासा मोहोल खसम का, कर हुकम केहेलाया तुम ॥ ५८**

इस प्रकार हम सभी ब्रह्मात्माएँ परमात्माके आदेशके द्वारा इस जगतमें आई हैं तथा इसी आदेशके द्वारा इस जगतमें ब्रह्मज्ञान-तारतम ज्ञान अवतरित हुआ। इसी आदेशने मेरे हृदयको धनीजीका धाम बनाया और यही आदेश मेरे द्वारा तुमको यह सब कहलवा रहा है। (वस्तुतः धामधनीने परमधामकी

विशेष सखी (इन्द्रावती) समझ कर मुझसे यह सब कहलवाया है.)

जाहेर किया हुकमें, हुकमें किया हक ।

हुकमें लीनी अंदर, जुबां रही इत थक ॥ ५९

परमात्माके आदेशने ही ब्रह्मात्माओंको संसारमें प्रकट किया. इसी आदेशने ही मायामें परमात्माकी पहचान करवाकर उन्हें परमधाममें जागृत किया. इस प्रकार परमात्माके आदेश की महिमा इतनी अधिक है कि उसका वर्णन करते हुए यह जिह्वा थक जाती है.

हुकम न आवे सबद में, तो भी कहा नेक सोए ।

अब केहेनी जुबां बदले, सो मेहेदी बिना न होए ॥ ६०

परमात्माका यह आदेश शब्दकी सीमामें नहीं आ सकता तथापि यहाँ पर उसके विषयमें थोड़ा-सा कहा है. अब भाषाको बदल कर कहना है (पहले रसूल मुहम्मद द्वारा शराअका ज्ञान दिया था किन्तु अब पूर्ण पहचान (मारफत) की बात कहनी है) जो इमाम महदी (अन्तिम समयके धर्मगुरु) के बिना अन्य किसीके द्वारा संभव नहीं है (इमाम महदी ही पूर्ण पहचान (मारफत) की बात कर सकते हैं).

अब लेने अरस अजीम में, बोलसी जुबां इमाम ।

सो तो अपने आपको, केहेने है कलाम ॥ ६१

ब्रह्मात्माओंकी सुरताको परमधाममें लौटानेके लिए अब इमाम महदी ब्रह्मज्ञानकी चर्चा करेंगे. वैसे तो परमात्मा स्वयं ही अपनी बात करते हैं.

अब बातें अंदर की, पूछसी सब मोमन ।

जाहेर देऊं निसानियां, ज्यों देखो अरस वतन ॥ ६२

अब यदि सभी ब्रह्मात्माएँ परमधामकी बातें पूछेंगी, तो उन्हें परमधामके चिह्न स्पष्ट कर देते हैं जिससे तुम सब परमधामके दर्शन कर सको.

समझो एक इसारतें, ऐसा कर दें हम ।

तब फेर इत का पूछना, रहे उमेदां तुम ॥ ६३

तुम सङ्केत मात्रसे परमधामकी सभी बातें समझ सको मैं ऐसी व्यवस्था कर



देता हूँ, अन्यथा यहाँ पर तुम्हें कुछ भी पूछनेकी इच्छा बनी रहेगी.

जब समझे तब देखिया, याद जो आवे दिल ।

बीच खिलवत बातें हकपें, जो माग्या तुम मिल ॥ ६४

जब सभी बातें समझमें आएँगी, तब परमधाम दृष्टि गोचर हो जाएगा. तब तुम्हारी स्मृतिमें वे सभी बातें उभर आएँगी, जो तुम सबने मिलकर मूल मिलावामें धामधनीसे खेल देखनेकी माँग करते हुए की थीं.

याद आए आंखें खुले, तब तुमें रहे उमेद ।

ज्यों मकसूद सब होवहीं, अब कहूं तिन भेद ॥ ६५

जब ये बातें याद आ जाने पर तुम्हारी दृष्टि खुलेगी, तब तुम्हें परमधाममें जागृत होनेकी अदम्य इच्छा उत्पन्न होगी और उससे तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी. अब मैं उस रहस्यको भी स्पष्ट करता हूँ.

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम ।

ना तो लेते अंदर, केती बेर है हम ॥ ६६

इस महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र)को थोड़ी और बढ़ा दी है, वह भी तुम्हारे लिए ही है, अन्यथा तुम्हें मूल मिलावामें जागृत करनेमें हमें कितना समय लगता ?

प्रकरण ३८ चौपाई १४६६

सनंध नूर नूरतजल्लाकी

कह्या जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान ।

सो आए केहेसी इमाम, मैं लिखे नहीं फुरमान ॥ १

रसूल मुहम्मदने स्पष्ट कहा है कि म्याराजके समय मैंने अपने कानोंसे (जो विशेष) शब्द सुने हैं, इमाम महदी आकर उनका स्पष्टीकरण करेंगे. इसलिए मैंने इन गूढ़ वचनोंको कुरानमें नहीं लिखा है.

जो हरफ जुबां चढे नहीं, सो क्यों चढे कुरान ।

और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान ॥ २

वस्तुतः जो वचन (हरफ) रसूल मुहम्मदकी जिह्वा तक ही नहीं आ सके,

वे कुरानमें कैसे लिखे जा सकते ? इमाम इन्हीं वचनोंको जागृत बुद्धिके ज्ञान (तारतम ज्ञान) से स्पष्ट करेंगे, यही इमामकी पहचान होगी।

**बोले न मेहेदी एक जुबां, जुबां बोले कै लाख ।**

**आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख ॥ ३**

इमाम महदी मात्र एक भाषाकी (में) बात नहीं करेंगे। वे तो ऐसी भाषाका प्रयोग करेंगे जिसे लाखों लोग समझ सकें। इससे भी आगे बढ़कर वे तो लौकिक वाणी, शरीर तथा भाषासे ऊपर उठकर परमधामसे अवतरित तारतम वाणीसे मात्र अध्यात्म तत्त्वकी ही बात (दिव्य ज्ञान) कहेंगे।

**खेलमें मेहेदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर ।**

**आगे तो नूर तजल्ला, तहां जुबां बोल है और ॥ ४**

कुरानमें ऐसा उल्लेख है कि इमाम महदी इस खेलमें तोतली बोली बोलेंगे (तात्पर्य यह है कि उनकी भाषा प्रेमकी होगी मात्र ज्ञान चातुर्यकी नहीं)। इसी भाषाको इस जगतमें न्यायकी भाषा (अन्तिम समयमें न्यायाधीशके रूपमें अवतरित होकर परमात्मा द्वारा प्रयोगमें लानेवाली भाषा) कहा है। इस जगतसे परे तो अक्षरके भी पार परमधामकी बात है, जहाँकी भाषा तथा जिह्वा ही भिन्न हैं।

**खातर मोमिन रसूलें, कै निसान लिखे प्यार कर ।**

**सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर ॥ ५**

ब्रह्मात्माओंके लिए ही रसूलने प्रेमपूर्वक कई सङ्केत लिखे हैं। विभिन्न स्थानोंसे चयन किए गए परब्रह्म तथा अखण्ड धामके सम्बन्धके उन वचनोंको स्पष्ट कर मैं सबको परमधामका सन्देश देता हूँ।

**इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच ।**

**गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित ॥ ६**

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी (इमाम) ने मुझे पूर्णज्ञान दिया है। उन्होंने मुझसे कोई भी बात गुप्त नहीं रखी। अपने सद्गुण, आवेश तथा गुरुत्व (सद्गुरुपन) की सम्पूर्ण शोभा मुझे प्रदान कर, वे स्वयं निश्चिन्त हो गए।

अब केहेनी आई असल की, नैन जुबां असल ।

बातें करूं असलू, असल की अकल ॥ ७

अब परमधामसे ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) का अवतरण हो गया है, इसलिए हमारी दृष्टि एवं वाणी दोनों ही (लौकिक न रहकर) पारलौकिक हो गई हैं। अतः एव जागृत बुद्धिके द्वारा मैं अखण्ड परमधामकी बात करता हूँ।

अब कहूं अरस रूहन को, अरस हक खिलवत बात ।

गोसे अपनी रूहोंसों, बैठ करूं अपन्यात ॥ ८

अब मैं परमधामकी ब्रह्मात्माओंसे परमधाम तथा धामधनीके साथकी उनके अन्तरङ्गकी बात करता हूँ। मैं अपनी ब्रह्मात्माओंके साथ एकान्तमें (समीप) बैठकर आत्मीयतासे बात करूँगा।

हक बातें तो इत सुनसी, पर हम जो करत गुजरान ।

पेहेले कहूं आगे नूर तजल्ला, जो ले खडा हक फुरमान ॥ ९

तुम भविष्यमें भी यहाँ पर धामधनीकी बातें सुनोगी, किन्तु मुझे अपने दायित्वका वहन (धामधनीके आदेशका पालन) करना है। अतः मैं सर्वप्रथम अक्षरातीत परमधामके सम्मुख स्थित अक्षरधामकी बात करूँगा जहाँ पर धामधनीका आदेश शिरोधार्यकर अक्षरब्रह्म खड़े हैं।

आगे नूर फुरमान के, खडा हक नूर का नूर ।

जिन से पैदा मलायक, चुआ कतरा जिनों अंकूर ॥ १०

अक्षरातीत ब्रह्मका दिव्य आदेश लेकर उनके ही सदंश (सत् अंश) अक्षरब्रह्म खड़े हैं (अक्षरब्रह्म सदैव पूर्णब्रह्मके आदेशके अधीन रहकर ब्रह्माण्डोंकी रचना करते हैं)। उन अक्षरब्रह्मसे ही ईश्वरीसृष्टि उत्पन्न होती है, जिनका सम्बन्ध अक्षरब्रह्मके साथ है।

अब नेक कहूं इन नूर की, इन नूर से पैदा नूर ।

पेहेले कहूं तिन नूर की, जित रूहें खेली माहें जहूर ॥ ११

अब मैं अक्षरब्रह्मकी थोड़ी-सी बात कहता हूँ, जिनसे चिन्मय ब्रह्माण्डकी रचना होती है। सर्वप्रथम उस चिन्मय ब्रह्माण्डकी बात कहता हूँ, जहाँ

ब्रह्मात्माओंने प्रकट होकर दिव्य लीलाएँ की हैं।

अब कहूँ रास जहूर की, इन खेल से न्यारा इंड ।

सो नूर नजर ऐसा हुआ, नूर सारा ब्रह्मांड ॥ १२

अब मैं अखण्ड रास मण्डलके प्रकाशका वर्णन करता हूँ। वह रासमण्डल इस ब्रह्माण्डसे भिन्न योगमाया द्वारा रचित है। वह अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमें विशेषरूपसे आनेसे (रासकी लीला स्वयं अक्षरब्रह्म देख रहे थे इसलिए) चिन्मय अर्थात् अखण्ड हो गया।

इत खेलत स्याम गोपियां, ए जो किया अरस रूहों विलास ।

है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब बिना रास ॥ १३

इस रासमण्डलमें अक्षरातीत श्री कृष्ण एवं परमधामकी ब्रह्मात्माओं (गोपियों) ने लीला-विलास किया। वस्तुतः प्रियतम धनी अक्षरातीत श्री कृष्णके अतिरिक्त अन्य कौन रासलीला रचा सकता है ?

ए हमारी अरस न्यामतेँ, याके हम पैं सहूर ।

कह्या कतरा नूर का, चुआ है अंकूर ॥ १४

यह रासलीला हमारी परमधामकी सम्पदा है। इसलिए इसकी समझ भी हमारे पास ही है। यह रास मण्डल अक्षरब्रह्मके तेजका अंश होनेसे इसका सम्बन्ध भी अक्षरब्रह्मसे ही अङ्कुरित है।

इत सबद न पोहोंचे दुनी का, नेक इन की देऊं खबर ।

कायम हुआ सायत में, जो आया नूर नजर ॥ १५

संसारकी वैखरी (वाक शक्ति) वाणीके शब्दोंसे रासलीलाका वर्णन नहीं हो सकता, तथापि मैं इसका थोड़ा-सा वर्णन कर रहा हूँ। यह लीला अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमें आनेसे उसी समय अखण्ड हो गई।

ए जो बात बका अरस नूर की, सो केहेनी या जिमी माहें ।

क्यों सुनसी दुनी इन कानों, जो कबहूँ ना सुनी क्याहें ॥ १६

अखण्ड धामोंके प्रकाशकी बात इस नश्वर जगतमें करनी है, इसलिए नश्वर

जगतके जीव इन बातोंको, जो कभी कहीं भी नहीं सुनी हैं, अपने कानोंसे कैसे सुन सकेंगे ?

कोट हिसे एक हरफ के, हिसाब किया मीहीं कर ।

एक हिसा न पोहोँच्या इन जिमी लग, ए मैं देख्या दिल धर ॥ १७

मैंने इस लौकिक वचनोंके एक-एक शब्दकी सूक्ष्मरूपसे गणना करते हुए करोड़ों भाग किए. उनमें-से एक भाग भी रास मण्डलका स्पर्श नहीं कर सका अर्थात् रास मण्डल तक पहुँच नहीं पाया. यह मैंने भलीभाँति विचार कर लिया.

एक जरा इन जिमी का, ताके नूर आगे सूर कोट ।

सो सूर न आवे नजरोँ, इन जिमी जरे की ओट ॥ १८

रास मण्डलके एक-एक कणके प्रकाशके समक्ष संसारके करोड़ों सूर्यके प्रकाशकी तुलना करें, तो ज्ञात होगा कि इस दिव्य भूमिकाके कणोंकी ओटमें ये असंख्य सूर्य दृष्टिगोचर भी नहीं होते.

सोने जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त ।

सोभा जो नूर बन की, सो कही न जाए मुख हस्त ॥ १९

वहाँ पर सोने तथा जवाहरातके समान मूल्यवान वन हैं. ऐसा कहूँ तो भी लौकिक सुवर्ण तथा रत्न भी झूठे ही तो ठहरे. वस्तुतः चिन्मय वृन्दावनकी शोभाका वर्णन न मुखसे हो सकता है और न ही हाथसे उसका सङ्केत किया जा सकता है.

जो कहूं रोसनी एक पात की, सो भी कही न जाए ।

कोट चांद जो सूर कहूं, तो एक पात तले ढंपाए ॥ २०

यदि वृन्दावनके एक पत्तेके प्रकाशकी बात करूँ, तो वह भी कहते नहीं बनता. नश्वर जगतके करोड़ों चन्द्र, सूर्यके प्रकाशके समान कहूँ तो भी वह वृन्दावनके एक ही पत्तेके प्रकाशके नीचे ढक जाता है.

नूर ससि वन पसू पंखी, जिमी नूरै रेजारेज ।

थिर चर नूर सबों मिने, सब चीजें नूर तेज ॥ २१

इस अखण्ड भूमिकाके चन्द्रमा, वन, पशु-पक्षीगण सभी चिन्मय हैं. यहाँ

तक कि भूमिके कण-कण भी चिन्मय हैं। इस भूमिकाके स्थावर-जड़म सभी प्राणियोंमें प्रकाश ही परिपूर्ण है, इतना ही नहीं सभी पदार्थोंमें चिन्मय प्रकाश भरा हुआ है।

**वस्त्र भूषण इन जिमी के, सो याही जिमी माफक ।**

**जिन जिमी जरे की रोसनी, कही न जाए रंचक ॥ २२**

इस भूमिकाके वस्त्र तथा आभूषण भी भूमिके अनुरूप ही चिन्मय हैं, क्योंकि इस चिन्मय भूमिके कणमात्रके प्रकाशका थोड़ा-सा वर्णन करना भी सम्भव नहीं होता।

**सुख जो अरस अरवाहोंके, जो लिए जिमी इन ।**

**सो तुम देखो सहूर कर, कहे न जाए मुख किन ॥ २३**

परमधामकी ब्रह्मात्माओंने चिन्मय वृन्दावनमें जो अखण्ड सुखका अनुभव किया, उसे तुम विवेकपूर्वक देखो। इस जिह्वासे उसका वर्णन नहीं हो सकेगा।

**जिन जिमी की ए रोसनी, ऐसे बाग के दरखत ।**

**तो इत सुख ऐसे ही चाहिए, अरस बका की न्यामत ॥ २४**

चिन्मय वृन्दावनकी भूमिका जैसा प्रकाश है, वैसा ही प्रकाश वन, उपवनके वृक्षोंका भी है। जब यहाँ पर परमधामके जैसे ही चिन्मय पदार्थ हैं, तो यहाँका सुख भी परमधामके अनुरूप ही होना चाहिए।

**ए जिमी बाग पांचों चीजें, जो पैदा किए नूर ।**

**एक पल लेहेरें कायम किए, नूर का ऐसा जहूर ॥ २५**

रास मण्डलकी भूमि, वन, उपवन तथा ये पाँचों तत्त्व सभी अक्षरब्रह्मके द्वारा उत्पन्न हुए हैं। अक्षरब्रह्मका तेज ही इतना समर्थ है कि वे अपनी दृष्टिके तरङ्ग मात्रसे इन पदार्थोंको अखण्ड कर देते हैं।

**इत खेलत रूहें अरस की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर ।**

**सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर ॥ २६**

इस चिन्मय भूमिमें परमधामकी आत्माएँ लीला करती हैं, जिनके लिए कतेब

ग्रन्थोंमें कहा गया है कि श्याम (शाम) ने (नूह तूफानके समय) उन आत्माओंको नाव (किश्ती) में बैठाया और सबको बागमें पहुँचाकर उतारा. शेष सभी नास्तिक (काफ़र) लोग चक्रवातमें डूबकर मर गए. (तात्पर्य यह है कि ब्रह्मात्माओंको श्री कृष्णजीने वंशीनाद कर वृन्दावनमें बुलाया, तब शेष समग्र जीव प्रलय होने पर नष्ट हो गए).

**ए नूह तोफान कहा रसूलें, और गुझ रह्या रूहों रोसन ।**

**किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध ना परी पोहोंची बाग किन ॥ २७**

रसूल मुहम्मदने कुरानमें इस घटनाको 'नूह तूफान' कहा है, किन्तु ब्रह्मात्माओंके दिव्य प्रकाशकी बात गुप्त ही रखी थी. तूफानके समय आत्माओंको नावमें बैठाकर पार उतारा, यह बात तो सभीने सुनी किन्तु किसीको भी ज्ञात नहीं हुआ कि वे आत्माएँ कौन-से बागमें पहुँचीं अर्थात् उन्हें कौन-से बागमें उतारा गया.

**बात बडी इन नूर की, ए तो नेक कह्यो प्रकास ।**

**इत खेलें रूहें हकसों, विध विध के विलास ॥ २८**

इस चिन्मय रासमण्डलका महत्त्व तो अति अधिक है. यह तो इसके प्रकाशका मात्र संक्षिप्त वर्णन हुआ है. यहाँ पर ब्रह्मात्माएँ पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्णजीके साथ विभिन्न प्रकारसे लीला विलास करती हैं.

**कह्या जाए ना नूर इन बाग जिमी, हुआ सब रोसन भरपूर ।**

**जिन ऐसा रोसन किया पलमें, सिफत क्यों कहूं असल नूर ॥ २९**

इस चिन्मय रास मण्डलके वन तथा भूमिके प्रकाशका वर्णन नहीं हो सकता. यहाँ सर्वत्र (कण-कणमें) प्रकाश भरा हुआ है. जिन अक्षरब्रह्मने पलभरमें ऐसे चिन्मय रासमण्डलकी रचना की, उनकी महिमाका वर्णन कैसे किया जा सकता है.

**हद सबद दुनीमें रह्या, पोहोंच्या नहीं नूर रास ।**

**तो क्यों पोहोंचे असल नूर को, जिन की ए पैदास ॥ ३०**

संसारके शब्द तो क्षर ब्रह्माण्ड तक ही सीमित रहते हैं. वे चिन्मय

रासमण्डलका भी वर्णन नहीं कर सकते, तो जिन्होंने पल मात्रमें इस रासमण्डलकी रचना की है, ऐसे अक्षरब्रह्मके वर्णनके लिए ये शब्द कैसे समर्थ हो (पहुँच) सकते हैं ?

**बडी भिस्त भी याही से, जो कही कजा के माँहें ।**

**तिन भिस्त के नूर की, बात बडी है ताँहें ॥ ३१**

आत्म जागृति (कयामत)की वेलामें न्यायके समय जिस विशेष मुक्तिस्थल (सत्स्वरूपके निर्मल चैतन्यमें स्थित मुख्य बहिश्त) की बात की है, वह भी इसी अक्षरब्रह्मके द्वारा बनाया गया है. इसलिए उस मुक्तिस्थलका प्रकाश (तेज) भी अति विशेष है.

**नूर रास भी बरन्यो ना गयो, तो भिस्त वरनन क्यों होए ।**

**बोहोत बडी तफावत, रास भिस्त इन दोए ॥ ३२**

जब चिन्मय रास मण्डलका ही वर्णन न हो सका, तो इस विशेष मुक्तिस्थलका वर्णन कैसे हो सकेगा ? क्योंकि रासमण्डल और यह मुक्तिस्थल इन दोनोंमें अत्यधिक अन्तर है.

**सोभा भिस्त जिमीय की, और सोभा भिस्त दरखत ।**

**पुरों पुरों नूरी बसे, ए क्यों होए खूबी सिफत ॥ ३३**

अखण्ड मुक्तिस्थल (बहिश्त) की भूमि तथा वृक्ष आदिकी शोभा अवर्णनीय है. आत्माएँ चिन्मय शरीर धारण कर वहाँ पर रहती हैं. इसलिए ऐसी शोभायुक्त भूमिकी विशेषताका वर्णन कैसे सम्भव होगा ?

**सोभा भिस्त मोहोल मंदिरों, और सोभा नूरियों अंग ।**

**नूर असल अंग भेदिया, ए नाही नूर तरंग ॥ ३४**

यद्यपि मुक्तिस्थलके भवन, मन्दिर तथा वहाँकी आत्माओंके चिन्मय शरीरकी शोभा अपूर्व है, तथापि ब्रह्मात्माओं (नूर असल) का तेज उन सभी तेजपुञ्जोंको बीधकर परमधाम पहुँच जाता है, क्योंकि ब्रह्मात्माएँ अक्षरब्रह्मकी लहरें नहीं हैं.



निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब ।

भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब ॥ ३५

इस विशेष (अखण्ड) मुक्तिस्थल तथा रासके विवरणका तुलनात्मक लेखा ब्रह्मात्माओंके लिए निरूपित कर देता हूँ. (उन दोनोंमें यह अन्तर है कि) मुक्तिस्थलका सुख जागृतिका है और रासका सुख स्वप्नका है.

रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर ।

तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर ॥ ३६

रास तथा मुक्तिस्थल (बहिश्त) ये सभी अक्षरब्रह्मसे ही बने हुए हैं. इसलिए इन अक्षरब्रह्म (असल नूर) की बात ही क्या करें ? जो सदैव निजधामके द्वारके सन्मुख खड़े होते हैं.

ए जो नूर मकान आगूं अरस के, नूर बका असल ।

ए रूहें असलू कानों सुनियो, असल तनों के दिल ॥ ३७

परमधाम पच्चीस पक्षके अन्तर्गत अक्षर ब्रह्मका धाम पूर्णब्रह्म परमात्माके धामके सन्मुख है, जो अखण्ड अविनाशी है. हे ब्रह्मात्माओ ! तुम इस विषयमें आत्माके श्रवणोंसे सुनो और इस बातको अन्तरात्मामें धारण करो.

ए असल नूर मकान की, ए नूर सागर साबित ।

देखो नूर के तरंग, रास भिस्त कही तित ॥ ३८

अक्षरब्रह्मका धाम (अक्षरधाम) नूर से ओतप्रोत नूर सागरके समान अतुलनीय शोभा सम्पन्न है. विशेष मुक्तिस्थल (अक्सी बहिश्त) तथा रास ये दोनों इसी अक्षरधामकी तरङ्गके समान हैं.

नूर लेहेरे दायम उठें, पाउ पलमें बिना हिसाब ।

कोई लेहेर कायम करें, कै उड़ावें कर ख्वाब ॥ ३९

इन्ही अक्षरब्रह्म (के मन)से पाव-पल (एक पलके चतुर्थांश) में असंख्य लहरें उठती हैं. उनमें-से किसी लहर (ब्रह्माण्ड) को वे अखण्ड करते हैं, तो कई लहरों (ब्रह्माण्डों) को स्वप्नकी भाँति उड़ा देते हैं.

नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर ।

पसू पंखी असल, खेलत घेरों घेर ॥ ४०

अक्षर धाम, परमधाम पच्चीस पक्षोंके अन्दर ही होनेसे वहाँकी भूमि, चारों ओरके वन, सब नित्य (अखण्ड) हैं और चारों ओर खेलनेवाले पशु-पक्षी भी नित्य हैं।

नूर जिमी बन नूर जल, आकास वाए सब नूर ।

नूर पसू पंखी द्वारने, नूर सब ससि सूर ॥ ४१

अक्षरधामकी भूमि, वन, जल, आकाश, वायु, पशु-पक्षी, द्वार, चन्द्र, सूर्य, ये सब चिन्मय (नूर तेजोमय) हैं।

एक पात ना खिरे वन का, ना गिरे पंखीका पर ।

नया पुराना न होवहीं, जंगल या जानवर ॥ ४२

वहाँ पर वनका एक पत्ता भी टूटकर नहीं गिरता तथा न ही पक्षियोंका कोई पङ्क्तु ही गिरता है। वहाँ नया या पुराना कुछ भी नहीं होता। वन (जङ्गल) या पशु-पक्षी सभी नित्य नूतन दिखाई देते हैं।

दरवार मोहोल नूर सबे, सब नूरै नूर विस्तार ।

ए नूर कहूं मैं कहाँ लग, याको वार न पार सुमार ॥ ४३

वहाँके प्रासाद, भवन आदि सभी तेजोमय होनेसे सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है। इस प्रकाशके विषयमें मैं कहाँ तक कहूँ ? इनका तो कोई पारावार ही नहीं है।

ए सब नूर एक होए रह्या, रोसनी न काहूं पकराए ।

बिना नूर कछू ना देखिए, रह्या बाहेर माहें भराए ॥ ४४

यह सब तेज वहाँ एकत्रित होकर रहता है। उसके प्रकाशकी कोई सीमा नहीं है। अलौकिक तेजके अतिरिक्त वहाँ अन्य कुछ दिखाई नहीं देता, अपितु बाहर भीतर सर्वत्र तेजपुञ्ज ही भरा हुआ रहता है।

रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की विध ।

आगे तो नूर तजल्ला, सोए देऊं नेक सुध ॥ ४५

अक्षरब्रह्म (के मन)की लहरोंके समान रास तथा अखण्ड मुक्तिस्थल

(बहिस्त) तथा अक्षरधामकी बातें विधिवत् हो गईं. अब इनसे परे अक्षरातीत परमधामके विषयमें भी थोड़ी जानकारी करवा देता हूँ.

**जहां पर जले जबराइल, इत थें आगे न सके चल ।**

**दरगाह अरस अजीमकी, हक हादी रूहें असल ॥ ४६**

कुरानमें कहा है कि-अक्षरधामसे उडान भरते समय जिब्रील फरिश्ताके पङ्ख जल गए थे. जिससे वह अक्षरधामसे आगे नहीं बढ़ सका. वह अक्षरातीत धामधनीका धाम (परमधाम, रङ्गमहल) है, जहाँ पर पूर्णब्रह्म परमात्मा, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ विराजमान हैं.

**अब नूर कहूँ अंदर का, नूर मोहोल मंदिरों नहीं पार ।**

**एही भूल है अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥ ४७**

अब परमधामके तेजकी बात कहता हूँ. वहाँ पर सभी प्रासादों तथा मन्दिरोंके देदीप्यमान तेज (प्रभा, कान्ति) का कोई पारावार ही नहीं है, परन्तु यही हमारी भूल है कि इस अपरम्पार शोभाका वर्णन सीमित शब्द द्वारा करना चाहते हैं.

**नूर जमाल अंग का नूर जो, बडी रूह रूहों सिरदार ।**

**बडी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरक बारे हजार ॥ ४८**

अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माके अङ्गका तेज ही श्यामाजी हैं, जो सभी ब्रह्मात्माओंमें शिरोमणि हैं. उन्हीं श्यामाजीके अङ्गकी किरणें बारह हजार ब्रह्मात्माएँ हैं.

**सुख जो अरस अजीम के, सो होए नहीं मजकूर ।**

**ए अरस तन से बोलत, माहें खिलवत हक हजूर ॥ ४९**

परमधामके अपार सुखोंके विषयमें चर्चा नहीं हो सकती, परन्तु मैं यह सब कुछ अपने परमधामके शरीर (पर आत्मा) से ही कह रहा हूँ, जो सर्वदा धामधनीके चरणोंमें है.

**जो रूह होवे अरस की, सो सुनियो अरस तन कान ।**

**अरस अकलें विचारियो, मैं केहेती हों अरस जुबान ॥ ५०**

यदि परमधामकी आत्माएँ हैं, तो वे परमधामके चिन्मय शरीर (पर आत्मा)

के कानोंसे श्रवण करें और परमधामकी ही बुद्धिसे विचार करें, क्योंकि मैं स्वयं परमात्माकी जिह्वासे यह सब कह रहा हूँ.

**हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन ।**

**असल तन हमारे अरसमें, और कछू न जानें हक बिन ॥ ५१**

हम ब्रह्मात्माएँ सदैव परमधाममें श्यामाजीके अङ्गरूपा हैं. हमारे दिव्य विग्रह (पर आत्मा) परमधाममें हैं जो धामधनीके अतिरिक्त कुछ भी नहीं जानते अर्थात् धामधनीको ही अपना सर्वस्व मानते हैं.

**हम सबमें इसक हक का, ऊपर वरसे हक का नूर ।**

**हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर ॥ ५२**

हम सभी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें अक्षरातीत धामधनीका प्रेम परिपूर्ण है. इसलिए हम पर धामधनीके ही प्रेमकी वर्षा होती है. हम ब्रह्मात्माएँ सर्वदा धामधनीके चरणोंमें एकान्तस्थल (मूलमिलावा) में रहती हैं.

**पेहेले कह्या नूर मकान जो, सो नूर माहें वाहेदत ।**

**हक हादी रूहें जो खिलवत, ए वाहेदत सब निसबत ॥ ५३**

इससे पूर्व मैंने अक्षरधामकी बात की थी, वह भी धामधनीके तेजसे ओतप्रोत अद्वैत धाम है. इसी प्रकार श्यामाजी, ब्रह्मात्माएँ तथा धाम, परमधाम सभी पूर्णब्रह्म परमात्माके अद्वैत स्वरूप हैं.

[पूर्णब्रह्मके सच्चिदानन्द स्वरूपमें ही श्यामाजी, ब्रह्मात्माएँ, अक्षरब्रह्म, धाम, परमधाम सभी आ जाते हैं. ये सब ब्राह्मी लीलामें लीला मात्रके लिए पूर्णब्रह्मसे भिन्न दिखाई देते हैं किन्तु उनसे भिन्न नहीं अपितु उनके ही स्वरूपके अंश मात्र हैं, इसलिए पूर्णब्रह्म स्वलीलाद्वैत कहलाते हैं].

**बाग जिमी जो अरस की, और पसू जानवर ।**

**कहा कहूं सुख साहेबी, जिन पर हक नजर ॥ ५४**

अद्वैत परमधामकी भूमि, वन, उपवन, पशु-पक्षी तथा वहाँकी सभी सुखदायी सामग्रीका वर्णन कैसे करूँ ? इन सब पर पूर्णब्रह्मकी कृपा-दृष्टि है.

और जरा न हक बका बिना, खेल सदा होत नूर सें ।

एक पलमें कै पैदा करे, कै इंड उडावे पल में ॥ ५५

पूर्णब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त अन्य किसीका भी अस्तित्व नहीं है. उनके ही सदंश (सत् अंश) अक्षरब्रह्म इस प्रकारके स्वप्नवत् खेलकी रचना करते हैं. अक्षरब्रह्म ऐसे अनेकों ब्रह्माण्डोंको पल मात्रमें बनाते हैं और पल मात्रमें मिटाते हैं.

हम रूहें खेल जानें नहीं, जो नूर से उपजत ।

ओ खेले अरवा गफलत में, ऊपर भी गफलत ॥ ५६

हम ब्रह्मात्माएँ अक्षरब्रह्मसे उत्पन्न नश्वर खेलोंके विषयमें नहीं जानती थीं कि इस खेलमें तो स्वप्नके जीव अज्ञानमें खेलते हैं और उनके ऊपर अज्ञानका ही परदा पड़ा हुआ है.

हम जानें इसक बड़ा हमपें, बड़ी रूह और हक सें ।

बड़ी रूह जाने सब से, बड़ा इसक है हम में ॥ ५७

हमें लगता था कि हम श्यामाजी तथा धामधनीको अधिक प्रेम करती हैं. इसी प्रकार श्यामाजी भी मानती थीं कि सबसे अधिक प्रेम वह स्वयं करती हैं.

हकें कहा हादी रूहन से, तुम नहीं मेरे माफक ।

तुम तेहेकीक मेरे मासूक, मैं तुमारा आसक ॥ ५८

धामधनी पूर्णब्रह्म परमात्माने श्यामाजी और ब्रह्मात्माओंको कहा कि तुम्हारा प्रेम मेरे प्रेमके समान नहीं हो सकता. निश्चय ही तुम मेरी प्रियतमा हो और मैं तुम्हारा अनन्य प्रेमी हूँ.

होत हांसी हमेसा, सब बड़ा जाने अपना प्यार ।

ए बेवरा वाहेदत में होए नहीं, जित नाही जुदागी लगाए ॥ ५९

इस प्रकारका हास्य-विनोद नित्य प्रति चलता रहता है. सभी अपने-अपने प्रेमको बड़ा कहते हैं. वस्तुतः किसका प्रेम अधिक है, यह निरूपण अद्वैत भूमिकामें सम्भव नहीं है क्योंकि वहाँ लेशमात्र भी वियोग नहीं है.

तब हकें कहा फरामोसका, खेल देखावें हम ।

मैं जुदे भी तुमें ना करूं, देखाऊं तले कदम ॥ ६०

तब परब्रह्म परमात्माने हमें कहा, मैं तुम्हें बेसुधि (फरामोशी अज्ञान) का खेल दिखाऊंगा. मैं तुम सबको मुझसे दूर नहीं करूंगा अपितु मेरे चरणोंमें ही बैठाकर यह खेल दिखा दूंगा.

हकें हुकम किया दिल पर, तब खेल माग्या हम एह ।

तब हम को खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह ॥ ६१

जब धामधनीने अपने आदेश (हुकम) के द्वारा हमारे हृदयमें प्रेरणा दी, तभी हमने ऐसे मायावी खेल देखनेकी माँग की. तब धामधनीने हमें अक्षरब्रह्म द्वारा निर्मित यह स्वप्नका खेल दिखाया.

तो खेल हम देखिया, ना तो कैसा खेल कौन हम ।

क्यों उतरें रूहें अरस से, छोड के एह कदम ॥ ६२

इस प्रकार धामधनीकी आज्ञासे ही हमने यह खेल देखा, अन्यथा कैसा यह नश्वर खेल और कहाँ हम धामधनीके चरणोंमें रहनेवाली ब्रह्मात्माएँ ? धामधनीके इन चरणोंको छोड़कर हम ब्रह्मात्माएँ परमधामसे इस संसारमें क्यों उतर आती ?

खेल हुआ हम वास्ते, हम पर हादी ल्याए फुरमान ।

हम वास्ते कुंजी रूहअल्ला, दर्ई इमाम हाथ पेहेचान ॥ ६३

वस्तुतः यह खेल हमारे लिए ही रचाया गया है और हमारे लिए ही श्री श्यामाजीकी शक्ति रसूल मुहम्मद बनकर इस संसारमें हमारे आगमनका सन्देश (कुरान) लेकर आई. श्रीश्यामाजी स्वयं श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें प्रकट होकर हमारे लिए ही समस्त धर्मग्रन्थोंका रहस्य एवं परमधामके द्वार खोलनेकी कुञ्जी तारतम ज्ञान ले आई. उन्होंने ही अन्तिम समयके इमाम महदीके हाथ यह पूर्ण पहचानकी कुञ्जी सौंप दी.

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन ।

आखर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन ॥ ६४

ये तीनों सूरत श्यामाजीकी हैं. श्री श्यामाजीकी सुरता हमारे लिए अलग-

अलग समयमें एवं अलग-अलग रूप धारण कर (बशरी, मलकी और हकी रूपमें) इस संसारमें प्रकट हुईं. उन्होंने ही हम ब्रह्मात्माओंको मायाका खेल दिखाकर (परमधाम और धामधनीके विषयमें) सब कुछ समझ दी.

अरस हककी लजत, दर्ई खेलमें हम कों ।

हक साहेबी हक इसक, हमारे लाड पाले कुंजीसों ॥ ६५

श्री श्यामाजीने ही सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके रूपमें इस जगतके खेलमें आकर हम ब्रह्मात्माओंको परमधाम तथा परब्रह्म परमात्माका आनन्द प्रदान किया. इतना ही नहीं तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीके द्वारा धामधनीका स्वामित्व एवं अखण्ड प्रेम प्रदान कर हमारे लाड़ पूरे किए.

हम बैठे देख्या वतन में, हकें ऐसी करी हिकमत ।

आए न गए हादी हम, ऐसा देख्या माहें खिलवत ॥ ६६

धामधनीने ऐसा कौशल दिखाया कि परमधाममें बैठे हुए ही हमने जगतके नश्वर खेल देख लिए. श्रीश्यामाजी तथा हम ब्रह्मात्माएँ कहीं आई भी नहीं और गई भी नहीं. हमने मूलमिलावेमें बैठे-बैठे सुरताके द्वारा यह खेल देख लिया.

हक न्यामत मैं देत हों, जो होसी अरस अरवाए ।

ए सुनते निसानियां अरस की, लगसी कलेजें घाए ॥ ६७

मैं ब्रह्मात्माओंको परमधामकी अलौकिक सम्पदा प्रदान कर रहा हूँ. जो परमधामकी आत्माएँ होंगी, परमधामके इन सङ्केतोंको पाकर उनके हृदय द्रवित हो जाएंगे.

पेहेचान हक अरस रूहन की, ए केहेते आवसी इसक ।

ए सुन रूहें ना सेहे सकें, बिछोहा अरस हक ॥ ६८

परमधामकी आत्माओंकी यही पहचान है कि इन बातोंको सुनते ही उनके हृदयमें प्रेमका प्रवाह बहने लगेगा. इन सङ्केतोंको सुन कर ब्रह्मात्माएँ एक क्षणके लिए भी अपने धामधनीका वियोग सहन नहीं कर पाएँगी.

हम उतरें चढ़ें तो खेलमें, जो जरा दूसरा होए ।

ए देखो हक इलम से, अरस अरवा न उरझे कोए ॥ ६९

परमधामसे खेलमें उतर आना अथवा पुनः परमधाम चले जाना यह उतरना-चढ़ना तभी सम्भव होगा जब परमधामके अतिरिक्त इस संसारका कोई अस्तित्व हो. परब्रह्म परमात्मा प्रदत्त तारतम ज्ञानसे यह तथ्य भलीभाँति समझ लो कि कोई भी ब्रह्मात्मा इस प्रकारकी भ्रान्तिमें उलझती नहीं है.

हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकैं सों काम ।

और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम ॥ ७०

धामधनीने जिन ब्रह्मात्माओंको अपना ज्ञान (तारतम ज्ञान अथवा तारतम वाणी) दिया है, उनका तो धामधनीसे ही काम रहता है. फिर हमें अपने धनीकी चर्चके बिना और काम ही क्या ? उनके बिना हम रात-दिन कैसे शान्ति प्राप्त कर पाएँगे.

हम खेल देख्या लग मुदत, जेते रूहअल्ला के तन ।

खेल देख पीछे फिरें, जाने बेर न लगी अधखिन ॥ ७१

श्रीश्यामाजी (रूहअल्लाह) की अङ्ग स्वरूपा हम सभी आत्माओंको ऐसा प्रतीत हुआ कि मानों हमने चिरकालतक यह खेल देखा. जब यह खेल देखकर हमारी सुरता परमधाम लौटेगी, तो ऐसा अनुभव होगा कि आधे क्षणका भी विलम्ब नहीं हुआ है.

ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत ।

सो इन देह इन जिमिं, लिए सुख हक निसबत ॥ ७२

परमधाममें ही बैठकर हमने यह खेल देखा और इस नश्वर जगतमें भी सुरता रूपसे आकर हमने (तारतमज्ञान द्वारा) धामधनीके अखण्ड सुख प्राप्त किए. इस प्रकार पञ्चभौतिक देह धारण कर इसी नश्वर संसारमें भी हमारी सुरताने धामधनीकी अङ्गना होनेका आनन्द प्राप्त किया.

फेर फेर हक वाहेदत, फेर फेर हक खिलवत ।

फेर फेर सुख निसबत के, फेर फेर ए लई न्यामत ॥ ७३

इस मायामें भी हमारी सुरताने धामधनीका अद्वैत तथा अन्तरङ्ग सुख बार-



बार प्राप्त किया. इसी प्रकार अनेक बार धामधनीके सम्बन्धका सुख प्राप्त हुआ तथा परमधामकी अखण्ड सम्पदा प्राप्त हुई.

**महामत कहे मोमिन की, मिट गई दुनियां चाल ।**

**देखिए हक दिल अरस में, तो अवहीं बदले हाल ॥ ७४**

महामति कहते हैं, अब ब्रह्मात्माओंकी सांसारिक चाल (जीवोंका जैसा व्यवहार) मिट गई. अपने हृदयधाममें धामधनीके स्वरूपका दर्शन करने पर तत्काल ही सारा व्यवहार बदल जाता है.

**प्रकरण ३९ चौपाई १५४०**

**सनंध खंडनी जहेरियोंकी**

**लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर ।**

**ना फिरस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और ॥ १**

कतेब ग्रन्थों (जम्बूर, तौरैत, अंजील और कुरान) में लिखा है कि परब्रह्म परमात्माका स्थान (परमधाम) किसीको भी नहीं मिला. जब फिरस्तों और पैगम्बरोंने भी उसे प्राप्त नहीं किया, तो अन्य कोई कैसे प्राप्त कर सकता है ?

**लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कहा अगम ।**

**तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम ॥ २**

रसूल मुहम्मदने कुरानमें परमधामके विषयमें थोड़े सङ्केत दिए और कहा कि वह तो अगम्य (अगम) है. साथमें यह भी कहा कि चौदह लोकों वाला यह ब्रह्माण्ड स्वप्नवत् है और परब्रह्म परमात्मा सर्वथा इससे भिन्न है.

**खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए ।**

**कहे जो चाहे खुद को, हम मिलावें ताए ॥ ३**

कुरानको पढ़ने वालोंमें से किसीको भी परब्रह्म परमात्मा (खुदा) स्वयं प्राप्त नहीं हुए हैं, इसलिए वे तथाकथित विद्वान स्वयं ही न्यायाधीश (काजी) बनकर संसारमें न्याय करने लगे और यह भी कहने लगे कि जो खुदासे मिलना चाहता है, हम उसे उनसे मिलवा देते हैं.

पढ़े मुल्लां आगूं हुए, सो तो खाए गुमान ।  
लोकों को बतावहीं, कहें हम पढ़े कुरान ॥ ४

मौलवी लोग आगे बढ़कर कुरान पढ़ते हैं और ज्ञानके अहङ्कारमें डूब जाते हैं. जन-साधारण इस प्रकार कहते हैं कि हम लोग कुरान पढ़े हुए विद्वान कहलाते हैं.

दुनी बदले दीन खोवहीं, चलें सो उलटी रीत ।  
सुपने के सुख कारने, लोभें किए फजीत ॥ ५

ये लोग लौकिक सम्पत्ति (दुनी) के लोभमें सत्य धर्म (दीन) को खो देते हैं और कुरानमें बताए गए मार्गसे विपरीत चलते हैं. ऐसे लोग जगतके स्वप्नवत् सुखोंके मोहमें लोभके कारण अपनी अवमानना (फजीहत) करवाते हैं.

राह बतावें दुनी को, कहें ए नबिए केहेल ।  
लिख्या और फुरमानमें, ए खेलें औरै खेल ॥ ६

ये लोग कुरानका मनमाना अर्थ करते हुए दुनियाँको मार्ग बताते हैं और कहते हैं कि यह सब नबी (रसूल मुहम्मद) का कहा हुआ है. कुरानमें कुछ और ही लिखा हुआ होता है किन्तु ये लोग कुछ दूसरा ही खेल खेल रहे होते हैं.

ए जो मोहोरे खेल के, धरें भेख विवाद ।  
एक भांन दूजा धरें, कहें हमें होत सवाब ॥ ७

इस जगतके खेलके विभिन्न सम्प्रदायवादी लोग (खेलके मोहरे) अनेक प्रकारका वेश धारण कर अपने-अपने मतोंके विवादमें पड़े रहते हैं. एक (हिन्दू) वेशको बलपूर्वक छुड़वा कर दूसरा (मुस्लिम) वेश धारण कराने पर (एक सम्प्रदायसे दूसरेमें बल पूर्वक लेने पर) कहते हैं कि हमें पुण्य मिला है.

ओ राजी एक भेषमें, ताए मार छुड़ावें दाब ।  
ओ रोवे सिर पीटहीं, ए कहें हमें होत सवाब ॥ ८

जो हिन्दू अपने ही धर्म या सम्प्रदायके वेशमें सन्तुष्ट है, उसे मुस्लिम लोग मार पीटकर अथवा दबाव डालकर उससे अपना धर्म छुड़वा देते हैं, जिससे

वह सिर पीट-पीट कर रोता है किन्तु ये आततायी कहते हैं कि ऐसा करनेसे हमें पुण्य मिलता है।

**एक खाई ग्रहें काढके, ले डारें दूजी खाड ।**

**जब्हे करें जोरावरी, कहें हमें होत सवाब ॥ ९**

ऐसे लोग हिन्दूको कर्मकाण्डकी एक गहरी खाईके ग्राहमुखसे निकालकर शराअके दूसरे गड्डे (मगरमच्छके मुख) में डाल देते हैं। यदि न माने तो बलपूर्वक उसकी हत्या (जब्द) कर देते हैं और कहते हैं कि ऐसा करनेसे हमें पुण्य मिलता है।

**हिंदू मुए जलावहीं, और ए आए तिन गाड ।**

**मिल तिन की जारत करें, कहें हमें होत सवाब ॥ १०**

हिन्दू लोग पार्थिव शरीरका दाह-संस्कार करते हैं और मुसलमान उसीको मिट्टीमें गाढ़ देते हैं। फिर सब मिलकर कब्रोंका दर्शन करने जाते हैं और कहते हैं कि इससे हमें पुण्य प्राप्त होता है।

**मार डार पछाडहीं, ओ रोए पीट होवे ताब ।**

**इन विध जातां बदलें, कहें हमें होत सवाब ॥ ११**

मुसलमान हिन्दुओंको मार-पीटकर पटक देते हैं और सदैव उनको नीचा दिखाने (पछाड़ने) का प्रयत्न करते हैं। ऐसे अत्याचारोंसे पीड़ित वे गरीब (बेचारे) रो-धोकर दुःखी होते हुए उनके अधीनस्थ हो जाते हैं। इस प्रकार वे बलपूर्वक उनका धर्म (जाति) परिवर्तन करते हैं और कहते हैं कि हमें ऐसा करने से पुण्य मिलता है।

**जैसे मछ गलागल, ना किनकी मरजाद ।**

**यों खैंच लेवें आपमें, कहें हमें होत सवाब ॥ १२**

जिस प्रकार समुद्रमें बड़ी मछली छोटी मछलीको निगल जाती है, वहाँ किसी प्रकारके नियम अथवा मर्यादाएँ नहीं चलती हैं, उसी प्रकार ये लोग भी असहाय हिन्दुओंको बलपूर्वक अपने धर्ममें खींच लेते हैं और कहते हैं कि ऐसा करनेसे हमें पुण्य मिलता है।

करें जुलम गरीब पर, कोई न काहूँ फरियाद ।

कर सुनत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १३

वे हिन्दुओंको गरीब (असहाय) समझकर उन पर अत्याचार करते हैं. ऐसे पीड़ितोंकी पुकार (फरीयाद) की कहीं भी सुनवाई नहीं होती. बलपूर्वक उनकी सुन्नत करवाई जाती है एवं गो मांस खिलाकर उनको मुसलमान बनाया जाता है. फिर कहते हैं कि इससे हमें बड़ा पुण्य मिलता है.

कोई जालिम जीव जनम का, खुराकी गोस्त सराब ।

तिनको लेवे दीन में, कहें हमें होत सवाब ॥ १४

कोई जन्मसे ही अत्याचारी तथा नीच व्यक्ति हो एवं आहारके रूपमें मद्य और मांसका ही सेवन करता हो, ऐसे व्यक्तिको भी अपने धर्ममें मोड़कर कहते हैं कि इससे हमें पुण्य मिलता है.

सिरो पाव दे गज चढावहीं, ओ जाने हुआ खराब ।

ए बजाए बाजे कूदहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १५

इस प्रकार बलपूर्वक धर्म परिवर्तनके बाद उनको सिरसे पाँव तक वस्त्र पहनाकर (कथित सम्मान देकर) हाथी पर बैठाकर उनकी सवारी निकालते हैं. वे गरीब तो यही मानते हैं कि हम भ्रष्ट हो गए हैं, किन्तु ये दुष्ट लोग बाजे बजाकर नाचते कूदते हैं और कहते हैं कि इससे हमें बड़ा पुण्य मिलता है.

काफर को मुसलिम करें, मिन लेवें दीन हिसाब ।

सिर मूड दाढी रखें, कहें हमें होत सवाब ॥ १६

जिस हिन्दूको वे काफिर कहकर उसकी अवहेलना करते थे, उसीका धर्मपरिवर्तन कर अपने समुदायमें गिनने लगते हैं और उसका सिर मुँड़वाकर दाढ़ी रखवा देते हैं और कहते हैं कि ऐसा करनेसे हमें बड़ा पुण्य मिलता है.

खाना खिलावें आप में, देखलावें मसीत मेहेराब ।

लेकर कलमा पढावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १७

इस प्रकार बलपूर्वक धर्मपरिवर्तनकर बनाए गए मुसलमानोंको अपने साथ बैठाकर खाना खिलाते हैं और मस्जिदोंके मेहेराब दिखाने ले जाते हैं तथा

बलपूर्वक कलमा पढ़ाते हैं फिर कहते हैं कि इससे हमें बड़ा पुण्य मिलता है।

**चित दे एक चुनावहीं, हिंदू जो आद के आद ।**

**सो जोरा करके ढहावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १८**

आदि कालसे चले आ रहे हिन्दुओं द्वारा वर्षोंके प्रयत्नोंसे बड़े प्रेमपूर्वक बनाए गए मन्दिरोंको बलपूर्वक तोड़कर ये दुष्ट कहते हैं कि ऐसा करनेसे हमें बड़ा पुण्य मिलता है।

**हिंदू मसीतां ढहावहीं, मुसलमानसों बाद ।**

**दे सोभा इस्ट दीन को, कहे हमें होत सवाब ॥ १९**

इसी प्रकार हिन्दू लोग भी मुसलमानोंका सामना करते हुए मस्जिदोंको गिरा कर उसमें अपने इष्टदेवोंकी स्थापना करते हैं और कहते हैं कि ऐसा करनेसे हमें भी पुण्य मिलता है।

**सुध इस्ट ना दीन की, मोह माते उनमाद ।**

**ज्यों ज्यों बैर बढावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ २०**

जिनको न अपने इष्टकी सुधि है और न ही अपने धर्मकी, मात्र मोहके नशेमें उन्मत्त बने हुए ये लोग ज्यों ज्यों परस्पर शत्रुता बढ़ाते हैं त्यों त्यों कहते हैं कि हमें पुण्यकी प्राप्ति होती है।

**गरक हुए मोह गुमानमें, जनम गमावत बाद ।**

**या विध खैंचें आप में, कहें हमें होत सवाब ॥ २१**

इस प्रकार मोह और अहंकार में डूबे हुए ये लोग परस्पर वाद-विवादमें ही जीवन व्यतीत करते हैं और परस्पर खींचातानी करते हुए पुण्य कमालेनेका दावा करते हैं।

**यों पढे राह बतावहीं, खेलें मिने ख्वाब ।**

**जाहेर जुलम होवहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ २२**

इस प्रकार स्वयंको पठित मानने वाले (प्रचारक) भी ऐसा विपरीत मार्ग बताकर स्वप्नका खेल खेलते हैं, जिससे अत्याचार प्रत्यक्ष रूपसे बढ़ते हैं

किन्तु वे कहते हैं कि ऐसा करनेसे हम पुण्य कमाते हैं.

**पर सवाब तो तिन को होवहीं, छोटा बडा सब जीउ ।**

**एकै नजरों देखहीं, सब का खावंद पीउ ॥ २३**

किन्तु रसूल मुहम्मदने तो ऐसा कहा है कि जो छोटे बड़े सभी जीवोंके प्रति समान दृष्टि रखे, उसीको पुण्य मिलता है क्योंकि परमात्मा सबका एक ही है.

**जो दुख देवे किनको, सो नहीं मुसलमान ।**

**नबिअं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान ॥ २४**

परन्तु जो दूसरोंको दुःख देता है, वह मुसलमान नहीं हो सकता क्योंकि रसूल मुहम्मद (नबी) ने तो मुसलमानोंको दयालु (मेहेरबान) की संज्ञा दी है.

**कोई बूझे ना इसलामको, ना लगे नबी के बान ।**

**ना सुध सल्ली ना बंदगी, कहें हम मुसलमान ॥ २५**

इनमें से तो न कोई इस्लामको समझ रहे हैं और न ही रसूल (नबी)के वचनोंका अनुसरण कर रहे हैं. उन्हें पूजापाठ, पवित्रता तथा उपासनाकी भी कोई सुधि नहीं है किन्तु फिर भी कहते हैं कि हम मुसलमान हैं.

**कौन दीन क्यों चलना, और क्यों रेहेनी फुरमान ।**

**क्यों अंतर मांहें बाहेर, कहें हम मुसलमान ॥ २६**

कौन सा धर्म पालनीय है, कैसे उसका आचरण किया जा सकता है, कुरानके अनुरूप कैसा आचरण (रेहेनी) होनी चाहिए तथा आत्मिक अनुभूति और बाह्याचरणमें क्या भेद है ? इन रहस्योंको समझे बिना ही ऐसे लोग स्वयंको मुसलमान (धार्मिक व्यक्ति) कहते हैं.

**ना सुध ऊजू निमाजकी, ना रोजे रमजान ।**

**ना तसबी ना नाम की, कहें हम मुसलमान ॥ २७**

ऐसे लोगोंको न नमाजकी सुधि रहती है और न ही उससे पूर्व शुद्धिके लिए किया जाने वाले बज्जूकी सुधि रहती है. उन्हें रमजान महीनेमें रखे जाने वाले रोजे तथा खुदाके नामपर माला फेरने (तसबी)की भी सुधि नहीं है, अर्थात् इन क्रियाओंके रहस्योंको नहीं जानते फिर भी कहते हैं कि हम मुसलमान हैं.

सुध नहीं दिल साफ की, ना कछू सबद पेहेचान ।

ना सुध छल ना वतन, कहें हम मुसलमान ॥ २८

उन्हें हृदयकी शुद्धिका भी ध्यान नहीं है और रसूलके शब्दोंकी भी पहचान नहीं है। उन्हें छलवती माया तथा अविनाशी धामकी भी सुधि नहीं है, फिर भी कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

मैं कौन आया किन ठौर से, कहा देखत हों जहान ।

कौन नबी भेज्या किने, कहें हम मुसलमान ॥ २९

मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, इस संसारमें क्या देख रहा हूँ, नबी (रसूल) कौन हैं तथा किसने उनको भेजा है ? इन बातोंकी सुधि न होने पर भी वे कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

हक को कबू ना याद करें, हुए नहीं गलतान ।

खुदा कबू ना सुपने, कहें हम मुसलमान ॥ ३०

वे परमात्मा (हक) को तो कभी याद भी नहीं करते और उनके विरहमें कभी द्रवित भी नहीं होते। इतना ही नहीं, स्वप्नमें भी वे कभी परमात्माको याद नहीं करते, किन्तु कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ए तो आग है जलती, ताए लई सुख मान ।

देखाए भी अंधे न देखहीं, कहें हम मुसलमान ॥ ३१

ये लोग तो जलती हुई आगके समान सांसारिक वासनाओंमें ही सुख मानकर बैठे हैं। बाहरी आँखोंसे सब कुछ देखते हुए भी अन्दरसे तो वे अन्धे ही हैं, फिर भी कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

बाहेर के देखावहीं, अंदर आंख न कान ।

सो कहा सुने कहा देखसी, कहें हम मुसलमान ॥ ३२

ऐसे लोग बाह्य आडम्बर कर दिखाते हैं कि हम ज्ञानी हैं किन्तु अन्तर (भीतर) से उनकी आँखें और कान दोनों बन्द हैं। इसलिए वे परमात्माके विषयमें क्या तो सुनेंगे और क्या देख (अनुभवकर) पाएँगे ? फिर भी कहते हैं कि हम (सच्चे) मुसलमान हैं।

विध भी देखावें बाहेर की, सुध नहीं वृध हान ।

ना पेहेचान जो रूह की, कहें हम मुसलमान ॥ ३३

पूजा-बन्दगी भी वे बाहर दिखानेके लिए ही करते हैं, उन्हें लाभ या हानिकी कुछ भी सुधि नहीं है। न उन्हें आत्माकी ही पहचान है, किन्तु कहते हैं कि हम (सच्चे) मुसलमान हैं।

गुन ना देखें काहूँ को, अवगुन लेवें सिरतान ।

आप पडे वस इन्द्रियों, कहें हम मुसलमान ॥ ३४

उन्हें किसीके भी गुण दिखाई नहीं देते अपितु वे दूसरोंके अवगुणोंको ही अपने सिर पर लिए फिरते हैं। स्वयं तो गुण, अङ्ग, इन्द्रियोंके वशमें रहते हैं, किन्तु कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

जुलम करें कै जालिम, मूंदी आंखे गुमान ।

खून करते ना डरें, कहें हम मुसलमान ॥ ३५

ये निर्दयी लोग गरीबों पर अनेक प्रकारसे अत्याचार करते हैं। अहङ्कारके कारण इनकी (न्यायकी) आँखें ही बन्द हो गई हैं। किसीकी भी हत्या करते हुए इन्हें डर नहीं है और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

नीयत ना नीकी कबहूँ, जनम दगाई जान ।

निस दिन चाहें छल को, कहें हम मुसलमान ॥ ३६

इनकी धारणा ही कभी शुद्ध नहीं रही है, ये तो जन्मसे ही धोखा देनेवाले जान पड़ते हैं, क्योंकि रात-दिन उनका ध्यान छलवती मायाकी ओर ही होता है किन्तु कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

मने उडाए तूल ज्यों, न पावें ठौर ठेहेरान ।

सो सारे गफलतें फिरे, कहें हम मुसलमान ॥ ३७

उनका मन रूईके रेशेकी भाँति उड़ता रहता है, मनको टिकानेके लिए उन्हें कोई स्थान ही दिखाई नहीं देता। इसलिए वे सब अज्ञानके अन्धकारमें ही मनको दौड़ाते रहते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।



ले गरव खडे होवहीं, जाने हम मेर समान ।

ना सुध भारी हलके, कहें हम मुसलमान ॥ ३८

ऐसे लोग अज्ञानके कारण अहंकारमें ही रत रहते हैं और स्वयंको पर्वतके समान उच्च समझते हैं किन्तु उन्हें श्रेष्ठ (भारी) तथा तुच्छ (हल्की) वस्तुकी कोई सुधि नहीं है। फिर भी कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

कहे अंग तो काम क्रोधके, गोस्त खान मद पान ।

हक हराम न जानहीं, कहे हम मुसलमान ॥ ३९

ऐसे लोगोंके अङ्ग-प्रत्यङ्गमें काम-क्रोध भरा हुआ रहता है। गोमांस और मद्यपान ही इनका आहार (खानपान) है। ये लोग हक (अपने अधिकारमें आई हुई न्याय संगत वस्तु) और हराम (दूसरोंके अधिकारकी वस्तुको बलपूर्वक छीनना) का भी विवेक नहीं रखते और कहते हैं कि हम (सच्चे) मुसलमान हैं।

सुपेत हुए स्याही गई, स्याही अंदर बढती जान ।

काट गला लोहू पीवहीं, कहें हम मुसलमान ॥ ४०

आयुके अनुसार उनके बाल सफेद हो गए हैं, बालोंसे दूर हो कर वह कालिमा उनके अन्तःकरण पर चढ़ती गई जिससे ये दूसरोंका गला काटकर (अधिकार छीनकर) उनका रक्त (लहू) तक पी जाते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

दुख ना देखें और को, ऐसे हिरदे निपट पाषान ।

दुख देते ना सकुचें, कहें हम मुसलमान ॥ ४१

ऐसे लोगोंके हृदय पत्थरके समान कठोर हो गए हैं कि अन्य लोगोंका दुःख उन्हें दिखाई नहीं देता। इसलिए दूसरोंको दुःख देनेमें उन्हें संकोच ही नहीं होता और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं।

ब्राह्मण कहे हम उत्तम, मुसलमान कहे हम पाक ।

दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक ॥ ४२

हिन्दुओंमें ब्राह्मण कहते हैं कि हम सबसे उत्तम हैं, उधर मुसलमान भी यही

कहते हैं कि हम ही सबसे पवित्र हैं. वस्तुतः दोनोंका दृष्टिकोण शारीरिक है. उनके शरीरका निर्माण इन्हीं पार्थिव तत्वों (एक ही स्थान)से हुआ है और प्राण छूट जानेके बाद भी हिन्दूओंका शरीर जला देनेसे राख होकर मिट्टीमें ही मिल जाता है और मुसलमानोंका शरीर मिट्टीमें गाड़ देनेसे वह भी मिट्टी (खाक) ही हो जाता है.

**कुफर न काढें आपको, और देखें सब कुफरान ।**

**अपना अवगुन ना देखहीं, कहें हम मुसलमान ॥ ४३**

वे खुदाके प्रति अपने अविश्वास (कुफ) को तो दूर नहीं करते और दूसरों (हिन्दुओं)को काफिर (अविश्वासी) कहते हैं. इस प्रकार अपने अवगुणोंको देखे बिना ही स्वयंको मुसलमान कहते हैं.

**ज्यों सुपनेमें मनुआ, आप भाव सब ठौर ।**

**तरंग जैसा आपमें, सोई देखे मिने और ॥ ४४**

जिस प्रकार स्वप्नमें मन स्वयं ही स्वप्नके सभी दृश्योंमें छा जाता है और सर्वत्र स्वयंको देखता है, इसी प्रकार मनुष्यके अपने मनमें विचारोंकी जैसी लहरें उठती हैं, उसी प्रकार वे दूसरोंको भी देखते हैं.

**बदी न छोड़ें एक पल, डर न रखें सुभान ।**

**फैल करें चित चाहते, कहें हम मुसलमान ॥ ४५**

ऐसे लोग क्षणमात्रके लिए भी दुष्कर्मोंको छोड़ नहीं सकते और उन्हें परमात्माका भी कोई भय नहीं रहता. वे मनोनुकुल व्यवहार करते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं.

**ना प्रतीत जो और की, यों पढे काजी कुरान ।**

**राह बतावें और को, कहें हम मुसलमान ॥ ४६**

जिनको दूसरों पर किसी भी प्रकारका विश्वास नहीं है और मात्र वे कुरान पढ़कर ही काजी (न्यायाधीश) बन बैठे हैं, ऐसे अविश्वासी लोग दूसरोंका मार्गदर्शन करते हैं और कहते हैं कि हम मुसलमान हैं.

हिरदे फूटे ऐसे बेसुध, एता भी न रहे याद ।

खुद काजी आखर होएसी, तब देसी कहा जवाब ॥ ४७

ऐसे टूटे हुए हृदय वाले बेसुध लोगोंको इतना भी याद नहीं रहता है कि अन्तिम समय (क्यामतकी वेला)में स्वयं परमात्मा (खुदा) न्यायाधीश बनकर न्याय करने वाले हैं, उस समय वे क्या उत्तर देंगे ?

कलाम अल्ला काजी पढ़ें, पर होत नहीं यकीन ।

कैसा डर कौन आवहीं, तो हलका किया दीन ॥ ४८

ऐसे काजी (तथा कथित न्यायाधीश) लोग कहते हैं कि हम अल्लाहके कलाम (खुदाके वचन कुरान) पढ़ते हैं किन्तु उन्हें कुरानके वचनों पर विश्वास ही नहीं होता. उन्हें यह भी पता नहीं है कि क्यामतके समय कौन आनेवाले हैं और उनसे क्यों भय रखना चाहिए ? इस प्रकार ऐसे लोगोंने धर्मके महत्त्वको ही घटा दिया है.

तिनों तो सस्ता किया, जिनों नहीं भरोसा निदान ।

या विध आपे अपना, हलका करें कुरान ॥ ४९

जिनको कुरानके वचनोंके प्रति विश्वास ही नहीं है, ऐसे लोग कुरानके वचनोंकी अवहेलनाकर स्वयं ही अपने धर्मग्रन्थ (कुरान)का महत्त्व कम करते हैं.

महामत केहेवें यों कर, ए पढे बडे कुफर ।

बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर ॥ ५०

महामति इस प्रकार कहते हैं कि ऐसे अविश्वासी (कुफ़र) लोग कुरानको पढ़ते हैं किन्तु कुरानके गूढ़ रहस्योंकी ओर उनकी दृष्टि ही नहीं रहती. इसलिए उन्हें न्याय करनेकी सुधि नहीं हुई.

प्रकरण ४० चौपाई १५९०

तुम को देऊं सुख जागनी, साथजी मेरे आधार ।

भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार ॥ १

हे मेरे शिरोमणि सुन्दरसाथजी ! परमधामकी जिन ब्रह्मवासनाओंने इस जगतमें आकर छोटे-बड़े नर-नारियोंका वेश धारण किया है, ऐसे सबको मैं जागनी लीलाका सुख-प्रदान करता हूँ.

सुनियो भीम मकुंदजी, उधव केसो स्याम ।

हम पाती पढी महंमदकी, सब पाई हकीकत धाम ॥ २

भीमजी, मुकुन्दजी, उद्धवजी, केशवदासजी और श्यामजी, अब आप सुनें. रसूल मुहम्मदके हाथ भेजे गए पत्र (कुरान) को मैंने पढ़ा और उसमें परमधामकी यथार्थताके सङ्केत प्राप्त हुए.

अपने घरकी इंसारतें, और न समझे कोए ।

और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए ॥ ३

(कुरानमें उल्लेखित) अपने घरका सङ्केत अन्य कोई भी समझ नहीं पाता. यदि कोई अन्य होता तो ही समझ पाता अन्य तो कोई है ही नहीं (मायाके जीवोंका तो कोई अस्तित्व ही नहीं है, अतः ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त कोई है ही नहीं जो अखण्डकी बातें समझ सके).

वतन की बातें सबे, पाई हमारी हम ।

सोए रोसन करत हों, कहियो साथ को तुम ॥ ४

परमधामकी अपनी बातें हमें कुरानमें भी मिली हैं, इसलिए मैं उनको ही प्रकट कर रहा हूँ. अन्य सुन्दरसाथको भी आप यह समाचार दे दें.

किया वरनन श्री धाम का, कै विध लिखे निसान ।

साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान ॥ ५

उसमें परमधामका वर्णन किया है और कई प्रकारके संकेत दिए गए हैं. ब्रह्मात्माओंको अखण्ड आनन्दका अनुभव करवानेके लिए विभिन्न स्थानों पर ऐसे विवरण दिए हैं.

जमुना जरी किनार पर, कै देहुरियां तलाव ।

भांत भांत रंग झलकत, यों कै जवेर जडाव ॥ ६

परमधाममें यमुना नदीके दोनों तट बहुमुल्य रत्नोंसे जड़े हुए जरीके समान प्रतीत होते हैं। तालाब (होजकौशर) पर कई देहुरियाँ हैं। उनमें जड़े गए अनेक प्रकारके नगोंका प्रकाश विभिन्न रंगोंमें लहराता है।

नीर उजले खीर से, खुसबोए जिमी रेत सेत ।

पसू कै विध खेलहीं, यों काग निसानी देत ॥ ७

यमुनाका निर्मल जल दूधके समान उज्ज्वल है तथा उसके किनारेकी रेतिके श्वेत कण सुगन्ध फैलाते हैं। वहाँ पर पशु-पक्षी अनेक प्रकारके खेल करते हैं। इस प्रकारके सङ्केत कुरानमें मिलते हैं।

सबुज वन कै रंग के, जवेर कै झलकत ।

सैयां वरनन इसारतें, कै पंखी मिने घूमत ॥ ८

वहाँके हरे-भरे अनेक वन रत्नोंकी भाँति देदीप्यमान हैं। साथ ही वहाँ पर सखियों तथा विभिन्न प्रकारके पक्षियोंके घूमने-फिरनेका वर्णन भी सङ्केतोंमें मिलता है।

कह्या मैं तारतम तुमको, मूल बचन जिन पर ।

सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर ॥ ९

मैंने तुम्हें जो तारतम ज्ञान दिया है और जिन ब्रह्मात्माओंके लिए यह ज्ञान आया है, उनकी चर्चा भी कुरानमें है। इस प्रकार कुरानमें अपने घर परमधामके लिए अनेक संकेत लिखे गए हैं।

ऊपर से तले आए के, सब बैठियां खेल देखन ।

भेली रूह भगवान की, हुकम हुआ सबन ॥ १०

ब्रह्मात्माएँ खेल देखनेके लिए तीसरी भूमिकासे उतरकर मूल मिलावेमें आ बैठीं। जैसे ही एकत्रित हुई, ब्रह्मात्माओंको खेल देखनेके लिए आज्ञा हुई, उसी समय अक्षरब्रह्मको भी खेलकी रचना करनेका आदेश हुआ।

हुई रात सबन को, तिन फेरे खेलमें मन ।

सोई रात सोई साएत, पर भूल गैयां वे दिन ॥ ११

सभी ब्रह्मात्माओं पर अज्ञान (फरामोशी) की रात्रि छा गई। उसी अज्ञानने ब्रह्मात्माओंकी सुरता को मायावी खेलमें फँसा दिया। इधर वही रात्रि अभी भी चल रही है एवं परमधाममें भी वही घड़ी है, किन्तु ब्रह्मात्माएँ मायामें फँसकर उस दिनको ही भूल गईं।

तीन तकरार कहे रात के, तिन तीनों के बयान ।

व्रज रास और जागनी, ए कै विध लिखे निसान ॥ १२

कुरानमें इस महिमावान् रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीन खण्ड बताए गए हैं और उन तीनों खण्डोंका विवरण भी अलग-अलग दिया है। व्रज, रास और जागनीके रूपमें उनके संकेत भी अनेक प्रकारसे दिए हैं।

फुरमान उसी साएत का, पिया भेज्या हम पर ।

सारी विध सोई लिखी, जो कही बाई सुन्दर ॥ १३

जैसे ही हम ब्रह्मात्माओंकी सुरताको संसारमें भेजनेका निर्णय लिया, उसी समय हमारे नाम सन्देश-पत्रके रूपमें कुरानको भी भेज दिया। इस प्रकार कुरानमें वही सारी बातें लिखी हैं, जो सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (सुन्दरबाई)ने हमें बताई थीं।

धाम रास और व्रजकी, कही सुन्दरबाईएं जेह ।

ए तो कागद नेक देखिया, देत साख सब एह ॥ १४

परमधाम, व्रज और रासके विषयमें सद्गुरुने हमें जो बातें कही थीं, इस कुरानको पढ़ने पर पता चला कि यह भी उन्हीं सब बातोंकी साक्षी दे रहा है।

कालमाया जोगमाया, तीसरी लीला जागन ।

सुन्दरबाइं ना कहे, ए आगम के बचन ॥ १५

कालमाया (व्रजलीला), योगमाया (रासलीला) एवं इस तीसरी - जागनी लीलाके विषयमें सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने हमें स्पष्ट कहा था किन्तु यह

जागनी लीला (जागनीरास) किसके द्वारा पूर्ण होगी, वह भविष्यवाणी उन्होंने नहीं की थी.

**सुन्दरबाईएं देखिया, दिलके दीदों माहें ।**

**ब्रज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें ॥ १६**

सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (सुन्दरबाई)ने अपनी अन्तर दृष्टिसे देखा और ब्रज रास तथा परमधामकी लीलाकी पूर्ण जानकारी दी थी. किन्तु यह जागनी-लीला किसके द्वारा पूर्ण होगी, इस पर अभी भी उनका ध्यान नहीं गया.

**और सुख कै विध के, कै विध किए प्यार ।**

**सुन्दरबाई के संगतें, कै औरों पाए दीदार ॥ १७**

और भी अनेक अलौकिक सुख एवं अपार स्नेह उनसे प्राप्त हुआ. इतना ही नहीं सद्गुरु (सुन्दरबाई) की सङ्गतिसे अनेक आत्माओंने भी परब्रह्म परमात्मा और परमधामके साक्षात् दर्शन किए.

**अंतरगत आरोगते, तीन बेर पिआ आए ।**

**आप भी मेवे मिठाइयां, कै हम को आन खिलाए ॥ १८**

श्री देवचन्द्रजीके समयमें स्वयं श्रीकृष्ण दिनमें तीन बार सुन्दरसाथके बीच पधारकर भोजन ग्रहण करते थे. वे स्वयं भी मेवा-मिठाई लाकर हमें खिलाया करते थे.

**विध विध के सुख और कै, देत दाएम अनेक ।**

**पर लीला जागन की, कदी वचन न पाया एक ॥ १९**

स्वयं परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णजी नित्य प्रति ऐसे अनेक प्रकारके सुख दिया करते थे. किन्तु जागनीलीलाके विषयमें उनसे एक भी वचन सुननेको नहीं मिला.

**लरी सुन्दरबाई पीउसों, इन आगम के कारन ।**

**पर पाया नहीं पड उतर, एक आधा भी सुकन ॥ २०**

इस भविष्यवाणी (ब्रह्मात्माओंकी सामूहिक जागनी)के विषयमें सद्गुरु

श्रीदेवचन्द्रजी महाराज (सुन्दरबाई)ने श्रीराजजीसे झगड़ा भी किया, किन्तु इस प्रश्नके उत्तरके रूपमें उन्हें एकाध शब्द भी प्राप्त नहीं हुआ।

**इन पड उतर वास्ते, बाईजीएं किए उपाए ।**

**विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए ॥ २१**

इस प्रश्नका उत्तर प्राप्त करनेके लिए सद्गुरु (श्रीसुन्दरबाई) ने अनेक उपाय किए और विलख-विलख कर धनीजीको प्रार्थना पत्र भी लिखे। उन्हें ले-लेकर अन्य आत्माओंने भी धामधनीतक पहुँचानेका प्रयत्न किया।

**यों उनहतर पातियां, लिखियां धाम धनी पर ।**

**तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर ॥ २२**

इस प्रकार जागनीके विषयमें श्रीदेवचन्द्रजी महाराजने श्रीकृष्णजीके नाम पर उनहतर पत्र लिखे। तब हम सब ब्रह्मात्माओंने भी ऐसे पत्र लिखे, परन्तु धामधनीने इस विषयमें तनिक भी सूचना नहीं दी।

**सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगूं से निसान ।**

**जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो साथ चित आन ॥ २३**

इस प्रकारकी सभी घटनाओंकी सुधि तथा निश्चित समयके संकेत पहले से ही रसूल मुहम्मद कुरानके माध्यमसे ले आए हैं। जागनी लीलाकी ऐसी घटनाओंके विषयमें कुरानमें स्पष्ट लिखा है। इसलिए आप सब सुन्दरसाथ इस विषयमें ध्यान पूर्वक विचार करें।

**अव्वल मध और आखर, यामें तीनों की हकीकत ।**

**पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत ॥ २४**

महिमामयी रात्रि (लैलतुल कद्र) के तीनों खण्डों (तकरार) में आरम्भ (अब्बल)- ब्रजलीला, मध्य- रासलीला एवं अन्तिम (आखर)- जागनी लीला, की वास्तविकतका वर्णन भी कुरानमें स्पष्ट किया है। (अथवा मुहम्मदके तीनों स्वरूपों बशरी, मलकी और हकीका विवरण भी कुरानमें स्पष्ट रूपसे पाया) किन्तु सबका रहस्य केवल इमाम महदी ही समझ सकते



हैं, क्योंकि इनमें परब्रह्म परमात्माका जोश, आदेश और अक्षरब्रह्मकी बुद्धि महामतिके रूपमें विराजमान है।

ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचन्द्रजी के पास ।

सो विध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास ॥ २५

जिस प्रकार श्रीदेवचन्द्रजीको श्रीकृष्णजीने दर्शन देकर तारतम ज्ञान प्रदान किया। इस साक्षात्कारकी पूरी घटनाका सङ्केत भी कुरानमें लिखा है।

फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात ।

जरा एक ना घट बढ, सब अंग निसानी जात ॥ २६

रसूल मुहम्मदके द्वारा लाए गए आदेश पत्र (फुरमान-कुरान) में हम ब्रह्मात्माओंकी सभी बातें लिखी हैं। उसमें बताए गए संकेतमें से कुछ भी घटनाएँ अधिक या कम नहीं हो रहीं हैं।

श्री देवचन्द्रजीसों जुध किया, कुली दजाल जिन पर ।

ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर ॥ २७

श्री देवचन्द्रजीके साथ कलियुगी दज्जालने जिस प्रकार युद्ध किया अर्थात् उन्हें जागनीके कार्यमें बाधा पहुँचाई, ये सब संकेत तथा ईसा रूह अल्लाह इस खेलमें किस प्रकार दो जामा धारण करेंगे अर्थात् श्रीश्यामाजी सुन्दरबाई-श्रीदेवचन्द्रजीके रूपमें एवं श्रीइन्द्रावती-मेरे रूपमें प्रकट होंगी, इत्यादि सभी बातोंके संकेत कुरानमें दिए गए हैं।

श्री देवचन्द्रजीसों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन ।

सो बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन ॥ २८

श्रीदेवचन्द्रजी से जब मैं मिला तो मेरा हृदय तारतम ज्ञानसे प्रकाशित हुआ। फिर (शरीर छोड़ कर) वे स्वयं मेरे हृदयमें विराजमान हुए, इत्यादि सभी घटनाओंके संकेत नाम और समयके साथ उसमें लिखे गए हैं।

बोहोत बातें कै और हैं, सो केते लिखों निसान ।

साथ हम तुम मिलके, हंस हंस करसी बयान ॥ २९

ऐसी तो और भी बहुत-सी बातें हैं, मैं यहाँ पर उनके कितने सङ्केत लिखूँ ?

हम और आप सभी सुन्दरसाथ मिल कर हँसते हुए इन बातोंकी चर्चा करेंगे.

कै विध की निसानियां, जिन विध हुई जागन ।

हंसते हरषे जागसी, सुख देसी सब सैयन ॥ ३०

ब्रह्मात्माओंकी जागनी जिस प्रकार हुई है, हम सब एक साथ हँसते हुए परमधाममें हर्षपूर्वक जाग्रत होंगे तथा सभी आत्माओंको भी अखण्ड सुख प्राप्त होंगे, इत्यादि अनेक संकेतोंका उल्लेख कुरानमें है.

बाललीला और किसोर, तीसरी बुढापन ।

तीन अवस्था तीन ब्रह्मांड, देखाए मिने एक खिन ॥ ३१

इस प्रकार ब्रजमण्डलकी बाल-लीला, रासकी किशोर-लीला और जागनीकी यह प्रौढ़ लीला, इन तीनों अवस्थाकी लीलाओंके लिए क्षण मात्रमें ही तीनों ब्रह्माण्डोंको दिखा दिया है.

बाबा बूढा होए खेलावसी, दे मन चाह्या सुख सब ।

तीन अवस्था एक साएत में, देखाए के हंससी अब ॥ ३२

कुरानमें इमाम महदीका सङ्केत एक बूढ़े बाबाके रूपमें हुआ है, जो सबको (जागनी रास खेलाकर) इच्छित सुख प्रदान करेंगे. इस प्रकार इसी जागनी लीलामें ब्रज, रास और जागनी तीनों लीलाओंका एक साथ अनुभव करवाकर श्रीराजजी ब्रह्मात्माओंके साथ हँसी करेंगे.

तीन ठौर लीला करी, देखाए तीनों ब्रह्मांड ।

सो तीनों एक पलमें, देखाए के उडावसी इंड ॥ ३३

इस प्रकार धामधनी तीनों ब्रह्माण्डोंमें हुई ब्रज, रास और जागनी इन तीनों लीलाओंको पल मात्रमें दिखाकर इस ब्रह्माण्डको भी उड़ा देंगे.

खेले एकै रात में, ब्रज रास जागन ।

बेर साएत भी ना हुई, यों होसी सब सैयन ॥ ३४

वास्तवमें एक ही महिमावान रात्रि (लैल-तुल-कद्र)के तीन खण्डोंमें ये तीनों लीलाएँ सम्पन्न हुई हैं. इस खेलसे जाग्रत होने पर समस्त आत्माओंको

अनुभव होगा कि इन लीलाओंको देखनेमें उन्हें पल भरका समय भी नहीं लगा.

बीच ब्रह्मांड ना जुग कोई, वरस मास ना दिन ।

खिनमें सब देखाए के, दोए साखें करी जागन ॥ ३५

इन तीनों ब्रह्माण्डोंकी लीलाओंको दिखानेमें न कोई युग बीता न ही वर्ष, महीना अथवा दिन व्यतीत हुआ, अपितु क्षणमात्रमें ही इन सब खेलोंको दिखाकर वेद और कतेब दोनोंकी साक्षी देते हुए ब्रह्मात्माओंकी जागनी की.

दाना एक खसखस का, तामें देखाए चौदे भवन ।

सो दाना फेर होएसी, तुम देखोगे सब जन ॥ ३६

श्री राजजीने एक खस खसके दानेके समान नगण्य मायाको प्रकट कर उसीमें चौदह लोकोंका विस्तार दिखा दिया. जब वे इस खेलको पूर्ण करेंगे, तब यह सब विस्तार मिट जाएगा और यह माया उसी एक दानेके समान नगण्य हो जाएगी. इस घटनाको आप सब जागृत होकर देखेंगे.

पट कर बडा देखाइया, चौदे तबक बनाए ।

तुम पर हांसी करके, देसी पट उडाए ॥ ३७

धनीजीने खस-खसके दानेके समान नगण्य मायाको परदेकी भाँति विस्तृत करते हुए उसीमें चौदह लोकोंका विस्तार दिखा दिया. तुम पर हँसी करनेके लिए फिर वे इस परदेको भी उड़ा देंगे.

ज्यों ज्यों होसी जागनी, त्यों त्यों उडसी एह ।

देखोगे सब नजरों, पिआ हांसी करी है जेह ॥ ३८

ज्यों ज्यों आत्माएँ जागृत होती जाएँगी, मायाका परदा भी त्यों त्यों हटता जाएगा. पूर्ण जागृत होकर जब तुम अपनी आँखोंसे देख लोगे, तब पता चलेगा कि धामधनीने तुम पर हँसी की है.

पियाजीएं कै हांसी करी, सो लिखी मिने किताब ।

जब सैयां सब मिली, तब होसी बिना हिसाब ॥ ३९

धामधनीने ब्रह्मात्माओंके साथ इस प्रकार कई बार विनोद किया है,

उसकी भी चर्चा कुरानमें है. जब सब ब्रह्मात्माएँ जागृत हो जाएँगी, तब अपार आनन्द होगा.

और भी कहूँ सो सुनो, जाहेर महंमद बात ।

और सबे उडाए के, एक रखी कदरकी रात ॥ ४०

रसूल मुहम्मदकी और भी एक बात है उसे स्पष्ट कहता हूँ- आप ध्यानपूर्वक सुनें. उन्होंने सब अस्तित्व नकार कर एक लैल-तुल-कदरका ही महत्त्व बताया.

सब रोसनाई इनमें, सांची कहियत है जेह ।

उतरी है पिया पास थें, रात नूर भरी है एह ॥ ४१

अखण्ड लीलाओंका प्रकाश भी इसी रातमें फैला है, क्योंकि यह प्रकाशमयी रात्रि धनीजीके सान्निध्यसे ही मायामें उतरी है.

वतन थें पीउ प्यारियां, आइयां सबे मिल ।

इसी रात के बीच में, करने को सैल ॥ ४२

परमधामसे धामधनीकी प्यारी अङ्गनाएँ सभी एकसाथ मिलकर संसारका खेल देखनेके लिए इसी रातमें यहाँ आई हैं.

पिया भेजे मलाएक, रखोपे रूहों कारन ।

सो संग अंदर रहेवहीं, करत सदा रोसन ॥ ४३

धामधनीने अपनी आत्माओंकी संभालके लिए फरिश्तों (इस्त्राफील, जिब्रील आदि) को भी साथ भेज दिया. वे सदा इनके अन्दर रहकर इनका मार्ग दर्शन करते हैं.

तबक चौदे इन में, जिमी और आसमान ।

रात बडी कदर की, कोई नाहीं इन समान ॥ ४४

पातालसे लेकर वैकुण्ठ पर्यन्त इस ब्रह्माण्डमें चौदह लोक हैं, इन सबमें लैल-तुल-कदरकी सबसे बड़ी महिमा है. इसके समान दूसरी कोई रात्रि नहीं है.

फिरत चिरागें इन में, एक चांद दूजा सूर ।

ए तो सोर सेहेरन का, नहीं रोसन वतनी नूर ॥ ४५

इस संसारमें अज्ञानके अन्धकारको दूर करनेके लिए सूर्य और चन्द्रमा दीपके समान प्रतीत होते हैं। इनमें परमधामका प्रकाश नहीं होता, ये तो मात्र मायावी वस्तुओंकी ही ध्वनि हैं।

रसूलें ए जाहेर कहा, दिन रोसन पिया वतन ।

और अंधेर सब दजाल, जो गोविंद भेडा फितन ॥ ४६

रसूल मुहम्मदने स्पष्ट कहा है कि कयामतके समय ब्रह्मधामका प्रकाश (तारतम ज्ञान) फैलेगा। शेष सर्वत्र अज्ञानका अन्धकार ही दज्जालके रूपमें व्याप्त है। इसीको गोविन्दभेड़ा (प्रेत नगरी) कह कर उपद्रवका घर कहा है।

नींद को रात कदर कही, दुनी ढूँढे खेल में रात ।

कहे जो आजूज माजूज, ए तिन में गोते खात ॥ ४७

वस्तुतः अज्ञानरूपी नींदको ही लैल-तुल-कद्र कहा है किन्तु मायाके जीव (शराअ में पड़े लोग) रमजानके दिनोंमें इस रातको ढूँढ़ते हैं। इन दिन और रातको ही याजूज और माजूज कहा है, मायाके जीव इन्हींमें गोते खा रहे हैं।

दरिया रूप अंधेरी, आदम रूप दजाल ।

एही सरूप कुलीय का, बैर बिखे लानती चाल ॥ ४८

अज्ञानको ही मोहका सागर कहा है और मानवके मनमें ही दज्जाल (अज्ञानता, नास्तिकता) विचरण कर रहा है। यही कलियुगका स्वरूप है, जो संसारको शत्रुता और अत्याचारकी ओर प्रेरित करता है।

आदम रूप वैराट, अनेक विध खेलत ।

झूठ कुफर कुली पसरया, सब सचराचर पसू मत ॥ ४९

वैराटकी इस सृष्टिमें मानवके रूपमें पाशविक बुद्धि विभिन्न प्रकारके खेल कर रही है। इस सचराचर जगतमें झूठे कलियुगकी अज्ञानता (पाशविक वृत्ति) ही फैली हुई है।

सुन्दरबाईएं याको कहा, गोविन्द भेडा मंडल ।

सोई कलजुग दजाल, व्याप रह्या सकल ॥ ५०

श्रीदेवचन्द्रजी (श्रीसुन्दरबाई) ने इस जगतको गोविन्दभेड़ा (प्रेत नगरी) कहा है। यहाँ पर कलियुग (नास्तिकता) ही दज्जाल (दुष्ट) बन कर सबमें व्याप्त हो रहा है।

खेल कहा है नींद का, सब खेलें बीच अंधेर ।

ए जो आइयां खेल देखने, ताए खैंच लिया दिल फेर ॥ ५१

यह जगतका खेल स्वप्नवत् कहलाता है। यहाँ पर सब लोग अज्ञानरूपी अन्धकारमें खेलते हैं। इस नश्वर खेलको देखनेके लिए आई हुई ब्रह्मात्माओंके मनको भी इस अज्ञानरूप निद्राने अपनी ओर आकृष्ट किया है।

जंग किया सैयां तिनसों, जो आगे कछुए नाहें ।

ए भी कहें ओ ना कछू, पर उरझ रहियां तिन माहें ॥ ५२

वस्तुतः यह स्वप्नवत् जगतकी माया ब्रह्मात्माओंके समक्ष कुछ भी नहीं है तथापि ब्रह्मात्माओंने इससे युद्ध किया। वे अपने मुखसे तो कहती हैं कि मायाका कोई अस्तित्व ही नहीं है किन्तु उसीके खेलमें स्वयं उलझी हुई हैं।

लई लडाई सैयां तिनसों, जाए पडियां बंध ।

ना रसी ना बांधे जिने, पर छूट ना सके कोई फंद ॥ ५३

ब्रह्मात्माओंने ऐसी नगण्य मायासे युद्ध किया किन्तु उसीके बन्धनमें बन्ध गईं। मायाके पास न कोई रस्सी है और न ही वह किसी को बाँधती है, फिर भी इसके बन्धनसे कोई छूट नहीं सकता।

जुदी जातें भातें जुदी, खडियां जुदे भेष धर ।

जानत नीके झूठ है, तो भी पकड रहियां सत कर ॥ ५४

ब्रह्मात्माएँ इस संसारमें आकर अलग-अलग जातियों एवं वर्गोंमें विभिन्न रीति-रिवाज तथा वेशभूषाओंको धारण कर रही हैं। वे भली भाँति जानती हैं कि यह माया असत्य है तथापि इसे सत्य समझकर इसीको पकड़े बैठी हैं।

जुदे जुदे नाम खसम के, एक नारी दूजे नर ।

खुद खसम को भूल के, खेलमें बैठियां सत कर ॥ ५५

उन्होंने परब्रह्म परमात्माके नाम भी अलग-अलग रख दिए हैं और वे स्वयं कोई पुरुष बनी हैं तो कोई स्त्री. वे अपने आपको तथा अपने धनीको भूलकर इस नश्वर जगतको ही सत्य मान बैठी हैं.

पिया खजाना खरच के, आए बंध से लैयां छुड़ाए ।

अब सो करे मेहेमानियां, वस्तर भूषण पेहेराए ॥ ५६

प्रियतम धनीने परमधामके तारतमरूपी धनको संसारमें व्यय (प्रयुक्त) करके अपनी आत्माओंको मायाके बन्धनसे मुक्त करा लिया. अब जगतमें प्रियतमका प्रिय अतिथिकी भाँति पर्याप्त सम्मान हो रहा है, उन्हें सुन्दरसाथके घरोंमें वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित किया जा रहा है.

कै भोजन मेवे मिठाइयां, तकिए सेज जवेर ।

सेवक सेवा दुनियां, करसी ब्याह सुन्दर ॥ ५७

अनेक प्रकारके सुन्दर भोजन, मेवा, मिठाइयाँ आदि उन्हें खिलाई जा रही हैं. जवाराहतोंसे जड़े हुए सुन्दर पलङ्ग पर शय्या विछाकर गोल तकियों पर उन्हें आरामसे ससम्मान बैठाया जा रहा है. सारा संसार उनकी सेवामें जुटा है. वे परब्रह्म इस संसारमें अपनी अङ्गनाओंसे प्रसन्नता पूर्वक अङ्गी-अङ्गनाका सम्बन्ध जोड़ कर आनन्द उत्सव मना रहे हैं.

यामें कै विध हांसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए ।

सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए ॥ ५८

इस संसारमें अनेक प्रकारसे ब्रह्मात्माओंकी हँसी करनेके लिए श्री राजजीने विचार किया और उनको जागृतकर वे स्वयं उनके बीच रह कर हँसेंगे. इस प्रकारकी बातोंका उल्लेख भी कुरानमें है.

वैराट सब पुकारहीं, सो भी इनमें लिखे सबद ।

कै विध लीला जागनी, पर भली गाई महंमद ॥ ५९

संसारके सभी महापुरुषोंने जैसी भविष्यवाणियाँ कीं हैं, उनका तथा जागनी

लीलाके विभिन्न प्रसंगोंका उल्लेख भी रसूल मुहम्मदने कुरानमें भली भाँति किया है.

याही लीला सब कोई, गावत गुझ अगम ।

गरजसी वैराट में, हुए जाहेर सैयां हम ॥ ६०

इसी जागनी लीलाको सभी शास्त्रोंने गुह्य और अगम्य कहा है, अब ब्रह्मात्माओंके प्रकट होनेसे इस लीलाका स्वर पूरे ब्रह्माण्डमें गुञ्जायमान होगा.

वैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए ।

पर गावना सुन महंमद का, रेहेसी सबे अचंभाए ॥ ६१

समस्त जगतके नर-नारी बड़ी तन्मयतासे ब्रह्मात्माओंकी लीलाओंका गायन करेंगे. किन्तु रसूल मुहम्मदने इस लीलाको जिस प्रकार गाया है, उन रहस्योंका स्पष्टीकरण सुनकर सभी लोग चकित हो जाएँगे.

महंमद बातें बोहोत हैं, सो केती लिखूं तुम ।

ए बातें तब होएसी, जब मिलसी हम तुम ॥ ६२

इस प्रकार रसूल मुहम्मदने बहुत कुछ कहा है, उसके विषयमें मैं तुम्हें कितना लिखूँ ? जब हम परस्पर मिलेंगे, तब ये सारी बातें की जाएँगी.

महंमद कहे मैं हुकम, सब रूहें मुझ माँहें ।

मैं चल्या अरस म्याराज को, पर पोहोंच सक्या नाहें ॥ ६३

रसूल मुहम्मदने कहा, मैं खुदाके आदेश (हुकम) से आया हूँ तथा सभी आत्माएँ मुझमें समायी हुई हैं. मैं जब परमात्माके दर्शन (म्याराज)के लिए परमधामकी ओर चल पड़ा, तब जिब्रीलके साथ होनेसे वहाँ तक पहुँच नहीं पाया.

मैं ल्याया धनीय की, इसारतें जिन खातर ।

सो ताला अजूं खुल्या नहीं, तो मैं पोहोंचों क्यों कर ॥ ६४

मैं जिन आत्माओंके लिए परब्रह्म परमात्माका संकेत ले आया हूँ, उस (कुरान)के गूढ़ रहस्य (ताले) अभी तक खुले नहीं हैं, अतः मैं परमधाम कैसे पहुँच सकता ?



ताला द्वार कजाए का, आए खोलसी जब ।

कयामत रोसन करके, मिल भेले चलसी सब ॥ ६५

जब स्वयं परमात्मा (इमाम महदीके रूपमें) प्रकट होकर न्यायके द्वार खोलेंगे और आत्म जागृति (कयामत)की वेलाको स्पष्ट करेंगे, तब हम सब मिलकर एक साथ परमधाममें जागृत होंगे।

बाईजीएं घर चलते, जाहेर कहे वचन ।

आडी खडी इन्द्रावती, है इन के हाथ जागन ॥ ६६

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी (श्रीसुन्दरबाई) ने परमधाम चलते समय स्पष्टरूपसे कहा कि परमधामके द्वार पर इन्द्रावती (परात्म स्वरूपमें) खड़ी है। जागनी लीलाका सम्पूर्ण दायित्व उसीके हाथ सौंपा है।

जुदी हम से भगवान की, रूह फिरी एक सोए ।

जब फिरे सुनसी हम को, तब घरों आवसी रोए ॥ ६७

हम ब्रह्मात्माओंसे भिन्न अक्षरब्रह्मकी आत्माएँ (ईश्वरी सृष्टि) भी मायाजन्य जगतमें आई हैं। जब हम ब्रह्मात्माएँ परमधाम लौटेंगी, तब हमारी वापसीकी बात सुनकर वे भी पश्चात्ताप करती (रोती) हुई अपने घर (अक्षरधाम) लौट जाएंगी।

ए जो भिस्त हमों करी, फेर एही भांनसी दुख ।

बुध असराफील पोहोंचहीं, तब ताए भी देसी सुख ॥ ६८

हम ब्रह्मात्माओंके प्रतापसे ही मुक्तिधामों (बहिश्तों) का निर्माण हुआ है और ब्रह्मात्माएँ ही सभी जीवोंके दुःख दूर करेंगी। अक्षरब्रह्मकी बुद्धि (इस्त्राफील फरिश्ता) जब लौटकर अक्षरधाम पहुँच जाएगी, तब अक्षरब्रह्मको भी जागनी लीलाके सुखका अनुभव होगा।

रूहअल्ला ईसा मसी, नूर नाम तारतम ।

मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम ॥ ६९

ईसा रूह अल्लाह श्यामावतार श्रीदेवचन्द्रजी, नूरनाम-तारतम ज्ञान, अक्षरब्रह्मकी मूलबुद्धि-इस्त्राफील इत्यादि, ये सब हमारे हैं और हमारे अन्दर हृदयमें विराजमान हैं।

काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसीकी हाम ।

हुआ महंमद खिताब मेहेदी, मिल्या मिने इमाम ॥ ७०

परमात्माने न्यायाधीश बनकर ऐसा न्याय किया कि अब किसीकी कोई चाहना शेष न रही. अब रसूल मुहम्मद तथा महदी मुहम्मद-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज आखिरी इमाम (मुझ) में एकरूप हो जाने पर ये आखिरी इमाम 'इमाम महदी' कहलाए.

जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए ।

सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए ॥ ७१

जिब्रील फरिश्ता भी परमात्माकी आज्ञासे संसारमें आकर ब्रह्मात्माओंकी रक्षा करता है. धामधनीकी आज्ञासे उसकी सुरताको भी ब्रह्मात्माओंने स्वयंमें समाविष्ट किया है.

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेष अनेक ।

जिन कोई झगडो आप में, धनी सबोंका एक ॥ ७२

संसारमें मनुष्य भिन्न-भिन्न नामोंसे पूर्णब्रह्म परमात्माके गुण गाते हैं, उन्होंने अपनी वेशभूषा भी अलग-अलग बनाई है. कोई भी परस्पर झगड़ा मत करो, परमात्मा सबका एक है.

अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन ।

सारों को सुख देय के, उडावत एह सुपन ॥ ७३

हे प्यारे सुन्दरसाथजी ! अब सुनो, सचराचर जगतके स्वामी परमात्मा प्रकट हो गए हैं. वे सभी जीवोंको अखण्ड मुक्ति स्थलोंका सुख प्रदान कर, इस स्वप्नवत् जगतको उड़ा देंगे.

वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर ।

कायम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर ॥ ७४

इस प्रकार धामधनीने न्यायाधीशके रूपमें प्रकट होकर इस विराट ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंको अक्षरब्रह्मकी दृष्टिके समक्ष अखण्ड कर ब्रह्माण्डके सचराचर प्राणी मात्रको मुक्ति स्थलों (बहिश्तों) में मनोवाञ्छित अखण्ड सुख प्रदान किए.

प्रकरण ४१ चौपाई १६६४

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार ।

ए दिल भीतर देखियो, है अति बडो विस्तार ॥ १

हे मेरे प्राणोंके प्यारे आत्माके आधाररूप सुन्दरसाथजी ! इस जागनीके ब्रह्माण्डमें जागनीलीलाका बड़ा महत्त्व है. इसे अपने हृदय (अन्तरात्मा) से विचार कर देखो.

सैयां सुन दौडियो, सई मेरी नाही बिलम कछू अब ।

ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौडियो सब ॥ २

हे मेरी ब्रह्मात्माओ ! जागनी रास खेलनेके लिए मेरे तारतम ज्ञानकी वंशीकी आवाज सुनकर दौड़ी चली आओ, उसमें विलम्ब मत करो. श्यामाजीने रसूल बनकर कुरानके माध्यमसे आत्म जागृतिकी जो घड़ी बताई है, उसे निकट समझ कर शीघ्र ही तुम सभी एकत्र हो जाओ.

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत ।

सब गावें लीला जागनी, पर बडी महंमद की मत ॥ ३

मैंने चौदह लोकके सभी धर्मग्रन्थोंकी वास्तविकता देखी है. उनमें पाया कि सभी लोगोंने जागनीलीला (कयामत)की महिमा गाई है, उन सबमें रसूल मुहम्मदकी स्पष्टता विशेष महत्त्वपूर्ण है.

महंमद पाती के वचन, सुनियो भीम मकुंद ।

आगम था पट बीच में, सो काढ्या पट निकंद ॥ ४

हे मेरे सुन्दरसाथ भीम एवं मकुन्दजी ! रसूल मुहम्मदके वचनोंको सुनो. अब तक धर्मग्रन्थोंकी भविष्यवाणियों पर परदा पड़ा था अब उनके रहस्योंको स्पष्ट कर वह परदा हटा दिया है.

आगम निगम सब लिख्या, हुआ है होसी जेह ।

ए बानी तो बोहोत हैं, पर नेक कहूं तुमें एह ॥ ५

आगम-निगम (वेद), शास्त्र-पुराणोंमें भी भूतकालकी और भविष्यमें

होनेवाली घटनाओंके संकेत मिलते हैं। इन विषयोंकी बातें तो बहुत हैं, परन्तु इस विषयमें मैं तुम्हें थोड़ा-सा कहता हूँ।

**ए खेल है जो नींद का, तामें आधी दई उडाए ।**

**बाकी उडाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए ॥ ६**

यह खेल सब नींद (अज्ञान) का है। उसमें भी ब्रज लीलाके पश्चात् आधी नींद दूर कर रासकी लीलाका सुख अनुभव करवाया। अब जागनी रासके लिए शेष आधी नींदको भी उड़ा देता हूँ। इसलिए अब तुम सभी सुन्दरसाथको बुलाकर एकत्रित करना।

**तारीख तीन ब्रह्मांड की, केहेती हों कर हेत ।**

**नींद एक आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत ॥ ७**

अब मैं ब्रज, रास और जागनी इन तीनों ब्रह्माण्डोंकी तिथियोंका विवरण प्रेम पूर्वक कह रहा हूँ। पहली (ब्रजलीला) पूर्ण नींदकी लीला थी। दूसरी (रासलीला) आधी नींदकी थी और अब तीसरी यह जागनी लीला पूर्ण जाग्रत अवस्थाकी है।

**वरस पांच हजार पर, सात सै सैंतालीस ।**

**होसी नेहेचल नूर नजरों, जित दिन हजार बरीस ॥ ८**

आदम (सफी अल्लाह) के पाँच हजार सात सौ सैंतालीस वर्ष पश्चात् इस धरतीमें रसूल मुहम्मदका आगमन हुआ। उनके भी एक हजार वर्ष पश्चात् यह जगत अक्षरब्रह्माकी दृष्टिमें अखण्ड होनेका उल्लेख है।

**यामें नव सै छेहंतर जब हुए, तब हुआ नूह तोफान ।**

**जल ऊपर तले से उमड्या, हो गया एक जिमी आसमान ॥ ९**

आदि आदमके पश्चात् जब नौ सौ छिहत्तर वर्ष व्यतीत हुए तो नूह तूफान-रासकी घटना घटी थी। जब गोपियाँ ब्रजसे रासमें गईं तब प्रलयकालीन जलने ऊपर नीचे सम्पूर्ण धरती और आकाशको डुबो दिया।

**पार हुई तहां से रूहें, और सब हुए गरक ।**

**फेर तीसरा ए पैदा हुआ, यों देत साहेदी हक ॥ १०**

श्री कृष्णने सभी ब्रह्मात्माओंको योगमायाकी नाव (मण्डल) में रखकर पार

पहुँचाया और शेष सभी जीव डूब गए. फिर यह तीसरा ब्रह्माण्ड रचा गया. इस प्रकार वेद, कतेवोंके द्वारा परमात्मा इस बातकी साक्षी देते हैं.

आद आदम के छपन सै, बीते जब सैंतीस ।

तबहीं दस सदी पर, होसी नबे बरीस ॥ ११

आदि आदमके छप्पनसौ सैंतीस वर्ष व्यतीत होने पर रसूल मुहम्मदके बाद दसमी सदीके नब्बे वर्ष व्यतीत होते हैं. (इसी समय इस जगतमें निजानन्दाचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजका अवतरण हुआ.

महंमद हुआ मेहेदी, सैयद केहेलाया सही ।

खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई ॥ १२

जब निजानन्दाचार्य सद्गुरु (महदी मुहम्मद) इस धरती पर आए, तब वे सभी (अवतारों) से श्रेष्ठ (सैयद) कहलाए. जब पूर्णब्रह्मने उन्हें दर्शन देकर ब्रह्मात्माओंको जागृत करनेके लिए कार्य सौंपा तथा श्यामाजीके अवतारके रूपमें परिचय दिया, तब सभी ब्रह्मात्माएँ इन सद्गुरु (इमाम)के शरणमें एकत्रित हो गईं.

रूह अल्ला ईसा रोसन, असराफील अकल ।

सूरत साथ जबराईल, आए मेहेदीमें मिले सकल ॥ १३

अब निजानन्द स्वामी सद्गुरु (ईसारूह अल्लाह) प्रदत्त तारतम ज्ञानका प्रकाश, अक्षरब्रह्मकी बुद्धि इस्त्राफील तथा जिब्रील श्री धनीजीके जोशके साथ मिलकर इमाम महदीके (मेरे) हृदयमें समावेश हो गए.

हुआ हिंदुओंमें जाहेर, हिंद से पाक मरद ।

इसक राह चलावसी, चालीस वरस लों हद ॥ १४

परम पावन ज्ञानके स्वरूप समर्थ निष्कलङ्क बुद्ध हिन्दुओंके बीच प्रकट हुए हैं. अब वे चालीस वर्ष पर्यन्त (वि.सं. १७३५-१७७५ अथवा १७१२-१७५२) प्रेमका मार्ग प्रशस्त करेंगे.

काबिल हिंद के बीचमें, होसी इमाम रोसन ।

ए लीजो प्रगट इसारतें, दोए रूहों का मिलन ॥ १५

श्रेष्ठ भारतवर्षमें इमाम महदीके दिव्य ज्ञानका प्रकाश फैलेगा, तब यह सङ्केत

स्पष्ट रूपसे समझ लेना कि दो आत्माओं (सुन्दरबाई एवं इन्द्रावती)का मिलन होगा।

**कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेहेदी पाक पूरन ।**

**खेलसी रास मिल जागनी, छतीस हजार सैयन ॥ १६**

पूर्ण रूपेण पवित्र (मायासे अलिप्त) इमाम महदीके अतिरिक्त कोई मर्द-ज्ञानी नहीं होगा। वे बारह हजार ब्रह्मसृष्टियाँ और चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टिके साथ मिलकर जागनी रास खेलेंगे।

**असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार ।**

**बारे भेलियां रास में, इत चौबीस सहस्र कुमार ॥ १७**

परमधाममें ब्रह्मात्माओंके चालीस जुथ हैं, जिनकी संख्या बारह हजार है। इन्हीं बारह हजार आत्माओंने एकसाथ रासलीलाकी थी। उनके दिव्य विग्रहमें चौबीस हजार कुमारिका सखी भी समाविष्ट हुई थीं।

**दस वरस लों खेलहीं, होसी विनोद कै हांस ।**

**सब के मनोरथ पूरने, करसी बडो विलास ॥ १८**

सभी छतीस हजार आत्माएँ मिलकर दश वर्ष तक (श्रीपद्मावतीपुरीमें) जागनी रासलीला करेंगी। उस समय सभीका मनोरथ पूर्ण करनेके लिए विभिन्न प्रकारके लीला विलास करेंगे।

**सत वैराट में पसरया, काढया कुली जालिम ।**

**चौदे तबक सचराचर, नूर इसक हमारा हम ॥ १९**

इस प्रकार इस इमाम महदीके आगमनसे जगतमें सत्य तारतम ज्ञानका विस्तार हुआ। उन्होंने अत्याचारी कलियुगरूप शैतानको दूर भगाया। अब सचराचर चौदहलोकोंमें हम ब्रह्मात्माओंके प्रकाश और प्रेम (नूर और इश्क) का विस्तार होने लगा।

**एक जरा जुलम न रेहेवहीं, सुबुध सबों में धरम ।**

**वरत्यो सुख संसार में, विकार काटे सब करम ॥ २०**

अब संसारमें लेशमात्र भी अत्याचार नहीं रहेगा, सभीमें उत्कृष्ट सत धर्मका

विस्तार होगा. संसारमें तारतम ज्ञानके द्वारा अलौकिक सुखका विस्तार होने लगा और सभीके कर्म बन्धनके विकार कट जाएँगे.

**जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम ।**

**मन चाह्या सुख दे सबों, हंसते उठे घर धाम ॥ २१**

रसूल मुहम्मदके बाद ग्यारहवीं सदी पूर्ण होने पर ब्रह्मात्माओंकी जागनी रास लीला समाप्त हो जाएगी. परमात्मा सभीको इच्छित सुख देंगे तब सभी ब्रह्मात्माएँ हँसती हुई अपने परमधाममें जागृत हो जाएँगी.

**पीछे सदी ग्यारहीं के, जब होसी तीस बरस ।**

**बनी आदम पसू पंखी, नूर इसक पिलाया रस ॥ २२**

रसूलकी ग्यारहवीं सदीके पश्चात् जब तीस वर्ष व्यतीत होंगे तब सभी मानवों एवं पशु-पक्षियोंको भी अलौकिक प्रेमरसरूप अमृत प्राप्त होगा.

**रोसनाई नूर बुध की, रही न किसीकी हाम ।**

**बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम ॥ २३**

तारतम ज्ञानका प्रकाश फैल जाने पर किसीकी भी चाहना शेष नहीं रही. बारहवीं सदी सम्पूर्ण होने पर पूरे ब्रह्माण्डको अखण्ड मुक्तिस्थलोंका पुरस्कार प्राप्त हुआ.

**अक्षर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर ।**

**बीसा सौ वरसों कायम, होसी वैराट सचराचर ॥ २४**

अक्षरब्रह्मकी दोनों दृष्टि (खेल और विलासकी सुरता) से मायावी ब्रह्माण्ड प्रकाशित होगा तब एक सौ बीस वर्ष (सं. १६३८-१७५८) पर्यन्त (कतिपय मतसे बुद्धजी शाका एक वि. सं. १७३५ से दो हजार पर्यन्त) की ब्रह्माण्डकी लीला अखण्ड होगी.

**एक तलबे तुम वास्ते, मैं नेक देखी किताब ।**

**ए दिन दिलमें आन के, तुम साथ मिलाओ सिताब ॥ २५**

हे सुन्दरसाथजी ! तुम्हारे लिए मैंने कुरानकी किताबमें दिये गए जागनीलीला

विषयक सङ्केतोंको देखा. अब अन्तिम आत्मा जागरण करने की घड़ीको अपने दिलमें लेकर तुम सभी अपने सुन्दरसाथको शीघ्र ही एकत्र करो.

बेरिज करी बैराट की, ए पढियो चित दे ।

खेलाए रास जागनी, झलकाओ नूर ए ॥ २६

इस ब्रह्माण्डके अखण्ड होनेके समयका लेखा मैने बता दिया. इसे भली-भाँति समझ लेना. सबको जागनी रास खेलाकर इसकी प्रभाको चारों ओर आलोकित कर दो.

मेहेदी हदां कर दर्ई, घर इमाम बताई राहे ।

पोहोंचे अरस म्याराज को, हंस मिलियां रूहें खुदाए ॥ २७

महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं इमाम महदी सद्गुरु श्री प्राणनाथने सभीको अपने अपने मुक्तिस्थल (निवास) निर्धारित कर दिए और ब्रह्मात्माओंको परमधामका मार्ग प्रशस्त किया, जिससे ब्रह्मात्माएँ परमधाममें हँसती हुई अपने प्रियतमके दर्शन कर आनन्दसे मिलने लगीं.

प्रकरण ४२ चौपाई १६९१

श्री सनन्ध ( कुरानकी सनंधें दुलहिन आसमानी ) सम्पूर्ण



पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहाँ नीतन ।

सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नीतन जेहनु नाम ।

उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

- महामति श्री प्राणनाथ



श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर